श्रीमती बालब्रह्मचारिणी विदुषी, आर्यारत्न, स्वर्गीया
चन्द्रयशा श्रीजी के स्मरणार्थ

॥ ॐ नमः ॥

श्रीमत्सुखसागरादि सद्गुरु विजयते तराम्

गुरु-गुण-मौक्तिक-माला-संग्रह

संस्कृत - प्राकृत - गद्य - पद्यात्मक युक्त
(राग रागिणी सहित)

卐

खरतरगच्छ नभोमणि, पूज्य, स्वर्गीयगणाधीश विद्वद्वर्य श्रीमान्
सुखसागरजी म० सा० के वर्तमान पट्टधर प प्रवर
शान्तिमूर्ति, गणनायक हेमेन्द्रसागरजी म० सा० के
आज्ञानुयायिनी पू० गु० प्र० स्व० श्री लक्ष्मी श्रीजी
म० सा० की स्व० शि० वि० शिव श्रीजी म० सा०
की शि० स्व० वि० श्री विमल श्रीजी म० की
आज्ञानुयायिनी वर्तमान प्रवर्तिनी बा० ब्र०
वि० प्रमोद श्रीजी म० सा० की विदुषी
स्व०(कच्छभुज)वाले श्रीमती बा०ब्र०
आर्यारत्न परम वैराग्यधारिणी
चन्द्रयशा श्रीजी महाराज के
सदुपदेशात्

卐

प्रकाशक और सहायक
श्रीमान् कच्छभुजवासी जगजीवनभाई पानचन्द शाह

विक्रम सं २०२० शु सौभाग्य ५	वीर सं २४९० मूल्यामूल्य	प्रथमावृत्ति १०००



समर्पण

अविरह स्मरणीया, परम पूज्येश्वरी,' गुरुवर्य्या, सिद्धान्तादि ज्ञान-रसिका,
गुरुभक्तिरक्ता, परमोपकारिणी, स्वनामधन्या, हमारे कुल मे
ज्ञान दिवाकर, आबाल ब्रह्मचारिणी, अनेक गुणगण युक्ता के
भक्ति मे ओतप्रोत होकर मैं अनभिज्ञा भी पूज्या

श्रीमती चन्द्रयशा श्री जी महाराज

के कर-कमलों मे जहा भी स्वर्गीयात्मा
हो वहां यह एक
"गुरु-गुण मौक्तिक-माला"
सादर समर्पित
करती हू,
कृपया

:

इसे
स्वीकारें

:

आपकी आज्ञाङ्किता, गृहस्थाश्रमवासिनी
छोटी भुजाई सूरजदेवी (सुशीलादेवी)
का कोटि नमन स्वीकृत हो
इत्यभ्यर्थना

प्रातःस्मरणीया, परम पूज्या, स्वर्गीया विदुषी आर्यारत्न श्रीमती

चन्द्रयशा श्रीजी महाराज साहब



जन्म सम्वत् १९८२ का भाद्रव कृष्णा द्वादशी भुजनगर (कच्छ)

दीक्षा सम्वत १९९९ फाल्गुन शुक्ला द्वितीया माडवी (कच्छ)

स्वर्ग सम्वत २०२० का भाद्रव कृष्णा १४ रविवार

फलोदी (राजस्थान)

॥ ॐ नम ॥

परम-पुनित पवित्रात्मा स्वर्गीया श्रीमती विदुषी
आर्यारत्न बालब्रह्मचारिणी

श्री चन्द्रयशा श्री जी महाराज

के सक्षिप्त जीवन की झलक



आज में आप लोगो के समक्ष अेक महानुभावा की जीवनी के विषय में सक्षेप में लिख कर बयान करता हू।

सौन्दर्यशाली कच्छ देश में भुज अेक उत्तम न्याय नीतिपूर्ण नगर था। उसमें श्रीमान् सेठ पानाचन्द भाई वाघजी शाह जो कि धर्मध्यानी तथा सरकारी कर्मचारी थे। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती माणक देवी बडी सरल सज्जन,धर्मशीला थी और भद्र प्रकृति वाली थी और धर्म के अन्दर गाढ रुचि रखती थी। सामायिक-प्रतिक्रमण-पौषध व नवकार मत्र के जाप में पूर्ण श्रद्धा रखती थी। आपके ज्येष्ठ (बडे) पुत्र राघवजीभाई भी धर्म पर पूर्ण श्रद्धालु और गुणियत्न नीति वाले सदाचारी हैं। छोटे पुत्र जगजीवनभाई भी सुसस्कारी, सदाचारी व धर्मिष्ठ परोपकारी हैं। माणकदेवी के दो पुत्रिया भी हैं। सब से छोटी पुत्री का जन्म सम्वत् १९८२ की भादवा कृष्णा द्वादशी महा-मगलकारी पर्यूषणा पर्वाधिराज में शुभयोग में हुआ। जिसका शुभ नाम सूर्योदय के समय जन्म होने से "सूरज कुमारी" रक्खा गया।

सूरजकुमारी का पालन-पोषण मातु श्री ने अच्छे ढंग से किया। सर्व समय माता की गोद में रहने से तथा धर्मक्रिया को देखने से आप में भी धर्म पर श्रद्धा इतनी जबरदस्त हो गई कि ४ वर्ष उम्र से ही देवदर्शन, गुरुवन्दन व धर्म श्रवण में पूरी दिलचस्पी लेती थी। दिन व दिन धर्म पर अटूट श्रद्धा बढ़ती ही गई।

५ वर्ष की उम्र में उन्हें स्कूल में प्रविष्ट करवा दिया। विद्या पढ़ने में भी उसे पूर्ण रुचि थी। वह हर साल परीक्षा में प्रथम श्रेणी में पास होती थी। गुजराती भाषा में मिडिल पास करके वह धार्मिक पाठशाला में पढ़ने जाने लगी। पच-प्रतिक्रमण, सप्तस्मरण, भक्तामर, कल्याण मन्दिर आदि स्तोत्र तथा जीवविचार, नवतत्व, दण्डक, लघु संघयणीसार्थ क्षपी मण्डलादि और महास्तोत्रादि भी उन्हें आते थे। ढाई सो सवा सो गाथा का सीमंधर स्वामी का स्तवन, देवचन्द्र आनन्दघन-चौवीसी-वीशी आदि समकित सणसठ्ठी बाहर भावना आदि तीन सौ साढा तीन सौ बड़े २ स्तवन, सज्झायें वैराग्य रस पूर्ण ढेर कंठस्थ था।

धर्म पर तीव्र श्रद्धा होने से और माता का ६ वर्ष की उम्र में दिवंगत हो जाने से संसार से विरक्ति हो गई। १२ वर्ष की अवस्था में दीक्षा की भावना होने से चारित्र में अभिरुचि दिन व दिन बढ़ती गई और वैराग्य-भावना भी जबरदस्त हो गई। आखिर संसार से मुंह मोड़ कर चारित्र की प्रतिज्ञा करली।

उस समय के दरमियान में पूज्य प्रवरवक्ता वीर पुत्र आनन्द सागरजी महाराज साहेबादि का पधारना हुआ। आपने मांडवी भुज आदि स्थलों मे ६ चातुर्मास कर जनता पर भारी प्रभाव डाला। तत्पश्चात् आपकी आज्ञानुयायिनी पूज्या शान्त स्वभाविनी श्रीमती साध्वीजी सा० जयवन्त श्रीजी म० सा० तथा विदुषी बालब्रह्मचारिणी पूज्या

प्रमोद श्रीजी म० सा० आदि १० ठाणों से कच्छ देश पधारी। अजार भद्रेश्वर महातीर्थ, मुद्रानगर होती हुई माडवी शहर पधारी। वहा श्री सघ का अत्याग्रह होने से चातुर्मास किया। चातुर्मास में आप भुज नगर से दर्शनार्थ आई। आपके व्याख्यानादि श्रवण कर हर्षित होकर चातुर्मास पश्चात् अभडासा, मावपट्ट की यात्रा साथ में की। सुथरीतीर्थ, कोठारा, जखौ, नलिया, तेरा आदि पचतीर्थी के ४२ ग्रामो की यात्रा की। बाद में पूज्या के साथ भुज आई। वहा के श्री सघ ने आपके गुणो से मुग्ध होकर व्याख्यानादि श्रवण कर विनय, भक्ति विवश होकर आग्रहपूर्वक चातुर्मास करवाया। उसमें आपने १४ पूर्वतप की श्राविकागण के साथ आराधा। सस्कृत के २४ भगवन के चैत्य वन्दन तथा २४ स्तुति बडी सघयणी ५०० गाथा वाली की तथा सीन्दूर प्रकर, हिंगूल प्रकर कर्पूर प्रकर, कस्तूरी प्रकर वैराग्य शतक मूल किये। बीच २ में छोटे बडे अष्टक किये।

चातुर्मास पश्चात् पूज्या का विहार माडवी नगर की तरफ हुआ। उधर बाई पालीताणादि यात्रार्थ रवाने होकर यात्रा कर बडे भ्राता आग्रह कर बम्बई बुलवाई। बाद छोटे भाई ने मद्रास के लिये आने का भरसक आग्रह किया। परन्तु समयाभाव से वहा आप न जाकर भुजनगर पधार गई। बाद में पिता श्री से आज्ञा लेकर माडवी पूज्या के पास आई। वहा पर खरतर गच्छ के अग्रगण्य पटेल श्री सेठ वीकमसीभाई रावजीशाह या यों कहो कि हर कौम पर उनका पूर्णतया मान था। वे उनको सर्वसर्वा मानते थे। उनको अर्ज किया कि आप मेरे धर्म के पिता श्री हैं। मुझे भगवती धर्म (दीक्षा जल्दी से जल्दी लेना है। तब पटेल श्री ने कहा बाई। बडी खुशी की बात है। अगर तुम्हारे पिता आज्ञा दें तो हम तथा पूज्या दीक्षा करा सकते और दे सकती है। बाई ने कहा कि वे रजामन्द हैं। तब पटेल श्री ने २ श्रावकों को भुजनगर भेज कर पिता श्री आदि कुटुम्ब को बुलाये।

आज्ञा संपादन कर बाई के धर्म पिता ने बड़े ठाट से उत्सव दिक्षा का शुरु कर दिया। सारे शहर में दीक्षा की धूम मच गई। जगह २ सेवा समिति के नवयुवकों ने तैयारियें करके सम्वत् १९९९ का फाल्गुन शुक्ला द्वितीया को दीक्षा का वरघोड़ा बड़े ठाठ बाट से १ मील का लम्बाण लिया। ६४ लड़का लड़कियों का सेवाला घोड़ों पर निकाला। देव परियों की तरह सेवाला शहर में घूमता हुआ दीक्षा मण्डप के करीबन पहुंचा जो कि शहर के बाहर विशाल जैनधर्म शाला में बना था। धर्म पिता श्री ने खूब छूट हाथ से ५०० रु० का वर्षीदान दिलाया। वे मोटर के साथ चलते थे। आखिर बाई दीक्षा मण्डप में लाई गई। वहां पिता श्री आदि कुटुम्ब से नमन कर धर्म पिता श्री आदि चतुर्विध संघ को प्रणाम कर, पूज्य गुरुवर्यादि परिवार को वन्दन कर क्रिया में सम्मिलित हो गई। क्रिया करती हुई उपकरण लेने के समय हर्ष से ओत प्रोत होकर रजोहरण (ओघा) मुहपत्ति लेकर नाचने लगी। धन्य जीवन कृत पुण्य समझ कर बाह्य चीजों का त्याग कर मुंडनादि करा कर साधु वेश को ग्रहण कर दीक्षा मण्डप में आकर क्रिया करती हुई नामकरण में पूज्य गुरुवर्या की शिष्या "चन्द्रयशा श्री जी" नाम से विभूषित की घोषणा की।

सब काम से विजय मूहूर्त में निपट कर संघ ने लवाजमां के साथ दरिया किनारे दादावाड़ी में पूज्याओं के साथ "चन्द्रयशा श्री जी" म० को लाये गये। रात भर वहां विराज कर प्रातः काल में जिन मन्दिर तथा दादा देवल में दर्शन कर संघ सहित शहर में पधामणी की गई। घर २ में पगले कराकर ज्ञान पूजा होती हुई १ बजे उपाश्रय में पधारी।

बाद में कुछ दिन वहां विराजी तब साधु क्रिया-अतिचार श्रमण सूत्र व पाक्षिक सूत्र करके आप पूज्याओं के साथ ग्राम नगरादि का

विहार कर भद्रेश्वर तीर्थ पर पधारना हुआ। वहा आप गुरुवर्या से ज्ञान, ध्यान, देव दर्शन में लीन रहती हुई समय वितरण करती थी।

आखिर अजार नगर के श्रावक भद्रेश्वर तीर्थ आकर सम्वत् २००० के साल में आग्रहपूर्ण विनती विनययुत कर अजार क्षेत्र की स्वीकृति ली।। पूज्या की सेवा में चातुर्मास कर तत्त्वार्थ सूत्र के १० अध्याय तथा दशवै कालिक सूत्र के १० अध्ययन २ चूलिका सहित अभ्यास किया। और भी संस्कृत की ३ पच्चीसी की। सब कण्ठस्थ ज्ञान कुछ छट्ठ अट्ठमादि तप भी किये।

चातुर्मास पश्चात विहार कर जामनगर, मागरोल, पोर बन्दर बनस्थली आदि ग्राम नगर पधारती हुई पूज्या के साथ जूनागढ पधारी। वहा की दिव्य यात्रा कर आप तलहट्टी पधारी। वहा से गिरनार गिरि पर चढती हुई पूज्या के साथ नेमीनाथ भगवान के महा प्रभाविक दिव्य दर्शन कर ११ जिनालयों को भेट कर पाचो टोको की यात्रा कर सहसाम्रवन की भूमि से पावन होकर नेमी प्रभु के दरबार मे पधारी। सबके साथ रात भर प्रभु दरबार के बाहर धर्मशाला में ठहरी। प्रात काल में नेमीनाथ स्वामी आदि ११ जिनालयों को दिव्य भावो से भेट कर चैत्य वन्दनादि कर तलहट्टी आई। वहा पूज्या के पैरों में थकावट आने से तलहट्टी पन्द्रह दिन विराजी तो आपकी इच्छा नित्य नेमी प्रभु के दर्शनार्थ जाने की इच्छा जान कर साध्वीजी के साथ वहा भेजी जाती।

आखिर एक दिन आपने सविनय अर्ज किया कि आज्ञा होतो आज रात्रि वास वहा करू। पूज्या ने फरमाया कि ठहर जाना। बडी खुश होकर के यात्रार्थ गई। अच्छी तरह से दिल भर कर दर्शन वन्दनादि कर आहारादि से निपट कर फिर मध्यान्ह के समय २-३ घन्टे तक भक्ति-भाव किया। शाम को प्रभु के दरवाजे पर

बंगला था वहां रात भर रही। प्रतिक्रमणादि से निपट कर कुछ ध्यान धर कर प्रभु के अनुपम गुणों का स्मरण करती थी।

रात को १२ बजे जिनालय में नाद-नृत्य भक्ति का अपूर्व आनन्द कर्णगोचर हुआ। बड़ी खुश होकर इधर उधर गवाक्ष से देखने को मुंह निकाला। मगर अवलोकन न कर सकी। आनन्द ही आनन्द में रात्रि वितीर्ण कर प्रातःकाल बड़ी श्रद्धा से दर्शनादि कर सब जिनालयों से भक्तिपूर्वक निपट कर ११ बजे दिन में पूज्या के पास आगई, और रात्रि का किस्सा अर्ज कर सुनाया।

बाद में तलहट्टी से चल कर जूनागढ़ पधारी। २ दिन ठहर गिरीराज (शत्रुंजय) की तरफ विहार किया। वहां वैशाख शुक्ला में पहुंची। दादा दरबार तथा घेटीपाज व नव वसही का पुनित पावन दर्शनादिकर पूज्या की सेवा में ठहरी। वहां गुरुवर्या के भक्तगण ने सवत् २००१ में चातुर्मास बड़े ठाठ से करवाया।

वहां कान्ति श्री जी म० ने २१ तथा प्रकाश श्री जी म० ने ३१ उपवास किये, श्राविकाओं में से भी तपस्या बहुत सुन्दर हुई जिसके उपलक्ष में चान्दभवन में अष्टान्हिका महोत्सव,वरघोड़ा आदि की खूब चहल पहल रही। आपने भी तलहट्टी की नवाणु यात्रा, शहरी जिनालयों के दर्शन व नवपद आराधना, छट्ठ अट्ठमा तप किये। संस्कृत अभ्यास पूज्या के पास किया। बाद में चातुर्मास पश्चात् विहार कर अहमदाबाद पधारी। वहां २ मास पूज्या के पास ठहर कर सब शहरी यात्रा कर कपड़वंज, गोधरा, दोहद के दर्शन कर रतलाम सम्वत् २००२ का चातुर्मास किया। वहां व्याकरण का अभ्यास चालु किया। पंचेन्द्रिय तप भी आराधा। चातुर्मास पूर्ण होने पर विहार कर उज्जैनी पधारी। वहां पर शान्तिनाथ जिनालय का जीर्णोद्धार गुरुवर्या के उपदेश से शुरु हुआ। सम्वत् २००३ में

चातुर्मास हुआ। पढाई में व्याकरण काव्य-करातार्जुनी आदि शुरु किये।

चातुर्मास पश्चात् माघशुक्ल। पचमी को बाल कुमारी कमला बाई की दीक्षा हुई। उनका नाम "चन्द्रोदय श्री जी" रक्खा गया। दूसरा चातुर्मास भी पूज्या का जीर्णोद्धार चलने से श्रावकों ने २००४ का चौमासा भी वहीं करवाया। तब विशस्थानक तप आराधा। पढाई में व्याकरण पूरा कर यात्रार्थ माण्डवगढ, ब्रोयावर आदि पूज्या ने प्रभाव श्री जी म० आदि ४ को भेजी, रास्ते में बिमार हो जाने से नमूनीया की शिकायत होने से इ दौर में लाई गई। वहा श्रावकों ने डॉक्टरादि का प्रबन्ध कर दवा शुरु की गई पर टबल नमूनीया हो जाने, आपकी स्थिति खतरनाक हो जाने से श्रावक पूज्या के पास उज्जैन आकर पूज्या को लेकर अट्ठारह कोश दो दिन में ले आये। आपकी हालत बेहोश होने से उपरा उपरी इलाज से होश में आये। कुछ दिन ठहर कर स्वस्थ हो जाने से पूज्या धीरे धीरे आपको लेकर उज्जैन पधारी।

पश्चात इन्दौर के श्रावकों का अत्याग्रह होने से २ मास बाद विहार कर सम्वत् २००५ मे इन्दौर चातुर्मास करवाया। काव्य, कोष न्याय म स्याद्वाद मजरी नव्य ढग से शुरु किया। २००६ का चौमासा भी पूज्या बिमार होने से वहीं किया। उसमें बीश विहर मान तप को आराधा।

चौमासा पश्चात् कुछ काम जीर्णोद्धार का अवशिष्ट होने से उज्जैन पूज्या को पधारना पडा। सम्वत २००७ का चौमासा भी श्रावकों ने यहीं करवाया। पढाई भी आपकी वहा चलती थी। यहा का कार्य प्रतिष्ठादि सब करा कर आपका विहार हुआ। सम्वत् २००८ का चौमासा रतलाम हुआ। यहा भी पढाई संस्कृत न्यायादि चलती

थी। और सम्मेत शिखर तप की ओली आराधी। चौमासा बाद विहार कर सैलाना में पूज्य सूरीश्वर प्र. व. शि. वे. वी. पु. श्रीजिन आनन्दसागर सूरीश्वर का दर्शन कर जावरा, मन्दसोर प्रतापगढ़ पूज्या के साथ पधारी। वहां हमारी बड़ी गुरु बहेन विदुषी राजेन्द्र श्री जी म० आदि तीन का चौमासा था। वहां पर माघ शुक्ला १२ को कचरा बाई की दीक्षानाम "कोमल श्री जी" रक्खा। वहां से सादड़ी आदि ग्रामों में विहार करती उदयपुर पधारी। वहां से पूज्या के साथ केशरियाजी की यात्रा कर उदयपुर पधारी। तब तत्रत्य संघ ने पूज्या का रोचक वैराग्य पूर्ण व्याख्यान श्रवण कर २००६ में चौमासा कराया और आपकी पढ़ाई भी चालू कराई। श्रावण में आप पूज्या के पेट में गठान होने से श्रावण शुक्ला में ओप्रेशन करवा दिया चूंकि भविष्य मे कुछ खतरनाक लगने से सेठ रोशनलालजी सा आदि संघ ने विचार कर करवाही दिया। चातुर्मास पश्चात् माघ शुक्ला ११ को कमला बाई की दीक्षा नाम "विजयेन्द्र श्री जी रक्खा। वहां से विहार २ ठाणों से आपको राणकपुर की यात्रा करने भेज दी गई। पूज्या कुछ समय के बाद विहार कर नाथद्वारा कांकरोली जहां दयालशाह का भव्य जिनालय आदि की यात्रा करती हुई देशूली नाल उतर कर पधारी। इधर राणकपुर से पंचतीर्थीकर आप खेरवा पधार गई। देशूली से पूज्या अपनी बड़ी गुरु बहेन पूज्या प्रवर्तिनीजी श्री वल्लभ श्री जी म० सा० के दर्शनार्थ घाणेराव पधारी। वहां ५ रोज आपकी सेवा मे रह कर नाडोल, नाडलाई, वरकाणादि की यात्रा करती पूज्या खेरवा पधारी। वहां कुछ स्थिरता के कारण पूज्यावाद उपाध्यायजी श्री कवीन्द्रसागरजी म० सा० आदि को प्रार्थना पत्र भेजकर दोनों साध्वियों जी के योग कराने की वजह से बुलवाये। सकृपया पधार कर योगोद्वहन करवाये। बड़ी दीक्षा में विजयेन्द्र श्री जी को विदुषी राजेन्द्र श्री जी की बड़े प्रेम से शिष्या की बक्षीसी की। तथा कोमल श्री जी को बाल ब्रह्मचारिणी, चन्द्रोदय

श्री जी वनाई। इधर में चातुर्मास नजदीक होने से सम्वत २०१० में "चन्द्रयशा श्री जी म० को पाली के भावुक अग्रगण्य श्रावक सघ आकर पूज्या से प्रार्थना कर ५ साध्वीजी वो पाली चातुर्मास करने भेजी। वहा आपका व्याख्यान रोजाना बडा सुन्दर होता था। व्याख्यान म 'विपाक सूत्र" भावना में "जयानन्द केवली चरित्र" फरमाती थी। आप की व्याख्यान-कला सबको वडी प्रिय लगती थी। नव पद आराधना भी की।

चौमासा पश्चात पूज्या खैरवा से चोमासा कर पाली पधारी। तब ढाई महीने जहा ठहर कर पूज्या के साथ आप जोधपुर पधारी। ढाई मास ठहर कर सूत्रादि का मनन करती थी। बाद में वहा से विहार कर ओशीया तीर्थ की यात्रार्थ कुछ दिन ठहर कर फलोदी पधारी। सम्वत २०११ का चौमासा फलोदी में ही किया। आपने यहा "समवायाङ्ग सूत्र ज्ञाता सूत्र, उपासक दशाङ्ग को पूजया से पढा। ६ कर्म ग्रन्थ में से ४ था ५ वा ६ ट्ठा का अर्थ भी किया। इन कर्म ग्रथ का अर्थ प्रथम कर लिया था। चौमासा पश्चात् विहार कर व्यावर की तरफ पधारी। सम्वत २०१२ का चौमासा वहा किया। व्याख्यान में आप 'ज्ञाता सूत्र" भावना में "धन्य चरित्र" फरमाती थी। आप का व्याख्यान श्रोतागण को बड़ा आकर्षक रोचक लगता था। वहा ११ गणधर तप आराधा।

बाद चोमासा के पूज्या की सेवा में पधारी। वहा से बीकानेर का आत्याग्रह होने से सम्वत् २०१३ का चौमासा वहा किया। व्याख्यान में "समवायाङ्ग सूत्र" "श्रीचन्द्र चरित्र" फरमाती थी। व्याख्यान प्रिय होने से सख्याबद्ध श्रावक श्राविका आती थी। आपका अभ्यास आचाराङ्ग सूत्र मूल, टीकायुक्त चलता था। तप, जप, स्वाध्याय बडे ही प्रेम आदर के साथ चलता था। कारण आपको

२००० से ३००० तक का नित्य स्वाध्याय होने पर आहार लेती थी। यह दृढ़ नियम आपका था।

चौमासा बाद विहार कर सम्वत् २०१४ में पूज्या के सेवा में पधारी। पूज्या के पास "जम्बू द्वीप प्रज्ञप्ती" को वांचा, तेरह काठियें, तप व अष्ट प्रवचन माता का तप आराधा। चातुर्मास पीछे आप विहार कर- जोधपुर, पाली, जाकोड़ा तीर्थ की यात्रा कर शिवगंज, सिरोही को दिव्य यात्रा कर वामणवाड़ तीर्थ, नान्दीया तीर्थ, अंजारा तीर्थ भेट कर आबू माउन्ट जाकर देलवाड़ा तीर्थ की बड़ी सुन्दर जियारत कर अचलगढ़ भेट कर वहाँ से कुंभारीया तीर्थ कर-तारंगा जी की यात्रा कर विशनगर; वड़नगर म्हैशाणा, भोयणी तीर्थ, शंखेश्वर तीर्थ, पंचासरा तीर्थ उपरयाली तीर्थ और कम्बोई तीर्थ की यात्रा कर बोटाद होती हुई लाखणी पधारी। वहां सर्प दंश उपसर्ग आप को होने से आपको बड़ा कष्ट हुआ। श्रावक लोग साईकिल लेकर बोटाद जाते थे कि रास्ते में सर्जन डॉक्टर की मोटर दिखी। हाथ से इशारा करते ही मोटर रुक गई। वहां वह लोग पहुंच कर सारा हाल बयान किया। अन्यत्र जाने वाला डाक्टर लाखणी की तरफ चल पड़ा। तुरन्त चन्द्र यशा श्रीजी म० को संभाला और दवा इंजक्सन करने मे तन तोड़ परिश्रम करने लगा। मगर आपकी हालत सोचनीय गहरे रुप में हो गई थी। मगर फिरभी दवा इंजक्सन भारी २ लगने से २ घंटा में होश में ले आया। कै (वोमट) कराई। ६ घन्टे तक डॉक्टर ठहर कर दवाई इंजक्सन का प्रवन्ध किया और वहां के डाक्टर को भलामण देकर रवाने हुआ। ८ दिन तक ठहर कर कुछ स्वस्थ होने से विहार कर सम्वत् २०१५ में पालीताणा चान्द भवन में चौमासा किया। वहां दुबारा विशस्थानक तप आराधा। और भी आयंबिलादी तप किया। चातुर्मास उतरते नवाणू यात्रा आराधन की। १ साध्वीजी सा० की तबियत अस्वस्थ

हो जाने से सम्वत् २०१६ का चातुर्मास पालीताणा में सोहन वाई बिल्डिङ्ग में किया। वहा हिंगुल प्रकर आदि चारों प्रकारों का काव्य के ढग से किया। चौवीस भगवान का निर्वाण कल्याणक का तप आराधा।

वहा से चौमासा कर विहार करके पचतीर्थी महुवा, दाठा, तला जा, घोघा भावनगर की यात्रा करती हुई कम्बोई आदि शहर ग्राम होती हुई सिद्धपुर पाटण की यात्रा कर चारूप की भव्य जिनालयों के दर्शन नसीब कर पालणपुर की यात्रा करती अनेक स्थल ग्राम, नगर, होती हुई फलोदी पधारी। सम्वत् २०१७ का चौमासा फलोदी किया। आप सूत्र में स्थानाङ्ग सूत्र पढा तथा पढे हुए का मनन करती थी। व्याख्यानादि पूज्या की अस्वस्थता मे फरमाती थी। वहा से विहार कर स० २०१८ में जोधपुर चोमासा किया। वहा शखेश्वर अष्टम भक्त किया। बाद में कुछ दिन बाद बिमार हो गई। मार्गशीर्ष, पौष तक बिमारी बढती ही गई। बाद मे ओषधोपचार से कुछ ठीक होने पर चैत्र उतरते फलोदी गुरुवर्या की सेवा में बुलवाली गई। बाद ढाई महिने सेवा में रह कर वीकानेर वालों का सख्त आग्रह होने से याने तीन २ वार श्रावक श्राविका आये। तब विवश होकर ३ ठाणों को भेजी गई। रास्ते में कोलायत में ही वोमेन्ट, बुखार आदि से अस्वस्थ होगई। २०१६ में आषाड शुक्ला ८ मी को पहुची। वहा आपने श्रावण तथा भाद्रव के पर्यूषण तक व्याख्यान फरमाया। वीच २ मे चन्द्रोदय श्रीजी म० व्याख्यान फरमाया। नवपद में फिर ४ रोज व्याख्यान दिया।

बाद में दिनोदिन आप अस्वस्थ तथा कमजोर होती गई। वैद डॉक्टर आदि का इलाज चलता था। मगर बिमारी पकड में न आने से कुछ भी फायदा नहीं हुआ। माघ से तो अनेक तरह की व्याधी महसूस होने लगी। बुखार, के, धूजना, गफलत में आजाना, आखिर में केन्सिर कायम किया।

वैद डाक्टर की एक ही अवाज रही के कुछ नहीं हो सकता। तब आपकी इच्छा पूज्य गुरुवर्या के पास आने की होने से चैत्र शुक्ला १३ को फलोदी लाये गये। आप की हालत आदि को देखकर पूज्याओं को तथा ओरों को सख्त आघात लगा। जिसमें गुरुवर्या को तो इतना अघात लगा कि बयान नहीं कर सकती। भुज तुझे यह क्या हो गया? मैं क्या देख रही हूं? अरे भगवान्! मेरी हयाती में। आगे एक वाक्य भी नहीं बोल सकी।

परन्तु इतनी भयंकर बिमारी में भी आप बड़ी शान्ति के साथ रहती थी और कहती रहती कि मैं मांगी चीज हूं आप धैर्य रक्खें। तोला भर भी अन्न न लेती और न फ्रूट (रस) वगैरह ही लेती थी। बड़ी मुश्किल से कभी देते तो उल्टी हो जाती तो कहती "आप मुझे नाहक हैरान न करो, परभव का पाथेय सूत्र सुनाओ"। "भगवती सूत्र" "विपाक सूत्र "उत्तराध्ययन" आदि जो जो इच्छा होती वह भक्ति श्रद्धा से सुनती और आप अपनी जिन्दगी का अन्त समय जानकर पुस्तक, पन्ने, उपधी वगैरा को त्रिविध २ वोसीरादी। जितना भोग में आवे-याने ४ वस्त्र, जितनी जगह में हूं उतनी मने कल्पे उपरांत का त्याग। बार २ चौराशी लक्ष जीवों से प्राण, भूत, जीव, सत्त्व से मेरा खमत खामणा है. मेरा कोई नहीं। यह शरीर अनित्य है, व्याधिओं का मन्दिर है, आत्मा अजर-अमर अविनाशी है।

आखिर अन्न को सर्वथा विसर्जन किया। श्रावण तक कभी २ तोला कभी १ तोला चाय का पानी लेती। भाद्रपद कृष्णा द्वितीया को उसको भी बोसिरादी। भाद्रव कृष्णा ३ से जल के सिवाय सब का त्याग कर तिविहार अनसन किया और भाद्रव कृष्णा १४ को महामंगलकारी पर्वाधिराज में किसी को भी किसी बात का यानें व्याख्यान भोजन आदि में अन्तराय न आवे ऐसे समय में सवा पांच

चले देखते २ सदा के लिए "हाथ का हीरा" अनित्य शरीर को त्याग हम सब को छोड कर परमधाम चल बसी।

श्रावक संख्याबद्ध हाजिर थे। २० मिनट में सब तैयारी कर रजत (चान्दी) की पालकी धूमधाम गाजते बाजते चल पडे। आपका गृहस्थाश्रम का कुटुम्ब भी हाजिर था। आपके पिता श्री बिमार होने के कारण नहीं आसके। भाई भतीज, दोनों भुजाईयां थी। आपका अन्तिम खर्च छूट हाथ से भाई ने किया। तथा १०५ अभयदान, अनुकम्पा दान में लगाये। एक बकरे को मरते को आपकी हयाति में अमर कराया। बाद में आपके 'सद्रामसामी" जगजीवन भाई पानाचन्द शाह की तरफ से अष्टान्हिका (अट्ठाई) महोत्सव भी आठों दिन पूजा, प्रभावना, भक्ति, आगी कराई। और भी जो कुछ लगाना था वह किया। फिर आपकी इच्छा हुई कि-चन्द्रयशा श्री जी म० सा० की स्मृति में कुछ कीजिये। तब पूज्या ने फरमाया कि वह दादागुरु देव की अनन्य भक्ता, और पूर्ण श्रद्धालु थी। वह आप सब जानते हो अत वह कहती कि यह पुस्तक "जगजीवन भाई" छपा देगा आप मेरी तरफ से फरमा देना। यह सुनते ही सहर्ष मजूर कर "दादा गुरु गुण मौक्तिक माला सग्रह" आप के स्मरणार्थ आप की तरफ से प्रगट होगी।

दादा गुरुदेव से तथा शासनदेव से यही प्रार्थना है कि "दिवगत" आत्मा जिधर भी हो, उन्हें पूर्ण शान्ति दें। कारण की आपकी अत्यन्त ही निर्मल भावना वस यही बार बार इच्छति थी कि बाल ब्रह्मचारीपन में भव भव में चारित्र उदय आवे। यही पूर्णेच्छा, पूज्या-परमोपकारिणी वात्सल्य प्रेम वाली जयवन्त श्री जी म० साहिब तथा परम गुरुवर्या, अविरल ज्ञानदात्री, अनेक गुण गण समलकृता

आप श्री की अपार कृपा मुझ पर है ऐसी प्रवर्तिनी-पूज्या आबाल ब्रह्मचारिणी श्रीमती प्रमोद श्री जी महाराज साहब ही भव २ में मिले और शरण हो जो। गुरु बहिनें भी श्रीमती चम्पक श्री जी म० विदुषी राजेन्द्र श्री जी म० प्रकाश श्री जी म० पारस श्री जी म० मेरी अतिप्रिय बालब्रह्मचारिणी चन्द्रोदय श्री जी ने मेरी खूब सेवा की। जिसमें प्रकाश श्री जी म० पारस श्री जी म० ने दिन रात एक किया।

क्या सब की तारीफ करूं, मेरा कोई किसी से कसूर हुआ हो तो सब मुझे क्षमा बक्षाना। मैं पूज्या परमोपकारिणी गुरुवर्या को मन, वचन, काया से त्रिविध २ क्षमाती हूं। तथा सबों को क्षमाती हूं। यही निर्मल भावना आपकी सर्व समय में रहती थी। १२ की रात को आपने पूज्या आदि को फरमाया कि आज सब मेरे पास रहना। मैं आज की हूं। कल चली जाऊंगी।

वही सत्य कर दिखलाया। आप हम सब को छोड़ कर अमर कीर्ति फैलाकर चल बसी। आप के वियोग में शहर-शहर गांव-गांव के तार पत्र में आपका भारी शोक और यश आदि दिव्य गुण प्रकट किया। आप के व्याख्यान सज्झाय ध्यान आदि को सब कोई सुरते हैं।

आपका शुभ नाम "चन्द्रयशा श्री जी" महाराज तो अल्प संख्या में जानते हैं। भुज वाले महाराज भुज वाले महाराज के नाम से आप सर्वत्र ही प्रसिद्ध थी। और आपके गृहस्थाश्रम की छोटी भुजाई सुशीला बहन जगजीवन भाई की पत्नि आपको सुसराल वाले सूरज बहेन से बुलाते हैं। आपने श्रीमती पू० चन्द्रयशा श्री जी म० सा०

को "दादा गुरु-गुण मौक्तिक माला सग्रह " कर कमलो में समर्पण की है, वह गुर्जर भाषा में सूरज बहेन ने लिख कर भेजा, उसकी हिन्दी बना कर लिख दी है। किं विशेषम अलम विस्तरेण।

शुभम्-भूयात-सुखम्-भूयात्-भूयात्-कल्याण मुत्तमम्

ॐ शान्ति ॐ शान्ति ॐ शान्ति

आपका कृपाकांक्षी
मास्टर आशाराम
फलोदी (राजस्थान)



नोट — यद्यपि मैं अनजान हूँ तथापि आपकी पूज्या गुरुवर्या श्री कृपा से कुछ २ परिचय में आया हुआ होने से जानकारी को प्राप्त कर दो शब्द लिख कर अर्ज किया है। अगर उसमें कोई त्रुटि हो तो सुधार कर पढे। और पुस्तक में "प्रेस" दोष आदि रह जाय तो सुधार कर पढे। इत्यभ्यर्थनास्ति।

॥ भद्र भवतु सर्वेषाम् ॥



(अविरह - स्मरणीय)

* प्रथम-दादा चौराशीगच्छ शृङ्गारहार *

जयुप्रवृभ दादा साहब

श्री जिनदत्त सूरीश्वरजी महाराज साहब



जन्म सवत् ११३२

दीक्षा सवत् ११४१

सूरिपद सम्वत् ११६९ वैशाख कृष्णा ६

स्वर्ग सवत् १२११ आसाड शुकला ११

: अविरह स्मरणीय

द्वितीय दादा

चौरासी गच्छ शृङ्गार हार

ज. यु. प्र वृ भ दादा साहब

श्री मणिधारी श्री जिनचन्द्र सूरीश्वर म० सा०



जन्म स० ११९७
भाद्रपद शुक्ला ८

दीक्षा सम्वत् १२०३
फाल्गुन शुक्ला ९

सूरिपद सम्वत १२०५
वैशाख शुक्ला ६

स्वर्ग सम्वत् १२२३
द्वि भादवा कृ १४

अविरह स्मरणीय

तृतीय दादा

चौरासी गच्छ शृङ्गार हार

जं. यु. प्र. वृ. भ. दादा साहब परम प्रभावक श्रीजिन

कुशलसूरीश्वर महाराज साहब

जन्म सम्वत १३३७

सूरिपद सम्वत १३७७ ज्येष्ठ कृष्णा ११



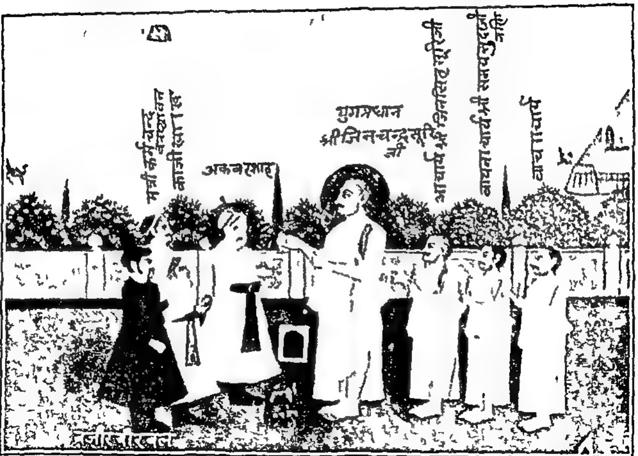
दीक्षा सम्वत १३४७ फाल्गुन शुक्ला ८

स्वर्ग सम्वत १३८६ फाल्गुन कृष्णा ३०

अविरह स्मरणीय चतुर्थ दादा चौरासी गच्छ शृङ्गारहार ज यु प्र वृ भ दादा साहब

श्रीमद् अकबरशाहि प्रतिबोधक श्री जिनचन्द्र सूरीश्वरजी महाराज साहब

दीक्षा सम्वत १६०४



सूरिपद सम्वत १६१२ भाद्रव शुक्ला ९

जन्म सम्वत् १५९५ चैत्र कृष्णा १२ स्वर्ग सम्वत १६७० आश्विन कृष्णा

अनुक्रमणिका

प्रथम भाग

द्वितीय भाग

श्री प्रथम दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त सूरीश्वर पूजा

श्री द्वितीय दादा गुरुदेव मणिधारी श्री जिनचन्द्र सूरीश्वर-पूजा

श्री तृतीय दादा गुरुदेव श्री जिन कुशल सूरीश्वर पूजा

श्री चतुर्थ दादा गुरुदेव श्री मद् अकबर शाह प्रतिबोधक श्री जिन चन्द्र सूरीश्वर पूजा।

तृतीय विभाग



प्रात स्मरणीय आर्यारत्न

सम्राज्ञिका

-- विदुषी आगल ब्रह्मचारिणी पूज्या --



दीक्षा सम्वत १९६४ माघ शुक्ला ५

जन्म सम्वत १९४५ कार्तिक शुक्ला ५

श्री प्रमोद श्रीजी महाराज साहबा



❀ ॐ नमः ❀

ॐ शासनोद्धारक गुरु देवेभ्योनम

ॐ श्री जिनदत्त मणिधारी जिनचन्द्र जिनकुशल जिनचन्द्र

सूरिश्वरेभ्यो नमोनम.

:: श्री मज्जिनदादा गुरुगुण मालिका ::

॥ मङ्गलाचरणम् ॥

दासानुदासा इव सर्वदेवा, यदीय पादाब्जतले लुठन्ति ।
मरुस्थली कल्पतरुः सजीयात्, युग प्रधानो जिनदत्तसूरिः ॥१॥
चिन्तामणिः कल्पतरुर्नरा कौ, कुर्वन्ति भव्याः किमुकामगव्या ।
प्रसीदतः श्रीजिनदत्त सूरेः, सर्वं पदं हस्तिपदे प्रविष्टम् ॥२॥
नो योगी न च योगिनी न च धराधीशस्य नो शाकिनी ।
नो वेताल पिशाच राक्षसगणा नो रोग शोकौभयम् ॥
नो मारी न च विग्रह प्रभृतयः प्रीत्या प्रणत्युच्च कैः ।
यस्ते श्री जिनदत्त सूरिगुरवो नामाऽक्षर ध्यायति ॥३॥

॥ श्री जिनदत्त सूरीश्वर स्तोत्रमष्टकम् ॥

श्री वीर तीर्थेश्वर शासनस्य, प्रभावकः कौटिक गच्छ-नेता । चान्द्रेकुलेऽभूद्वरवज्रशाखा, प्रभाकरः श्री जिनदत्त सूरिः ॥१॥ सदन्विकादत्तयुग प्रधानः, पदं प्रधानोतिशय-

र्यंयेत: । विद्याचण: सूरिगुणान्वितोयः, सूरीश्वर: सर्वनतो ऽयराजत् ॥२॥ धुन्धुक्काऽभिधसत्पुरेसमजनि, श्री वांच्छिगोत्रीसख: श्री मद्वाहड़देव्युदार चरिता, तस्याऽभवद्गेहिनी ॥ तत्कुक्षाऽववतीर्य हुम्बड़ कुलोत्तं सः शिशुत्वेऽपियः । श्रीमद् पाठक धर्मदेव सन्निधे, जग्राह सत्संयमम् ॥३॥ श्रीयुक्ताऽभय देव सूरि सुगुरोः, शिष्यैर्वराऽऽचार्य कैः । श्री मद्भिः किल देव भद्रगुरुभिः, श्री चित्रकूटे स्वयं ॥ सूरेः श्री जिन वल्लभस्य सुगुरोः, पट्टे निवेश्याऽग्रिमे । यः श्रीमद् जिनदत्तनाम विधिना, श्री सोमचन्द्रावयः ॥४॥ ततः स्वकीयोत्तम मूलविद्या, त्रिकोटिसंख्यस्मरणाद्धि शुद्धा । सुरासुरा भूरितरा यदीयौ, पादौ नमन्तिस्म सुहर्षवन्तः ॥५॥ सुसाधु साध्वी समुदाय युक्ताः, सुश्रावकाणां बहवश्च वर्गाः । प्रबोधिता येन कृपापरेण, सद्धर्म मार्ग प्रथनेन लोके ॥६॥ क्रमेणकृत्वाऽनशनं विशुद्धं, पुरोत्तमे श्री अजयादिमेरौ । आयुः क्षये स्वर्गमवाप सम्यक्, यः श्री गुरुर्ज्ञान समादितात्मा ॥७॥ इत्थं स्तुतः श्री जिनदत्तसूरिः, क्षमादिकल्याण सुपाठ केन । सूरीश्वरः सर्वगुणाकरो सौ, भव्यात्मना वांच्छित पूरकोऽस्तु ॥८॥ इति ॥

॥ द्वितीयाष्टकम् ॥

नमाम्यहं श्रीजिनदत्तसूरिं, गुणाऽऽकरं किन्नर पूज्यपादम् । यतीश्वरं तुष्टिकरं स्वरूपं, लावण्यगात्रं बहुसौख्य

कारम् ॥१॥ भूपानराये प्रणमन्तिनित्यं, तेषां मनीषां सफली करोति । लक्ष्मीर्यशो राज्यरति प्रसूते, विद्यावर श्री ललना सुखानि ॥२॥ भक्त्या नरा ये तव पादसेवां, कुर्वन्ति ते पुत्र मुपालभन्ते (सत्पुत्र लभन्त एव) । न दुःख दौर्भाग्य मयंन मारिः, स्मरन्ति ये श्री जिनदत्त सूरिम् ॥३॥ कविः स्वबुद्ध्या गुरु सन्निभोऽपि, कस्ते गुणान्-वर्णयितुं समर्थः । तथाऽपि त्वद्भक्तिरतो मुनीन्द्रः, करोमिकिञ्चिद्गुण वर्णनंते ॥४॥ महार्णवे भूधरमस्त केऽपि, स्मरन्ति ये श्रीजिनदत्तसूरिम् । सुखैः सहायान्ति जनाः स्वधाम्नि, ततो भवन्तं प्रणमामि कामम् ॥५॥ जैनाऽब्ज संबोधन पूर्णचन्द्रं, सत्सेवके कामित कल्पवृक्षम् । युगप्रधान स्तुत साधुसूरिं सूरीश्वरं श्रीजिनदत्तसूरिम् ॥६॥ (युग्मकम्) न रोगशोका रिपु भूतयक्षाः, न वाग्रहाः राक्षस देवरोषाः । न पीडयन्ते तव नाम मन्त्रात्, तस्मान्नराणां शिवदायकस्त्वम् ॥७॥ इद गुरोरष्टक मुत्तम यः, प्रभात काले पठते सदैव । किं दुर्लभं तस्य जगत्त्रयेऽपि, सिध्यन्ति सर्वाणि समि हितानि ॥८॥ इति ॥

॥ तृतीयाऽष्टकम् ॥

सुरकिन्नर वन्दितयत्क्रमलं, यशसा समलंकृतभूमितलम् । गत पाप मलं चरितैर्निर्मल, जिनदत्तगुरुं प्रणता विरलम् ॥१॥ भुवनत्रयसारियशः पटलं, खल मण्डल खंड नतः प्रबल । विषमायुध वर्गदलं सरलं, जिनदत्त गुरु प्रणमामि कलम् ॥२॥

विषम स्थलपाति जनोद्धरणं, शरणंमहसां भविनां शरणम् ।
हरणं तमसा कमलाकरणं, प्रणमामि गुरुं शरणं प्रवलम् ॥३॥
वरपालित दुष्कर सच्चरणं, सुरमानुप कीर्तितसच्चरणम् ।
जितदुर्जयचंचलभृत्करणं, सुगुरुं प्रणमामि लसत्करणम् ॥४॥
नरपैर्महितं मुनिपैर्विनुतं प्रमदैं रहितं क्षमया सहितं । न
परैश्चलितं न भयैः स्खलितं, प्रणमामि गुरुं भुवने विदितम् ॥५॥
परमाऽऽगम स्वच्छमति ग्रथितं, रमया ललितं सुजनैर्मिलितम् ।
सरसैः कथितं रुचिभिर्लसितं, प्रणमामि गुरुं कविभिर्ध्वनि-
तम् ॥६॥ भव ताप हरं शिवशर्मकरं, धनधान्यभरं कृतमुत्प्रचुरं ।
करुणा निलयं मुनिप्राग्रहरं, जिनदत्तगुरुं प्रणमामि वरम् ॥७॥
वरवाच्छग मन्त्रिसुतं सुखदं, कृत वाहड्देविमनः प्रमुदम् ।
विगतव्यसनं हितदं सम्मुदा, मुनिराजमहं प्रणमामि सदा ॥८॥
श्री मच्छ्रीजिनदत्तसूरि सुगुरोः कल्याण वल्लीतरोर्लब्धेरेक
निधेः सुबुद्धि जलधेर्भाषां निधेश्चिन्निधेः । प्रत्यूपेविधिना
समर्थ मुनिना लब्धं गुरोरष्टकं ये ध्यायन्ति नरा भवन्ति
सततं वागीश्वराः (वाग्गीधराः) श्रीधराः ॥९॥ इति ॥

॥ चतुर्थाऽष्टकम् ॥

यो दृष्टः स्मरणं गतोऽपि सततं दिव्यैः स्तवैः संस्तुतैः ।
भक्तै भक्तिपरैः श्रुतोऽपि कुरुते सर्वार्थ सम्पादनम् ॥
दुःखान्तं तनुते ददाति सुमतिं कारुण्यवारांनिधिः ।
स श्रीमान् जिनदत्तसूरिरवतादस्मान् स्वपक्षाश्रितान् ॥१॥

तत्र उतिनति नामान्यप्यघं पानयन्ति ।
दद्ति परमशान्ति दिव्य भोगान् जनेभ्यः ॥
जिनपदयुत तस्मादादरात् दत्तसूरे ।
रुचिर वचन पुष्पैरर्चनं ते करोमि ॥ २ ॥
अशुभ मतिरसत् प्रवृत्तिसक्तः ।
सतत मनार्य निशालसगमत्तः ॥
अनुदिनंकृत पापबन्ध युक्तः ।
पुरुपपशुर्यदि माहशोऽर्चयेत्वाम् ॥ ३ ॥
विमलमतिरभत् तरः प्रशान्तः ।
शुचि चरितो खिल सत्व मित्र भूतः ॥
प्रिय हित वचन स्तव प्रसादाद्भवति ।
भवति जनोजिनदत्तसूरिवर्यः ॥ ४ ॥
सकलशीलगुणांबुद्धिरापदः ।
सपदि यो विनिर्वर्तयपति स्मृतः ॥
सकलसौख्यकरः सकलान् जनान—
वतु सूरिरसौ जिनदत्तकः ॥ ५ ॥
यस्य प्रसाद कलया सहसाधपगु ।
मूकाकुलीन गदिनोऽपि निरस्त दोपाः ॥
दोपाधिनाथसुभगाः सकलार्थपूर्णा ।
स्तुप्तिकतादिकरयोः करयोर्भवन्ति ॥ ६ ॥
स त्वं निजानुचर दुर्गति दौर्मनस्य ।

दुःस्वप्न संकट हरो निज दर्शनेन ॥
उद्धर्तुमात्मचरण प्रवणान्मनुष्या ।
नागत्यतिष्ठति यतो मरुदेशमध्ये ॥ ७ ॥
उद्यत्दिवाकरकरप्रतिम प्रभावो ।
लोके विनाशयति जाड़्यतमोवितानम् ॥
उद्बोधयन् सुजनबोध सरोजवृन्दं ।
श्रीमानयं विजयते जिनदत्तसूरिः ॥ ८ ॥
तावद्भयं द्रविणगेहसुहृन्निमित्तं ।
यावन्न ते स्मरति पादयुगं मनुष्यः ॥
सं सेवतां सुरतरोरिव ते प्रसादः ।
सेवानुरूप फलदो जिनदत्तसूरिः ॥ ९ ॥
त्वा मात्तरूपमनघं जगतीह लोका ।
आचक्षते हि जिन शासन पालनाय ॥
मां देहगेहधनधर्म जनाद्युपेतं ।
पाहीश ! विक्रमपुरे जिनदत्तसूरिः ॥ १० ॥
नीहारांशुतनूनयाद्गगनसत्संर्वसहासंसिते ।
गच्छत्यब्दगणेधरापतिवर श्रीविक्रमादित्यतः ॥
मासिप्रोष्ठपदाभिधे सितदले राका तिथौ शोभने ।
प्रातश्चित्र शिखंडिरूनुदिवसे श्रीलोकबन्धूदयो ॥ ११ ॥
बीकानेरपुरे वरे खरतराम्नाधिराजेजनान् ।
पूज्य श्रीजिनहंस सूरिसुमतो धर्माय संशाम्यति ॥

रत्नौ धैर्गुणवृन्दछन्दकलितैः भूयात्सदाश्रेयसे ।
व्यालेखि स्तवनामिमासु गुरुकंनिद्रामलालेन वै ॥ १२ ॥

॥ इति ॥

॥ श्री जिनकुशल सूरेरष्टकाणि ॥

यो नप्तृनिव सेवकानपि सदा बर्भर्तिकुर्वन्मुदम् ।
निच्छिन्दन् विपदं ददच्छुभपदं सम्पादयन् सम्पदम् ॥
मन्यन्ते च यकं पितामहतया निश्चेत्र विश्वे जनाः ।
सोऽय वः कुशलानि जैन कुशलश्चक्रर्त्तु विद्याचणः ॥१॥

येऽरण्येषु पिपासवः प्रपतिता दध्युर्गुरूं मानसे ।
तानागत्य वितत्य मेघमतुलं वाः पाययामास यः ॥
योऽद्याप्येष उदन्यतो बहुजनान् कवापयेद् ध्यानतः ।
सोऽय वः कुशलानि जैनकुशलश्चक्रत्तु विद्याचणः ॥२॥

लोलोल्लोल तिमिङ्गिलाकुलतमे सिन्धावगाधे भृशम् ।
मज्जन्त प्रविलोक्य सेवकगण सत्त्रावहित्रेण वै ॥
य स्तूर्णं तमतीतरत् सकुशलं दोर्भ्यां गृहीत्वा दृढम् ।
सोऽय वः कुशलानि जैनकुशलश्चक्रत्तु विद्याचणः ॥३॥

वारीशोत्तरणे रणे प्रहरणे नागे नगे पन्नगे ।
झञ्झाया निकटे भपे भपकुटे घट्टेऽरघट्टेऽचटे ॥
ध्यानाद् यस्य मनागपीह लभते नो इति-भीती नरः ।
सोऽय वः कुशलानि जैनकुशलश्चक्रर्त्तु विद्याचणः ॥४॥

त्वं चेदेनमनेनसं सकृदपि स्नेहादसेविष्यथाः ।
रासेवैत्य रमा मनोरमतमा त्वां पर्युं पासिष्यत ॥
इत्यादिश्य वयस्य मिभ्य मनुजा यस्यांह्रिमर्च्चन्त्यहो ? ।
सोऽयं वः कुशलानि जैनकुशलश्चक्र्कर्त्तुं विद्याचणः ॥५॥
धन्या जैतसिरीप्रसूर्जनयिता मन्त्री च जेलागरो ।
यस्मै जन्म ददी ददौ यतिगुणान् श्री जैनचन्द्रो गुरुः ॥
व्युत्पन्नाय तु सूरि मन्त्र सहितं सोवं पदं प्रदत्तवान् ।
सोऽयं वः कुशलानि जैनकुशलश्चक्र्कर्त्तुं विद्याचणः ॥६॥
श्रेयः श्रेयस ओजसा शुभयशा यः स्वर्गमध्या सितो ।
ने दीया निव हर्षयत्यनुदिनं भक्तान् दवीयानपि ॥
यो लोके कमलाकरान् रविरिव प्रौढप्रतापोद्यतः ।
सोऽयं वः कुशलानि जैनकुशलश्चक्र्कर्त्तु विद्याचणः ॥७॥
दद्यादद्य धनीयते बहुधनं स्त्रीकाम्यते सुस्त्रियम् ।
यो भक्ताय जिगीषते च विजयं सुत्यै सुतान् दासते ॥
यत्कीर्तिः प्रसरीसरीति सततं कौ कौमुदीव स्फुटं ।
सोऽयं वः कुशलानि जैनकुशलश्चक्र्कर्त्तुं विद्याचणः ॥८॥

सत्काव्याऽष्टक मष्टधी गुण युतोऽदः पूतरूपः पठुः ।
सच्चेता उपर्वेण वंद्य हर हर्यः सप्तकृत्वः पठेत् ॥
तस्मै श्रीविजयादि हर्ष गुरुतां सद्धर्म शीलोदयो ।
ददाति प्रभु रेष जैन कुशलः साक्षादिव स्वद्रुमः ॥९॥

पंञ्चे पञ्चम् अरके । विषमे घनतापकारके वस्मान् ॥
सुरतरुरिव यो जीवान् । सुखयति सच्छाय मधिक दद ॥२॥
यत्कीर्त्तिप्रस्फूर्त्या । विचित्रमपिचित्रितं हि भुवनतलम् ॥
विशदमिव भाति सर्वं । तं सतत कीर्त्तयामि हितात् ॥३॥
योऽरण्ये पूदन्यत इह । चापः पाययत्यहो अभिकान् ॥
असमयजातघनौघं । विकुर्व्य विद्युत्स्तनितमिश्रम् ॥४॥
धनी धनैरपि मनुजः । सुतैरपि स्यात् सुती परमभक्तः ॥
सुखी सुखैरपि नित्यं । भवतः शुभदृष्टि सृष्टिचयात् ॥५॥

॥ इति ॥

॥ तृतीयाष्टकम् ॥ छन्दः । त्रिभङ्गी

यो भूमीपृष्ठे पृथुलगरिष्ठे गाढगरिष्ठे भातितराम् ।
यः कृच्छ्रे कल्पमौर्व्याध्यक्ष सर्वसमक्ष दातितराम् ॥
कुर्वन् निरपायं सौख्यन्तराय छेदितमाय बुद्धिगुरुम् ।
तं वारं-वार सेवे स्फारं सच्छीकार कुशलगुरुम् ॥१॥
यं दर्पकरूपा मधुरसकूपाः शश्वद् भूपाः सेवन्ते ।
यं नामं-नाम सदा प्रकाम पूरितकामं देवं ते ॥
यस्य द्वेषा सुषमा रेखा दृष्यल्लेखा निरवगुरुम् ।
तं वारं-वार सेवे स्फारं सच्छीकार कुशल गुरुम् ॥२॥
येन च धनदावं प्रज्वलदाव समृतभाव पुर कृतम् ।
यन्निशितं शस्त्रं मृदुशत पत्रपत्त्रीपत्र विषममृतम् ॥

धरणी गमनानां त्वध्यानानान्तर मानानां सावधुगुरुम् ।
तं वारं-वारं सेवे स्फारं सच्छ्रीकारं कुशलगुरुम् ॥३॥
यस्मै भूहरये दीप्त्या हरये भयगज हरये भवतु नमः ।
कामितफलकर्त्रेऽमरविहर्त्रे जगतोभर्त्रे पुनर्नमः ॥
श्री करणाप्रभवे मुनिताप्रभवे विश्रुताविभवे सफलतरुम् ।
तं वारं-वारं सेवे स्फारं सच्छ्रीकारं कुशलगुरुम् ॥४॥
यस्माद् गुरुनाम्नो बहुगुणधाम्नस्तव गुणदाम्नोनुः परमान्नेशुः ।
सापायाः सदान्तराया दुःखनिकाया गतभूमात् ॥
स भवति श्रेयो यस्माच्छ्रेयो बहुलप्रेयो धर्मगुरुम् ।
तं वारं-वारं सेवे स्फारं सच्छ्रीकारं कुशलगुरुम् ॥५॥
यस्य श्रीस्तूपाः पूता यूपा इव सद्रूपा भुवनतले ।
सत्केतूलङ्गा लसत्सुरङ्गा नानाभङ्गाः सन्त्य खिले ॥
चन्दनघनसारद्याश्रितसारा गन्धोदाराः शान्तगुरुम् ।
तं वारं-वारं सेवे स्फारं सच्छ्रीकारं कुशलगुरुम् ॥६॥
यस्मिन्मार्त्तण्डे तेजश्चण्डे भारतखण्डे समुदिते ।
तम इव न व्याधि क्वेव दुराधिः स्वान्तसमाधिः स्यात् प्रीते ॥
न च बन्दी रोगा न च दुर्योगा भासुरभोगा भूमितरुम् ।
तं वारं-वारं सेवे स्फारं सच्छ्रीकारं कुशलगुरुम् ॥७॥
करुणारससागर ! नुतनतनागर ! जनकृतजागर शुभशालिन् !
द्वेष्टं पूरय दुःख दूरय शत्रुश्चूरय मुनिमालिन् ! ॥

भक्त्या भक्तानां त्वत्सक्तानां त्वद्रक्तानां सुखित मरुम् ।
त वारं-वारं सेवे स्फारं सच्छ्रीकार कुशलगुरुम् ॥८॥

॥ कवित्वम् ॥

विघ्नद्रुम गजराज ! रुचिर निरुदानां धारय ।
कलियुगसुरघटतुल्य ! निपुलविद्यानांपारय ॥
विजय हर्षतानृणाम् विजयवर्द्धनसत्काराम् ।
निदधच्चरितंदेव धरणितलजीवाधाराम् ॥
जिनचन्द्रसूरिपट्टे स्थितस्तावद् विजयस्व द्रुतम् ।
यावत् सुराद्रिसूरी त्वक ज्ञानतिलकदो निश्रुतम् ॥६॥

॥ इति ॥

॥ चतुर्थाष्टकम् ॥

सुख सर्वा मपद् वसति पदयोर्यस्य वदने ।
निनिद्रा वागीशा हृदयकमले मंचिदधिकम् ॥
विरागः सर्वाङ्गेष्वपि च भगवद्भक्तिरनिशम् ।
समृद्धयर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥१॥
निशि स्वायाधीन निशदिनमधीनौ समयीनाम् ।
पर वाणीर्लक्ष्म्यो निलियमपि तद्दाननिपुणौ ॥
सदा यौ वर्त्तेते जयत इव पाथोज युगलम् ।
समृद्धयर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥२॥

क्षिपन्तौ तौ प्रेक्षां सरसिरुहयोर्यौं मृदुलयो- ।
र्जपापुष्पाभासोः किशलय जिताशेष महसौ ॥
लसल्लेखालक्ष्म प्रकटितवरा श्रीसदनयोः ।
समृद्ध्यर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥३॥

सुरेभ्यः स्वस्थेभ्यः कतिपयदिनैर्यः फलमथो ।
कदाचिद्दत्तद्राक्श्रियमपि दरिद्राय परमाम् ॥
सुरद्रुं त्यक्तोपासत इति बुधौ यौ भुविगतौ ।
समृद्ध्यर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥४॥

सुरैरास्वाद्यन्ते परमगुरुधर्मोपदिशतः ।
सदा कामं पीतामृतरस वरांशैरपि गिरः ॥
श्रुता यस्य श्रेयः श्रियमपि दिशन्ति स्थिरधियाम् ।
समृद्ध्यर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥५॥

निधिस्सर्वाश्रीणामनधि करणौ सर्वविपदाम् ।
मृदुस्निग्धौ शोणानुपचितनखौ गूढघुटिकौ ॥
समानौ प्रोत्तुङ्ग प्रपदपदशाखा विलसितौ ।
समृद्ध्यर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥६॥

ययोरर्च्चा सूते धनसुखधरा धामरमणिः ।
शरीरारोग्यत्वं विनयनय विद्या निपुणताम् ॥
गुणानौदार्यादीनपितनयलक्ष्मीः श्रितनृणाम् ।
समृद्ध्यर्थं वन्दे कुशलगुरु देवस्य चरणौ ॥७॥

भयंकारागारा मयसमरवारीन्द्र फणभृ- ।
न्महापारावारः द्विरदवन वैश्वानरभवम् ॥
न डाकिन्याद्युग्रग्रह गरलजंयत्स्मरणतः ।
समृद्ध्यर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥८॥
इत्थ श्रीजिनपद्मसूरि रचित दिव्याऽष्टकं सद्गुरोः ।
पुण्यं मंत्र मय मनोज्ञ फलदं पापौघविध्वसनम् ॥
भक्त्या यः पठति प्रभातसमये सर्वत्र तस्य ध्रुवम् ।
वश्या भूपतयो भवन्ति सततं लक्ष्मीश्चिरस्थायिनी ॥९॥

॥ इति ॥

॥ पद्ममाष्टकम् ॥

पद्मा कल्याणविद्या कमलपरिमलस्फूर्तिभानुप्रकाशः ।
प्रीतिस्फीत्याभिकृत्य क्रमकमल मिलन्मानवा मर्त्यनागे ॥
प्रौढाचार्या नलीभिः सदतिशयकृते ध्येयजेयं स्वभानः ।
स्वातादेरावरे श्रीजिनकुशलगुरो स्तूपरूप प्रसादः ॥१॥
संघे ग्रामे पुरे वा सकलजनपदे राजवर्गे कुटुम्बे ।
गच्छे संघाटके वा प्रमुदितमनसा वासरे वा निशायाम् ॥
यन्नामस्मर्यमाण भवति भयहरं सर्वसंपत्तिकारी ।
श्रीमान्शान्तप्रतापी जिनकुशल गुरुर्नस्त्वधन्योस्तिलोके ॥२॥
सर्वक्ष्मापालमाला परिषदि विबुधश्रेणिवेणी सभायाम् ।
वाद व्याख्यान गोष्ठी सुललित रचनान्यासविन्यासजन्यम् ॥
सौभाग्य त्वत्प्रसादाद्विमल शशिकला कान्तिकीर्तिः पदस्मात् ।
त्रैलोक्य ख्याति सूरिकुशलगुरो जिन वांछितं मे प्रदेहि ॥३॥

सामर्थ्यं सर्वशास्त्रे स्ववचन पटुतां तार्किकत्वं कवित्वम् ।
निष्णातस्त्वं शब्द शास्त्रे समय निपुणतां चारुनैमित्तिकत्वम् ॥
ईहध्वे जागरूकं यदि महिमकरीं निर्मलां सर्व्व विद्याम् ।
सेविध्वंत त्रिशुद्ध्या जिनकुशलगुरुं कामिते कल्पवृक्षम् ॥४॥

अङ्गे वङ्गे कलिङ्गे मगधजनपदे गुर्ज्जरे मालवे वा ।
सौराष्ट्रे मेदपाटे मरुपुकिमपुरं भूर्भुवः स्वस्त्रयेऽपि ॥
ग्रीष्मे निर्नीरदेशे ललित वितरणाभीष्टदान प्रवृत्ताम् ।
कीर्तिस्ते विस्तरन्ती जिनकुशल गुरो पावयत्येव विश्वम् ॥५॥

सिद्धिः स्वपाणिपद्मे विलसति हि यया स्वान्यसौख्योदयः स्या- ।
द्भाले सौभाग्य लक्ष्मीरधिवसति ययोत्सर्प्पति श्रीरभीष्टा ॥
बुद्धिः साकापि चित्ते स्फुटति किल यया कृष्यते सर्वदात्वम् ।
त्वद्भक्तां नराणां जिनकुशलगुरो दुर्ल्लभं नैव किंचित् ॥६॥

वार्धौवायुप्रवेगप्रजनित वहनोत्पात संघात मध्ये ।
ज्वाला जिव्हे कराले ज्वलति चयरतस्त स्करोपद्रवे वा ॥
क्ष्मापाले क्रोधरुद्धे हरिकरिभुजगा भोगरागादि योगे ।
ध्यान्ति त्वत्प्रभावं जिनकुशलगुरो नैव कष्टं लभन्ते ॥७॥

सूरीन्द्र श्रीसुधर्माप्रभुपदवितता चार्यवर्यानुधुर्या ।
मासो दोद्यत्प्रभावो विशदखरतरश्लाघ्य गच्छेश्वरत्वम् ॥
सम्यग् ज्ञानक्रियाभ्यां जिनमतमतुलं प्रौढ मारूप्य रूपाम् ।
प्राप्त स्वर्गश्रियं श्रीजिनकुशलगुरुर्वाञ्छितं वः पिपर्तु ॥८॥

श्री जिनकुशलगुरूणा मिष्टक मिष्ट सिद्धि ।
बुद्धिकर यः पठति गुणात् सतत सः स्याङ्क्षोक्ता च वक्ता च ॥९॥

॥ इति ॥

॥ षष्टाष्टमाष्टकम् ॥

नतनरेश्वर मौलिमणि प्रभा ।
प्रवर केशर चर्चितपद्युगम् ॥
मरुपु मुख्य गडालय मण्डितम् ।
कुशलसूरिगुरु प्रयतः स्तुवे ॥१॥

कति न सन्ति कियद्वर दायिनो ।
भुविभवान् सुगुरुर्मयिकाश्रितः ॥
सुरमणिर्यदि हस्तगतो भवेत् ।
किमपरैकिंल काशकपर्दकैः ? ॥२॥

कठिन कष्ट समा कुलवर्त्मनि ।
प्रवरसौख्य समन्वित सद्मनि ॥
मम हृदि स्मरणं तव सर्वदा ।
भवतु नाम जपस्तु मुखे मुदा ॥३॥

विकट संकट कोटिपु कल्पत- ।
स्तनुभृतां विपमानय नासमा ॥
सुगुरुराज ! तवेप्सित दर्शनाद- ।
नुभवन्तिर मनोरथ पूर्णताम् ॥४॥

नृपसभासु यशो वहुमानता ।
विविध मान जने जयवादता ॥
सुपरिवार सुशिष्य परंपरा- ।
स्तव गुरो सुद सास्युरनंतरा ॥५॥
न खलु राजभयं न रणाद्भयं ।
न खलु रोगभयं न विपद्भयम् ॥
न खलु वन्दियं न रिपोर्भयम् ।
भवति भक्तिभृतां तव भूस्पृशाम् ॥६॥
अपरपूर्व सुदक्षिण मंडले ।
मरुषु मालवसिद्धिषु जंगले ॥
मगध माधुमतेष्वपि गुर्ज्जरे ।
प्रतिपुरं महिमा तव गीयते ॥७॥
मम मनोरथ कल्पलतासुना ।
कुशल सूरिगुरो ! कलिताधुना ॥
अवर भाग्य वलेन मया नया ।
यदमृतं ददते तव दर्शनम् ॥८॥
शशिधर स्मर बाण रसं च्छवि ।
प्रमित विक्रम भूपति संवति ॥
"समयसुन्दर" भक्ति नमस्कृतः ।
कुशल सूरिगुरु भवताश्रये ॥६॥

॥ इति ॥

॥ सप्तमाष्टकम् ॥

श्री देवराजपुर मण्डनमाप्त पूज्य ।
आनन्दचन्द्रजलराशि मनन्त लाभम् ॥
श्रीजैनचन्द्रगुरुपट्ट सुवर्ण शैल ।
सत्पुष्प फुल्लित सुवासन विष्टराभम् ॥१॥
वन्दे नित्यं सुजिनकुलं पापवन्हाम्बुतुल्यम् ।
लक्ष्मीवल्ली जलधर समम् रोगरेवाशुगाभम् ॥
यस्यानन्ताः खखनखमिताविभ्रू देपाऽपिलोला ।
पार नासाद्यन्ति कथमपि कथयन् मद्गुणानां कुतोमि ॥२॥
भीष्माकारस्सकलजनतास्त्रासयन् भिल्ल तुल्यो ।
नभ्राड्दुष्टं रसित मसितं चक्रमित्थं विधाय ॥
नीरं दत्ते जिन कुशलगुरुर्निर्मलस्याम्बुजस्य ।
साम्य कुर्यात्कथमथघनो ग्रीष्म दत्तोदकस्य ॥३॥
द्वासप्ततिस्तास्सुगुरोः प्रपूर्णाः कलामनित्यं महिपोडशापि ॥
श्रेव सचिन्तस्य निशाधियस्य, च्छायाकदम्बाद्वदने बभूव ॥४॥
किं मन्त्रतन्त्रजटिकौषधियन्त्रमुख्यैः कार्यं यदाभवति च ते सूरिराजः ॥
व्रोद्यत्प्रताप सहितस्तमसापहन्ता । किं दीपकैरहर्निचेदुदि दिनेन्द्रः॥५
चेतश्चेतस्ततो नैव, कार्यं मार्यं जनैकदा ॥
ध्येयोमेया गुणैः सिद्धि । त्राज्य साम्राज्यदः प्रभुः ॥६॥
तेपामशेपा माधत्ते । रामामामा पद्मः प्रभुः ॥
गेहे स्नेहेन ये कुर्युः । शुद्ध ध्यानं गुरोस्सदा ॥७॥

जिनकुशलगुरूणां त्रुद्धितः मद्गुरूणाम् ।
द्यु तिजिततरणीनां दान चिन्ता मणीनाम् ॥
क्रमकजपरिचर्यां यो विधत्ते तिवर्याम् ।
स भवति नरनाथः सिद्धि लक्ष्मीसनाथः ॥८॥
कष्ट कंदल मष्टको मयाकारि । खरतर गच्छ सद्गुरोः ॥
ईप्सित प्रदं मनल्प सौख्यदं । रत्नसोम समसद्यः शोभदम् ।९।

॥ इति ॥

समय सुन्दरोकृत छन्द

सुगुरु जिणचन्द सौभाग्य सखरौ लियौ,
चिहुँ दिशै चन्द्र नामो सवायौ ।
जैन शासन जिके डोलतौ राखियौ,
साखियौ जगत सगलै कहायौ ॥ १ ॥
अेक दिन पातिशाह आगरै कोपियौ,
दर्शनी अेक आचार चूकौ ।
शहर थी दूरि काढौ सवे सेवड़ा,
मेवड़ा हाथ फुरमाण मूक्यो ॥ २ ॥
आगरै शहर नागौर अरु मेड़तै,
महिम लाहोर गुजराति मांहै ।
देश दन्दोल सबलौ पड्यौ तिहां किणे,
तुरत ना पंथिया तुंबकं वाहै ॥ ३ ॥

दर्शनी केई पर द्वीप में चढ़ि गया,
केई नाशी गया कच्छ देशे ।
केइ लाहोर केइ रह्या भूंहि मां,
दर्शनी केई पाताल पैसे ॥ ४ ॥
तिण समय युग प्रधान जगि राजियौ,
श्रीजिनचन्द्र तेजै सवायौ ।
पूज्य अणगार पाटण थकी पांगुर्या,
आगरै पातिश्या पास आयौ ॥ ५ ॥
तुरत गुरु राय नैं पातशाह तेडिया,
देखि दीदार अति मान दीधा ।
अजब की छाप फुरमाण करि आखिया,
केडला गुनह्न सहु माफ कीधा ॥ ६ ॥
जैन शासनतणी टेक राखी खरी,
ताहरै आज कोई न तोलै ।
खरतर गच्छ नैं शोभ चाढी करी,
"समय सुन्दर" बिरुद सांच बोलै ॥ ७ ॥

॥ इति छन्द सम्पूर्णम् ॥

॥ श्रीजिनचन्द्रसूरि अष्टकम् ॥

श्रीजिनदत्त सुरिन्दपय । श्रीजिनचन्द मुणिन्द ॥
नय (?) रमणि मंडित भालयस । कुसल कुमुद वणचंद ॥१॥
सवत सिव सचाणवय । सदद्दमि सुदि जम्मु ॥

रासल तात सुमातु जसु । देल्हण देवि सुधम्म ॥२॥
संवत बार तिरोत्तरय । फागुण नवमि विसुद्ध ॥
पंच महव्वय भरि धरिय । बालत्तणि पढ़ि बुद्ध ॥३॥
बारह सइ पंचोतरइ ए । वैशाखह सुदि छट्ठि ॥
थापिउ विक्कमपुर नयरि । जिणदत्त सूरि सुपट्ठि ॥४॥
तेविसइ भाद्रव कसिणि । चवदसि सुह परिणामि ॥
सुरपुरि पत्तउ मुणिपवर । श्री जोयणिपुर ठामि ॥५॥
सुह गुरु पूजा जह करई ए । नासय तासु किलेस ।
रोग-सोग आरति टलइ ए । मिलई लच्छि सुविशेष ॥६॥
नाम मंत्र जे मुख जपइ ए । मणु तणु सुद्धि तिसंझ ॥
मनवंच्छित सवि तसु हुवई । कज्जारंभ अवंझ ॥७॥
जासु सुजसु जगि झिगमिगै ए । चंदुज्जल निकलंक ॥
प्रभु प्रताप गुण विप्फुरइ । हरइं उसर अरि संक ॥८॥
इय श्रीजिनचन्द्रसूरि गुरु । संथुणिउ गुणि पुन्न ॥
श्री "पुण्यसागर" वीनवई । सहगुरु होउ सुप्रसन्न ॥९॥

॥ इति ॥

॥ श्रीजिनकुशलसूरीश्वर अष्टकम् ॥

विपुल विशदकीर्तिर्विष्टपे वर्ष्टतीति । भवति च समसिद्धि र्जातकार्यस्य तेषाम् ॥ निजहृदि गुरुभक्ता मानवाः सादरं ये । जिनकुशल गुरुणांपादपद्मं श्रयन्ते ॥१॥ जिनकुशलगु-

रुणां नाम जीवातुतुल्य । हृदयकमलमध्ये नित्यमाराधयन्ति ।। अमिनवधनबुध्या वश्यमायान्ति तेषाम् । सुरयुवति सरूपाश्चारूपा मृगाद्यः ॥२॥ बाढे तृषाक्रान्तनिहस्तदेहाः । शुष्कास्य जिव्हौष्ठ विनिर्गताक्षाः ।। श्रीमद्गुरूणा चरणाभि पन्ना । भवन्ति पान्था जल पूरिताशाः ॥३॥ भूर्यापदस्तस्य सुसपदः स्युः दुष्टोप्यनिष्टोऽपि भवेद्विशिष्ट । कृत्स्न प्रकृष्णा निलयं प्रयाति । योनामधेयं हृदये दधाति ।४। ये पुण्यैर्गुरुपादपद्म युगलीं चर्च्चन्ति भक्ता नताः । सद्गन्धैर्हिमवालुकामृगमदासङ्गाश्रितैर्दीपनैः ।। स्वप्ने तान्न विलोकयन्ति विपदो दुष्टा यमा भीतयः । सेवन्ते सकलाः श्रियेऽपि सततं श्रेयांसि भूयांसि वै ।।५।। चेद्राज्य गजवाजिराजिकलित वाञ्छति सान्द्रैः सुखैः । तूर्ण पूर्ण मनोरथान्सुर समान् भोगाश्च नानाविधान् ।। पाण्डित्य पविभृत्पुरोहित निभ ये सद्गुरु ते तदा । पीयूषा मल माधुरैः मृदुपदन्यासैः स्तुवन्त्वाददाव् ॥६॥ शार्दूलोमृगधूर्तकायतिभृश सिह कुरङ्गीयति । व्यालः किञ्चुलकीयति द्विपवरो निर्दग्धवस्तनोयति ।। शत्रुश्चैव सहोदरीयति पुनः सिन्धुस्तडागीयति । नीचस्त्रिजगणीयतीह सुगुरोः सान्निध्यतो मानुषे ।।७।। येषा नाम्नै तनस्युर्जन निकटचराः दुष्टवेताः पिशाचाः । शाकिन्यो नैव भूताः परिभवति पुनो नैव सौदामिनी च ।। कोशाकृष्टैः कृपाणैः रक्तिप्लुत रसना दारुणै व्यासिहस्ता । भीष्माकाराः करालाः परविभवमुषो दस्यवो नाक्रमन्ति ।।८।। कर्णाटे मेद-

पाटे क्षितिधरविकटे सङ्कवे कर्कटेऽपि । सौवीरे सिन्धुतीरे मगध-जनपदे जङ्गलं मध्यदेशे ॥ काश्मीरे कामरूपे व्रतिवसमवतो मालवे दक्षिणेऽपि । सौराष्ट्रे गौर्जरे श्रीजिनकुशलगुरोः सद्-यशः स्थैर्यमेति ॥९॥ नरीनर्तियशः प्रोक्त । मरीमर्तित्रिविष्ट-पम् ॥ सरीसर्ति चतुर्दिक्षु । चरिवर्ति महीतले ॥१०॥ सायं-प्रभाते दिन मध्यभागे । पिता महानां पद मचयन्ती ॥ क्षेमं च सौख्यं गुरु हर्षयुक्तम् । विद्या विलासं विपुलं लभन्ते ॥११॥

॥ इति ॥

॥ दादा गुरुदेव स्तोत्र ॥

(तर्जः—सुखंसर्वासंपद्—शिखरिणीवृत्त)

गुणी ज्ञानी दाता शिव सुख विधाता भुवन में ।
नहीं है कोई भी गुरुवर तुं ही बस तुं हीं ॥
तुं हीं माता तातानुपमगुण भ्राता हितु सखा ।
गुरो दादा नित्यं चरण शरणं ते भवतु मे ॥१॥
तजे मैंने सारे कुपथ मतवाले कुगुरु जो ।
महा मायावी हैं विषय रसरागी मलिन हैं ॥
मिला स्वामी तूं हीं सुविहित—हितैषी यतिपते ।
गुरो दादा नित्यं चरण शरणं ते भवतु मे ॥२॥
तुं ही ज्ञाता त्राता जिनमत यशो विस्तृत विधि ।
प्रभावी नेता है खरतरवराचार विदिता ॥

महापापी हूँ मैं पतित पथगामी तदपि हे।
गुरो दादा नित्यं चरण शरण ते भवतु मे ॥३॥
सुनी ज्ञानी तेरी परम उपकारी सुमहिमा।
पुरे ग्रामे देशे मम विनय भी अेक सुन लो ॥
न होऊं दुःखों से विचलित यही नाथ बल हो।
गुरो दादा नित्यं चरण शरण ते भवतु मे ॥४॥
हटाये लोगों को व्यसन गण से देव तुमने।
सुशिक्षा दे स्वामी सहिर मुझ पे भी अब करो ॥
समर्थों को जो भी निकट निधि है वे सहज हैं।
गुरो दादा नित्यं चरण शरणं ते भवतु मे ॥५॥
उपेक्षा जो मेरी कथमपि करोगे युगवर !।
सहारा कोई भी फिर न मुझ को है जगत में ॥
सुनाता हूँ याते प्रभुवर ! सुनो कान धर के।
गुरो दादा नित्यं चरण शरण ते भवतु मे ॥६॥
न है कोई ज्योति हृदयतम भेदी गुरु विना।
न है कोई दानी परमपददायी गुरु विना ॥
अपापी पापों को सुगुरु हरते हैं इस लिये।
गुरो दादा नित्यं चरण शरण ते भवतु मे ॥७॥
सुखाम्भोधे स्वामी परम करुणा सिन्धु भगवन्।
रहूँ सेवा में, मैं यह बस मुझे नाथ ! वर दो ॥
कहीं भी होऊं मैं प्रणत "हरि" पूज्य प्रभुवर।

गुरो दादा नित्यं चरण शरणं ते भवतु मे ॥८॥

॥ इति ॥

॥ श्री गुरुदेव-वन्दनाष्टकम् ॥

(हरी गीत०)

जो जैन-शासन-भवन के पावन परम आधार थे।
संसार के उपकारकारक धर्म के अवतार थे॥
दादा प्रभावक नामकं गुरुदेव दिव्य गुणाकरं।
जिनदत्त सूरीश्वरमहं वन्दे परम योगीश्वरम् ॥१॥
निज योग बल वर ब्रह्म बल खींचे असुर-सुर सर्वथा।
सेवक बने सविनय करें जिनकी सदा कीरति-कथा॥
सत्यार्थ बोध निधान पुण्य प्रधान नत जन सुखकरं।
जिनदत्त सूरीश्वरमहं वन्दे परम योगीश्वरम् ॥२॥
तत्काल-युग कल्याण हित जिनने विहार यहां किये।
उपदेश दे लाखों जनों को सत्य पथगामी किये॥
अज्ञान का अन्धेर हर कर भर दिया तेजो भरम्।
जिनदत्त सूरीश्वर महं वन्दे परम योगीश्वरम् ॥३॥
पंजाब पंच नदी किनारे पीर पांच उपद्रवी।
जिनके प्रतापाक्रान्त हो हो शान्त वे सेवें सभी॥
संयमि-शिरोमणि पूज्यपाद गुणाभिरामं युगवरम्।
जिनदत्त सूरीश्वरमहं वन्दे परम योगीश्वरम् ॥४॥

की क्षेत्रपालक खोडिया ने एक वार कुचाल थी।
पर पास उन गुरुदेव के सच्ची क्षमा की ढाल थी॥
आखिर स्वयसेवक बना बस मान गुरु को हितकरं।
जिनदत्त सूरिश्वरमहं वन्दे परम योगीश्वरम् ॥५॥
देवोपसर्ग विशेष से जब पंचनद जल बढ़ गया।
आश्रित मनुज तारक तभी गुरुदेव कम्बल हो गया॥
महिमामयं परमोदय विशदान्वयं सुख सागरम्।
जिनदत्त सूरीश्वरमहं वन्दे परम योगीश्वरम् ॥६॥
वर योगिनी चौसठ व बावन वीर जिनके दास थे।
अजमेर आदिक के नृपति भी भक्त जिनके खास थे॥
भगवान जिनहरि पूज्य श्री विभु वीर शासन भास्वरम्।
जिनदत्त सूरीश्वरमहं वन्दे परम योगीश्वरम् ॥७॥
मुनीन्द्र कीर्तित दिव्य जीवन भाव वे प्रख्यात हैं।
इतिहास में वर्णित सभी दर्शन सुखद आबाद हैं॥
निर्भयकर भव-भय-हर अजरामरं जय जय करम्।
जिनदत्त सूरीश्वरमहं वन्दे परम योगीश्वरम् ॥८॥

॥ इति ॥

॥ श्री जिनदत्तसूरि गुरु जीवनाष्टकम् ॥

साधु वेश में पासत्थोंने जब पाखण्ड जमाया था,।
अविधि पूरण आडम्बर का अन्धकार अति छाया था॥

दिव्य-ज्योति प्रकटाई जिनने तव सुविहित-पथ दिनकर की ।
जय हो युगवर परम प्रभावक श्री जिनदत्तसूरीश्वर की ॥१॥

वाच्छिग मंत्री-बाहड़देवी-नन्दन, नन्दन रूप हुये ।
कल्याणाचल राजित विबुधानन्दन यतिजन भूप हुये ॥
जिनकी सेवा करते सुर-नर वृत्ति धरते अनुचर की ।
जय हो युगवर परम प्रभावक श्री जिनदत्त सूरीश्वर की ॥२॥

धर्मदेव पाठक से पंच महाव्रत वीर-प्रतिज्ञा ले ।
बालक पन की लीला में ही दुर्गुण दोष सभी टाले ॥
आतम बल से परिषद्-सेना जिनने जल्दी से सर की ।
जय हो युगवर परम प्रभावक श्री जिनदत्त सूरीश्वर की ॥३॥

श्री जिन वल्लभ सूरीश्वरगुरु पट्ट कमल उल्लासन में ।
षड् द्रव्यों की बाह्याभ्यन्तर प्रकृति के प्रभासन में ॥
जड़ता हरने में फिर करते बराबरी जो भास्कर की ।
जय हो युगवर परम प्रभावक श्री जिनदत्त सूरीश्वर की ॥४॥

सुविधि विषय गुरु पारतंत्र्य की पावन गंगा प्रकटाई ।
त्रिविध तापमय कुविधि विषय कश्मलता जिनने विघटाई ॥
निर्भय हो दी भव्य जीव को भव्य देशना अवसर की ।
जय हो युगवर परम प्रभावक श्री जिनदत्त सूरीश्वर की ॥५॥

जिनने शुद्ध सरलता से ही जिन-सिद्धान्त विचारा था ।
सच्चा है सो मेरा है यों सत्याग्रह को धारा था ॥

हित शिक्षा दे युक्तिपुरःस्सर कुमति हरते जो पर की ।
जय हो युगवर परम प्रभावक श्री जिनदत्त सूरीश्वर की ॥६॥
जिनके नाम मन्त्र जपते ही मिलते हैं वाञ्छित मेवा ।
योग-तपोबल खींचे योगिनी वीर पीर करते सेवा ॥
जिनके भक्तों को न सतावें भूत प्रेत-व्यन्तर मरकी ।
जय हो युगवर परम प्रभावक श्री जिनदत्त सूरीश्वर की ॥७॥
सुख सागर भगवान सुगुरु हैं सच्चे जग में उपकारी ।
ग्राम-नगर-पुर-थम्भ बिराजे परतिख परचा जयकारी ॥
"हरि" गुरु पूजो ध्याबो प्रेमे पावो पदवी शिवपुर की ।
जय हो युगवर परम प्रभावक श्री जिनदत्त सूरीश्वर की ॥८॥

॥ इति ॥

॥ अथ सङ्क्षिप्त श्री जिनदत्त सूरि चरित्र ॥

(हरि गीत)

'श्री सिद्धाचल रैवतगिरि से', पावन 'सोरठ' देश जहा ।
'श्रीधवलक्का' उत्तम पत्तन, स्वर्गपुरी को जीत रहा ॥
वहीं जिन्हों का जन्म हुआ था, मलयाचल में ज्यों चन्दन ।
उन 'दादा जिनदत्तसूरि' वर, पद कमलों में हो वन्दन ॥१॥
पवित्र 'हुम्बड़गोत्रिय मंत्री, वाछिगसा' गृहिणी आर्या ।
रोहण पर्वत भूमिसी थी, 'श्री बाहड़ देवी' वर्या ॥
रत्न रूप जो जन्मे उससे, हृदय तिमिर हरने वाले ।
सत्सुवर्ण सद्रुप विधाता, शिव पथ दिखलाने वाले ॥२॥

वीत कलंक कला निधि जो, सर्वज्ञ मौलि मणि रूप हुये।
"सोमचन्द्र" शुभ संज्ञा वाले, दोपाकर तो भी न हुये॥
तीक्ष्ण बुद्धि से बाल काल में, जानी थी जिनने सारी।
विद्या साक्षी मात्र गुरु के, सर्व शास्त्र में संचारी॥३॥
वरतर 'खरतरगच्छीय वाचक, धर्म देव गणिवर' मुख से।
भोग भुजंग महाविप नाशक, उपदेशामृत पी सुख से॥
शिशु होकर भी मधुर युक्ति से, मात पिता की आज्ञा ले।
उन सद्गुरु का चरणाश्रय ले, साधु मार्ग में शीघ्र चले॥४॥
इन्द्रिय मत्त गजेन्द्र वृन्द को, विना यत्न ही वशी किया।
श्रवण मात्र में गुरु विनय से, जैन तत्त्व को जान लिया॥
'सोमचन्द्र, मुनिवर्य' गुणाम्बुधि, ज्ञाननिधि जब योग्य हुये।
'श्री श्री श्री युगवर श्री जिनवल्लभ सूरीश्वर' स्वर्ग गये॥५॥
'देवभद्र सूरीश्वर' ने तब, जाना गुण पूरण उनके।
पट्ट प्रभाकर 'सोमचन्द्र का' लायक नायक मुनिगण के॥
सम्मान स्नेह से दे शुभ समये, 'सूरिमंत्र' की शुद्ध क्रिया।
संज्ञा 'श्री जिनदत्तसूरि' दे, वर्याचार्य पदस्थ किया॥६॥
'श्री चित्तौड़ दुर्ग' में पाकर, ज्ञान-भूरि सूरि पद को।
प्रवचन युक्ति प्रौढ़ शक्ति से, नाश किया वादी मद को॥
'बावन वीर, योगिनी चौसठ, पंच पीर" प्रभृति उनके।
ब्रह्मचर्य तप योग शक्ति से, थे सेवक नित चरणन के' ॥७॥

'अम्बड श्रावक' शस्त (स्पष्ट) हस्त में, 'अम्मा लेखित लेखलिये।
'युग प्रधान' दर्शन को फिरता, भूरि सूरिजन देख लिये ॥
आया इनके पास दिखाया, हाथ शीघ्र ही तब उसने।
किसी शिष्य ने वाच दिया, जब वास चूर्ण डाला उनने ॥८॥
मरे हुये भी धर्मोन्नति-हित, जीवित जैसे बना दिये।
'व्यन्तर द्वारा' दया सिन्धु ने, कितने ही उपकार किये ॥
पात्र मात्र मे पडती 'बिजली' रोकी थी जिन ने मारी।
दूर किये थे जहा गये वहां, भूत, प्रेत, व्यन्तर, मारी ॥६॥
संघ समुन्नति करके जिन ने, 'एक लाख पर तीस हजार।
'सर्व जाति के जैनेतर को, देकर के नित बोध अपार ॥
जैन धर्म मे वीर बनाये, श्रावक के व्रत को धरनार।
'पन्द्रह सौ, के करीब जिनके, था साधु साध्वी विस्तार ॥१०॥
जिन की यशः सिन्धु महिमा से, स्पर्द्धा को कटिबद्ध हुआ।
मल मलीन जडता परिपूरण, सागर गागर रूप हुआ ॥
जिससे तो यह नीच आज भी, निज छीछरता दुर्गुण से।
ईर्ष्या क्षार विष सदा उगलता, त्याज्य हुआ सज्जनगण से ॥११॥
ऐसे यशोधन महा तपोधन, चारुचरित्र पवित्र सदा।
उत्सूत्रोद्घाटन परिपाटन, करते उचित विहार मुदा ॥
सत्य अबाध्य सदा श्रद्धेय सु, 'स्यादवाद शैली' धरते।
'मरुधर वर अजमेर नगर में', भव्य जीव अघ को हरते ॥१२॥

बारह सौ ग्यारह आषाढ़, सुदी ग्यारह को स्वर्ग गये ।
पुण्य मूर्त्ति पूर्णायु होकर, आत्म ध्यान में लीन हुये ॥
इकावतारी भवभय हारी, सीमन्धर स्वामी बोले ।
उन दादा जिनदत्तसूरि की, 'हरि कवीन्द्र' जय जय बोले ॥१३॥

॥ इति ॥

॥ श्री दादा गुरु देव भगवन् के स्तवन सं ह ॥

तर्ज—वीर बनाने वाले तुमको लाखों प्रणाम ।

दादा देव दयालु तुमको लाखों प्रणाम ।
श्री गुरुदेव दयामय तुमको लाखों प्रणाम ॥टेर॥

मिथ्यामत का मैरु मिटा कर, बोधिलाभ शुभ हमको देकर ।
जैन बनाने वाले तुमको लाखों प्रणाम ॥ १ ॥ दा० ॥
नाम मन्त्र की महिमा भारी, विपति विदारण संपत्ति कारी ।
योगीश्वर गुण वाले-तुमको लाखों प्रणाम ॥ २ ॥ दा० ॥
युगवर सुखसागर उपकारी, हरि जिन शासन में जयकारी ।
दर्शन देने वाले-तुमको लाखों प्रणाम ॥ ३ ॥ दा० ॥

॥ कव्वाली ॥

क्या है अपूर्व दर्शन, गुरु देवजी तुम्हारे ॥
दुःख दूर कीजिये सब, हम भक्त हैं तुम्हारे ॥ टेर ॥

गुरु के बिना जगत् में, है कौन मार्ग दर्शक ।
आया शरण में स्वामी, गुरु देवजी तुम्हारे ॥ १ ॥

चिन्तामणी से बढ़ कर, मन इच्छितार्थ दानी।
सानी न और जग में, गुरुदेवजी तुम्हारे ॥ २ ॥
हरि पूज्य जैन शासन, पावन प्रकाशकारी।
चाहूँ सदैव दर्शन—गुरु देवजी तुम्हारे ॥ ३ ॥

॥ इति ॥

॥ तर्ज—जय बोलो रे पास जिनेसर की. ॥

दर्शन दो श्री गुरुदेव हमें दर्शन दो ॥ टेर ॥

गुरु दर्शन बिन तरस रहे हम। दो दर्शन गुरु देव हमें ॥ दर्शन० ॥१॥ तुम पथ के हम पथिक सभी है। निज पथ देव दिखा दो हमें ॥ दर्शन० ॥२॥ चन्द्र चकोर मोर जिम बादल। तिम तुम दर्शन चाह हमें ॥ दर्शन० ॥३॥ विकसित होत कमल रवि दर्शन। तिम तुम दर्शन हर्ष हमें ॥ दर्शन० ॥४॥ "हरिजिन" शासन भाव प्रकाशन। आत्म प्रकाश दिखादो हमें ॥ दर्शन० ॥५॥ इति ॥

॥ तर्ज—मैं बनकी चिड़िया बनकर बन २ डोलूं रे ॥

श्री दादा गुरु का दिल में ध्यान लगाऊं रे।
जिनदत्त सूरी दादा गुरु के गुण गाऊं रे ॥ टेर ॥

गुरुदत्त जगत जयकारी, शुभ नाम मंत्र सुखकारी। गुरुदत्त सत्य गुणधाम नित्य, निज मन मन्दिर मे लाऊ रे ॥ श्री दादा० ॥१॥ दादा गुरु आप पधारो। सेवक के काज सुधारो।

गुरु दर्श-हर्ष पावन प्रकर्ष-में अपने में लख पाऊं रे ॥ श्री दादा० ॥ गुरु सुख सागर भगवाना, हरि-सागर-सूर समाना। गुण भूप-रूप करके अनूप-दर्शन दुख दूर गमाऊं रे ॥ श्री दादा० ॥३॥ इति ॥

॥ तर्ज—आधार मेरे प्यारे पारस प्रभु हैं आधार. ॥

दातार मेरे प्यारे, दादा गुरु हैं दातार ॥ टेर ॥

दत्त सूरीश्वर दादा गुरु हैं, कल्पतरू के अवतार। अवतार मेरे प्यारे, दादा गुरु हैं दातार ॥१॥ निपुतियों को सुपूत देते, निर्धन को धन के भण्डार। भण्डार मेरे प्यारे दादा गुरु हैं दातार ॥२॥ रोगी कुरूप के रोग मिटाते, जल्दी से रूप सुधार। सुधार मेरे प्यारे; दादा गुरु हैं दातार ॥३॥ निर्बु-द्धियों में शुद्धि प्रयोग तें, करते सुबुद्धि प्रचार। प्रचार मेरे प्यारे, दादा गुरु हैं दातार ॥४॥ सेवो सुगुरु भवि सुरगण नायक, 'हरि' करें जयकार। जयकार मेरे प्यारे, दादा गुरु हैं दातार ॥५॥ इति ॥

॥ तर्ज—सांवरो सुखदाई जांकी छवि वरणी न जाई ॥

परम गुरु सेवा पाई, निजातम ज्योति जगाई ॥टेर॥

श्री जिनदत्तसूरीश्वर दादा, महिमा जिनकी सवाई। सेवा करते सेवक जिनकी, विपदा दूर हटाई। गुरु मेरे हैं वरदाई ॥ परम० ॥१॥ गढ़ गिरनार ये नागदेव को, लिख दे अम्बा माई। युगवर मरुधर सुरतरू जैसे, वांच्छित सुख

फलदाई ॥ सेवे सुर शीस नँवाई ॥ परम० ॥२॥ वीर पीर अरु जोगणियां सब, जो छलने को आई। गुरु के ब्रह्म-योग बलिहारी, देवें नित्य दुहाई॥ गुरु जग कीर्ति जमाई ॥परम० ।३॥ देश देश में थुम्भ विराजे, परचा प्रकट सवाई। सुखसागर भगवान महोदय, पूजो गुरु होके अमाई ॥ सदा गुरु होत सहाई ॥ परम० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ तर्ज—सहाना धमाल ॥

श्री जिनदत्त सुरीन्दा, परम गुरु श्री जिनदत्त सुरीन्दा। परम दयाल दयाकर दीजे, दरशण परमानन्दा ॥ परम०१॥ जङ्गम सुरतरु वाच्छित दायक, सेवक जन सुखकन्दा ॥ परम० २ ॥ सद्गुरु ध्यान नाम नित समरण, दूर हरण दुःख दन्दा ॥ परम० ॥ ३ ॥ निज पद सेवक सानिध कारी, राखिये गुरु राजिन्दा ॥ परम० ॥ ४ ॥ कर जोड़ी विनय युत विनवे, श्री जिनहरख सुरीन्दा ॥ परम० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ तर्ज—प्रभाती ॥

आज की घड़िया सफल भई है, गुरु दर्शन मैंने पाया रे ॥ आज रोम २ आनन्द भयो मेरो, मन में हरख भरायारे ॥ आज० ॥१॥ आशा पूरण सकट चूरण, एहि विरुद धराया है। नाम लेत नवनिधि सुख पावे, दर्शन दुरित पुलाया है ॥ आज० ॥२॥ आरति चूरो वाच्छित पूरो, रिद्धि सिद्धि सुख

दाया है। दिन दिन मुझ घर होत वधाई, आनन्द हर्ष समाया है ॥ आज० ॥३॥ दूर देश में महिमा तेरी, सुनके हर्ष न माया है। मन वच काया एकान्त करीने, तुम से ध्यान लगाया है ॥ आज० ॥४॥ और देव में कभी न ध्याऊं गुरु चरणे चित्त लाया है। सेवक कर जोड़ी इम विनवे, हरख हरख गुण गाया है ॥ आज० ॥५॥

॥ इति ॥

॥ तर्ज—हिरंजा की ॥

सदगुरु जी म्हारां, शरणे आया की लज्जा राखजो। पतित उद्धारण विरुद सुणीने, आयो तुम्हारे पास। अब मन वांच्छित पूरो मेरा, एहिज दिल की आशजी ॥ स० ॥१॥ काम क्रोध मद लोभ तजी ने, तज दियो सब संसार। नव पद नो एक ध्यान धरीने, पाया सहु गुण पारजी ॥ ॥२॥ देश-देश में थम्भ विराजे, परचा जग विख्यात। इण कलि मांहे सुरतरु सरिखा, प्रगट रह्या साक्षातजी ॥ स० ॥३॥ चिन्तामणि और कामधेनु सम, मेरे तुमहीज देव। आण धरुं हूँ ताहरीजी, करूं तुम्हारी सेवजी ॥ ॥४॥ मात-पिता बन्धु तुम जग में हितकारी गुरुराय। राजा राणा सहु जग मांहे, सेवे तुम्हारा पायजी ॥ स० ॥५॥ आज प्रभु तुम चरण पसाऐ सीधा वांच्छित काज। लक्ष्मी प्रधान तुम्हारा दर्शन। मोहन गुणका राजजी ॥ सा० ॥६॥ इति ॥

॥ तर्ज—चाल ॥

गुरु दर्शन पायो मैं आज, मन मे हर्ष घगो ॥ टेर ॥ रोम २ आनन्द भयो मेरे, दुःख संकट गयो भाज। रण में ध्यावे जय २ पावे, तारे जलधि जहाज ॥ मन० ॥१॥ आज की घड़िया सफल भई है, समर्यां वाञ्छित काज। रिद्धि-सिद्धि सुख सम्पति दीजे, महेर करो महाराज ॥ मन० ॥२॥ तुम बिन देव अवर नहीं ध्याऊ पाऊं, सुख समाज। सेवक जाणी सदा सुख दीजे, राखो हमारी लाज ॥ मन०॥३॥ इति॥

॥ तर्ज—भैरवी ॥

सद् गुरु चरण कमल पूजन की लग रही आशा मन की ॥ टेर ॥ गुरु दरबार चलो भविजन सब, भई किरपा दर्शन की ॥ सद्० ॥१॥ भेटो चरण चन्दन कपूर से, तपत मिटे सब तन की ॥ सद्० ॥२॥ बहुत वार तुमने गुरुदाता, टाली विपत भवियण की ॥ सद् ॥३॥ राखो लाज दास माणक की, लीनी शरण चरण की ॥ सद्० ॥४॥ इति ॥

॥ तर्ज—भैरवी – खेमटा ॥

गुरुदेवजी का ध्यान सदा चित्त में लाईये। भव भव के सकल पातक छिन मे मिटाईये ॥ १ ॥ गुरु० ॥ निरुपम स्वरूप जिनका अमीरस से है भरा। निर्मल गुणों को देख के आनन्द पाईये ॥ गुरु० ॥ २ ॥ साहिब सुजान जिनके चरणों

की शरण गही। जागी सुमत सुघर से परम पद को ध्याईये ॥ गुरु० ॥ ३ ॥ दाता दयाल इनके सिवाय जग में कौन है। जिनकी कृपा से बोध हिये में जगाईये ॥ गुरु० ॥ ४ ॥ गुरु भक्ति आन अपने हृदय बीच चुन्नीदास। सेवा में मन को दीजे सुजश मुख से गाईये ॥ गुरु० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ तर्ज—खंमाच – पंजाबी ॥

आज मेरे अभयदेव गुरु रायारे, देखत पाप पलायारे ॥ आज० ॥ १ ॥ चन्दसूरि के पाट पटोधर, दरस देखि हरषायारे ॥ आज० ॥ २ ॥ कर्मोदय से गलित कुष्ठ को, आंबिल तप से हटायारे ॥ आज० ॥ ३ ॥ शासनदेवी वाक्य सुणीने, रोम २ विकसाया रे ॥ आज० ॥ ४ ॥ नव अङ्ग वृत्ति रचना करीने, स्थंभन तीर्थ उपायारे ॥ आज० ॥ ५ ॥ महिमा भक्ति गुरु गुण गावे, पद्मोदय हुलसायारे ॥ आज० ॥ ६ ॥
॥ इति ॥

॥ तर्ज—विलसे ऋद्धि समृद्धि मिली ॥

जय जय आचारज पदधारी। श्री अभयदेव गुरु उपकारी ॥ गुण छत्तिसे अधिकारी। जिनवीर परंपरा उजवारी ॥१॥ शुद्ध मुनिवर सुसंघे परिवरीया। भूमण्डल विचरे गुण दरिया ॥ श्री संघ कमल विकसन सूरिया। गुरु तेज विराजे दिनकरिया ॥ २ ॥ प्रभु उग्रह तपस्या आदरता। दुर्जय

कषाय ने वश करता ॥ नरपति सब पाये परता । सउच्छत्र नगर मे पाय धरता ॥ ३ ॥ इम विचरता गर्जर देश गया । धवलकपुर मध पर करी मया ॥ मास कल्प तिहां गरु रया । शिव मार्ग भाषे करी दया ॥ ४ ॥ शासनदेवी तिहा निशि आवे । प्रगट होय गुरु ने बतलावे ॥ भगवन् ! जागो छो समभावे । गुरु मन्द स्वरे कही समभावे ॥ ५ ॥ जागृत छूं कहो किण कामे । अर्द्धरात्रे आव्या इण ठामे ॥ तब नव कोक्कडा उवी शिर नामें । सुलझावो गुरुजी आवी इण कामे ॥ ६ ॥ आचार्य कहे हम देहे बडी व्यथा । किण रीते सुलझे कहो कथा । उजवालसो जेम शासन यथा । तुम्ह नवाग वृत्ति कर सो तथा ॥ ७ ॥ थभणपुर पास नदी वहे । सेढी तट खखर वृक्ष महे । गौ दुग्ध भरे नित गोपाल कहे । तिहा भूमि तले प्रभु पास रहे ॥ ८ ॥ बहु संघ मलीने तिहा जाओ । नवि स्तवना करी प्रभु गुण गाओ ॥ पास प्रभु थासे तब चाओ । जस्म स्नात्र जले निरुज थाओ ॥ ९ ॥ तिहां सघ सहित सद्-गुरु जावे । जयतिहुअण बत्तीसी कर ध्यावे ॥ ततक्षण प्रभु दर्शन पावे सहु सघने मन आनन्द थावे ॥१०॥ घणे हरखे प्रभुनो स्नात्र करे । वलि स्नात्र जले गुरु तन चुपरे । रोग गयो महिमा पसरे । थभणपुर तीर्थ प्रगट घरे ॥ ११ ॥ नव अङ्ग तणि टीका सुन्दर करे । जिन वयण रयण रचना ही करे ॥ अङ्गोपाङ्ग प्रकरण सुधरे । सुन्दर करी शासन ने उधरे

॥ १२ ॥ देवी स्वीकार्या गुरु साचा । वर ज्ञान क्रिया वली शुद्ध वाचा ॥ खरतरगच्छ नायक जाचा । तेहने कुण बोले काचा ॥ १३ ॥ वहुकाल गयो संयम पाली । प्रति बोध्या श्रावक श्राविका आली ॥ जिनचन्द्र सूरि गुरु उजवाली । छियांलिसमों पाट सुचिर पाली ॥ १४ ॥ श्री गुर्जर देश वर नामें । वलि कपड़ वणज सुगामें ॥ अणशण करी सुर पदवी पामें । चौथे सुर लोके सुख ठामें ॥ १५ ॥ तीजा परमेष्ठी गुरु राया । नव पद में तीजे पद गुण गाया ॥ धन धन पूजे जे गुरु पाया । ऋद्धि सिद्धि मिले निर्मल काया ॥ १६ ॥ श्री खरतर गच्छ सुर तरु राजे । जिहां क्षेम कीर्ति शाखा छाजे ॥ तिहां पाठक शिवचन्द्र राजे । शिष्य रामचन्द्र थुणे हित काजे ॥ १७ ॥ इति ॥

॥ तर्ज — सारंग — कहरवा ॥

बारि जाऊं गुरुराय, चरणन की मैं वारि जाऊं गुरु राय चरण की, चरण की, चरण की चरणन की ॥ टेर ॥

श्री जिनदत्त सूरीश्वर सद्गुरु । सफल घड़ी सेवा चरणन की ॥ वारि० ॥ १ ॥ प्रथम मङ्गल गुरुराय की सेवा । अशुभ करम सब हरणन की ॥ वारि० ॥ २ ॥ दारिद्र भञ्जन अरि सब गञ्जन । पग पग सानिध करणन की ॥ वारि० ॥ ३ ॥ मोहे नहीं परवाह अनेरी । शरण गही इन

चरणन की ।। वारि० ।। ४ ।। श्री जिन हर्ष चरण को दास । आशा पूरो सुख करणन की ।। वारि० ।। ५ ।।

।। इति ।।

।। तर्ज—सहाना – धमाल ।।

सद्गुरु चरण कमल चित्त लावें। मन वांच्छित फल तुरत ही पावे ।। सद्० ।। १ ।। वल्लभसूरि पटोधर कहिये। दत्तसूरि गुरु नाम कहावें ।। सद्० ।। २ ।। चौंसठ योगिनी बावन वीर ही । वस किये गुरु तुमरो गुण गावे ।। सद्० ।।३।। मृतक गऊ जिनवर मन्दिर से । मन्त्र से करके सजीव उठावें ।। सद्० ।। ४ ।। महिमा भक्ति गुरु चरण कमल मे । पद्मो-दय मुनि यह चित्त चावे ।। सद्० ।। ५ ।। इति ।।

।। तर्ज—प्रभाती ।।

ऐसे गुरु ध्याऊ मन वांछित फल पाऊं ।। टेर ।।

जल चन्दन और पुष्प मनोहर । धूप दीप ले आऊ ।। अक्षत और नैवेद्य मधुर रस । विविध भान्त फल लाऊं ।। ऐसे० ।। १ ।। श्री जिनदत्त सूरीश्वर साहिब । तुम निस अरुन ध्याऊ ।। ताल कमाल मृदग झाझ डफ । थेई थेई ताल बजाऊं ।। ऐसे० ।। २ ।। दीन दयाल दया कर दीजे । सुख सम्पत्ति में चाऊ ।। सेवक जाणी सदा सुख दीजे । हरप-हरप गुण गाऊ ।। ऐसे० ।। ३ ।। इति ।।

॥ तर्ज—चाल ॥

हांरे लाला श्रीजिनदत्त सूरीश्वरूं। दादा प्रह उगमत। सूररे लाला ॥ भाव धरी पूजे रादा। घसी कुंकुम मेलि कपूर रे लाला ॥ श्री० ॥ १ ॥ जीती चौंसठ योगिनी वस किया बावन वीर रे लाला ॥ मन्त्र बले करी साधिया। जिन पञ्च नदी पञ्च पीर रे लाला ॥ श्री० ॥ २ ॥ हिंसा टाली जीवनी। जय सिन्ध सवा लाख देश रे लाला ॥ दानव मानव देवता। मांने सहु आण नरेश रे लाला ॥ श्री० ॥ ३ ॥ आज विषम पञ्चम आरे। जेहना मोटा अवदात रे लाला ॥ नामे न पड़े विजली। छल छिद्र न होय तिल मात्र रे लाला ॥ श्री० ॥४॥ युग प्रधान पद जेह ने, देवें प्रत्यक्ष होई दीध रे लाला ॥ पुण्य पुरुष युग परगड़ो। जिणकरणी उत्तम कीधरे लाला ॥ श्री० ॥ ५ ॥ प्रतिबोध्या श्रावक श्राविका। मिल लाख सवा सहु देशरे लाला ॥ जैन धरम दीपावियो। खरतरगच्छ कमल दिनेश रे लाला ॥ श्री० ॥६॥ संवत् बारह ग्यारह में। आषाढ़ शुक्ल पक्ष जान रे लाला ॥ इग्यारस सद् गुरु तणो। अजमेर नगर निरवाण रे लाला ॥श्री० ॥७॥ कामितदायक कलयुगे। साचो सुरतरु अवतार रे लाला। समस्त श्याम घटा करी। महि-यल वरसे जलधार रे लाला ॥ श्री० ॥ ८ ॥ महिर करि मुझ ऊपरे। गुरु पूर निजर निहाल रे लाला ॥ राज हरख कर जोड़ने। वन्दे मन शुद्ध चरण त्रिकाल रे लाला ॥श्री०॥ ९ ॥ इति ॥

* श्री जिनदत्त सूरिश्वर सद्‌गुरु छन्द *

दोहा—वरदायक हंसवाहिनी। शारदमात सहाय ॥
त्रिभुवन सुरु दातार तूं। कीरती क्रित्ती कहाय ॥१॥
जगमांहे पण्डितजी के। वांचे अविरल वाण ॥
ते प्रसाद सहु ताहरो। अगम निगम अहिनाण ॥२॥
वाणी वली व्याकरणरी। वैदक तेम विन्नाण ॥
कवि मुख वासो तूं करे। तद रीझे राजान ॥३॥
श्री सद् गुरु सीखावीया। भाषा षट रस भेद ॥
जण२ मुख वाणी जुई। सुणता वधे उमेद ॥४॥
गाऊं गुण गच्छपति तणा। पदवी युग प्रधान ॥
जगपुर महिमा जागतो। श्री जिनदत्त सुजाण ॥५॥
ज्यां सेव्यो त्यां जाणियो। ओ अवलियो मरद ॥
जलवट थलवट जुगती सुं। समर्यां दिये सवद ॥६॥
इण खोटे पंचम अरे। पुहवी वडी प्रसिद्ध ॥
गाम गाम कोटे गढे। नगर नगर नव निद्ध ॥७॥

॥ छन्द जात सारसी ॥

नवनिद्ध रिद्ध प्रसिद्ध वाधे गुरु जय्यां गह गाट अे।
सुर असुर ऊभा करे, ओलग थान आगल थाट अे॥
परचा देखा सन (जण) कष्ट टालण, गच्छ खरतर सन्त अे।
जिनदत्त सूरीश सद् गुरु, सेवतां सुख अनन्त अे॥ ८ ॥

संवत इग्यारेसै बत्तीसे, सागवाड़ सुराज अे ।
मन्त्रवी वाच्छिग गोत्र हूँ, वड गूंजता गजराज अे ।
तसु घरणी वाहड़ देवी नामें, सत्त शील सझ्यन्त ए ।। जि०६।।
शुभ स्वप्न सूचित पुत्र जनम्यो, वदे कवि वंसावली ।
वाजिया ताल कंसाल बहुविध, राग रंगे मन रली ।।
दश दिवस बोल्या हिवे दसूठण, पोखिया कर पंत अे ।।जि०१०।।
तिण काल तिणहीज समे तिणपुर, देख उच्छव हरख सूं ।
गुरु नाम जिन वल्लभ जति, सर पूजिया कर परख सूं ।।
तप जप्प संयम दयापालक, किरण जिम जसु क्रान्तए ।।जि०११।।
तसु पाय प्रणमी अंग उलट, आण मन उच्छरंग अे ।
इग्यार सै इकताल संवत् ग्रह्या व्रत गुरु संग अे ।।
जिन वचन किरिया शुद्ध साधन, आण मन एकान्त ए ।।जि०१२।।
इग्यार अङ्ग उपाङ्ग बारे, भेद भाव भला भण्या ।
गुरु वचन सहिता विनय वहिता, सूत्र सहि अरथे सुण्या ।।
सतशील संजम शुद्ध समकित, सहु विध सीखन्त ए ।।जि०१३।।
गुरु देख अणिमा शिष्य महिमा, वलिय गरिमा गंजए ।
सगलाही शिष्यों मांहि दीपक, राव राणा रंज अे ।।
उद्योतकारी ने आचारी, शुद्ध धर्म सज्झन्त अे ।। जि०१४।।
अनुक्रमे दिन २ पुण्यवधते, ऊपनी मन आसता ।
पर सिद्ध घट वयराग प्रगट्यो, सरदहे गुण सासता ।।
परिणाम गंगा नीर निरमल, खरीधर मन खन्त ए ।।जि०१५।।

निजपाट थाप्या करी महोच्छव, इग्यारसै गुणहोत्तरे ।
सूरिमन्त्र साधन गुरु आराधन, चंडिका सेवा करे ॥
मन मांह आणि गुरु परंपर, मन्त्र शक्ति महन्त अे ॥जि०१६॥
गुरु विधे पुरगिरि नयर परिसर, सुख निहारे विचरता ।
संवेग रङ्गे साधु सङ्गे, धर्म चरचा चरचता ॥
राजा ने राणा पाय आवे, भेटवा बहु भंत अे ॥ जि० १७ ॥
जालोर नयरे मरिय जाणि, सगर नृप चहुँ आण अे ।
तसु पुत्र बोहित्थ तेण गुरु पय, प्रणमियो गुण जाण ए ॥
जीवाडियो कर जाप जिनदत्त, जैन धर्म सक्षन्त ए ॥ जि०१८॥
अजमेर नयरे तीर्थ पुहकर, रावना हड रङ्ग ए ।
तसु पोतरो वामदेव नामे, कियो उज्जल अङ्ग ए ॥
कूकडा वरणी गायनो घी, चोपडायो सन्त ए ॥ जि० १६ ॥
परचा दिखाले दूरिय टाले, मन्त्र शक्ते मोहनी ।
उपगारकारी दयाधारी, शोभ जग में सोहनी ॥
सोवर्णवर्णी कीध काया, राव सहु रीझंत अे ॥ जि० ॥२०॥
वड वडे गामें ठाम ठामें, भूपति प्रतिबोधिया ।
इक लख ऊपर सहसतीसां, कलू में श्रावक किया ॥
परचा देखाडया रोग झाडया, लोक पायल सन्त अे ॥जि०॥२१॥
मुलतान मीरां पचपीरा, पच नदियां परिसरे ।
चौसठ जोगण वीर बावन, देख दुनिया थर हरे ॥
जयमाल जपतां जापसु, सब आय पाय पडन्त अे ॥जि०॥२२॥

वरसात चौसठ जोगणी, बलि दिया लिया गुरु कने ।
इण ठाम बहिने जिको आसी, मान वलवाकल मने ॥
परिवार पूरे पाटधारी, वचनसिद्ध वधन्त अे ॥जि०॥२३॥
पड़िकमण मांहे बीजना, देखली हु झबकार अे ।
तैं मन्त्र रागी संघ साखी, जग सुजश जयकार अे ॥
तुम्ह पाय लागी सीख मांगी, दुवड़ी ये दीसंत अे ॥जि०। २४॥
अंबड़ सुसावग हाथ अक्षर, दासानुदासादिक सही ।
गुण युक्त प्रकटे प्रगट अक्षर, जाणजे जुगवर यही ॥
परसिद्ध जुगप्रधान पदवी, अंविका वग संत अे ॥जि०॥२५॥
सेतरामरे सिंह सामन्त, तासुसुत आस्थान अे ।
गुरु पाय लागी ऋद्धि मांगी, सकल विधि सुविधान अे ।
पच्छिम दिसि तुम्ह भाग्य फलसी, राष्ट्र वंश वधन्तअे ॥जि०॥२६॥
हिव उच्च नगरे बडे उच्छव, आविया इण थानकै ।
सुरपति पुत्र प्रमाण जाणी, अंजस मन में आणकै ॥
करी जाप विद्या बल बुलायो, हर्ष लोक हसन्त अे ॥जि०॥२७॥
इण विधे विक्रमपुर विहारे, मरि उपद्रव मेटियो ।
करि शान्त वाणी छांट पाणी, सर्व रोग समेटियो ॥
श्री संघ सघलो सुयश आखे, कवि कीर्ति कहंत अे ॥जि०॥२८॥
बड़नगर मांहे अेक ब्राह्मण, जैनद्वेषी जाण अे ।
परकाय में परवेश विद्या, प्रकट करे पर सन्त अे ॥जि०॥२९॥
उज्जैन नगरे देवयात्रा, वज्र थम्भ विचाल अे ।

प्रच्छन्न विद्या सोवनी निधि, तिण सभै तत्काल ए ॥
लघु लाघवी करी उरी लीधी, दिवस तिण दीपन्त ए ॥जि०॥३०॥
सम्वत् बार इग्यारह नच्छर, गुरु थया निरवाण ए ।
आषाड मासे तिथि -इग्यारस, शुक्लपक्ष सुजाण ए ॥
अजमेर नगरे मडे उच्छव, पादुका पूजन्त ए ॥जि०॥३१॥
इम विरुद्ध बहुला जगत माहे, कवि कहो कुण कह सके।
सुर असुर सगला पाय नामी, तारणो सरणो तके ॥
दौलत दाता सुरव दाता, पुहवी जस पसरत ए ॥जि०॥३२॥
छल छिद्र साइणी डायणी सहि, भूत प्रेत भयंकरा ।
जिन दत्त जापे तुरत भापे, प्रसन्न होय आवे परा ॥
वली रोग सोग कदे न व्यापे, गुणीजन गह गंत (कंत) अे ॥जि०॥३३
वली घाट घाटे शत्रु साटे, कष्ट काटे केटला ।
शुभ रूप पुत्र कलत्र सतति, जीव चाहे जेटला ॥
भूखीयां तिसिया दिये भोजन, अचल जस आखत ए ॥जि०॥३४॥

॥ कलश—कवित ॥

श्री जिनदत्त सुरिन्द जसु आखे जग सारो ॥
श्री जिनदत्त सुरिन्द आज थारो वरतारो ॥
श्री जिनदत्त सुरीन्द सेवता ऋध्दि समप्पे ।
श्री जिनदत्त सुरीन्द कष्ठ कदल सव कप्पे ॥

विद्यानिधान पाठक विनय-श्रीरुपपति पाठक सरू ।
गुणताल समे गह बाहट-हूं रचियो छन्द मनोहरू ॥३५॥

॥ इति-सम्पूर्णम् ॥

॥ तर्ज—होरी ॥

होरी खेलो भविक जिनदत्त सुरीन्द के संग-दादा के संग सद्गुरु के संग-नित आनन्द उच्छव होत रंग-होरी ॥ टेर ॥ मस्त महीना फागुण आया, श्रीसंघ से हिलमिल के संग ॥१॥ हो० ॥ कोयल शब्द करत स्वर भीणा, अली कली के संग रंग ॥२॥ हो० ॥ ऋतु वसन्त आनन्द पिया संग, गोरी गावत वजत चंग ॥३॥ हो० ॥ ऐसे साज समाज भक्ति ले, गुण गुलाल लिये गुरु के अभंग ॥४॥ हो० ॥ निरमल मन मकरंद सुधाकर, अतर पुष्प सें चरचो अंग ॥५॥ हो० ॥ ध्यान पिचकारी अजब सुधारी, छिरको मह-कत सुरभिगंग ॥६॥ हो० ॥ करत चैन दरशण सें नैण, ऋध्दिसार के मन उमंग ॥७॥ हो० ॥ ॥ इति ॥

॥ तर्ज—होरी ॥

जय बोलो पास-दादा गुरुवर के द्वार मची रे होरी-जिनदत्त सूरी के हां-सद्गुरु के द्वार मची रे होरी रे ॥ टेर ॥
आये श्रीसंघ सब हिलमिल के । संग लिये बाला जोरी ॥

स० ॥ दीनदयाल के सनमुख । पठत मधुर धुनगुण गोरी रे ॥ स० ॥३॥ केशर घोली भरो कचोली । पूजत है वाली भोरी रे ॥ स० ॥ रंग गुलाल मच्यो सद्गुरु के । अबीर उडावत भर झोरी रे ॥ स० ॥२॥ धन २ भाग्य हमारे प्रगटे । सद्गुरु ने पकडी डोरी रे ॥ स० ॥ अति मन रजन दुश्मन गजन । बलिहारी चरणों तोरी रे ॥ स० ॥३॥ कामितदाता जगके त्राता । अरजी यह सुनले मोरी रे ॥स०॥ कहत राम ऋध्दि सार सुपाठक । वन्दत है दुपकर जोरी रे ॥ स० ॥४॥ ॥ इति ॥

॥ तर्ज—होरी ॥

दत्त गुरु दरश दिखा दो जी । मैं प्यासा तेरे दरशन का ॥टेर॥
कीर्ति सुणी सन्तन मुख तेरी । दूर देश से आया ॥ नेक नजर कर सद् गुरु मुझपर । चरणा शीष नमाया ॥ दत्त० ॥१॥ अन धन लक्ष्मी सुख सपत का । भरा खजाना पूर ॥ दीसे मुझ को घटे न तिल भर । दुःख दालिद्र दूर ॥ दत्त० ॥२॥ आगे विरुद किया बहु तुमनें । अब क्यू करते देरी ? ॥ जेक चित्त से ध्यान लगाता । शुद्ध मन देवा फेरी ॥ दत्त० ॥३॥ आशा धरकर करूं प्रार्थना । वाच्छित पूरण कीजे ॥ लीला लहर पलक मे पाऊं । यो जश सद् गुरु लीजे ॥ दत्त० ॥४॥ माफल रात दिया गुरु दर्शन । तेज झलामल पूर ॥ भक्त वच्छल वरदाई

प्रगटे। चन्द सूरसा नूर ॥ दत्त० ॥५॥ श्री जिन वल्लभ पाट प्रदीपक। खरतरगच्छ राजान ॥ उदय २ कर संघ सकल का। जाणे सकल जिहान ॥ दत्त० ॥६॥ भक्तों के आधीन परमगुरु। किया शत्रु दल नाश ॥ चरण शरण का लिया आशरा। रामचरण का दास ॥ दत्त० ॥७॥ इ०।

॥ तर्ज—आज दिल हर्षे ॥

आज रंग वरसेरे वरसे वरसे सुगुरु दरश को। जियरा तरसे रे ॥ आज रंग वरसे रे ॥ टेर ॥ सायर ज्युं गंभीर अतुल बल। धीरज मेरुज बरसेरे ॥ मेघ घटा ज्युं भक्त जीव पर। अमृत सरसेरे ॥ आज० ॥१॥ जिन वच सेती हिल मिल सद् गुरु। भाखे वचन निडरसे रे ॥ कंचन ज्युं निरमल ज्ञान गुण। भविजन फरसे रे ॥ आज० ॥२॥ अवनीतल ज्युं क्षमा शीतलता। बावना चन्दन करसेरे ॥ तप आतम गुण तेज दिवाकर। शम शशिधरसेरे ॥ आज० ॥३॥ सेवे सुर नर हाथ जोड़ कर। सुर पति ज्युं गुरु दरसे रे ॥ कल्पवृक्ष ज्युं वंच्छित पूरण। आनन्द हरसे रे ॥ आज० ॥४॥ गच्छ चौरासी के गुरु रक्षक। भूप रूप खरतरसे रे ॥ श्री जिनवल्लभ पाट दीपावन। दत्त अमर से रे ॥आज०॥५॥ दश विध यती धर्म के पालक। प्रगट रत्नाकर से रे ॥ राम वारणा लेत चरण का। ऋद्धि सिद्धि घर से रे ॥ आज० ॥६॥ इति ॥

॥ तर्ज—पास पियारो लागे प्यारो ॥

चाल चाल म्हारा सुगुणा श्रावक। सद्गुरु पूजोरे-सुगुरु के चालोरे॥ टेर॥ अरिहन्त देव सुसाधु गुरु पद। जिन भाषित धर्म कहियो रे॥ समकित श्रद्धा नव तत्व भाखे। गुरु गहगहियो रे॥ सु० ॥१॥ राजन्य कुल से श्रावक कीना। भक्षा भक्ष दिखायारे॥ कृत्य अकृत्य ने पेया पेयी। ज्ञान सिखाया रे॥ सु० ॥२॥ थूल हिंसा का त्याग कराया। पांच अनुव्रत दीनारे॥ तीन गुण व्रत चार शिक्षा व्रत। जैनी कीनारे॥ सु० ॥३॥ कष्ट आपदा सब ही टाली। ऊंचे पद पहूँचाया रे॥ अनेक राजा सेवा सारे। गुरु मन भाया रे॥ सु० ॥४॥ रत्न चिन्तामणि जिन धर्म दीनों। गुरु परम उपगारी रे॥ केई भव्यों ने चारित्र देकर। भवजल तारी रे॥ सु० ॥५॥ कर अणशाण आराधनकारी। प्रथम स्वर्ग में जावे रे॥ बड गच्छ नायक देव प्रगट हुया यू फरमावे रे॥ ॥ सु० ॥ ६॥ खरतर संघ सुणो इक चितसु। तुम गुरु, टक्कल विमाने रे॥ हुआ देव महर्द्धिक समकिती। सुर सुख मानेरे॥ सु० ॥७॥ संघ कहे भव निश्चय कीजै। पूछो जिनवर राया रे॥ देव आय सीमंधर पूछे। जिन फरमायारे ॥ सु० ॥८॥ चार पल्य के आयु अन्ते। महा विदेह उपजसी रे॥ ले दीक्षा केवल पद पासी। शिव पद वरसी रे॥ सु० ॥ ६ ॥ दो गाथा सीमधर भाखी। देव

संघ ने दीधीरे ॥ हर्ष भरी श्री संघ पुर ग्रामे । थापना कीधीरे ॥ सु० ॥१०॥ ये गुरु प्रवहण सम भव दरिये । कवलों वर्णन कीजेरे ॥ इक अवतारी मोक्ष सिधासे । पद पूजीजेरे ॥ सु० ॥११॥ इह भव परभव वंछित पूरण । कर सेवा सुखदाईरे॥ खरतर गच्छ नायक गुरु लायक । सुरतरु छांहीरे ॥ सु० ॥१२॥ किम उपगार भूले गुरु गुण का । भूले कृतघ्नी होई रे ॥ धिग् २ जन्म वृथा तिण हार्यो । देखो जोई रे ॥ सु० ॥१३। आज नहीं है ऐसा समरथ । राजन को प्रति-बोधेरे ॥ ओशवंश कुल वृद्धिकारक । श्रावक सोधेरे ॥ सु० ॥१४॥ रांधे को रांधे जो भोला । इसमें कहा बडा रे ॥ गुरु गुण अतुल तणा में रसिया । भूलो मनाईरे ॥सु०॥१५॥ गछ नायक जिन चारित्र सूरि । पाठक राम सवाया रे- जन्म मरण मेटन गुरू समरथ । सत गुण गाया रे ॥ सु० ॥१६॥ इति ॥

॥ तर्ज–जाय वसे उन देश पियारे-प्रीत निभाना छोड़ दिया ॥

जाय फसा सुगुरु के फन्द में, गुरु गुण गाना छोड़ दिया ॥ टेर ॥ तापस वृत्ति अज्ञान कष्ट से । जिन आज्ञा को तोड़ दिया ॥१ जा० ॥ पन्थ अघोर मलीन चला कर । मन माना ज्यों जोड़ दिया ॥ नहीं पढ़ा षट शास्त्र अज्ञानी । जिन मुद्रा मुख मोड़ लिया ॥ ज० ॥ २ ॥ विषम जाल में फस

गया सद् गुरु। जिन मारग को छोड़ दिया ॥ मिले सुज्ञानी गुरु गुण पूरे। भरम जाल को फोड दिया ॥ जा० ॥३॥ अब शरणागत तेरे सद् गुरु। पार करो मेरा खोलो हिया ॥ शुद्ध मन तेरी पूजा रचाऊ। कोई न तेरी होड़ किया ॥ जा० ॥४॥ श्री जिन वल्लभ पाट उद्योतक। तत्व वचन को निचोड लिया ॥ श्री जिनदत्त सूरीश हमारे। ऋद्धिसार गुण जोड दिया ॥ जा० ॥५॥ इति ॥

॥ तर्ज—होरी ॥

सद् गुरु के चरण चित लाय २। जिनदत्त सूरिन्द गुरु करो रे सहाय ॥ सद्० ॥ टेर ॥ बावन वीर अने वलि चौसठ। जोगण वस कीनीं हर्ष लाय ॥ विद्या पुस्तक सोवन अक्षर। थांभो वज्र निडार पाय ॥ स० ॥१॥ मुल्तान मे पच पीर महाबल। पच नदी साधी चित लाय ॥ इत्यादिक बहु परचा पूरक। गुरु समर्यां सब दुःख जाय ॥ स० ॥२॥ गुरु के नाम से अठ सिद्धि नवनिधि। गुरु गुण गावो सब ही धाय ॥ श्री जिन सौभाग्य सूरि सुगुरु पर। महेर करो गुरु सुख दाय ॥ स० ॥३॥ इति ॥

॥ तर्ज—होरी लहरी ॥

भाया भक्ति मे पूर रहोरे। दुर्जन सब दूर हरोरे ॥ टेर ॥ मेरे मन में भक्ति वैरागी। चित्त परणित लगन सु लागी।

मेरी भाग्य दशा अब जागी जिया हो । भा० ॥१॥ सब सज्जन मिल कर आवो । गुरु चरणे चौक पूरावो । शलि अक्षत थाल बधावो जिया हो ॥ भा० ॥२॥ गुरु महिमा वन्त सवाई । गुरु नाम सदा सुखदाई । गुरु सेवा पाप पुलाई जिया हो ॥ भा० ॥ ३ ॥ घस केशर भर भरिया कचोली । मांहे मृगमद कुंकुंम घोली । गुरु पूज रचो भर झोली- जिया हो ॥ भा० ॥ ४ ॥ जिन हर्ष सूरीश्वर राजा । वाजे जग जशना वाजा । सत्य रत्न करे शुभ काजा-जिया हो ॥भा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ तर्ज—भैरवी खेमटा ॥

गुरु देवजी का ध्यान सदा । चित्त में लाइये ॥ भव २ के सकल पातक । छिन में मिटाइये ॥ गु० ॥ १ ॥ निरुपम स्वरूप जिनका । अमीरस से है भरा । निर्मल गुणों को देख के । आनन्द सुख पाईये ॥ गु० ॥ २ ॥ साहिब सुजाण जिन के । चरण की शरण गही ॥ जागी-सुमति सुधर से । परम पद को ध्याइये ॥ गु० ॥ ३ ॥ दाता दयाल इन के । सिवा जग में कौन है ? ॥ जिन की कृपा से बोध । हिया में जगाइये ॥ गु० ॥ ४ ॥ गुरु भक्ति आन अपने । हृदय बीच चुन्नीदास ॥ सेवामें मन को दीजे । सुजश मुख से गाईये ॥ गु० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पुनः पदम् ॥

सद्गुरुजी थे सांभलो । श्री जिनदत्त सूरिश हो ॥ सेवक ने सानिध करो । पूरो मनह जगीश हो ॥ दौलत दोहो दादाजी सपत्ति दो ॥ १ ॥ दौलत दो गुरु मांहरा । थाँरा विरुद अनेक हो ॥ थाँ समर्यां सकट टले । याही दादाजी थाँरी टेक हो ॥ दौ० ॥ २ ॥ जीती चौसट योगिनी । वस कीया बावन वीर हो ॥ सिघ मांहे दादाजी साधिया । पंच नदी पच पीर हो ॥ दौ० ॥ ३ ॥ पडिक्कमणा माहे वीजली। वलिय बली इक्षनकाय हो ॥ थे मत्रे राखी तिका । तूठी वर दे जाय हो ॥ दौ० ॥ ४ ॥ उच्छब करता उच्च मे । मूंओ मुगल रो पूत हो ॥ जाप करीने जीवाडीयो । सघ मांहैं राख्यो दादे सूत हो ॥ दौ० ॥ ५ ॥ वड नगर रे ब्राह्मणों । देहरे घरी मृतक गाय हो ॥ पर प्रवेश विद्या फले । पिशुन लगायो दादे पाय हो ॥ दौ० ॥ ६ ॥ विक्रमपुर व्यापी मरी । दूर कियो सहु दुःख हो ॥ परिवार पिण पोते कियो । सहु नै दियो दाद सुख हो ॥ दौ ॥ ७ ॥ अंबड हाथे अक्षरे । थे प्रगटिया तत खेव हो ॥ युग प्रधान पद तूं लयो । आखे अम्बिका देव हो ॥ दौ० ॥८॥ थांभो वज्र विदारने । पोथी परगट कीध हो ॥ विद्या सोवन अक्षरे । उज्जेणी माहे लीध हो ॥ दौ० ९॥ इम विरुद घणा छे दादा ताहरा । कहता नावै पार ॥ भाग्य संयोगे दादा भेटिया । अड्

बड़ीया आधार हो ।। दौ० ।। १० ।। हं छूं सेवक ताहरो । थे आंपो धन ऋद्ध हो ।। कनक कीरति सुपसाउले । लाभ उदय सुख सिद्ध हो ।। दौ० ।। ११ ।। इति ।।

।। पुनः पद ।।

सांगानेर विराजे । गुरु परतिख तिहां राज रे । म्हारा सद्गुरु जीनि बलिहारी ।। मन वांच्छित पूरो म्हारा म्है तो चरण पखालां थांरा रे ।। म्हा० ।।१।। सोवन भरिय कचोली । मोहे वलि मृगमद केशर घोली रे ।। म्हा० ।। पूजूं सद्गुरु पाया । पूज्यां सब पाप पुलाया रे ।। म्हा०।।२।। पूनम नैं सोमवारा । थांरे यात्री आवे अपारा रे ।। म्हा० ।। शुद्ध मन पूजा कीजै । दुःख दोहग दूर हरीजे रे ।।म्हा०।।३।। इण कलयुग मांहे थांरी । कीरती चिहुं दिशि मांहे सारी रे ।। म्हा० ।। तुम्ह सम अवरन कोई । दीठो मैं परतिख जोई रे ।। म्हा० ।।४।। सालूड़े वाली सांगानेरे । जिहां राज करे नित मेवरे ।। म्हा० ।। श्री संघ मिलतिहां आवे । जिहां लूणीया गोट रचावे रे ।। म्हा० ।।५।। ज्ञानसार गुरु राजा । ज्यांरा वाजे सदा ई वाजा रे ।। म्हा० ।। म्हा० ।। क्षमा-नन्दन गुण गावे । कर जोड़ी शीश नमावेरे ।। म्हा० ।।६।।

।। इति ।।

।। तर्ज—कहरवा ।।

गुरु वन्दन आये विबुधपति ।। टेर ।।

सुरगण आये शिश नमावे । गुण गावे गंधर्व गति ॥गु०॥१॥ युगप्रधान जगगुरु जग वालम । आलिम जिनदत्त सूरिपति ॥ गु० ॥२॥ वरदाई वाचा जग जाचा । साचा साहिव वन्त सती ॥ गु० ॥३॥ विपद निडारण संपत कारण । विरुद वधारण वड वरती ॥ गु० ॥४॥ सद्गुरु दरस सुधारस नरसत । पाप सन्ताप रहे है न रति ॥ गु० ॥५॥ चन्द चकोर मोर घन गरजन । चित चाहत नित चरण नति ॥६॥ श्री जिन हरप सूरिन्द गुरु सेवत । सुगुण करे विनती ॥गु०॥७॥

॥ इति ॥

॥ तर्ज—सुगुरु तेरी पूजन ॥

जिनदत्त सुगुरु वलिहारी–सुखकारी । जि० ॥ टेर ॥
सघ-सकलनों सकट वारो । पंच नदी जिनतारी ॥सु०॥१॥ विद्या पोथी परगट कारी । थांभो वज्र विदारी ॥ सु० ॥२॥ मृतक गऊ जिन जिन मन्दिर तैं । मन्त्र तें करिया उठारी ॥ सु० ॥ ३ ॥ ज्ञानसार गुरु चरण कमल पर । वारी जाऊ वार हजारी ॥ सु० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ तर्ज—विलसे ऋद्धि समृद्धि मिली ॥

मन वञ्छित पूरण जगचावो । जिनदत्त सूरीश्वर गुरु ध्यावो ॥ आपद तसु नाम नाम थकी विघटे । अण चिन्त लच्छी घरे प्रगटे ॥ २ ॥ तुम्ह सुजशतणो पार न पाऊं ।

पिण भक्ति थकी तुज्झ मैं ध्याऊं ॥ हुँवड़ गोत्रे वाहक दे माता । धुंधु का नगरी वाच्छग ताता ॥ २ ॥ संवत् इग्यारे बत्तीसे । जन्म्या शुभ मूहर्त शुभ दिवसे ॥ दीक्षा इग्यारे इक-ताले । गुरु षट काया आश्रव टाले ॥ ३ ॥ गुणहत्तर छट्ठ वैशाख वदी । चित्र कूटे थाप्या गच्छ पति ॥ मन्दिर थंभे पोथी-जाणी । विद्यावल लिज पासे आणी ॥ ४ ॥ जोगणियां श्रावक रूप कियो । उज्जयणी मैं उपयोग दियो ॥ वैशाग बाजोटा तासु छले । गुरु कीली तत खिण मंत्र बले ॥ ५ ॥ बड़नगरे ब्राह्मण मृतक गऊ । जिन मन्दिर द्वारे जाण सहु ॥ विद्याबल ब्राह्मण पाय नम्या । गुरु महर धरी अपराध खम्या ॥ ६ ॥ तिहां मुगल तणो सुत जीव दियो । सांभेला मांहे संग कियो ॥ बीजली पात्र तले राखी । ये विरुद तणा छे सहु साखी ॥ ७ ॥ गिरनारमंडण अम्बा देवी । अट्ठम भजे अंबड़ सेवी ॥ हुय परगट करतल वरण लिख्या । वाचंता युग पर धान लख्या ॥ ८ ॥ भरदरिये प्रवहण पार कर्यो । समरन्ता पंखी रूप धर्यो ॥ जल अगन और श्वापद केरा । भय भंजन नाम सुगुरु तेरा ॥ ६ ॥ तुझ सुनिजर शत्रु पाय नमैं । सुत हीण स्त्रियोंरे पुत्र रमैं ॥ खरतर गच्छ नायक गुरु राया । बहु पुण्य थकी दरशण पाया ॥ १० ॥ संवत् बारे से इग्यारे । सुर असुर नमे त्रिहुँ जगसारे ॥ इग्यारस सुदी आषाढ़ तणी । अजमेरे पहुँता स्वर्ग भणी ॥ ११ ॥

थिर आपना थुंभे नित राजे । गुरु सुजगतणा वाजित्र वाजै ॥
नड वड़ा नरपति तुम ध्यावे । दरशण करवा जात्री आवे ॥१२॥
समर्या सद्गुरु सुखकारी । जिनदत्त सूरीसर वलिहारी ॥
चिन्तामणि रयण समो देवा । दया मेरु चाहे सुगुरु सेवा ॥१३ ।
॥ इति ॥

॥ पुन. पद राग ॥

पूजो भजो रे भाई । गुरु महिमा होत सवाई ॥ पूजो० ॥ टेर ॥
मृगमद केशर चन्दन अरचो । सुन्दर पुष्प चढ़ाई ॥पू.॥१॥
तन मन वश कर ध्यान हिये धर । जिनदत्त जप वरदाई ॥पू.॥२॥
भविक जीव मिल गुरु गुण गावे । सद्गुरु होत सहाई ॥पू॥३॥
या गुरु की मैं कब लग वरणूं । कीरत धीर वड़ाई ॥पू.॥४॥
श्री जिन सौभाग्य सूरिगुरु मेरे । निश दिन हर्ष वधाई ॥पू.॥५॥
। इति ॥

॥ तर्ज—कहरवो ॥

अरज सुणो गुरु एक हमारी ॥ अ० ॥ टेर ॥
तुम दरशन विन हूं बहु भटक्यो । आया अब शरणागत थारी ॥ अ० ॥ १ ॥ पतित उधारण विरुद तुम्हारो । राखो सद्गुरु मोहि निरधारी ॥ अ० ॥ २ ॥ अहर्निश ध्यान तुम्हारो ध्याऊं । राखु चिते चित्त हित से इकतारी ॥ अ० ॥ ३ ॥ परचा पूरण कलियुग में गुरु । शोभा जग में बहु

विस्तारी ॥ अ० ॥ ४ ॥ हर्ष विशाल शिष्य इम भाखे । चरण कमल की मैं जाऊं वलिहारी ॥ अ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ तर्ज—कहरवो ॥

आज हमारे आनन्द भयो । मैं भेटचा श्री गुरुराजजी ॥आ०॥टेर॥ खरतरगच्छपति दीपतोरे । जिनदत्त सूरीन्द कहायजी ॥ आ० ॥ १ ॥ यात्री आवे बहु देशनारे । पूजा रचे बहु मायजी ॥ आ० ॥ २ ॥ निरमल गंगा जल भरीरे चरण प्रक्षाल कराय-जी ॥ आ० ॥ ३ ॥ केशर चन्दन घस करीरे । मृगमद मांहि मिलायजी ॥ आ० ॥ ४ ॥ धूप दीप नैवेद्यथीरे । पंच रंग पुष्प चढ़ायजी ॥ आ० ॥ ५ ॥ तीन प्रदक्षिणा देईनेरे । लुल २ शीश नमायजी ॥ आ० ॥ ६ ॥ इत्यादिक बहु भेद सु ं रे । भक्ति करो चित्त लायजी ॥ आ० ॥ ७ ॥ निश्चय सुगुरु ने भजेरे । कमणा न रहे कायजी ॥ आ० ॥ ८ ॥ आधि व्याधि दोषी पन दुश्मन । गुरु नामें मिट जायजी ॥ आ० ॥ ९ ॥ सेवक कुं संकट पड़चारे । समर्यां होत सहायजी ॥ आ० ॥ १० ॥ संवत् ओगणातिहोतरेरे । भाद्रव मास सुहायजी ॥ आ० ॥ ११ ॥ शुक्ल पक्ष पूनम दिनेरे । दरशण पायो मैं आयजी ॥ आ० ॥ १२ ॥ हर्ष विशाल शिष्य तुमहीरे । प्रीति सुन्दर गुण गायजी ॥ आ० ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ तर्ज—सोरठ ॥

सद्गुरु मेरे तूंही प्यारा है ॥ स० ॥ टेर ॥
मात पिता सबही स्वारथ के। तेरा ये सहारा है ॥ स० ॥१॥
मेरो मन तुम्हीं सू अटक्यो। सो क्यूं होवत न्यारा है ॥
स० ॥ २ ॥ दुश्मन दाटे काटे चाटे। विघन हरण सुखकारा
है ॥ स० ॥३॥ बिरुद अनेक कहुं मैं केता। महिमा अधिक
अपारा है ॥ स० ॥ ४ ॥ तातें जश शोभा सुख दीजे।
आहम दास तिहारा है ॥ स० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ तर्ज—सोरठ ॥

नित चरणों मे चित्त लीनो है ॥ नि० टेर ॥
बैठत ऊठत नाम तुम्हारो। लेतां मुज्झ मन भीनो है ॥ नि०
॥ २ ॥ माता पिता सद्गुरु तूं म्हारे। शरण सदा तुम्ह
ही नो है ॥ नि० २ ॥ चारित्र सुन्दर दास तुम्हारो। तुज्झ
गुण गाना लीनो है ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ तर्ज—म्हरा वालजी ॥

सद्गुरु ने पकड़ी बांह। नहींतर बह जाते ॥ स० ॥ टेर ॥
भवसागर के बीच पड़ेरे। काम महागन दाह ॥ मच्छ गला-
गल जहां लगीरे। दुःख जल पूर अगाह ॥ न० ॥ स०॥१॥
देव असुर सुर नर वर पड़े रे। जामें नक्षत्र निहार ॥ तन मन

मेरो थर हरे रे। और न को आधार ॥ न० ॥ सा० २ ॥ निर्यामक सद्गुरु मिलेरे। तारक मच्छ जहाज ॥ धर्म पोत के बिच धरे रे। कहत क्षमा कल्याण ॥ न० ॥ स० ॥ ३ ॥

॥ तर्ज—प्रथमकी ॥

दादोजी परतीख देवता। दादोजी देश दिवान ॥ म्हारा सद्गुरु ॥ परतिख जश जग परगड़ो। वाचे सहु अे वखाण ॥ म्हा० ॥ १ ॥ वाट घाट संकट हरे। तारे जलधि जहाज ॥ ॥ म्हा० ॥ ॥ ऋद्धि वृद्धि सुख संपदा। समरण श्री गुरु राज ॥ म्हा० २ ॥ तुम्हैं अमीणा साहिबा। अमें तुमीणा दास ॥ म्हा० ॥ कमणा हि बनरहे कदा। ईहक पूरण आश ॥३॥ नगर २ गाम २ में। थिर वर ते गुरु थान ॥म्हा०॥ पूजे अरचे पादुका। नर नारी राय राण ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ शोभे सूरत बन्दरे। गुणधारी गच्छ राज ॥ म्हा० ॥ श्री जिनलाभ सूरीशना। सारज्यो सगला काज ॥ म्हा० ५ ॥

॥ इति ॥

※ तर्ज—जय जय आचारज ※

जसु हृदयकमल गुरु नाम वसे। तसु सरसति वदन सदा उलसे ॥ वरसाते हाथ लिये धरती। जपिये श्री जिनदत्त सूरियती ॥ टेर ॥ १ ॥

संवत् ग्यारे सौ वरसे । वत्तीसे जनम्या शुभ दिवसे । तसु वाच्छग वाहडदे मुहती ॥ ज० ॥२॥ इगताले शुभ व्रत ग्रहण कियो । गुणहतरे जिन सूरि मन्त्र लियो । थाप्या जिन वल्लभ पाट पती ॥ ज० ॥ ३ ॥ लिख दीधो अम्बा अम्बड करे । दासानुदास सोवन अक्षरे । वाच्यो पद जुग वर निज उगति ॥ज०॥४॥ जोगण जिन थंभी नें राखी । वरमात लिया गुरु सहु साखी । थमी वली बिजली शुय पडती ॥ज०॥५॥ दिल्ली ने भरु अच्छ उज्जयणी । अजमेर वसे चौसठ जोगणी । मनमे अभिमाने जे वहती ॥ ज० ॥ ६ ॥ प्रतिबोध्या श्रावक लाख जिणे । वश कीधा सुर नर नार तिणे । तसु वरस गुण्यासी आयु वगती ॥ ज० ॥ ७ ॥ सम्वत् वार इग्यारसै मे । आषाड जाणे शुभ दिवसे । शुभ ध्यान थई सुरलोक गती ॥ज० ८॥ अजमेरे सद्गुरुना पगला । समरथ जे आय नमें सगला । खेने नृप करे आरती ॥ ज० ॥ ९ ॥ न्हाही निर्मल धोती पहरी । घस केसर चन्दन जतिसखरी । शुभ भक्ते पूज करो सुमति ॥ ज० ॥ १० ॥ सुर किन्नर नर नागी राया । आवी लागे जेह ने पाया । जसु आज्ञाने मांने महियपति ।ज० ११। परदेशे ममता काई फिरो । घर बैठा सद्गुरु ने समरो ।

जेहने न हुवे दोषी कुमती ॥ ज० ॥ १२ ॥ जिनदत्त सूरिजी ना गुणगावे । तसु विघन व्यथा दूरे जावे । पावे जयचन्द दौलत चढती ॥ ज० ॥ १३ ॥ इति ॥

* तर्ज--बंगाले़ो वाटो *

चलो सखी पूजवा जईये । जिनदत्त सूरि गुरुराज ॥चलो.॥टेर.
हिये भाव अधिक धरीने । पूजो पूजो शुभ काज ॥ च० ॥ १ ॥
सहु संघ यात्री आवे । सज्ज सामग्री साज ॥ च० ॥ २ ॥
पूजा कर अष्ट प्रकारी । शुभ मारगनी पाज ॥ च० ॥ ३ ॥
बोहिथरा समरण करते । तारी तुरत जहाज ॥ च० ॥ ४ ॥
दरशण सुगणनें दीजे । सद्गुरु गरिबनिवाज ॥ च० ॥ ५ ॥

॥ इति ॥

॥ तर्ज—राणपुरो रलियामणोरे लाल ॥

श्री जिनदत्तसूरी समरुरे लो । जिनशासन दीवान सुखकारी रे ॥ भेटी भावे भवि मुदारेलो । खरतर गच्छ राजान म्हारा वाला रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ गुरुवारे सुरपद लह्योरे लो । अजयमेरु थिर थान ॥ म्हा० ॥ वंच्छित कारज साधवारे लो । सेवे सकल जिहान ॥ म्हा० ॥ २ ॥ यात्री जन आवे घणारे लो । परतिख परचो पेख ॥ म्हा० ॥ आश विलूधा मानवीरे लो । पूरे आश अशेष ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ चौसठ वस करी

जोगणीरे लो । वली वम बावन वीर ॥ म्हा० ॥ सानिध कारी सेनकारे लो । राखो सुगुन सधीर ॥ म्हा० ४ ॥श्री०॥ दिवस बहू मन में हुतीरे लो । भेटना श्री गुरु पाय ॥म्हा०॥ ते आशा सफली थईरे लो । भेटया श्री गुरु पाय ॥ म्हा० ॥ ॥ ५ ॥ श्री० ॥ आधि व्याधि आतापना रे लो । पिंड तणी हरे पीड ॥ म्हा० ॥ दुःख दोहग दूर हरो रे लो । भाजो भावठ भीड ॥ म्हा० ॥६॥ श्री० ॥ लाज थानू इण गच्छनीरे लो । उदयक नयण निहाल ॥ म्हा० ॥ पोता वट पोते राखस्योरे लो । तो करस्यो समाल ॥ म्हा० ॥ ७ ॥ श्री० ॥ जे विलग्या तुम केड लेरे लो । ते किम मूंके केड ॥ म्हा०॥ रूठड़ो वालम मनानियेरे लो । द्यो दिलासो तेड़ ॥ म्हा० ॥ ॥ ८ ॥ श्री ॥ तुम्ह जेहवा धणी मुज्झने रे लो । केह ने कहिये जाय ॥ म्हा० ॥ कहिनावो वल था लगेरे लो । करिवो श्री गुरु पाय ॥ म्हा० ६ ॥ श्री० ॥ तिल अेक सुनिजर जो हुवे रे लो । तो सरं वांच्छित कोड ॥म्हा०॥ दुश्मन जन दूरे हरो रे लो । अम्हची तुम लग दौड ॥ म्हा० ॥ १० ॥ श्री० ॥ मात तात गन्धव नूहीं रे लो । तू साचो गुरु देव ॥ म्हा० ॥ मोगला ढाला बालकारे लो । चरण शरण नित मेव ॥ म्हा० ॥ ११ ॥ श्री० ॥ विनय सही इम विनवेरे लो । श्री जिन हर्ष सूरीश ॥ म्हा० ॥ महिर नजर मुज्झ ऊपरे रेलो । धरज्यो निशदीश ॥ म्हा० ॥१२॥

॥ श्री० ॥ सम्वत् अठारह सत्यासठ में रे लो । वदी फागुण शुभ नूर ॥ म्हा० ॥ युक्ति सहित यात्रा करी रे लो । चढ़ते पुण्य पडूर ॥ म्हा० ॥ १३ ॥ श्री ॥ इति ॥

॥ तर्ज—झीडझोटी ॥

दादा पूरे हो वंछित भोग । वनी २ करम रे निहोरा ॥ साचो साहिब जग में जाणी । चरण नमूं जिन तोरा ॥ दादा० ॥ १ ॥ अमरसरे गुरु महिमा जागी । तो सम कोईयन तोले ॥ बाल गोपाल सर्व मन हरख्या । श्री गुरु ना गुण बोले ॥ दादा० ॥ २ ॥ वाट घाट तूं ही साधारे । चोर चक्र भय वारे ॥ माता जिम बालक प्रति पाले । तिम हूँ तोरे सारे ॥ दादा० ॥ ३ ॥ लखमी लीला संपत्ति सोहे । घर भक्तों के होवे ॥ गुण विनय कहे साहिब सांचो । सोम निजर कर जोवे ॥ दादा० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ तर्ज—हरियां मन लागो ॥

थलवट देश सुहावणो । गाम सुहावे नाल रे ॥ सद्गुरु सुण मोरा ॥ तिहां तूं आप विराजियो । खर तर गच्छ रखे वालरे ॥ स० ॥ १ ॥ अकल कला कांई ताहरी । तो सम अवसर न कोय रे ॥ स० ॥ ताहरी कीरत सांभली । मोमन अचरज होयरे ॥ स० ॥ २ ॥ परतिख परचो पामियो । श्री बीकाया नरेश रे ॥ सा० ॥ अे तो कीरती ताहरी । जाणे

॥ विदेश रे ॥ स० ॥ ३ ॥ विखमी वेला वार तूं । तूं मचो आधार रे ॥ स० ॥ सुजाणसिंह नरराज ने ॥ 'अरिमय लियो उबार रे ॥ स० ॥ ४ ॥ अम्हें तुमीणा ओलगू । तूं अमचो शिरदार रे ॥स०॥ वरदाई तूं सेवकां । परचो दे निरधार रे ॥ स० ॥ ५ ॥ माग्य भले तूं भेटियो । सुथिर गडा ले थान रे ॥ स० ॥ हिव अम्ह पर कीजे मया । दीजे वंछित्त दान रे ॥ स० ॥ ६ ॥ दादाजी दीन दयाल तू । देवा शिर हर देवरे ॥ स० ॥ निज सेवक जाणी करी । दीजो पद कज सेवरे ॥ स० ॥ ७ ॥ यात्रा सफल जिन भक्तिनी । माने ज्यो गुरु रायरे ॥ स० ॥ वली अेहवी अे विनति । करो मुज्झ सदा सहाय रे ॥ स० ॥८॥ इति ॥

॥ पुनः पदम् ॥

नईया मेरी दादा तुम ही खेवईया । तुम्हारे नाम वेडा पार लगईया ॥ १ ॥ न० ॥ गहरी नदिया नाव पुराणी । जोर ही वाय चलईया ॥ न० ॥ २ ॥ उवार वार कच्छु सूज्झत नाहीं । तुमरो ही नाम जपईया ॥ न० ॥ ३ ॥ संकट देख सेवक कुं सद्गुरु । देरावर तें अईया ॥ न० ४ ॥ संकट दूर हरो इक छिन में । तुरत ही पार लगईया ॥ न० ॥ ५ ॥ सेवक शरणे आयो तुम्हारे । तुम चरणन कूं गहिया ॥न०॥ ॥ ६ ॥ जावजीव अे चरण न छोड़ूं । तूँ मेड़ा सुखदईया । ॥ न० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ तर्ज—होरी ॥

सद्‌गुरु का ध्यान हृदय मेरे ॥ टेर ॥ स० ॥
श्री जिनदत्त सूरीश्वर साहिब । पद पङ्कज प्रणमुँ तेरे ॥ स० ॥ १ ॥ श्री जिन वल्लभसूरि पटोधर । करुणाकर सब जग के रे ॥ स० ॥ २ ॥ संघ सकल कूँ सानिधकारी दुःख दोहग दूरे गेरे । ३ ॥ सुण के शुद्ध उपदेश सुगुरु को। बूज्झ भविजन बहुतेरे ॥ स० ॥ ४ ॥ वैमानिक सुरपदवी पाई । परतिख प्रभु त्रिखमी वेरे ॥ स० ॥ ५ ॥ कहत क्षमा कल्याण अहो निशि । सुनिजर करियो गुरु मेरे ॥ स० ६ ॥

॥ इति ॥

॥ तर्ज—विछिये की ॥

अरे लाला श्री जिनदत्त सूरीश्वरु । दादो प्रह उगमते सूर रे लाला ॥ भावधरी पूजे सदा । घस कुंकुम मेल कपूर रे लाला ॥ श्री० ॥ १ ॥ जीती चौसठ योगिनी । वस कीना बावन वीर रे लाला ॥ मन्त्र बले करी साधीया । जिन पंच नदी पंच पीर रे लाला ॥ श्री ॥ प्रतिबोध्या श्रावक श्राविका मिल लाख सवा सहु देशरे लाला ॥ जैन धरम दीपावीयो । खरतर गच्छ कमल दिनेश रे लाला ॥ श्री० ॥ ३ ॥ हिंसा टाली जीवरी जय सिंध सवा लक्ष देश रे लाला ॥ दानव मानव देवता मांने सहु आण नरेश रे लाला ॥ श्री० ॥४॥

युग प्रधान पद जेहने । देवता प्रगट हुय दीधरे लाला ॥ पुण्य पुरुप जग परगड़ो । जिण करणी उज्जल कीधरे लाला ॥ श्री० ॥ ५ ॥ कामित दायक कलियुगे । साचो सुरतरु अवतार रे लाला ॥ समस्त श्याम घटा करी । महियल वरसे जलधार रे लाला ॥ श्री० ॥ ६ ॥ आज विपम पंचम अरे । जेहना मोटा अवदात रे लाला ॥ नामें न पड़े वीजली । न हुवे छलच्छिद्र तिल मातरे लाला ॥ श्री० ॥ ७ ॥ सवत चार इग्यारसै । आपाढ शुक्लपक्ष जाण रे लाला ॥ इग्यारस सद्गुरु तणो । अजमेरु नगर निरवाण रे लाला ॥ श्री० ॥ ॥ ८ ॥ मेहिर करी मुज्झ ऊपरे । गुरु कूरम निजर निहाल रे लाला ॥ राज हरख कर जोड़ने । वन्दे मन शुद्ध चरण त्रिकाल रे लाला ॥ श्री० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ श्री जिनदत्त सूरिजी उत्पत्ति स्तोत्र ॥

सिरि सुय देव पमाय करे । गुरु श्री जिनदत्त सूरी ॥ वन्दि सुखरतरगच्छरयण । सूरी जेम गुण पूरि ॥ १ ॥ संवत इग्यारे वरसे । वत्तीसे जसु जम्म ॥ वाछिग मन्त्री पिता जणणी । वाहड़ देवि सुरम्म ॥२॥ हस्ताले जिणवइ गहिय । गुणहत्तरे जसु पाट ॥ वईशाखा वदि छट्ठि दिन । पइ प्रण में सुर थाट ॥ ३ ॥ अंवड़ सासय करलि हिय । सोवन अक्खर अंव ॥ जुग प्रधान अग पयडी ए । सिरि सोहै पड़ि विंब ॥ ४ ॥

जिण चउसट्ठी जोगिण जणिय । खित्तवाल बावन्न ॥ साइण डाइण विज्जुलिय । पुहवीह नाम नयन्न ॥ ५ ॥ सूरि मंत बलकर सहिय । साहिय जिम धरणिन्द ॥ सावइ साविय लक्ख इग । पड़ि बोहिय जिण बिंब ॥ ६ ॥ अरि करी केशरी दुट्ठ दल । चउविह देव निकाय ॥ आंण न लोपे कोई जुगे । जसु प्रण में नर राय ॥ ७ ॥ संवत बार इग्यारस में । अजमेर पुर ठाण ॥ इग्यारस आसाढ सुदि । सगपतन सुह झाण ॥ ८ ॥ श्री जिन वल्लह सूरि पए । श्री जिनदत्त मुणिन्द ॥ विघ्न हरण मङ्गल करण । करो पुण्य आणन्द ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ प्रभात फेरी ॥ १ ॥

※ तर्ज—झण्डा ऊंचा रहे हमारा ※

श्री जिनदत्त जगत-रखवारे । जय गुरु जय गुरुदेव हमारे ।
ज्योतिर्धर जीवन उजियारे । जय गुरु जय गुरुदेव हमारे ॥टेर॥
वर्द्धमान प्रभु पाट परम्पर । शासन थम्भ समान शुभङ्कर ॥
जग उपकारी जग के प्यारे । जय गुरु जय गुरुदेव हमारे ॥१॥
देव जिनेश्वर दर्शन-भावन । प्रबल प्रचारक जीवन पावन ॥
प्राणि मात्र के हित-सुखकारे । जय गुरु जय गुरुदेव हमारे ॥२॥
नव-अङ्ग टीकाकार प्रशिष्य । श्री जिनवल्लभ सद्गुरु शिष्य ॥
अतिशय मय निर्भय अविकारे । जय गुरु जय गुरुदेव हमारे ॥३॥
मंत्री वाच्छिगशाह जनक धन । बाहड़ देवी माता धन धन ॥

जिन वल्लभ गुरु धन अवतारे। जय गुरु जय गुरुदेव हमारे ।।४।।
एक लाख पर तीस हजारा। किये जैन जिनधर्म प्रचारा ।।
दुर्व्यसनों को दूर निवारे। जय गुरु जय गुरुदेव हमारे ।।५।।
ग्राम नगर पुर भारत भर में। सद्गुरु परसिध है घर-घर में ।।
दादावाड़ी दश हजारे। जय गुरु जय गुरुदेव हमारे ।।६।।
संवत् बारह सौ ग्यारह में। आषाढ़ सुद एकादशी दिन मे ।।
तारणहारे स्वर्ग-सिधारे। जय गुरु जय गुरुदेव हमारे ।।७।।
आठ शताब्दी आज है पूरण। गुरु कृपा हो इच्छित पूरण ।।
जन जन मिल जयनाद उचारें। जय गुरु जय गुरुदेव हमारे ।।८।।

।। इति ।।

।। प्रभात फेरी ।। २ ।।

।। तर्ज—गोविन्द जय जय गोपाल जय जय ।।

गुरु की जय जय दादा की जय जय। दादा गुरु जिनदत्त की जय जय ।। टेर ।।
गुरु कृपा सब पाप मिटावे। गुरु कृपा भव ताप मिटावे ।। गुरु शरण जन होते हैं निर्भय। गुरु की जय जय दादा की जय जय। दादा गुरु जिनदत्त की जय जय ।। १ ।। गु-शब्द अर्थ अन्धकार है होता। रु-शब्द अन्धकार है खोता ।। गुरु-देव हैं दिव्य ज्योतिर्मय। गुरु की जय जय दादा की जय जय। दादा गुरु जिनदत्त की जय जय ।। २ ।। युग प्रधान

गुरु युग निरमाता। गुरु का ज्ञान जन-जन को है भाता ॥ गुरु शरण जन होते हैं निर्भय। गुरु की जय जय दादा की जय जय। दादा गुरु जिनदत्त की जय जय ॥ २ ॥ इति ॥

॥ प्रभात फेरी ॥ ३ ॥

❀ तर्ज--जय रघुनन्दन जय सियाराम ❀

ॐ अर्हं जय हे गुरुदेव। श्री जिनदत्त परम गुरुदेव ॥ चरण शरण दो हे गुरुदेव। ॐ अर्हं जय हे गुरुदेव ॥टेर॥ आवो पधारो हे गुरुदेव। दो दर्शन दादा गुरुदेव ॥ आठ शती बीती गुरुदेव। अब दर्शन दो आ स्वयमेव ॥ ॐ अर्हं० ॥ १ ॥ कायरता हम से हो दूर। हममें चमके भारी नूर ॥ यही हमारा इच्छित देव। दो दर्शन दादा गुरुदेव ॥ ॐ अर्हं० ॥ २ ॥ दुर्व्यसनों से हों हम दूर। घर घर में सुख हो भरपूर ॥ करो कृपा अब हे गुरुदेव। आओ पधारो हे गुरुदेव ॥ ॐ अर्हं० ॥ ३ ॥ संघ शान्ति से हों बलवान। ज्ञान वान गुणवान महान ॥ सुनो सुनो दादा गुरुदेव। दो वरदान हमें नितमेव ॥ ॐ अर्हं० ॥ ४ ॥ जय गुरुदेव जय गुरुदेव। जय गुरुदेव जय गुरुदेव ॥ जिन वल्लभ पटधर गुरुदेव ॥ ॐ अर्हं० ॥ ५ ॥ इति ॥

❀ तर्ज—युग परधान पधारो ❀

हे युग परधान पधारो। जन जीवन काज सुधारो। हे युग परधान पधारो ॥ टेर ॥

वर्ष आठ सौ बीते गुरुवर। अब लो खबर हमारी। हम तो सब गुमराह बने हैं। राह न दिसे तुम्हारी ॥ हे युग परधान पधारो ॥ १ ॥

दारू मांस छुड़ाकर गुरुवर। हम को जैन बनाये। जैनी तो होते हैं विजयी। हम क्यों हारे जायें? हे युग परधान पधारो ॥ २ ॥

गिरती बिजली काष्ठपात्र में। रोकी तुमने स्वामी। वह विज्ञान हमें सिखलादो। रहे न हम में खामी। हे युग परधान पधारो ॥ ३ ॥

मुगल पुत्र को मरी गाय को। जीवन दान दिलाया। वही योग बल हमें दिखादो। क्यों गुरु हमें भुलाया। हे युग परधान पधारो ॥ ४ ॥

बीर पीर जोगनियां ये सब। ब्रह्म शक्ति से खींचे। सेवा करते सदा तुम्हारी। हम क्यों बह गये नीचे। हे युग परधान पधारो ॥ ५ ॥

धन धाछिगसा धन बादड़ दे। धन धनलक्ष्मा भारी। धन जिन वल्लभ के पटधारी। जिन शासन जयकारी। हे युग परधान पधारो ॥ ६ ॥

हरि कवीन्द्र कीर्तित गुरु आवें । आकर दरस दिखावें। सुखसागर भगवान आदीश्वर। मण्डल जय जय गावें। हे युग परधान पधारो ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ तर्ज—कहीं हंसना कहीं रोना इसीका नाम दुनियां है ॥

गुरु जिनदत्त की महिमा, बतायें हम कहो कैसे ।
मचकती दिव्य ज्योति को-बतायें हम कहो कैसे ॥ टेर ॥
कहें गर चान्द तो उसमें, हमेशा दाग दिखता है ।
सदा बेदाग गुरु महिमा, बतायें हम कहो कैसे ॥ १ ॥
कहें गर सूर्य तो उसमें, भरा सन्ताप भारी है।
गुरु सन्ताप हर महिमा, बतायें हम कहो कैसे ॥ २ ॥
कहें गर हम समुन्दर तो, भरा है खार ही उसमें ।
परम अमरित गुरु महिमा, बतायें हम कहो कैसे ॥ ३ ॥
कहें गर हम सुमेरु तो, बना है रजकणों से वह ।
रजो गुण मुक्त गुरु महिमा, बतायें हम कहो कैसे ॥ ४ ॥
गुरु जैसे गुरु ही हैं, गुरु जिनदत्त उपकारी ।
जयन्ती आज है महिमा, बतायें हम कहो कैसे ॥ ५ ॥
गुरुजी जैन मंडल की, विनतियां आप सुन लेना ।
कवीन्द्रों की जबानों से, बतायें हम कहो कैसे ॥ ६ ॥

॥ गुरु की जयन्तियां ॥

आओ मनायें आज यों गुरु की जयन्तियां ।
आओ मनायें आज यों दादा की जयन्तियां ॥

दोहा—भूले भटके हों, अगर भाई अपने आज।
अपना कर उनको करें, शुद्ध सिद्ध सरताज ॥
लहराने लगे विश्व में, जय वैजन्तियां ॥ १ ॥
आओ मनायें आज यों दादा की जयन्तियां।

दोहाः—संघ शक्ति संसार में, होती है बलवान ॥
शक्ति का संचार हो, वैसा करें विधान।
होंवे न कहीं फिर हमें, जीवन अशान्तियां ॥
आओ मनायें आज हम गुरु की जयन्तियां ॥ २ ॥

दोहा—दादा श्री जिनदत्त ने, ब्रह्म योग बलधार।
जन जन में जग मे किये, अनुपम पर उपकार ॥
इतिहास वो ताजा करें, ताजी कहानियां।
आओ मनायें आज हम गुरु की जयन्तियां ॥ ३ ॥

दोहाः—जल थल नभ में उड़ रहे, जग दुनियां के लोग।
क्यों हम फिर सोते रहें, है यह आलस रोग ॥
आलस मिटे विशेष रूप फैले क्रान्तियां।
आओ मनायें आज हम गुरु की जयन्तिया ॥ ४ ॥

दोहाः—रहता आलस फूट में, सदा दरिद्र जोग।
हों पुरुषार्थी संगठित साधें सद्गुरु योग ॥
सम्पत्तियां बढ़ने लगे रहती न भ्रान्तियां।
आओ मनायें आज हम गुरु की जयन्तियां ॥ ५ ॥

दोहाः—वीर पीर और जोगनी, दादा गुरु वश कीन।

ब्रह्म योग बल साधना, करलो बनो न दीन ॥
बढ़ने लगेगी बन्धुओ ! फिर खूब शान्तियां ।
आओ मनायें आज हम गुरु की जयन्तियां ॥ ६ ॥
दोहाः—सुखसागर भगवान गुरु, जिनहरि सूर समान ।
नित कवीन्द्र जय जय कहो, दादा युग परधान ॥
जिनदत्त नाम जाप आप, मिटती क्लान्तियां ।
आओ मनायें आज हम गुरु की जयन्तियां ॥ ७ ॥

॥ इति ॥

॥ मंगलकारी ॥

उनका जीना मंगलकारी । उनका मरना मंगलकारी । जो अमर रूप अवतारी ।। टेर ॥

जगत जीव के हित सुख चिन्तन में जो जीवन बीते । वे जीवन पावन पद पद में मर कर भी हैं जीते । उनका आना मंगलकारी उनका जाना मंगलकारी । जो आप रूप उपकारी ॥ उन० ॥ १ ॥ दादा श्री जिनदत्त गुरु की गुण गरिमा अविकारी । वर्ष आठ सौ बीते पर हैं जो जग में जयकारी । उनका शरणा मंगलकारी उनका मिलना मंगलकारी जो त्याग तपो गुणधारी ॥ उन० ॥ २ ज्ञान महा विज्ञान भाव के जो थे सहज प्रचारी । दुखिये जन सुखिये होते हैं चरण शरण अधिकारी । उनका दर्शन मंगलकारी । जय बोलो सब नरनारी ॥ उन० ॥ ३ ॥ जो आचार

विचारों में भी सत्संस्कार जगावें। रूढ कुसंस्कारों को जड़ से जो जन दूर भगावे। उनका पूजन मंगलकारी उनका कीर्तन मंगलकारी जो हैं सुविहित पन्थ विहारी ॥ उन० ॥ ॥ ४ ॥ सुख सागर भगवान महोदय श्री जिनदत्त जयन्ती। हरि कवीन्द्र जन जय जय गावें विनय भाव प्रणमन्ति। उनका यहां भी मंगलकारी उनका वहां भी मंगलकारी। जो हैं आतम भाव विहारी ॥ उन० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ तर्ज—बंगालो-घाटो ॥

देख्या मैं दरस तिहारा; श्री सद्गुरु महाराज ॥ टेर ॥ सफल फली मन आशा फली म०। पाया सुरतरु आज ॥ दे० १ ॥ तुम हो चिन्तामणि जैसा चिन्ता म०। दायक सब सुख साज ॥ दे० ॥ गंगा अंगण में प्रकटी अग०। मुज्झ मन निरमल काज ॥ दे० ॥ २ ॥ गण ऋद्धि संपत काजे-स०। कामधेनु गुरुराज ॥ दे० ॥ सब सिद्धि लीला प्रगटी ल०। दुःख दोहग गये भाज ॥ दे० ॥ ३ ॥ शुभ थान पुर २ सोहे-पु०। मुलक बीकाणे राज ॥ दे० ॥ ४ ॥ वर खरतर गच्छ राजा-ख०। धर्मशील रहे गाज ॥ दे० ॥ तुम नाम राम ऋद्धि सारी-ऋ०। जपे पाठक सिरताज ॥ ॥ दे० ॥ ५ ॥ इति ॥

* तर्ज—काली कमली वाले तुमको लाखों प्रणाम *

पर उपकारी दादा तुमको क्रोडों प्रणाम तुमको लाखों प्रणाम ॥ टेर ॥

शुद्धि का मारग दिखलाया। जैनेतर को जैन बनाया। चरित्र गुण की खान। तुमको लाखों प्रणाम-तुमको क्रोड़ों प्रणाम ।। ।। पर० ।। १ ।। दीन जनों के दुःख के चूरक। योग्य शक्ति के हो परिपूरक। भूमण्डल यश धाम। तुमको लाखों प्रणाम तुमको क्रोड़ों प्रणाम ।। २ ।। जैन समाज को जागृत करदो मिथ्या रूढी तिरस्कृत करदो। गुरुवर विरुद प्रमाण तुमको लाखों प्रणाम-तुमको क्रोड़ों प्रणाम ।। पर० ।। ३ ।। मन शुद्ध कर जो तुमको ध्यावे। मन चिन्तित फल शीघ्र ही पावे। शुभ दृष्टि तुम पाम। तुमको लाखों प्रणाम तुमको क्रोड़ों प्रणाम ।। ४ ।। स्वामी चरण शरण में आया। श्री हरि पूज्य परमपद पाया। "कान्तिसार" अभिराम। तुमको लाखों प्रणाम-तुमको क्रोड़ों प्रणाम ।। पर० ।। ५ ।। इति ।।

।। पुनः स्तवन ।।

इस दुनिया में तेरो यश छाय रह्यो रे छाय रह्यो-छाय रह्यो रे ।। इस० ।। टेर ।।

अनुपम महिमा कान सुनी तुम। मन वांच्छित फल पाय रह्यो रे ।। इस० १ ।। राज राज गुरुराज चिन्तामणि। सुरतरु छाया छाय रह्यो रे ।।इस० २।। सजल मेघ ज्युँ अमृत बून्दें। भक्त हृदय वरसाय रह्यो रे ।। इस० ।। ३ ।। चरण न छोड़ूं मुख नहीं माड़ूं। तेरी लगन लय लाय रह्योरे ।। इस० ।।४।।

राम धाम तूंहीं है सद्गुरु। घट में ज्योति जगाय रह्यो रे ॥ इस० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ तर्ज—मेरे नाथ धुलेवा बुलाले मुझे ॥

तेरा अमृत प्याला पिलादो, मुझे। तेरे अनुभव रग में लगादो मुझे ॥ टेर ॥

मैं तो परदे पर जमी के। तूं रहा असमान में ॥ कैसे सोहबत होय तेरी। नही मेरे आसान में ॥ मेरा खत सन्देशा न पहुँचे तुझे ॥ तेरा० ॥ १ ॥ अगर तूं अरजी पै मरजी। करो मुझ पर कर रहम ॥ बन्दा अपना जान महिर। दे दरस का दे महम ॥ ऐसा तेरा भरोसा है पूरा मुझे ॥ तेरा० ॥२॥ लौ लगी किया उजेरा। पाक मोहब्बत के तणे ॥ दीदार का पाया नफा जन दूर हट गयो दुःख घणो ॥ सब हांसिल मेरी मिलादो मुझे ॥ तेरा० ॥ ३ ॥ बैन तेरे हैं रसीले। नयन में रहमी भरी ॥ शान्ति सूरज कुशल सूरत। दत्त गुरु महिमा वरी ॥ शुद्ध मन से ध्यावत राम तुझे ॥ तेरा० ॥४॥

॥ इति ॥

॥ तर्ज—हीरा जड़ाऊं थारी पोथी रे साचा जोसी, गुरुसा मिलन कब होसी ॥

गुरु देव मेरा, तुमही करोगे निसतारा, दादासा मेरा, तुम ही करो निसतारा, दादासा मेरा आप करोगे भवपारा ॥ टेर ॥

ऋद्धि वृद्धि सुख संपति दायक। रत्न चिन्तामणि सम उपकारक ॥ सूरि सकल में हो तुम नायक। युगवर वीर उच्चारा ॥ गुरु० नायक ॥ १ ॥ अनुपम कीरती तेरी पायी। श्री गुरुदेव बनो मेरे सहाई ॥ जीव रह्यो तुम चरण लुभाई। क्यों कर मुझको बिसारा ॥ गुरु ॥ २ ॥ दुखिया ने जब अरज गुजारी। लीनी खबर जब टेर संभारी ॥ चन्द्र सूर्य ज्यों ज्योति तुम्हारी। लाखों जन को उबारा ॥ गुरु० ॥ ३ ॥ राय राणा तुम आणा ज माने। कुमती कदा ग्रह तुम को न जाणे ॥ वन्दन करत हैं हम इक ध्याने। रखिये लक्ष हमारा ॥ गुरु० ॥ ४ ॥ इति ॥

❀ तर्ज—प्रभु का नाम लेने से ❀

दयामय मेहुँला आजे। अहीं वरसाव जो दादा ॥ थये लूं शुष्क जीवन वन। वली सरसावजो दादा ॥ १ ॥
हृदय भूमि थई नीरस। त्रिविध सन्तापना योगे ॥ सरस रस पूरझर नावो। तमे प्रगटावजो दादा ॥ २ ॥
हमेशा थाय नव सरजन। बने आदर्श नव जीवन ॥ पुनित आदर्श ते पोते। तमे समझावजो दादा ॥ ३ ॥
रजोगुण डूंगरा जेवा। सुजनता ने सतावे छे ॥ बधाते प्रेम पानी थी। वहावी नाखजो दादा ॥ ४ ॥
सुगुरु जिनदत्त सूरीश्वर। विनय युत वन्दना साधे ॥ कवीन्द्रों नीविनन्ती आ तमे अवधारजो दादा ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ तर्ज—प्रभु पूजा करवा जाइये ॥

सुण मनवा गुरु गुण गाना । गुरु गुण में ही रम जाना ॥
खूब खजाना । अन्तर धन का खुल जायगा ॥ सुण० ॥ १ ॥
जो तू है गुरु का बन्दा । तो नहीं रहे दुःख दन्दा ॥
सूरज चन्दा । सम तूं स्वयं बन जायगा ॥ सुण० ॥ २ ॥
गुरु ज्ञान विना तूं अन्धा । करता है ऊंधा धन्धा ॥
कर्म निबन्धा । खाली तूं गोता खायगा ॥ सुण० ॥ ३ ॥
लोहा सुवरन बन जावे । पारस पर सग में आवे ॥
गुरु बन जावे । जो तूं गुरु संग पायगा ॥ सुण० ॥ ४ ॥
हरि कविन्द्र का है कहना । गुरु सेवा में चित्त देना ॥
हित सुन लेना । भव पार तूं हो जायगा ॥ सुण० ॥ ५ ॥

॥ इति ॥

॥ तर्ज—चिन्ता चूर चिन्तामणि पास (प्रभो) ॥

वन्दे सूरिवरं जिनदत्तमहम् । योगस्याति बलेन सुशोभि सुखम् ॥ वन्दे० ॥ १ ॥
पद्मासन द्युति शोभितम् । श्वेताम्बरेण समन्वितम् ॥ भक्त्या नौमि जनार्चितपादयुगम् ॥ वन्दे० ॥ २ ॥
पीयूष सार समोपदेशम् । प्राप्य मुग्धा मानवाः ॥ ध्याये जीवदयासु रतम्प्रवरम् ॥ वन्दे० ॥ ३ ॥
विद्युद्विमान विमर्दकम् । भूतादि सिद्धि समन्वितम् ॥ ध्याये मिथ्याधर्म निशाप हरम् ॥ वन्दे० ॥ ४ ॥

विद्याबलैऽर्जित भूतलम् । जिनशासन प्रबलान्वितम् ॥ ध्याये श्रीजिनधर्म विधु विमलम् ॥ वन्दे० ॥ ५ ॥

आषाढ़ शुक्लैकादशी–दिवसे वपुः प्रविसर्जितम् ॥ ध्याये देववरं जिनदत्त गुरुम् ॥ वन्दे० ॥ ६ ॥

देवेश ! सम्प्रति भारतम् । दुःखै रनन्तैः पीड़ितम् ॥ यत्नं वारयितुं कुरु तच्च शुभम् ॥ वन्दे० ॥ ७ ॥

पुनरस्तु भारतवर्ष मध्ये । तेऽवतारः साम्प्रतम् ॥ याचे वैद्योदयचन्द्रस्सततम् ॥ वन्दे० ॥ ८ ॥ इति ॥

※ गुर्वाऽष्टकम् ※

महा ज्ञानी ध्यानी तुम विदित दानी प्रवर थे । धरा धरा के थे तुम तरुण तैराक मति मन् ॥ तुम्हें ध्याता हूँ मैं विमल मन से प्राणपण से । दयाब्धे ! दुःखों का दमन अब आचार्य ! करदो ॥ १ ॥ पता क्या था ? पीताम्बर युगल धारी न गुरु हैं । बड़े मायी वे हैं कपट रचना पूर्ण पटु हैं ॥ बतायी थी सच्ची शरण तुमने नाथ मुझको । दयाब्धे ! दुःखों का दमन अब आचार्य ! करदो ॥ २ ॥ रहेंगे संसारी भ्रमण करते नित्यतम में । भला ! होगा कैसे गुरु प्रवर ! उद्धार उनका ॥ कृपा भीक्षा दे के करुण करुणागार अपनी । दयाब्धे ! दुःखों का दमन अब आचार्य ! करदो ॥ ३ ॥ सुनेंगे स्वादेंगे गुरु बचन सानन्दज मन से । उन्हें गारण्टी

है निखिल सुख निर्वाण पद की ॥ गुरो ! स्वामी मेरे मन सदन में शान्ति भरदो । दयाब्धे ! दुःखों का दमन अब आचार्य ! कर दो ॥ ४ ॥ चिदात्मन् ! जा जा के नगर वसती ग्राम जन में । दिखाया लोगों को परम पद का मार्ग तुमने॥ मुझे भी आशा है चरम गति की नाथ ! तुमसे दयाब्धे ! दुःखों का दमन अब आचार्य ! कर दो ॥ ५ ॥ निच्छाया माया ने सृजन करके जाल जग का । दृगों के होते भी मनुज बन अन्धे फस रहे । तुम्हारी रोचायें मन नयन का मन्जु सुरमा । दयाब्धे ! दुःखों का दमन अब आचार्य ! करदो ॥६॥ सुनाता मैं स्वामिन् ! तव गुण कथा जैन कुल में । तुम्हें ध्याता जाता प्रणत शिर, हे रत्न जिन ! मैं ॥ तुम्हारा चेला है सफल करना "ध्वंगल" को । दयाब्धे ! दुःखों का दमन अब आचार्य ! कर दो ॥ ७ ॥ प्रतीक्षा भीचा है मम, तव परीक्षा समय की । तुम्हारा ही मारा प्रगुतर ! महाग भुवन में ॥ कहो, बोलो, होगी परम पद की प्राप्ति मुझको । दयाब्धे ! दुःखोंका दमन अब आचार्य ! करदो ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ श्री जिनदत्त सूरि उत्पत्ति स्तवन ॥

वल्लन्दि विलास सुवास मिले । गुरु नामे मन री आश फले । दोषी दुश्मन गम दूर टले । महमा बहु सपति आय मिले ॥ १ ॥ जय जय जिनदत्त मुनिन्द यती । श्रुत-

धार कृपालक शीलवती ॥ जसु नाम रहे नहीं पाप रति । जेहनी महिमा जग मांहे अति ॥ २ ॥ शुभ मंगल लील विलास सदा । दुःख रोग दुकाल न होय कदा ॥ आराध्यां आवे सुगुरु मुदा सुप्रसन्न हाजर होय तदा ॥ ३ ॥ जिण जीती चौसठ योगिनियां । वश बावन खेतल वीर किया ॥ जसु नाम न पड़े वीजलियां । भूत प्रेत न कर सके छल वलियां ॥ ॥ ४ ॥ जिणसिंध सवालख दिस साधी । पंच पीर नदी जिण पुल बांधी ॥ उपगार किया कीरत लाधी । बरसात लियां गुरु सिद्ध वाधी ॥ ५ ॥ सुत मुगल कियो सरजीत बहू । पाये लागा नर नार सहू ॥ जिण साधी विद्या वेश लहू । प्रतिबोधी श्रावक कीध बहू ॥ ६ ॥ वड़ नगरे ब्राह्मण द्वेप धरी । मृत गाय लई जिन चैत्य धरी ॥ गुरु मंत्र बले जीवित उधरी । विप्र वेप सहू गुरु पाय परी ॥ ७ ॥ वज्रमय थंभो दोय खण्ड कियो । पोथी परगट परभाव थियो ॥ विद्या सोवन वरणे सझियो । वर नगर उज्जैनी सुयश लियो ॥ ८ ॥ गुरु हुँबड़ वंशे जीव दया । मंत्री वाच्छग परसिद्ध थया ॥ बाहड़दे कूखे जनम भणूं । ते चवदे विद्या जाण घणूं ॥ ९ ॥ इग्यारे बत्तीसैं जनम भणूं । इग्यार इगताले दीक्षा थुणूं ॥ युगवर इग्यारे गुणहत्तरे । स्वर्गे बारे से इग्यार करे ॥ १० ॥ जिन वल्लभ सूरि पटो धरणं । परभाव उदेसर भय हरणं ॥ नवनिधि लछमी संपति करणं । वलि विकट

संकट आरति हरणं ॥ ११ ॥ थुंभ सकल श्री अजमेरे। गढमडोवर वीकानेरे ॥ सुख दायक श्री जेशलमेरे। दीपे गुरु गाजी खान देरे ॥ १२ ॥ मुलतान नगर महिमा सागे। भारत दारिद्र दूरे भागे ॥ देरे इस्माइल खान सोभागे। गुरुवर पुर में कीरति जागे ॥ १३ ॥ धन धन जे सद्गुरु ध्यान धरे। तेरे न्हवन पूजा जेह करे ॥ गच्छ खरतर नी महिमा पमरे। कवि सूरि उदय जिन कीरति करे ॥१४॥

॥ इति ॥

॥ खरतर गुरु पट्टावली ॥

प्रणमी वीर जिणेसर देव। सारइ सुरनर किन्नर सेव ॥ श्री "खरतर" गुरु पट्टावली। नाम मात्र पभणुं मन रली ॥ ॥ १ ॥ उदयउ श्री "उद्योतन" सूरि। "वर्द्धमान" विद्याभर पूरि ॥ सूरि "जिणेसर" सुरतरु समो। श्री "जिन-चन्द सूरीश्वर" नमइ ॥ २ ॥ "अभयदेव" सूरि सुखकार। श्री "जिनवल्लभ" किरिया सार ॥ युग प्रधान "जिनदत्त सूरिन्द" नरमणिमडित श्री "जिनचन्द" ॥ ३ ॥ श्री "जिन पति" सूरीश्वर राय। सूरि "जिनेश्वर" प्रणमु पाय ॥ "जिन-प्रबोध" गुरु समरूं सदा। श्री "जिन पद्म सूरि" सुखकन्द लब्धिवन्त श्री "जिनचन्द" नमु निश दिम ॥ ५ ॥ सूरि "जिनोदय" उदय उभाण। श्री "जिनराज" नमुं सुविहाण ॥ श्री "जिनभद्र" सूरीश्वर भलउ। श्री "जिनचन्द्र" सकल

गुण निलउ ॥ ६ ॥ श्री "जिन समुद्र सूरि" गच्छपति। श्री "जिन हंस" सूरीश्वर यति ॥ "जिन माणक सूरि" पाटे थयउ। श्री "जिन चन्द्रसूरीश्वर" जयो ॥ ७ ॥ ए चउवीसे खरतर पाट। जे समरइ नर नारी थाट ॥ ते पामई मन वंच्छित कोड़ी। "समय सुन्दर" पभणइ कर जोड़ी ॥८॥

॥ इति ॥

* श्री मणिधारी श्री जिनचन्द्र सूरि स्तवन *

तुम तो भले विराजोजी, मणिधारी महाराज दिल्ली में भले विराजोजी ॥ टेर ॥

नर नारी मिल मन्दिर आवे। पूजा आन रचावे ॥ अष्ट द्रव्य पूजा में लावे। मन वांच्छित फल पावे ॥ १ ॥

आंशा पूरो संकट चूरो। ये है विरुद तुम्हारो ॥ आधि-व्याधि सब दूरे नाशो। सुख सम्पत दे तारो ॥ तुम० ॥ २ ॥

वाद विवादे जन जय पामें। तारे जलधि जहाज। वाट घाट भय पीड़ा भाजे। समरण श्री गुरुराज ।। तुम० ॥ ३ ॥

पुत्र पुनीता परम विनीता। रूपे लक्ष्मी नार ॥ ऋद्धि सिद्धि सुख सम्पत्ति दीजे। भल भरजो भण्डार ॥ तुम० ॥ ४ ॥

सेवक ऊपर करूणा करजो। महिर नजर तुम धरजो ॥ लक्ष्मी लीला घर में भरजो। एतो काम तुम करजो ॥ तुम० ॥ ५ ॥

॥ इति ॥

※ तर्ज—प्रभाती—तेताला ※

मणि मस्तक पर दीपे जिनके । बडे हुये जयकारीजी ॥ टेर ॥
श्री जिनचन्द्र सूरि मणियाले । गुण गावे नर नारीजी ॥
औरन को तो और भरोसा । मुझको शरण तुम्हारीजी ॥१॥
जल चन्दन अरु पुष्प मनोहर । अक्षत उज्जलकारीजी ॥
धूप दीप नैवेद्य आरति । पूजो फल विस्तारीजी ॥ २ ॥
अल्प बुद्धि मैं गुण समुद्र तुम । कैसे करु विचारीजी ॥
शशि मण्डल जिन जल के भीतर । बाल ग्रहे कर धारीजी ॥३॥
ताम प्रताप हमु पर किनो । कृपा आपकी भारीजी ॥
श्री 'जिनचन्द' हर्ष हृदय मे । आयो शरण तुम्हारीजी ॥४॥

॥ इति ॥

॥ तर्ज—सारङ्ग—तेताला ॥

मन वांञ्छित काज करो मेरे ॥ मन० ॥ सुर नर पूजे पद तेरे ॥ मन० ॥ मणिधारक वरदायक गुरु के । गाजे जग यश बहुतेरे ॥ मन० ॥ १ ॥ पूरण ज्योति उदय जिन शासन । पाटवी वीर जिनन्द केरे ॥ मन० ॥ २ ॥ सुर मुनि जन गुरु चरण कमल में । यही नित ध्यान हृदय मेरे ॥ मन० ॥ ३ ॥ "श्री जिनचन्द" अक्षय सुख दीजे । अविचल आनन्द बहुतेरे ॥ मन० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ तर्ज—इमन–तेतला ॥

सद्गुरु मणिधारी महाराज । श्री जिनदत्त सूरीश्वर साहिब । दर्शन दीजे राज ॥ १ ॥ महिर करीने प्रेम धरीने । निज जन ने चित्त धार ॥ जिनदत्त पटोधर मुनिवर । आनन्द सुखदातार ॥ २ ॥ जन दुःख भञ्जन विरुद तुमारो । जाणे सहु नर नार ॥ श्रावक जन मन वांच्छित पूरण । सुरतरू ज्यों जग सार ॥ ३ ॥ वाद विवादे जग यश पावे । तारे जलधि जहाज ॥ वाट घाट भव सङ्कट टाले । समरण श्री गुरुराज ॥ ४ ॥ पुत्र पुनीता परम विनीता । रूपे लक्ष्मी नार ॥ ऋद्धि सिद्धि सुख सम्पत घर में । वल भरियो भण्डार ॥५॥ आरत चूरो वांच्छित पूरो । अवधारो अरदास ॥ श्रीजिनचन्द्र अक्षयनिधि दायक । सफल करो हम आश ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ तर्ज—कालिंगड़ा–तेताल ॥

सद्गुरुजी मैं शरणे आयो । जन्म मरण को दुःख मिटावो ॥ सद्० ॥ १ ॥ श्री मणिधारी चन्द्रसूरि गुरु । तुम सम दूजो कोई न पायो ॥ सद्० ॥ २ ॥ इन्द्रप्रस्थ में थंभ विराजे । दरशन करके मन हरखायो ॥ सद्० ॥ ३ ॥ इण कलिकाले प्रगट प्रतापी । विरुद देख के दिल ललचायो ॥सद्० ॥ ४ ॥ महिमा भक्ति सुनी कर जोड़ी । पद्मोदय गुरु के गुण गायो ॥ सद्० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ तर्ज—देशी—चाल ॥

लीजे लीजे अरजी मोरी मान। कीजे कीजे करुणा-करुणा निधान। दीजे मोहे सुमत ज्ञान ॥ १ ॥ श्री जिन-चन्द सूरि मणिधारी। उपगारी दूजो नहीं तुम सम। माणक चाकर की विनती सुनिये धर के ध्यान ॥ २ ॥ इति ॥

॥ तर्ज—होली ॥

श्री जिनचन्द सुखकारी। अरज सुन लीजे हमारी ॥ टेर ॥

खरतर गच्छ नायक सुखदायक पर उपगारी। भट्टारक गुरु जङ्गम सुरतरु महस किरण उतारी। सुगुरु मस्तक मणि-धारी ॥ १ ॥ श्री जिन० ॥ विपत विदारण कष्ट निवारण। सेवक जन हितकारी ॥ चिन्तामणि और कामधेनु सम वांच्छित फल दातारी। खलक जाने गुरु सारी ॥ २ ॥ दीन दयाल दयानिधि दाता। तुम महिम जग भारी ॥ सोमवार पूनम दिन थारो। पूजे चरण नर नारी लिये केशर जल झारी ॥३॥ तुम समदाता और न जग मे। यह मन माहे विचारी। श्री सतयुग माणक चाकरने लीनी –रण तिहारी। जाऐ चरनन परवारी ॥ ४ ॥ इति ॥

जय जय जग जन दयाल। सद्गुरु मणिधारी ॥जय०॥ टेर ॥

ओस विमल वंश भान। समरालज साज्ञान ॥ रासल पितु देवी मात। देल्हण सुखकारी ॥ मुखकारी ॥जय०॥१॥

कोटिक गण कुलचन्द सार । खरतर शुभ विरुदधार ॥ नायक जिनचन्द सूरि । महिमा भुवि भारी ॥ जय० ॥ २ ॥ जंगम युगवर प्रधान । श्रीजिन उपपद वखाण ॥ दत्त सूरि पाट उदय । गिरि रवि अवतारी ॥ जय० ॥ ३ ॥ किंकर सम अमर खास । सेवत कृत निकट वास ॥ दिल्लीपति निपट दास । ध्यावत नर नारी ॥ जय० ॥ ४ ॥ दौलत घर भरत भूर । संकट दल करत चूर ॥ प्रणमत नित मुनि कपूर । दर-शन बलिहारी ॥ जय० ॥ ५ ॥ इति ॥

❀ श्री जिन कुशल सूरीश्वर घग्घर निशाणी ❀

दायक ऋद्ध सिद्धां सेवा किद्धां परतख सुरतरु कन्दा है ।
परिवारज वाधे गुणो अगाधे छाजहडां कुल चन्दा है ॥
विक्रम शति वच्छर तेर संवच्छर बत्तीसे जन्म लयन्दा है ।
कुलमंडण जाणो धन्य विहाणो जेलण जयती नन्दा है ॥१॥
तेरे सेंताले भाग्य विशाले भावे दिखलन्दा है ।
गुरु योग्य पिछानी बहु सन मानी सैं हथा पाट दियन्दा है ॥
बहु सुख समप्ये दाल कप्ये श्री जिन कुशल सूरिन्दा है ।
सहु लोकज अखे इन गुरु परखे कुण इच्छा पूरिन्दा है ॥२॥
निज पूरण ज्ञाने आयु पिछाने शुभ ध्याना ध्यावन्दा है ।
चोराशी लखं योनिज अखं जीवां सूं खामन्दा है ॥
अणशण सागारी करी इकतारी सुखकारी जोवन्दा है ।
वच्छर नव्यासी जे अविनाशी सुरवासी थावन्दा है ॥३॥

थिर शुम्भज थप्पे दालिद कप्पे देरासर दीपन्दा है।
वीरमपुर वाने नलि वीकाणे अरियन कू जीपन्दा है॥
सुर नर गुण गावे शहर सेत्रावे योधपुरे जगन्दा है।
नागोर नगीनों सहुजन लीनो व्यन्तर भूत भगन्दा है॥४॥
जे धन नर नारी ऊठ सवारी जाके पाय नमन्दा है।
उन्हें जलनाहे अति उमा है इति अतीत दमन्दा है॥
जसु ध्याने जे नर होवे सुधरत वसु ग्रह दुष्ट नसन्दा है।
अति उज्जल सखरी धोति पहरी कुंकुम लेप घमन्दा है॥
वर नावना चन्दन पाप निकन्दन शुभ भावे पूजन्दा है॥५॥
खस वोही चगी रचिये अगी मधुकर तिहा गुंजन्दा है।
मलयागर सरनर वलि कृष्णागर धूपद खूं धूपन्दा है॥
कस्तूरी पूरी कपूरी चूरी गोहूँला भेलन्दा है।
कुल वृद्धा लायक सुखा दायक साजन वह मेलन्दा है॥६॥
जसु महिमा चावी श्रावक श्राविका जाको जश वाचन्दा है।
मद्दल सुरणाई सखरीधाई मेघाज्युं गाजन्दा है॥
गुण गीतज ,गावे शीस नमावे नाटक मिल नाचन्दा है।
झालर कशाला दे दे ताला वाजिन्त्र बहु वाजन्दा है॥७॥
इम आलस छारी कर इकतारी जे मन शुद्ध ध्यावन्दा है।
ते सघली माते सयल सघाते मन इच्छा पावन्दा है॥
रायजादी राणी गुणे वखाणी वदनज ओपम चन्दा है।
तसु देख्यां सुख जाये दुःख घुघरीयां रण कन्दा है॥८॥

कटि सोहे गुञ्झां अनोपम वञ्झां कटि मेगल झण कन्दा है।
जोबन वय माती सहू सुहाती तिण सूं केल करन्दा है ॥
वलि घोड़ वयल्लां साथ छयल्ला शिर पर छत्र धरन्दा है।
इक चित्ते ध्यावे वेग वधावे पद चक्रवर्ती लहन्दा है ॥६॥
तसु हय गय थट्टां बोलत भट्टां मूंह आशीस कहन्दा है।
खरतर गच्छ ईसर "कुशल सूरीसर" ताके गुण गावन्दा है ॥
सेवक साधारे शत्रु संहारे तरस्या तोय पावन्दा है।
सुख संपति पावे अधिके दावे चंगा शीस लहन्दा है ॥
घर घर निशाणी सहु वखाणी जय मुनि चन्द कहन्दा है ॥१०॥

॥ इति प्रथम घग्घर निशाणी ॥

॥ द्वितीया-घग्घर-निशाणी ॥

सद्गुरु गच्छनायक वंच्छितदायक श्रीजिनकुशल सूरिन्दा है।
जाके गुण गावत अति सुख पावत मेरा मन उलसन्दा है ॥
थिर थुंभ गडाले पख उजवाले मुनिजन लोक मिलन्दा है।
पूनम सोमवारे सांझ सवारे इण विध पूज रचन्दा है ॥१॥
गुरुपादुका निरखत सब मन हरखित प्रथम सुन्हवण करन्दा है।
घस केशर चंगी रचते अंगी वरग बीच फावन्दा है ॥
केतकी के फूले गुलाब अमूले सुशुभ सोरंभ वासन्दा है।
कृष्णागर आगर मेली तग्गर धूप सुगन्ध खेवन्दा है ॥२॥

मौली की वरती घृत से झरती मंगल दीप जगन्दा है।
वर अक्षत थाल भरी सुविशाल सुपूजत्रय पूरन्दा है॥
निदाम अखोडा श्रीफल जोडा गुरु चरणे चाढन्दा है।
मर मोदक थाला अतिहि रसाला नेवैद्य वहु ढोवन्दा है॥३॥
अब आरती करियां तब तिण विरियां झल्लर शंख वजन्दा है।
करनाला कुहके मद्दल गहके नग्गारा घुरन्दा है॥
बीच झांझर वाला ताल कशाला सरणाई बोलन्दा है।
भेरी निघाई सखरी आई जाण की घन गाजन्दा है॥४॥
गुरु भावना भावत गंधर्व आवत खूब नणाव बनन्दा है।
पंचरंगी पगड़ी बंधी तकडी जरकस पेच लहन्दा है॥
वागा अति चंगा पहर सुरंगा उत्तरासंग सझन्दा है।
कर मस्तक टीका अतिहि नीका विच तन्दूल ओपन्दा है॥५॥
मुक्ता फल माला गलविच डाला करणा भरण ठनन्दा है।
कर कंकण पहरा हुआ गहरा पग घूघर घमकन्दा है॥
मन आण उलट्टा भरियां थट्टां नाटक खेल मचन्दा है।
तत्ता थेई तत्ता थेई लुल लुल अंग नमन्दा है॥६॥
तहां केई छोगाला फिरे विचाला सीरणियां वाटन्दा है।
केई मिलवर वाला हुय मतवाला कौतूहल देखन्दा है॥
केई गणधर मुनिवर बैठा सुखकर केई ध्यान ध्यावन्दा है।
केई थुभे पासे आय उल्हासे गुरु कीरति भाखन्दा है॥७॥

तैं संयमधारी दोष निवारी सुरपदवी पावन्दा है।
तैं सब से न्यारा क्रिया विचारा रन वन वास रहन्दा है॥
तैं माया जोड़ी सब ही छोड़ी माया मांही झिलन्दा है।
तैं गुणदा आगर सेवित नागर सुरतरु जेम फलन्दा है॥८॥

तूं क्षम्माधारी है अवतारी ते राजस्स वधन्दा है।
तूं गच्छ आधारा सानिधकारा भीड़ पड़्या आवन्दा है॥
तूं परतिख देवा करु तुम सेवा जिन शासन दीपन्दा है।
तूं हाजर ऊभा अपने थुंभा समर्यां साथ दियन्दा है॥९॥

तूं डायण सायण रोहिण रंकण ताकूं वेग टालन्दा है।
तूं वनचर भूचरसबला खेचर दुश्मन कूं ढाहन्दा है॥
तूं लक्ष्मी लावे दुःख में आवे वीच्छडियां मेलन्दा हैं।
प्रवहणतारे काज सुधारे घर संपत्ति आनन्दा है॥१०॥

तूं देखी दुःखियां करे अतिसुखियां निरधन धन्न लहन्दा है।
तूं अन्तरगत की सब के मन की अन्तर पीड़ भजन्दा है॥
तूं संकट काटे विषमी वाटे तेरा शरण लियन्दा है।
तूं तिसियां पाणी पावे आणी जलधर रेल चलन्दा है॥११॥

तूं दीनदयाला सब रिछपाला रोग शोक काटन्दा है।
तूं झगड़े झांटे मोटे आंटे बोल ऊपर लावन्दा है॥
तूं कुमति विडारे आयां द्वारे जातंध नयण जोवन्दा है।
तूं गुणीयन सुन्दर मेले परिकर मन मोहन देवेन्दा है॥१२॥

तेरी प्रगट पुण्याई जोति सवाई तेरा तप्प तपन्दा है।
तो थुम्भा आगे मधुरे रागे नर नारी गावन्दा है॥
मृगमद कर पूरा चन्दन चूरा जहा परिमल महकन्दा है।
नित अपने हित्ते निरमल चित्ते चरण कमल पूजन्दा है ॥१३॥
तूं श्री संघ रखे श्री संघ पखे श्री संघ दिल्ल वसन्दा है।
श्री संघ थुंभ आजे कुशल वधाज्ञे श्री संघ कुशल होवन्दा है॥
संघ मिल इक चित बोले कीरत पारन को पावन्दा है।
श्री संघ लही ऋद्ध सिद्ध पाई नव निधि श्री संघ नित वाधन्दा है ॥१४॥
संवत अठारे वरस चिहुँत्तर कार्तिक मास वहन्दा है।
पूंजन रविवारे गुरु दरबारे मेला खूभ सोहन्दा है॥
तहा मैं आया दरशण पाया मोक्ष तू दमन्दा है।
घग्घर निशाणी कुशल कहाणी उदय उदय पूतन कहन्दा है॥
॥१५॥ इति ॥

*** श्री जिन कुशलसूरिश्वर छन्द . प्रथम ***

खरतरगच्छ जाणे खलक। राजे श्री गुरु राज॥
दादो दरशण देखता। सरे सहु शुभ काज॥ १ ॥

॥ छन्द-भुजंगी ॥

सरे सब काल सटक्क सटक्क। तूटे दुःख जाल तटक्क तटक्क॥ मिले मन मेलू मटक्क मटक्क। लगो गुरु पाय लटक्क लटक्क॥ लगो० ॥ १ ॥

खरे मन मेट खटक्क खटक्क। चोखे चित्त चाह चटक्क चटक्क॥ हरो हठवाद हटक्क हटक्क॥ लगो० ॥ २ ॥

थुंभे नर थान थटक्क थटक्क। वधारे नारेल वटक्क वटक्क॥ गिलीजे सेस गटक्क गटक्क॥ लगो० ॥ ३ ॥

गुणो गुण माल गटक्क गटक्क। घणा मिसटान घटक्क घटक्क॥ जुड़े गंज स्वान झटक्क झटक्क॥ लगो० ॥ ४ ॥

भगे भय भूर भटक्क भटक्क। अरी रहे दूर अटक्क अटक्क॥ कदे न पुकारे कटक्क कटक्क॥ लगो० ॥ ५ ॥

छीजे सहु रोग छटक्क छटक्क। पुले खल शीश पटक्क पटक्क॥ झड़े सहु पाप झटक्क झटक्क॥ लगो० ॥ ६ ॥

॥ कलश ॥

लटक लटक पाय लगे जस प्रकट पुण्याई।
गुरु सेवा सुरगवी आप लक्ष्मी वर आई॥
वीकानेर विशेष जागतो सुगुरु गडाले।
जिनदत्त सूरि जिन कुशलरा आप विरुदां उजवाले॥
विजय हरख सौभाग्यवर उवज्झाय अेम धरमसी अखे।
श्री संघने सानिध कर ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ द्वितीय-छन्द ॥

समरुं माता सरस्वती। कुमारो कर जोड़।
तूं माता कवियण तणा। पूरे वांछित्त कोड़ ॥ १ ॥

कुशल करण जग कुशल गुरु। दायक वञ्छित देव ॥
अह निशि तो ओलग करे। सुर नर सारे सेव ॥२

पुर पट्टण गामे प्रकट। जग सघले जस वास ॥
पुरा वदी तो पालियो। वसे दादोजी आस ॥३॥

* मोतिदाम-छन्दः *

दादोजी वाम जिये दोलत। वधे छत्र छाया सेवक वित्त ॥
वधारे मान दशो दिशिजान। धरे इक चित्त जिके गुरु ध्यान ॥४॥
पूनम २ पूजे पाय। नवा २ नेवज पारन पाय ॥
चम्पावली केतकी फूल चरच्च। अनोपम श्रीफल लेई अरच्च ॥५॥
लहे घर सुन्दर लाछ अन्छेह। सफन्ती मोल वधन्ती नेह ॥
लहे घर नारी लोयणजान। लहेन वलि पुत्त सुपुत्त सुजाण॥६॥
लहे भल गांम सुठाम भूपाल। लहे ढींग गीत भला ढीचाल ॥
लहे घर मन्दिर घोडा जोड। लहे भट्ट सेव करे कर जोड।७॥
लहे हित साजन हल्ल कल्लोल। लहे नित लीला छाका छोल॥
लहे घर कुरला कर कपूर। लहे घर जीमण मोतीचूर ।'८॥
लहे घर विप्रा पुण्य पडूर। लहे घर सुख उगन्ते सूर ॥
लहे घर में गल मद ममत्त। लहे घर चीर अनोपम मत्त ॥९॥
लहे घर वञ्छित भोग रसाल। लहे घर साल कचोला थाल ॥
घर नित गीत तणा गहगाट। भणे नित जय २ चारण भाट॥१०॥

भल पुत्त सपुत्तिय बांझ फलन्त । विछोहा वाला वेग मिलन्त ॥
अनेकानेक विरुद्ध अपार । दीठो इक कलु में तूं आधार ॥११॥
जिहां सहस हवे जो मुख । कहूँ इक जीहा केई सुख ॥
वडा विरुद ताहरा अखियात । नरनारी केई आवे जात ॥
गुणें तूं गिरु ओ समुद्र सरीस । कह्यो में कोई न करज्यो रीस ॥ १२ ॥

* दोहा *

रीस न करज्यो कवियणा । मैं माहरी मति लार ॥
कहियो जग में कुशल गुरु । खरतरगच्छ शिणगार ॥१३॥

* लघुनाराच–छन्द *

शृंगार हार सोहअे । सुकाम धेनु दोहअे ॥
धरन्ती ध्यान जो सदा । टलन्ती दूर आपदा ॥१४॥
प्रथम जो देरा उरे । सुथान सिधथी उरे ॥
जेशाण थुम्भ जगतो । सुदिट्ठ संघ सावतो ॥१५॥
मुलताण मीर सेवता । अलेक पीर देवता ॥
केरो हरे फतेपुरे । गुरु सदा उदय करे ॥१६॥
मरोट थान मूलगो । ऐकान्त चित्त ओलगो ॥
वीकाण वान बोधतो । सुथान थान शोभतो ॥१७॥
प्रभाव नारिणीपुरे । निशाण बाजता घुरे ॥
भेटो नर भट्ट नेर । जगत्र सहु हुवे जेर ॥१८॥

नागोर नाम दीपतो । दाणव देव जीपतो ॥
तोरण तेम सोहम्रे । जगत्र मन मोहस्रे ॥१९॥
सरूप मेड़ते सही । अपार लब्धि जिहां लही ॥
महिम मालपुर तो । लाहोर दुःख चूरतो ॥२०॥
कला अनेक आगरे । छत्तीस पवन भूलरे ॥
दादेरी करन्त सेव । हिन्दुआं तुरक्का देव ॥२१॥
सदा सिद्ध सांगानेर । जालमी करन्त जेर ॥
अमरसरे कला अनेक । रावतोज तोडे टेक ॥२२॥
मालपुरे मुझभान । खान खान सेवे थान ॥
प्राणपुरे राज रीत । जैतारण जगतीत ॥२३॥
सोजत सुख मदय । वेनातटे विरुद्य ॥
खेजडले खरो सदा । नाहडमेर सपदा ॥२४॥
जोधाण मिले जातरा । जुडन्त देश देशरा ॥
वीरमपुर तिमरी । करन्त नृत्य अमरी ॥२५॥
जालोर जैतसिंहरी । सभायते खरापरी ॥
प्रगट आप पाटणे । सुरत सुख थापणे ॥२६॥
अनन्त तेज अहम्मदा । सुमंगलोर सर्वदा ॥
साचोर मुज सासतो । तुरव शत्रु त्रासतो ॥२७॥
जईपुरे जई डरे । सेत्रावे कोटडे गुडे ॥
गुरु सदा उदय करे । अेकान्त ध्यान जो धरे ॥२८॥

भमन्त भाग्ग जे तले। कीरन्ती कोटि ते तले ॥
कहूँ केता जीभ अेक। कोड थी कला अनेक ॥२९॥

❀ दोहा ❀

कला अनेक कुशल गुरु। समर्यां होय हजूर ॥
अलगी टाले आपदा। जिम अंधारे सूर ॥ ३० ॥

✻ कलश ✻

सूर तेज तिम सूरि दूरि आपद भय टाले।
मावित्रां ज्यूं मया करी सेवगां प्रतिपाले ॥
मन वंच्छित माइबाप कुशल गुरु कामित दाता।
पूनम पूजे पाय रहे ध्याने जे राता ॥ ३१ ॥
सुप्रसाद सोम सुन्दर सुगुरु। अभय सोम ओलग करी ॥
प्रगटियो थुम्भ पाली पुरे। विजयसिंह लीला वरी ॥३२॥

॥ इति ॥

✻ तृतीय छन्दः ✻

॥ दोहा ॥

परतिख परचा पूरवे। चूरे संकट कोडी।
श्री जिनकुशल मुनिन्दवीर। वणुं दोय करजोड़ी ॥१॥

✻ छन्दः ✻

कर जोड़ सद्गुरु पाय लागुं। सजन घर उच्छव घणो ॥
वर नंयर देरावर वखाणुं। सकल थूंभ सोहामणो ॥

परतिक्ख परचा सयल पूरे । दुरिय चूरे तत खिणो ॥
जिन कुशल सूरीशर निरंजन । हियो हरखे अम्ह तणो ॥२॥
निरधना द्यै धन राज रंका । पुत्र देय अपुत्रियां ॥
दोभागियां सोभाग अप्पे । सुक्ख संपे जात्रियां ॥
इक चित्त ध्यावे सुगुरु अह निश । तिहा चिन्तामणि जिस्यो ॥
जिन कुशल सूरीशर शिरोमणि । वसुहवडदाता इस्यो ॥३॥
सड़ सड़ति सड़ सड़ सर विछूटे । जडति जोर वहडिये ॥
खड खड़ति खग्ग प्रहार वजे । कुन्ति कुंजर खडिये ॥
हुँकार भण हक्के भडो भड । इस्ये रण सदूगुरु सरे ॥
जिन कुशल सूरीशर प्रसादे । जयति निश्चये ते वरे ॥४॥
थल वट्टघाट पुलन्ति पंथी । पडे जेह त्रिक्षालूयां ॥
सुकन्त होठ मिलन्त लोयण । लग्ग जीहा तालुयां ॥
गय जीव आसे नाकसासे । सुगुरु नाम जिको कहे ॥
जिन कुशल सूरीशर प्रसादे । निर नीर्यल ते लहे ॥५॥
अल्लोल जल कल्लोल माला । मगर मच्छ मयंकरं ॥
घणघोर नीर सुतीर सायर । सयल जन धुन्नेसरं ॥
वुडन्ति वाहण मझि जे जिन । कुशल नामति उच्चरे ॥
जिन कुशल सूरीसर प्रसादे । तारी संकट उद्धरे ॥६॥
वनसिंह विसहर निमसिं । नर वन्दिखाना बंधणे ॥
डायणि साइणि मोगल मोगा । जक्ख रक्खस भय घणे ॥

समरन्त सद्गुरु नाम धरिजे। मंत्र जे अह निशि भणे॥
जिन कुशल सूरीशर प्रसादे। मिले नवनिधि अंगणे॥७॥
मालवे मरहट मेद पाटे। मूलताने मंडले॥
घण घाट लाट कपाट सोरठ। गुज्जराते सिंधले॥
खुरशाण गजनी पमुह देशां। मांहि महिमा जाणिये॥
जिन कुशल सूरीसर शिरोमणि। सुगुरु अेम वखाणिये॥८॥
बावना चन्दन मेल केशर। सुगुरु पूजा नित करो॥
मृगनाभि अगर कपूर भेली। भोग उग्गा हो खरा॥
नारेल नेवज ढोई आगल। गीत गावे मामिनी॥
जिन कुशल सूरीसर प्रसादे। आश पुग्गी मनतणी॥९॥

॥ कलश ॥

आश्या पूगी सकल सूरी जिन कुशल पसाये,
देसोरी वर तरुणी गीत मधुर ध्वनि गावे।
समरथ सद्गुरु राय पाय प्रणमें नित नरवर अड़वडियां आधार॥
सार पोहर पीड़ाहर-जिन कुशल सूरी साहिब पूरि सब।
मनह मनोरथ अम्हतणा-विनवे साधु वर्द्धन हरख तै तुठे
वधामणा॥ १०॥ इति॥

॥ अब—चतुर्थ-श्रीजिन कुशल सूरीश्वर छन्दः॥

॥ दोहा ॥

वदन कमल वाणी विमल। दीजे शारद देव॥
बावन अच्चर बूझकर। भणवा लागूं भेव॥ १॥

केई मूरख पण्डित किया । माता ते मैहराण ॥
कालिदास सरखा कवि । जेपट् भाषा जाण ॥ २ ॥
भूतल परतिख भगवती । लसे सदाई लाट ॥
ब्रह्माणी नित प्रति वसे । काश्मीर कर्णाट ॥ ३ ॥

॥ गाहा—छन्द ॥

घर काश्मीर तणी धणियाणी ।
राजहंस वाहन सुर राणी ॥
वदन चन्द छवि कोकला बयणी ।
निरमल कमल भी मला नयणी ॥ ४ ॥

अति उज्जल तन अंबर झीणा । बेहद नाद वजति वीणा ॥
गिरवर रग रमंती गावे । अविरल वाण पढन्ती आवे ॥५॥

❁ दोहा ❁

अविरल वाणी ईश्वरी । सरस्वती उकतसमाप ॥
गाऊं गच्छपति कुशल गुरु । प्रगट घणे परताप ॥ ६ ॥

✻ छन्द—मोतीदाम ✻

परताप घणे नर नार पुणे ।
कथीओ गुण पार वखाण कुणे ॥
महीमण्डल मारू देश मही ।
सवि थाण गढे प्रथमाद्रि सही ॥ ७ ॥

वसे जिहां लोक अठारा वर्ण । सदा सुख संपद धातु सुवर्ण ॥
परथल ऋद्धि घणे भरपूर । निरमल नार नरां मुख नूर ॥८॥
जिह्लागर जेथ संत्रीसर जाग । बहादर जोध महा बुद्धमान ॥
बड़ो धर्मपालक ज्ञान विचार । आस्तिक जैन तणो आचार॥६॥
दरशण पट् थटो थट द्वार । पावे सहु पारथिया अणगार ॥
सुकुलीणी गेहणी शीलवती । लछ अंग बत्तीसे लीलवती ॥१०॥
युवती गुण लायक जैत सिरी । भल चौसठ भेद कला सुभरी ॥
लख कुंखईरे अवतार लियो । कुलजाण के भाण उद्योत कियो ११
जनमत पुत्र थयो जयकार । सघोषे वाजित्र मंगलाचार ॥
अनंग रूपो जिसो उणियार । किलकै कुन्दण देव कुमार ॥१२॥
वधन्ते वेस थयो वड़वीर । सराहे योगीन्द्र शील सधीर ॥
इते जिनचन्द भट्टारक आय । मन्मथजीत महा मुनिराय ॥१३॥
तपे सहु सूरतियां शिरताज । विद्याधर छत्र गरीब निवाज ॥
बलाबल हाजर बावन वीर । भली जेरे चौसठ योगिणी भीर १४
भयभीत पैगम्बर दूर भजे । फिर पंच नदी पंच पीर सझे ॥
डरे ताय डारण दानव देव । संकेताय कारण चारण सेव १५
अहो तप तेज अभीत ओनाड़ । महाव्रत सधर मेरु पहाड़ ॥
पगोतल लोटे छत्रपति । जड़धार इसो महा योग जति ॥१६॥

* दोहा *

गढ सवियाणे जगत गुरु । आया गच्छपति आप ॥
भेटण आपे भूपती । पुहवी सुण परताप ॥ १७ ॥

मंत्री जेल्हो कुल मुगट । कुंअर साथ कियाह ॥
विधि हित आयो चान्दवा । लायक सघ लियाह ॥ १८ ॥
श्रीजीरी वाणी सुणी । कहे वचन कर जोड़ ॥
अङ्क धरू सुत आपरे । मही पती गच्छपति मोड ॥ १९ ॥
आगे ही सुर अखियो । स्वप्ने वायक माम ॥
कुल दीपक मल हल कमल । जन्म्यो तो घर जाम ॥ २० ॥
कही जे तो सुत करमसी । जोग मञ्जन सिद्ध हत्थ ॥
समये जिनचन्द सूरिने । कुल मे रहसी कत्थ ॥ २१ ॥
चित हितकर छाजेड तणा । वचन सुणी वरदाय ॥
अम्हां होसी आपाढ सिद्ध । तीनों कठ लगाय ॥ २२ ॥
भूमण्डल विचरे भमर । पृथ्वी लगे जसु पाय ॥
इतरे श्रावण आवियो । वद्दल गहर वणाय ॥ २३ ॥
घर मुज्जर मगल धवल । थिस्यौ मासै थाट ॥
पाटण चन्द पधारिया । घणा हुआ गहगाट ॥ २४ ॥
संवत तेरसै तहत्तरे । वैठो चन्द विमाण ॥
तपे पाट कुशलेश तिण । ज्योति यन्त घण जाण ॥ २५ ॥

* छन्द—मोतीदाम *

तिण, पाट तपे कुशलेश कि सो ।
जिनदत्त वीयो जिनचन्द जिसो ॥

कुल हंस समोपम देव कला ।
अवतारे थयो शम्भु आप इला ॥ २६ ॥

नग नेत्र झलोमल कम्मलनूर । परमल गात्र सकोमल पूर ॥
दीपै घनसार महासुर देह । अनन्त भुजाबल रूप अछेह ॥२७॥
ऋषि जिन धर्म चले सुधराह । वड़ा इन्द्र देव वखाणे वाह ॥
जीता जिणे पांचे इन्द्रि जोध । कहे तस कामन व्यापे क्रोध ॥२८
पग पग जीवदया प्रतिपाल । ठावी जेरे मोक्षतणी मन ठाल ॥
महासिद्ध योगीन्द्र भूप मरद । सकेवपु भूषण शील जरद ॥२९
वणे शिर ऊपर टोप वेराग । धरे मन धीरज लागो ध्यान ॥
क्षमा खग्ग साहि क्रमा खल खट्ट । जिसो मृगराज कुरंग झपट्ट ।३०
करां दृढ झाल विवेक कवाण । भरयो गुण बाण वडो मोथाण ॥
चमाचम बीजल चारित्र शेल । फवे गज अंग दुआदज फेल ।३१
इसो तप तेज अभंग तुरंग । नवे पद जपने जान वरंग ॥
महा भड़ जीत त्रिवंक मदन । वधे घण पोरस जोस वदन ॥३२
जपें ऋषि जोगीन्द्र जय २ कार । वन्दे पग चौविह संघ जिवार ॥
गावे गुण गन्धर्व नागेन्द्र गोम । भणे मुख कीरति सारी भोम ॥३३

* दोहा *

नव तत्त भेद गजोग युत । पथ संजम प्रतिपाल ॥
नव्यासीमें सुरवर निडर । हुओ अमर हठि आल ॥ ३४ ॥

देराउर पुर सिंध दिसि । प्रगटी ज्योति प्रमाण ॥
पग पूजे हिन्दु आणपति । मीर पीर मुगलाण ॥ ३५ ॥
कमल २ चढती कला । इला मनावे आण ॥
गच्छ खरतर कुशलेश गुरु । दादो जैन रो दीवाण ॥ ३६ ॥

※ छन्द–मोतीदाम ※

दादो जिन धर्म तणो दीवाण । रटे जस राजिन्द रावल राण ॥ दाता मनवंछित दे वरदाय । पृथ्वी सहु हाजर सेवे पाय ॥ ३७ ॥ निरमल गंग अनोपम नीर अरचे चन्दन फूल अबीर ॥ घणे घनसार कस्तूरी घोल । चढे रंग केशर कुंकुम चोल ॥ ३८ ॥ झिग मिग दीपक ज्योति झलक । भली छिब मंडल भाण भलक्क ॥ मिले अठगंध सुरूप महक्क गावे उछरंगे गीत गहक्क ॥ ३९ ॥ वधारे श्रीफल उज्जलवान । पूंगी चले चाढी मिठाई पान ॥ करे नवनेवज ढोवे कोडि । जपे मुख जाप निन्हे कर जोडी ॥ ४० ॥ इमी निध तीने ही टंक अभ्यास । खरे मन पूज करे षट मास ॥ जतावे रूप तुरतज यार । तू से गुरु देत तो वाछित यार ॥ ४१ ॥ मिले घर संपत मंगल माल । सदामद भोजन साक रसाल ॥ पीये नित दूध कटोरे पूर । सखी जन उच्छव ऊगे सूर ॥ ४२ ॥ बीड़ा मृगमद लरग तबोल । करे अङ्ग न्हाण कपूर कटोल ॥ वामा पतिव्रता नयण विशाल । भलो मुखचन्द विराजे माल ॥ ४३ ॥ पृथ्वी जस कीरति पूत सपूत । अनमी आय करे

करे असतूत ॥ मोती मणि माणक मूंदरड़ा । कर कंकण हेम जड़ाव कड़ा ॥ ४४ ॥ खड़ा अंग ओलग दास खवास । दशो दिश हाजर दासी दास ॥ कर जोड़ घणा नर सेव करे । घर भोगवे चामर छत्र धरे ॥ ४५ ॥ सुखासन आसन रथ सहल्ल । महासुख माणे रंग महल्ल ॥ आराहित कच्छी खंग उत्तंग । मदोमत्त घूमत जूथ मत्तंग ॥ ४६ ॥ थटी मद महिषी गायां थाट । मथाणे गोरस घूमे माट ॥ भर्या नवनिद्ध अखूट भंडार । कृपा कर आप तूठा किरतार ॥ ४७ ॥

॥ कलश ॥

कृपा करे करतार, आय तूठो अलवेसर, गणधर गौतम जेम । पुहवी दाता परमेसर, सोमवार शिरताज, प्रगट पूनम तिथि आजी ॥ सेवे पवन छत्तीस, भाव भगतां कर जाझी, मोजा समंद दातार । मही मण्डल महिमा घणी, कविराज रींझ वंच्छित करण, धन हो धन खरतरधणी ॥ ४८ ॥ इति ॥

॥ तर्ज—कड़खेकी में छन्दः ॥

प्रेम मन धार नित पहर प्रभातेरे । विविध जस वास गुण राश वादो ।' अमल अखियात विखियात गुण इण इला । दीपतो देव जग मांहि दादो ॥ १ ॥ घाट रिपु थाट जल वाट ओघट घणे । हणे सहु आपदा भय हुय हजूरे ॥ सूरि शिरदार दै सकल सुख सेवकां । पुर नित कुशलजिन कुशल पूरे ॥२॥ अधिक घण झाड़ उझाड़ अवगाहतां । लस्करां तस्करां पड़या

लारे ।। धीग गच्छराज रो ध्यान मन ध्यावतां । निकट संकट सहु निकट वारे ।। ३ ।। बड़कती माजती बूड़ती वेड़ियां । पार उतार जिन विरुद पायो ।। तुझ सेवक तणा दु ख भांजे तुरत । धर्मसी कुशल गुरु नाम ध्यायो ।। ४ ।। इति ।।

राजै थूँभ ठोर ठोर ऐसो देव नांहि और—
दादो दादो नाम से जगत्र जस गायो है ।।
अपने कुं भाव आय पूजे लोक लच्छ पाय ।
घ्यामन कुं रणमांही पाणी आण पायो है ।। १ ।।
वाट घाट शत्रु थाट हाट पुर पट्टण में ।
देह गेह नेह से कुशल वरतायो है ।।
धर्मसिंह ध्यान धरे सेवका कुशल करे ।
साचो श्री जिन कुशल सूरि नाम यूं कहायो है ।। २ ।।
कुशल जग उच्छरग कुशल निणजे व्यापारे ।
कुशल देव देहरे कुशल घण राज दुवारे ।।
पुण्य पसायें कुशल कुशल श्री सघ भणीजे ।
वाहण आवे कुशल कुशल घर घर गाईजे ।। ३ ।।
जिनचन्द सूरि पुह पट्ट धर । नाम मत्र आरति टले ।।
जिन कुशल सूरि पाय पूजता । नवनिधान लक्ष्मी मिले ।।४।।
कुशल वडो ससार । कुशल सज्जन जन चावे ।
कुशले मगलमाल लच्छ घर कुशले आवे ।।

कुशले घोड़ा थट्ट कुशल पहरिये सुवन्नो ।
कुशले धन वरसन्त कुशल धन धन खन्नो ॥ ५ ॥
ऐसा नाम सद्गुरु तणो । कुशल जग रलियामणो ॥
जिन कुशल सूरि जप्या जुगत । घर घर होय वधामणो ॥६॥

मिश्री घृतक्षीर रलाय मिलाय । प्रभात समय गटके गटके ॥
सुख रास निवास सुधारण कुं । मन मेल मिले मटके मटके ॥
भली ऋद्धि वड़ी दिल रंजनकुं । सब आय मिले सटके सटके ॥
रुघपत कहत जगंत मिल्यां । गुरुदेव नमुं लटके लटके ॥ ७॥

मस्तूर पठाण गरव्व कियो । भइया वाद वदुं कोई पंडित जागे॥
साह सलेम बुलाय श्री पूज्य कुं । मोहि भरोसा चन्दन भागे ॥
भट्ट हार गयो इक चोट सबद की । जीत भई यूं जैन के तागे॥
वाद जीतो जिनचन्द भट्टारक । यूं पतसाह दिल्लीपति आगे ८

सबे मृग नयण चले गुरु वन्दन । छूट मांनूं गजराज घटा ॥
कर कंकण ने उरहार वण्यो गलमाल । बति त्रिच छूट लटा ॥
गौरी गावत गीत सुहागण । मंगल पूरत मोतिय चोक छटा ॥
भट्टारक तो जिनचन्द भट्टारक । सनमुख जाके वादी हटा ॥९॥

* सखी-गुलाब-मालती-संवाद *

॥ दोहा ॥

कहै गुलाब सुन मालती । किधर लगा है ध्यान ॥
मन भंवरा कैसे फिरा । देख रही आसमान ॥ १ ॥

कहै मालती सुन सखी । तुम हो चतुर सुजाण ॥
मेरा मन उन से लगा । तारन तरन जहान ॥ २ ॥

गु०—सुण सुणरी बहना, अखियां तरस रहीं आज ।
मा०—किस कारण बहनी, अखियां तरस रहीं आज ॥
गु०—गुरु दरशण बिनरी, कैसे मिले सुख राज ।
मा०—तू बाली भोली, सहज न मिले गुरु राज ॥
गु०—साचे मन राचे, है गुरु गरीब निवाज ॥ सुण० ॥१॥
मा०—अन्तर बिन भक्ति, नहीं मिलेंगे महाराज ।
गु०—मन ध्यान धरूंगी, तन मन कर इक साज ॥
मा०—बिन पिउ से राती, कैसे करैगी इक साज ।
गु०—सब झूठी दुनिया, है गुरु तरण जहाज ॥ सुण० ॥२॥

॥ दोहा ॥

मा०—चातग चाहे प्रेम रस । कैसे चले गुरु ज्ञान ॥
कहो सजनी कैसे रहें । दो खांडा इक म्यान ॥३॥
गु०—गऊ जात बन चरन कूं । सुरत वाछरू माहि ॥
ऐसे जानो हे सखी । या मे संशय नाहिं ॥४॥

मा०—अन्तर पट खोलो, साफ करो मन मांज ।
गु०—लो लगी हमारी, देंगे दरश सिरताज ॥
मा०—धन धन तूं जग में, तैंने पाया सिरपाज ।
गु०—प्रगटे सन्दाई, कुशल कुशल गुरुराज ॥

मा०—मेरी भी अरजी, भक्त वत्सल जी से आज ।
गु०—गुरु दर्शन दीना, राम सुधारन काज ॥ सुण० ॥५॥

॥ इति ॥

॥ २ ॥

सुण सजनी रजनी, सुपने में दरसन दे गयो । मन ले गयो, सुख दे गयो ॥ सुण० ॥ जिन कुशल सूरीश्वर मेरो मन हर के ले गयो ॥ सुण० ॥ १ ॥ बीते कब रतियां, कहुँ किन से बतियां । मेरी कुरके छतियां, रात अन्धेरी कुछ कह गयो, वर दे गयो ॥ सुण० ॥ २ ॥ सुन प्यारी सखियां, कब देखूं अंखियां । नहीं अन्तर रखियां, परतिख देखे बिन ना रहूँ ॥ सुण० ॥ ३ ॥ चन्द सूर उजाला, मुख शोभा वाला । हय अमृत प्याला, राम तेरी शोभा क्या कहूँ ॥ सुण० ॥ ४ ॥

॥ इति ॥

॥ ३ ॥

चलो प्यारे सयान, मेरा कहा लो मान । गुरु है सुविहान, जाने सारी जहान ॥ टेर ॥ पूरे मन की जो आश, मानूं दीपे कैलाश, नर नारी है दास । रखे खक्ति सैं मान ॥ चलो० ॥ १ ॥ जिन बल्लभ के पाट, जिसका बड़ा है ठाट । देवे संकट कूं काट, देवे लक्ष्मी निधान ॥ चलो० ॥ २ ॥ तेरी जागती है जोति, वारूं हीरा और मोती । तेरी महिमा

जो होती, कर दे मेरा कल्याण ॥ चलो० ॥ ३ ॥ तुझे कहैं जिनदत्त, तूं देता संपत्त । मेरी काटो विपत्त, देता शान्ति सु थान ॥ चलो० ॥ ४ ॥ चिर जीओ कृपाल, चाहूं फूलों की माल । करो दुश्मन पैमाल, राम धरता है ध्यान ॥चलो०॥ ५ ॥

॥ इति ॥

॥ ४ ॥

तेरी खिदमत में मेरा आना हुआ, आना हुआ गुण गाना हुआ । तेरे दरशन में दिल को जमाना हुआ ॥ टेर ॥ मेरा सुनले सवाल, मैं दरदी बेहाल । मेरी आफत को टाल, चन्द सुरिन्द के लाल, दिल नरमी से बन्दगी निमाना हुआ ॥ तेरी० ॥ १ ॥ तेरा जिगर में ख्याल, जो रखता संभाल । वह होगा निहाल, होगा इल्मी कमाल, तेरी सूरत पे चश्में लगाना हुआ ॥ तेरी० ॥ २ ॥ यूं कहती जहान, है आला महरवान । मैंने सुना है कान, आया तेरे दरम्यान, दिल नेकी से खट पट हटाना हुआ ॥ तेरी० ॥ ३ ॥ तू सायर सुरतान, मेरी अरजी लै मान । फिद्वी धरता है ध्यान, तन मन से कुरबान, तेरी आशिकी पै दिल को थमाना हुवा ॥ तेरी० ॥ ४ ॥ तूं कुशल निवास, मेरी पूरोगे आशा, रखता तेरा विश्वास, करो दुश्मन का नास, जिन कुशल को कुशल वरताना हुआ ॥ तेरी० ॥ ५॥ यह आरजू पैगाम, तेरा पाठक

है राम। सिद्ध करदो तमाम, मेरे नेकी के काम, चिर फूलों की खुसबू फैलाना हुआ ॥ तेरी० ॥ ५ ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ ५ ॥

थांरा विरुद म्है जाणों छां। म्है खास दास नहीं छाना छो ॥ थांरा० ॥ टेर ॥

सुरतरु सम कलि में अवतारी। प्रगट होय कर सानिधकारी ॥ म्हारी सुध बुध कांई विसारी। म्हे कांईराज विराणां छां ॥ ॥ थारा० ॥ १ ॥ केई अन धन सुत संपद पावे। केई आशा धर ध्यान लगावे ॥ म्हारो मन थांरी सुनिजर चावे। तन मन सुं पतवाणा छां ॥ थारा० ॥ २ ॥ दरशण फरसण करूं मैं पहली। केशर लाल गुलाब चमेली ॥ चरचूं चरण सुगन्धी भेली। आनन्द हरख भराणा छां ॥ थारा० ॥ ३ ॥ चन्द पटोधर श्री गणधरजी। कुशल २ सुणजो म्हारी अरजी ॥ साचे दिल सुं धरजो मरजी। अन्तर घट में माना छां ॥४॥ साचे मन राचे तुप संगे। कपट रहित निज आतम रंगे ॥ ऋद्धि सार प्रण में उच्छरंगे। थारे रंग रंगाणा छां ॥ थांरा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ ६ ॥

तेरा हूँ मैं तेरा हूँ मोहे भूलना नहीं गुरु भूलना नहीं ॥ तेरा० ॥ तूं ही है खुश फ़हम मुझे-भूलना नहीं ॥ टेर ॥

समझ मुझे खास दास भूलना नहीं। रखोगे तइनात पास, भूलना नहीं ॥ १ ॥ करूंगा मैं कदम पोसी भूलना नहीं। जुदाई न होगी कभी भूलना नही ॥ २ ॥ खुदाई तूं दरन है मोहे भूलना नहीं । जिगर ज्यान मेरा है तूं भूलना नहीं ॥ ॥ ३ ॥ जिस कद्र तूं मिले मोहे-भूलना नहीं। वह डगर खोजता हूँ--भूलना नहीं ॥ ४ ॥ चलूंगा मैं हुक्म तेरे-भूलना नहीं । यही है कलाम मेरा-भूलना नहीं ॥ ५ ॥ अगर मैं नापाक हूँ तो--भूलना नहीं । आप रंग इकरसी कर-भूलना नहीं ॥ ॥ ६ ॥ तुझ सिवा कस्म मेरे में और का नहीं। कुशल मेरे हीर पीर और का नहीं ॥ ७ ॥ नेक नजर देखले मैं-और का नहीं। आसनाई आप से मैं और का नहीं ॥ ८ ॥ राम है गरकान रंग-और का नहीं। चिरंजियो फूल महक और का नहीं ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ ७ ॥

दिल चंचल को काबू में कैसे लायगे ॥ दि० ॥ कैसे लायगे, हम ऐसे लायगे, तेरे वचनों का टुक जो इशारा पायगे ॥ दिल० ॥ टेर ॥ नादान, बेईमान, सयतान, तोफान मन एबी बडा है सैलान । गुरु चितवन से काबू में ले आयेंगे ॥ दिल० ॥ १ ॥ शुद्ध ज्ञान, फरमान, इकतान, पुनवान तेरे कदमू से धर लूंगा ध्यान । सब ऐनों को दिलसे हटाते जायगे ॥ दिल० ॥ ॥ २ ॥ तूं सत्त, शुद्धमत, जिनदत्त, रखपत्त, तेरी महर से लीला संपत्त । सारे

दुश्मन हमारे मुरझा जायंगे ॥ दिल० ॥ ३ ॥ कहे राम, गुण ग्राम, सिद्ध काम, शिवधाम । चिर फलों से पूजूं तेरे पांव । तुझे छोड़ के न और कूं कभी ध्यायंगे ॥दिल०॥४॥

॥ इति ॥

॥ ८ ॥

गुरुदत्त जती, शुद्ध साधु व्रती । मेरी नैया कूं पार लगा दो जती ॥ टेर ॥

मैंने कुगुरु कुदेव को सत्त समझा । सारे मिथ्यामति में रहा उरझा ॥ मैंने कुमती से कीया कुकर्म कृति ॥ मेरी० ॥१॥ फिर होय अनारज कर्म करार । छल वल कर माया उदर भरा ऐसी कर करणी से होगी कैसी गती । मेरी० ॥ २ ॥ कोई पुण्य उदय गुरुदत्त मिला । जाकी जागती ज्योति जगत्र कला ॥ जिन धर्म की संगत सुधरी मती ॥ मेरी० ॥ ३ ॥ व्याख्यान तुम्हारा श्रवण किया । मैंने और जंजाल को छोड़ दिया ॥ तेरी फूल वासना महके अती ॥ मेरी० ॥ ४ ॥ तेरी आत्मशक्ति से योगवधा । इसभव परभव उपगार सधा ॥ गुण गाऊं कहां तक अल्पमती ॥ मेरी० ॥ ५ ॥ नहीं मांगूं धन कंचन माया । तेरे सुनजर की चाहुँ छाया ॥ अब आनन्द पाई ऋद्धि छती ॥ मेरी० ॥ ६ ॥ तेरा पाठक राम कवित्त कहै । चिरंजीओ गुरु भव पार लहै ॥ अब तारोजी खरतर गच्छपती ॥ मेरी० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ ६ ॥

* स्त्री-भरतार-संवाद *

॥ दोहा ॥

बुद्धिमती तूं श्राविका । भर्म भुलानी आज ॥
कहां चली मेरी प्रिया । क्युं तज के गृह काज ॥ १ ॥
सोमवार पूनम दिवस । मैं जाती गुरु द्वार ॥
आप पधारो कन्थजी । ज्यूं पावों भवपार ॥ २ ॥
पत्थर पूजन क्यों चली । कहां तेरे गुरु राय ॥
सुख भोगो संसार का । यह परतिख सुखदाय ॥ ३ ॥
देव गुरु के दरश बिन । मिले न सुख संसार ॥
नास्तिक बुद्धि त्याग कर । गुरु भक्ति लो धार ॥ ४ ॥

॥ तर्ज—मांड ॥

स्त्री–मेरे कान्त सनेही अरजी ऐही पूजन दो गुरुराज ॥
भरतार०–तू सुन्दर प्यारी है मतवारी, नहीं परतिख गुरुराज ॥
स्त्री–कुगुरु के भरमाये प्रीतम, ऐसी मत करो बात ॥
दत्त, कुशल, जिनदत्त सूरीश्वर । दीप रहे साक्षातरे ॥मेरे०॥१
भ०–धातु काष्ट पाषाण कीरे । मूरती चरण देखात ॥
भोले नर कई भरम गयेरे । कहते गुरु साक्षातरे ॥तू सु०॥२
स्त्री–किसको ग्रमे आरमी पिया । किसको तजा और छाज ॥
जैसी जिसकी भावना पिया । फले मनोरथ काज रे ॥मेरे०॥३

भ०—कोई पीछा आया नहींरे । जल बल हो गई खाक ॥
क्यूं भूली तूं कामिनी रे । मेरा वचन चित्त राख रे॥तूं सु०॥४

स्त्री०—नास्तिक मत के मानवीरे । नहीं माने परलोक ॥
जिन वचनामृत मैं पीयारे, मेरे तो सारे ही थोक रे॥मेरे०॥५

भ०—तेरा वचन जब मान लूं रे । मुझे मिले गुरु आय ॥
फिर तो कभी पलटूं नहींरे ऐसा ध्यान लगायरे ॥
सुन सुन्दर प्यारी मद मतवारी नहीं० ॥६॥

स्त्री—देव भवन गुरु राजते पिया । भक्तों के आधीन ॥
विपत विदारण संपत कारण। मन वंच्छित मोहे दीनरे॥मेरे०॥७

भ०—टेर सुनी गुरुराजजीरे । प्रगटे मांझल रात ॥
मांग मांग मुख उच्चरेरे । देखा गुरु साक्षातरे ॥
सुन सुन्दर प्यारी मद मतवारी है परतिख गुरुराज ॥८॥

स्त्री—अन धन सुत सुख संपदा रे । मन वांच्छित गुरुदान ॥
मैं सेवक माफी करोरे । तुम सेवा इक ध्यानरे ॥मेरे०॥९

भ०—शंका तज गुरु को भजोरे । चाढो फूल सुवास ॥
चीरंजीव गुरुराजजीरे । राम चरण का दास रे ॥
सुन सुन्दर प्यारी मद मतवारी है० ॥१०॥ इति ॥

॥ १० ॥

झुक झुक नमूं रे तोहे मणिधारी । झुक झुक नमूं रे तोहे गणधारी ॥ टेर ॥ तूं तार भव तार अब तार । अब

तार तार तार अब तारते ॥ झुक० ॥ १ ॥ दिलदार, सुख-कार आधार कर पार। अब पार पार पार भव पारते ॥झुक० ॥ २ ॥ तेरी आन ली मान, तू प्रान, दिल जान। दिल जान जान जान दिल जानते ॥झुक०॥ ३ ॥ अरदास, रख-पास, सुखरास, भर आस। अब आस आस आस भर आसते ॥ ॥ झुक० ॥ ४ ॥ आनन्द, जिनचन्द, गणइन्द, सुखकन्द। सुख कन्द कन्द कन्द सुख कन्दते ॥झुक०। ५ ॥ गुण मूल, मत भूल, तेरी रूल, चिर फूल। चिर फूल फूल फूल चिर फूलते ॥झुक०॥ ६ ॥ कहे राम, गुण ग्राम, दिल थाम, चित्त थाम। अब थाम थाम थाम चित्त थामते ॥झुक०॥ ७ ॥ इति ॥

॥ ११ ॥

हेजी मेरे प्यारे पाई दरशन क बहार ॥ टेर ॥

आफताब तेरा नूर झलकता। कुशल २ करतार। करता, बहार, मेरे प्यारे, पाई दरशन की बहार ॥ १ ॥ तेरा गुलबदन है मदन कतल को। तारीफ अपरपार। पार, बहार, मेरे प्यारे पाई दरशन की बहार ॥ २ ॥ सुरपति, नरपति, रंभापति सब। हाजर हजूरी दरबार ॥ ३ ॥ आम खास तेरा बागों में देखा। अजब बना है गुलजार ॥ गुलजार बहार मेरे प्यारे। पाई दर्शन की बहार ॥ ४ ॥ दिल रोशन गुल खुला चमन है। दरशन से मन को करार। करार बहार मेरे प्यारे ॥ पाई

दर्शन की बहार ॥ ५ ॥ तेरी बदौलत सभी इनायत । राम चिरंजीओ दिलदार ॥ राम चिरंजीओ सरदार । सरदार बहार मेरे प्यारे पाई दर्शन की बहार ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ १२ ॥

आजो आजो जी महाराजा जोऊं वाटरे । कीजो २ छत्तर छांयां थांरे पाटरे ॥ आजो० ॥ टेर ॥ आसी २ रे छोगालो सिर सेहरोरे । गुरु ऊभी तो जोऊं छूं थांरी वाटरे ॥ गुरु कर गयांरे खुश नामी सारी दुनियन में । जानी २ रे गच्छराजा थारी रीत-म्हारा तारणरे॥१॥आवो २ रे छोगाला अलबेला रे । आजो २ जी महाराजा जोऊं वाटरे ॥२॥ राम पाठक थांरो जस गावेरे । आसी २ रे कुशल घणी तारण आसी रे ॥ दरशन देसा रे, आवो २ रे छोगाला शिर सेहरो रे ॥३॥

॥ तर्ज–तेरे द्वार खड़ा भगवान भगत भरदे रे झोली ॥

हे अशरण शरण आधार दरश देदो रे दादा—दरश०
हे महा महिम अवतार परम गुरु ज्ञानी गुण भण्डार–दरश० ॥टेर॥
धरम मूल मारग दिखलाकर । अधरम दूर भगाया ॥ जन जीवन ज्योतिर्मय पावन । शासन जैन जगाया रे ॥शासन०॥ अहिंसक भाव विकास विशेष मिटाया भव–भय भाव कलेश ॥ ॥दरश०॥ १ ॥ ब्रह्मयोग बलधारी भारी । महिमा अपरंपार ॥

दुखियों को सुखिया कर देते । आपरूप अविकार रे ॥आ०॥ नजर दौलत गुरु दया निधान । जगत में मंगल मूल निधान ॥ दरश०॥२॥ जब जब पडे निकट संकट तब । दादा लाज रखी ॥ दुख का आज समय सहायक बन । कीरति रखो अखीरे ॥की०॥ सुनो हे ! तारणहार महान-कुशल गुरु जगम युग परधान ॥दरश०॥ ३ ॥ आत्म शुद्धि परमातम भावी सर्वोदय अधिकारी रे ॥ सद्गुरु चरण शरण पाते जन । बन उनकी बलिहारी रे ॥ब०॥ वही हो सुखसागर भगवान-परम गुरु हरि पूज्य गुणगान ॥दरश०॥ ४ ॥ नित "कवीन्द्र" गुरु दिव्य कीर्तिया । सुन सुन कर सुख पाऊ ॥ काम बनादो सद्गुरु मेरे । चरणों सीस नमाऊ रे ॥च०॥ हे तीन भुवन सिर भूपदादा सुरमणि सुरतरु रूप ॥दरश०॥ ५ ॥

॥ तर्ज—गजल ॥

कुशल करना कुशल करना । कुशल गुरुराज शासन मे ॥
तुम्हीं हो शक्तिमय निजभक्त । विघ्नों के विनाशन मे ॥टेर॥
महा अन्धेर मे सोते । निरखलो अपने भक्तों को ॥ उठाकर आप अब जल्दी । लिवा लाओ प्रकाशन में ॥कु०॥ १ ॥ अपूरब अपनी ज्योति का । दिखावें आप अब जल्वा ॥ कि जिससे जोश भी फले । हमेशा खूब तन मन मे ॥कु०॥ २ ॥ हैं भूले भक्त पर तुमको । भुलाना यों न लाजिम है ॥ दुआ

है आपसे इतनी । चढ़ादो भक्त-जन-धन में ॥कु०॥ ३ ॥
सदा "हरि" आपकी स्वामी । दया की वेल भक्तों पे ॥ करे
छाया, हरे माया । अशान्ति हो न जीवन में ॥कु०॥ ४ ॥

॥ इति ॥

॥ तर्ज—गजल ॥

कुशल गुरु क्यों न देते हो । कहो दर्शन मुझे अपना ॥
अगरचे दूर रहना था । वनाया दास क्यों अपना ॥ १ ॥
जलीलों को जलाना ही । अगर मंजूर है तुमको ॥
विरुद तब दीनबन्धु का । रखा फिर नाथ क्यों अपना ॥ २ ॥
तुमारा मैं हुआ जब से । सदा तब से तड़फता हूँ ॥
न तड़फाना तुम्हें लाजिम । शरन दो देव अब अपना ॥ ३ ॥
मुसीवत मेट दो मेरी । दरश दो क्यों करो देरी ॥
गुजारिश है कवीन्दर की । निभालो नेह बस अपना ॥ ४ ॥

॥ इति ॥

॥ तर्ज—बोल वन्दे मातरम् ॥

आपके दर्शन बिना गुरुवर ! रहा जाता नहीं ॥
और दिल का हाल गैरों से कहा जाता नहीं । १ ॥
है परेशानी यही कैसे तुम्हें पाऊं गुरो ॥
पंथ ऐसा एक भी मेरी, नजर आता नहीं ॥ २ ॥

हैं जुदाई के जिगर में जख्म भारी हो रहे ॥
उनकी जलन का जोश भी मुझसे सहा जाता नहीं ॥ ३ ॥
हैं कुशल गुरु आप फिर क्यों देर इतनी हो रही ॥
अब और आशा में प्रभो मुझसे रहा जाता नहीं ॥ ४ ॥
"हरि" पूज्य गुरुवर दास की अरदाश को सुन लीजिये ॥
मुक्ति दाता आप बिन बस और मन भाता नहीं ॥ ५ ॥

॥ इति ॥

॥ तर्ज—गजल ॥

कुशल गुरु राज जय तेरी । बढादो शक्तिया मेरी ॥ टेर ॥

हृदय मे ध्यान धरता हूँ । उपाधि दूर करता हूँ ॥
मैं गाउं कीर्तियां तेरी । कुशल गुरु राज जय तेरी ॥ १ ॥
सदा तुझ नाम लेकर के । मैं करता काम हूँ जितने ॥
सफल होते वही देखे । कुशल गुरुराज जय तेरी ॥ २ ॥
है तेरे मंत्र की शक्ति । अजायब विश्व मे रोशन ॥
मुझे उसका सहारा है । कुशल गुरु राज जय तेरी ॥ ३ ॥
तुंही सुखसिन्धु है भगवन् ! परम 'हरि' पूज्य उपकारी ॥
सहज मुक्ति वधू स्वामी । कुशल गुरुराज जय तेरी ॥ ४ ॥

॥ इति ॥

* तर्ज—सीता माता की गोदी में हनुमत डारी मूंदड़ी *

दर्शन दीजोजी सद्गुरुजी अपने दास को जी ॥ टेर ॥

दर्शन दर्शन करता आया। दर्शन मालपुरे में पाया। दिल में आनन्द हर्ष न माया। आशा सफल करो गुरु राया, दर्शन दीजियेजी ॥ १ ॥ अबतो पूरो मनसा हमारी। तनमन तुम चरनन पर वारी। सिर पर आपकी आज्ञा धारी। दादा राखो लाज हमारी देर न कीजियेजी ॥२॥ दादा तुम हो पर उपकारी लीजे अपना विरुद विचारी। इच्छा पूरण करो हमारी। सेवक अर्जी को स्वीकारी-जग जश लीजियेजी ॥ ३ ॥ पहले लाखों भक्त उबारे। दुक्खी जन के दुःख को टारे। सेवक जन के काज सुधारे। "श्री जिन कुशल सूरि" रखवारे रक्षा कीजियेजी ॥ ४ ॥ उन्नीसे सत्यासी आया। निर्वाण दिन में "हरि" गुण गाया। मङ्गल दिन में मङ्गल छाया। सब के मन का ताप बुझाया शिव सुख दीजियेजी ॥ ५ ॥ इति ॥

* तर्ज—जब तुम ही चले परदेश *

श्री उपकारी गुरुदेव करो भवि सेव, कुशल जो चाहो, श्री कुशल सूरि को ध्याओ ॥ टेर ॥

मन्मथ के विजयी श्री गुरु हैं। आठों कर्मों के जयी गुरु हैं। गुण सागर कुल के उजागर के गुण गाओ ॥ श्री कुशल० ॥ ॥ १ ॥ रुख फेरी ज्ञासुदीना की। तज हिंसा मन से अहिंसा

ली। कुत्सित म्लेच्छों को दे प्रतिबोध सदा हो ॥ श्री कुशल ॥ २ ॥ शशि सम निर्मल शोभावाले। "समियाणा" पुर के उजियाले। लक्ष्मीधर "जेल्हागर" के पुत्र कहाओ ॥ श्री कुशल० ॥ ३ ॥ सूरज सम तेज भरा भारी। है "जयत। सिरी" गुरु महतारी। रिपु भी गुरु सन्मुख नत मस्तक होता हो ॥ श्री कुशल० ॥ ४ ॥ 'महावस्था' फाल्गुन मे गुरु की। निर्वाण जयन्ती सद्गुरु की। हाजिर हजूर हैं भनि! गुरु! अब भी आओ ॥ श्री कुश० ॥ ५ ॥ राजेश्वर सम गुरु जग के थे। कई देवी-देवता वश मे थे। जय जय का नारा गुरु का "मदन" लगाओ ॥ श्री कुशल० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ तर्ज—आशावरी ॥

आज तो दर्शन पायाजी। श्री जिन दत्त सूरीश्वर स्वामी हर्ष न मायाजी ॥ टेर ॥

नगर उद्रामसर गुरु विराजे। महिमा अपरपार ॥ देश देश के आवे जातरी। दर्शन की बलिहार ॥आज०॥१॥ काम मोह को मार हटाया। सकल जीव आधार ॥ षड् विध जीव की रक्षा करते। करूणा रस भण्डार ॥ आज० ॥ २ ॥ पांचों सुमति तीनों गुप्ति। पंच महाव्रत धारी ॥ सकल गुणो करी शोमे गुरुवर। कहतां न आवे पारी ॥ आज० ॥ ३ ॥ विश्व विख्यात तू दातारा। चमत्कार है भारी ॥ जैन धर्म

दीपाया जग में । जग बोले नर नारी ॥ आज० ॥ ४ ॥ जैन धर्म दीपे जग में गुरु । ऐसी इच्छा हमारी ॥ इसमें सहाय करो गुरु हमको । और भर्म अपहारी ॥ आज० ॥ ५ ॥ मैंने शरण चरण का धारा । अर्जी आन गुजारी ॥ वांछित पूरो मेरे गुरुवर । हो आऊं भवपारी ॥ आज० ॥ ६ ॥ चौवीसे बायालिस वीरे । जेठ चौथ सुदि सारी । दास-"आनन्द" गुण गाया गुरु का । सहु संघ आनन्दकारी ॥ आजतो दर्शन पायाजी ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ तर्ज—वनजारा ॥

सुनो सुनो कुशल गुरु प्यारा ।
तुम जीवन नाथ हमारा ॥ टेर ॥

मैं दर्शन करने आया । चरणों में शीस नमाया । मुझ आनन्द नयन न माया ॥ सुनो० ॥ १ ॥ मैं कुमति सखी से रमिया । मैं भव भव दुःख में भमिया । दुःख नरक निगोद से डरिया ॥ सुनो० ॥ २ ॥ तुम बहु जीव को तिराया । गुरु बहु उपकार दिखाया । शुद्ध समकित राह बताया ॥ सुनो० ॥ ३ ॥ मैं दीन शरण तुझ आया । शुभ भावना दिल में भाया । गुरु रत्न चिन्ता मणि पाया ॥ सुनो० ॥ ४ ॥ वीर सम्वत् अति मन भाया । चौवीस्से अड़तीस छाया । वैशाख पूर्णिमा ध्याया ॥ सुनो० ॥ ५ ॥ त्रैलोक्य

गुरु सुखदाया । मानूपुर ठाठ मचाया । तुम दास आनन्द गुण गाया ॥ सुनो सुनो कुशल गुरु प्यारा ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ तर्ज—अपनी अतीत हालत अये हिन्द तूं दिखादे ॥

"जिनदत्त" सूरि गुरु के । चरणों मे शीस नमाऊं ॥ गुण ग्राम गान करके । आनन्द कन्द पाऊं ॥ जिन० ॥ १ ॥

"सौराष्ट्र" देश सुन्दर । समृद्धि से भरा है ॥ प्रत्यक्ष पुण्य भूमि । इसमें न शङ्क जरा है ॥ जिन० ॥ २ ॥

श्री "धधुका" नगर की । शोभा है चित्तहारी ॥ जन्मे पुनीत पुर में । सूरि एकावतारी ॥ जिन० ॥ ३ ॥

"वाहड देवी" माता । कूक्षी से रत्न जाया ॥ 'वाच्छक' मंत्रि कुल को । इस रत्न ने दीपाया ॥ जिन० ॥ ४ ॥

संसार दुःख समझे । वैराग्य रङ्ग धारे ॥ सुत मत्री बाल वय में । चारित्र को स्वीकारे ॥ जिन० ॥ ५ ॥

क्षमादि गुण अपनाये । दोषों का वृन्दवाला ॥ आत्मा विकाश अर्थे । मुनि धर्म शुद्ध पाला ॥ जिन० ॥ ६ ॥

दर्शन सकल के ज्ञाता । व्याख्यान मधुर सुनाते ॥ प्रवचन पीयूष द्वारा । श्रोता के रोग जाते ॥ जिन० ॥ ७ ॥

चौसठ योगिनी ने । वरदान सात अर्पे ॥ सेवा करो श्री गुरु की । सुख वल्ली को समर्पे ॥ जिन० ॥ ८ ॥

भड़ुचाभिधान नगरे । आचार्य देव आवे ॥ सम्राट् मुगल पूत को । मृत्यु से आप बचावे ॥ जिन० ॥ ६ ॥

विद्युत् के विजय की । आश्चर्यकारी घटना । मुनिवर्य्य ने दिखादी । 'जिनदत्त' नाम रटना ॥ जिन० ॥ १० ॥

दीक्षित किये श्री गुरु ने । शत पञ्च दिव्य मुनिवर ॥ सुसाध्वी सप्त शत का । परिवार है श्रेयस्कर ॥ जिन० ॥ ११ ॥

एक लाख ऊपर । तीस हजार जन को ॥ बनाये जैन धर्मी । उपदेश देके उनको ॥ जिन० ॥ १२ ॥

पंजाब–पूर्व–मरुधर । गुर्जर–सौराष्ट्र विचरे ॥ उपकार अपूर्व करके । भव सिन्धु पार उतरे ॥ जिन० ॥ १३ ॥

अतिशय प्रभावशाली । शिरताज हैं हमारे ॥ कलिकाल कामधेनू । पूरे अभीष्ट हमारे ॥ जिन० ॥ १४ ॥

'सुख' ध्येय है हमारा । 'भगवान' श्रेयकारी ॥ 'त्रैलोक्य' शान्तिकर्ता । 'आनन्द' ज्ञानधारी ॥ जिन० ॥ १५ ॥

धन्य भाग्य आज हमारा । उत्सव जयंति भावे ॥ गुरुराय की यह स्तवना । 'महेन्द्र' सिन्धु गावे ॥ जिन० ॥ १६ ॥ इति ॥

॥ तर्ज—जिन मत का डंका आलम में ॥

उपदेशामृत का स्रोत बहाया । श्री जिनदत्त सूरीश्वर ने ॥
नव तत्वों का प्रतिबोध कराया । श्री जिनदत्त सूरीश्वर ने ॥
उपदेशा० ॥ १ ॥

आत्मिक बल के कारण से। देवों का दल सब दास बना ॥
चारित्र कुसुम से प्रेम जगाया। श्री जिनदत्त सूरीश्वर ने ॥
उपदेशा० ॥ २ ॥

अपनी अलौकिक शक्ति से। लाखों जन का उद्धार किया ॥
मुक्ति ललना से स्नेह लगाया। श्री जिनदत्त सूरीश्वर ने ॥
उपदेशा० ॥ ३ ॥

अनेक ग्रन्थ की रचना करके। भूरि भूरि उपकार किया ॥
जिन भक्तों का समुदाय बढाया। श्री जिनदत्त सूरीश्वर ने ॥
उपदेशा० ॥ ४ ॥

गुरु परमानन्द के धारी हैं। महिमा मही में जयकारी हैं ॥
शिशु 'महेन्द्र' को जल्दी अपनाया। श्री जिनदत्त सूरीश्वर ने ॥
उपदेशा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ तर्ज—छोड वृथा अभिमान ॥

भावे भेट्या गुरु देव। आज मैं श्री जिनदत्त सूरीन्द ॥ टेर ॥
पाली तणा मा गुरु तमारी। देहरी छे मनुहार ॥ तेमां चन्द्र मुखी प्रतिमां विराजे। दर्शक थाय भव पार ॥ आ० ॥ १ ॥
अप्रतिम ज्ञानी परमार्थ जीवी। युग प्रधान जयकार ॥ लाखों जन ने प्रतिबोध्या गुरु। श्रमण श्रमणी परिवार ॥आ०॥ २ ॥
साचा मन थी समरे तमने। मन वांन्छित फल पाय ॥ सांप्रत समयमां ज्योति तमारी। झल हले छे जगमांय ॥ आ० ॥३॥

महिमां सुणीने दास तमारो। आव्यो तुझ दरबार ॥ उत्कट भाव थी वन्दन कीधां। उलट्यो मोद अपार ॥ आ० ॥ ४ ॥

चिन्ता चूरो वांछित पूरो। कुमति करो अति दूर ॥ आनन्द सिन्धु ना चरण प्रतापे। 'महेन्द्र' लहे ज्ञान नो पूर ॥आ०॥५॥

॥ इति ॥

॥ तर्ज—छोटी-मोटी बुद्धि रे, विद्या का मेरा सीखना ॥

कुशल सूरि गुरुदेव, भविक जन तारते ॥ टेर ॥

कल्याणकारी कुशल गुरु हैं। कुशल गुरु हैं॥ काटे कर्मकटक। मेरे मन भावते ॥ कुशल० ॥ १ ॥

अमर अमरी नृत्य करत हैं। नृत्य करत हैं ॥ सद्गुरु सन्मुख आय। संगीत मधुर गावते कुशल० ॥ २ ॥

मुनि पुरन्दर अनुपम ज्ञानी। अनुपम ज्ञानी ॥ चमत्कारी ऋषि राय। मोह तिमिर वारते ॥ कुशल० ॥ ३ ॥

फलोदी शहर के शिखर ऊपर। शिखर ऊपर ॥ शोभे श्री महाराज। दर्शक अति आवते ॥ कुशल० ॥ ४ ॥

एकाग्र दिल से ध्यान धरो सब। ध्यान धरो सब ॥ मिट कर संकट सर्व। अक्षत सुख पावते ॥ कुशल० ॥ ५ ॥

कुशल कृपा से आनन्द आनन्द। आनन्द आनन्द ॥ सुरतरु हैं सूरिदेव। ''महेन्द्रो'' मिल गावते ॥ कुशल० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ तर्ज—सुनो जगदीश दिल देके, अरज हमने गुजारी है ॥

कुशल सूरि गुरुवर को । सदा वन्दन हमारा हो ॥टेर।
मरुधर मेडतापुर में । दूधा सागर सरोवर है ॥ जहां गुरुदेव को देहरी । सजा वन्दन हमारा हो ॥ कु० ॥ १ ॥
दयानिधिने दया करके । दिखाया पन्थ शिवपुर का ॥ ऐसे मुनिराज चरणों में । सदा वन्दन हमारा हो ॥ कु० ॥ २ ॥
निरन्तर ध्यान में धरता । अपूर्वानन्द को पाता ॥ चमत्कारी सूरीश्वर को सदा वन्दन हमारा हो ॥ कु० ॥ ३ ॥
अपार ससार सागर में डूबती "महेन्द्र" की नैया ॥ बचादी शीघ्रतर गुरु ने सदा वन्दन हमारा हो ॥ कु० ॥ ४ ॥

॥ इति ॥

॥ तर्ज—मैं तो जिगर से चाहती हूँ, बचपन से तेरी प्रीत ॥

जिनदत्त कुशल गुरु वन्दन करके । मेरा मन हरषाय ॥ टेर ॥
लोहावट नगर विराजे । शुभ कीर्ति जग में गाजे ॥ गुरु तीन रतन से छाजे । देखि वाजिंत्रों वाजेरे ॥ सुरनरवर दर्शन आय ॥ जिनदत्त० ॥ १ ॥
गुरु दिव्य शक्ति के धारी । सर्वोत्तम गुण अधिकारी ॥ गुरु महिमा है अति भारी । जय २ वंदे नर नारी रे ॥ शान्ति निकेतन पाय ॥ जिनदत्त० ॥ २ ॥

गुरु सेवा से सुख पावे। दारिद्र निकट नहीं आवे ॥ सन्ताप सकल भग जावे। मुक्ति कमला मिल जावे रे ॥ सब सज्जन गुण को गाय ॥ जिनदत्त० ॥ ३ ॥

गुरु सुख शान्ति से भरिया। संसार समुद्र से तरिया। निर्मल आनन्द को वरीया। फिर सखि समता से रमिया रे ॥ "महेन्द्रों" के मन भाय ॥ जिनदत्त० ॥ ४ ॥

॥ इति ॥

॥ तर्ज—महावीर तुम्हारी ॥

गुरुदेव तुम्हारी कीर्ति सुन मम तन मन अति हर्षाय ॥ टेर ॥
तुम कीर्ति पुनीत गङ्गा। फरसे जो भविजन अङ्गा। सर्व पाप ताप होय भङ्गा रे। गङ्गा से अधिक सुखदाय ॥ गुरुदेव० ॥१॥
तुम कीर्ति पूरण गीता। अमृत सम जो नित पीता ॥ ताको सब होय सुविधा। नर भी दिव्य अमर बन जाय ॥ गुरुदेव० ॥२॥ तुम कीर्ति सूर्य प्रकाशे। मिथ्यामति घूक विनाशे ॥ परमोदय प्रकट प्रकाशे। भविजन हृदय कमल विकसाय ॥ गुरुदेव० ॥३॥ तुम कीर्ति कल्प लतासी। जिसके चित्त हो विकाशी। सब संपता की दासी। सारे शूल फूल हो जांय ॥ गुरुदेव० ॥४॥ गुरु कुशल कुशल गुरु आज। है मालपुरा शिर-ताज ॥ हरि पूज्य गरीब निवाज। तेरी कीर्ति कवीन्द्र सुगाय ॥ गुरुदेव० ॥ ५ ॥ इति ॥

* तर्ज—ठुमरी *

सद्गुरुजी सुनो मोरी अरजी । सद्गुरु० ॥टेर ॥
पहिले काम किये वहुतेरे । अपना विरुद विचारी ॥ पग २
चूक पड़ी सद्गुरुजी । मैं मतलब का गरजी ॥ सद्० ॥ १ ॥
ध्यान तुम्हारो कबहुँ न ध्यायो । पूजा करी नहीं तेरी ॥ तोही
सेवक वाच्छित पूरया । यही तुम्हारी मरजी ॥ सद्० ॥ २ ॥
निश्चय सेती तुम गुण गावे । तुरत कटत दुःख वेडी ॥ भक्त
उधार कहावत जग में । ताहे करत हूँ अरजी ॥ सद्० ॥ ३ ॥
और देव को मैं नहीं ध्याऊ । शरण गही मैं तेरी ॥ दूर
थकी मैं भेटण आयो । विपत दशा सब ही हरजी ॥ सद्०
॥ ४ ॥ कुशल गुरु का मैं हू सेवक । लोक जाने सब कोई ॥
क्षमारत्न की विनती सुनके । दर्शन दो सद्गुरुजी ॥
सद्० ॥ ५ ॥ इति ॥

* तर्ज—त्रिशलाना जायारे, महावीर अम घर आवजो *

सद्गुरु न्यारा रे मोहन गारा रे । विनती साभलो ।
साभली ने गुरु करो सेवक प्रतिपाल ॥ सद्गुरु म्हारा रे—विरुद
घणेरारे, निसुण्या तुम तणा । तुमछो प्रभु आतमना रखवाल ॥
सद्० ॥ १ ॥ जिन शासन जगमां जयो, सर्व जीव सुखकार ।
जगम सुरतरु प्रगटीयो, सद्गुरु तारणहार । तुम छो गुरु सब
जन ने सुख आल ॥ सद्० ॥ २ ॥ पच नदी पर साधिया ।
पाँचों पीर परधान । शोभाव्यो जिनधर्म ने, सारयो वाच्छित

काम । करो प्रभु वांच्छित पूर्ण दयाल ॥ सद्० ॥ ३ ॥ जीती चौसठ जोगिनी, वस कीया बावन वीर । झबका करती बीजली, स्थंभित करी गुणधीर । करजो प्रभु अमचीसार कृपाल ॥ सद्० ॥ ४ ॥ प्रतिबोध्या नर नारी ने, शासन शोभा वधार । चारित्र पाली निरमलो, स्वर्ग लह्यो सुखकार । तुम्हें प्रभु संपदा पामी रसाल ॥ सद्० ॥ ५ ॥ युग प्रधान जग पर गड़ो, अम्बा अक्षर दीध । जगगुरु चिन्तामणि समो, मन वांच्छित फल लीध । सहुना मन वांच्छित पूरो रसाल ॥ सद्० ॥ ६ ॥ इत्यादिक जश गुरु तणो, जाणो सकल जहान । परचा जग में परगड़ा, सेवे राव राजान । सेवानो फल तुरत लहे निहाल ॥ सद्० ॥ ७ ॥ संघ उदय करो साहेबा, दयाकरी गुरुराज । अलिय विघन दूरे हरो पूरो सहु जन काज । पूरी ने प्रभु मेटो भव जंजाल ॥ सद्० ॥ ८ ॥ ठाम ठाम गुरु शोभता, थुंभ घणा महीराण । भावे सेवे भविजना, सदा सुरंगे वाण । तुम छो प्रभु भक्त तणा रखवाल (रिच्छवाल) ॥ सद्० ॥ ९ ॥ सद्गुरु सम जग को नहीं, जीवन प्राण आधार । कामित पूरण सुरतरु, सुखकारण दिलधार । गुण निधि अमचा परम कमाल ॥ सद्० ॥ १० ॥ श्री जिनदत्त सूरी गुरु, मणियाला जिनचन्द । कुशल करण कुशले गुरु, प्रणमें जिन कृपाचन्द । कर जो प्रभु शासन नी संभाल ॥ सद्० ॥ ११ ॥ इति ॥

* श्री दादा जिनी गगर निशानी *

सरस्वती माता जगत विख्याता, करियण मात कहन्दा है ।
काश्मीरा मण्डण दुख विहण्डण, करवीणा सोहन्दा है ॥
सद्गुरु गुण गाऊ वन्छित पाऊं, खरतर गच्छ सोहन्दा है ।
मत्री जिल्दा गर बुधनो आगर, सद्गुरु तात कहन्दा है ॥१॥
माता 'जैतश्री' रभा जिसडी, तस कूखे उपजन्दा है ।
सवत तेरेसे वर सेंतीसे, जन्म्या सुख होवन्दा है ॥
सेंताले वरसे दीक्षा हरसे, गुरु जिनचन्द दियन्दा है ।
सित होतरे पाटे श्री सघ थाटे धों धों ढोल घुरन्दा है ॥२॥
नियासि वरसे सरवरे दिवसे, सुरगपुरी पोचन्दा है ।
पूनम सोमवारे हरख अपारे, मेला खूब मिलन्दा है ॥
घस केशर रोलि भरी कचोली, कस्तूरी चरचन्दा है ।
लोबान सिलारस अवर अगर धूप सुगन्ध गूरून्दा है ॥३॥
गुरु चरणे आवे पूजा रचावे मन वछित सुख पावन्दा है ।
गुलाब चमेली राह वेली गुरु चरणे चाढन्दा है ॥
नारेल पतासा खुरमा खासा सीरणीया वाटन्दा है ।
नर नारी आवे बहु गुण गावे वीणा ताल वाजन्दा है ॥४॥
वाजे मृदगा भुगल भंभा भेरी दुक्कड घुरन्दा है ।
नाचे तिहा पातर आवे जातर मुनिवर वहोत मिलन्दा है ॥
सहु मनसा पूरे नवले नूरे एक मना ध्यावन्दा है ।
मागे सो पावे मन मे ध्यावे आशा तास पुरन्दा है ॥५॥

पुर पट्टण ठामें बहुत गामें थुंभ भला छाजन्दा है।
देरावल दीपे दुश्मन छीपे जूना पीठ कहन्दा है॥
मुलतान मरोटे सोहे कोटे गुरु विक्रमणे छाजन्दा है।
नागोर जोधाणे तिवरी थाणे सोजत सुख दियन्दा है॥६॥
जेशाण बीलाड़े सुख दे सारे मेड़ते मन मोहन्दा है।
जालोर खंभायत वंडी विछायत सद्गुरु नित सोहन्दा है॥
पाटण ने सूरत बहुजन पूजत नित महिमा वाजन्दा है।
अहमदावादे श्री संघ साधे सद्गुरु दरश दियन्दा है॥७॥
भुजनयर साचोरे बहुते जारे उदैपुर सोहन्दा है।
इडरगढ़ मंडण दुक्ख विहंडण सब जन मन मोहन्दा है॥
इत्यादिक ठामें नव नव गामें देश परदेश दीपन्दा है।
गुरु विषमी वाटे दुश्मन दाटे चोर धाड़ न लगन्दा है॥८॥
हस्ति मदमाता नाहर चीता सिंह श्याल हो वन्दा है।
प्यासा जल पावे दुरित गमावे अपणा विरुद वहन्दा है॥
आपे निरधनियां बहुत लिछमियां मणिमाणक दियन्दा है।
अपूत्र्या पूत दिअे घर सूत सद्गुरु दरश दियन्दा है॥९॥
इम अेकण जिहां कहुँ गुण केहां पारन को पावन्दा है।
संवत अढारे से वरस पैंतीसे जेठ मास जाणन्दा है॥
सातम उजवाली सोम सवारी "दौलत" जति कहन्दा है।
सद्गुरु सुपसायां अे गुण गाया कोट मरोट वसन्दा है॥

नर नारी गावे वांच्छित पावे ऋद्धि सिद्धि वाधन्दा है ॥१०॥

॥ इति गगर निशानी ॥

※ अकब्बर पातशाह प्रतिबोध जिनचन्द्र गुरु अष्टक. ※

ऐजी सन्तन की मुख वाणी सुणी जिनचन्द मुणीन्द, महन्त जति ।
तप जप्प करे गुरु गुज्जर में प्रतिबोधत है भविक सुमति ॥
तब ही चित्त चाहन चूंप भई समय सुन्दर के प्रभु गच्छपति ।
पठाय पतिसाह अजब्ब की छाप बोला श्रे गुरु गजराज गति ॥

॥ १ ॥

एजी गुज्जर में तैं गुरुराज चले बिच में चउमास जालोर रहे ।
मेदनी तट मन मडाण कियो गुरु नागौर आदर मान लहे ॥
मारवाड रिणी गुरु वन्दन कूं तरसे सरसे बिच वेग वहे ।
हरख्यो सब लाहोर आये गुरु पतिशाह अकब्बर पाव गहे ॥

॥ २ ॥

एजी शाह अकब्बर बब्बर के गुरु सूरत देखत ही हरखे ।
हम योगी जति सिद्ध साधव्रती सब ही खट दर्शन के निरखे ॥
तप्प जप्प दया धर्म धारण कुं जग कोई नहीं इनके सरखे ।
समय सुन्दर के गुरु गच्छपति यू शाह अकब्बर ने परखे ॥

॥ ३ ॥

गुरु अमृत वाण सुणी सुणी सुलतान ऐसा पतसाह हुक्म किया ।
सब आलम माहि अमार पलाय बोलाय गुरु फरमाण दिया ॥

जग जीव दयाधर्म दाक्षण तें जिनशासन में जो सौभाग्य लिया।
समय सुन्दर के गुणवन्त गुरु द्दग देखत हरखित होत हिया ॥

॥ ४ ॥

हेजी श्रीजी गुरुधर्म गोष्टी मिलि सुलतान सलेम अरज करी।
गुरु जीवदया मन चाहत हैं चित्त अन्तर प्रीति प्रतीत खरी ॥
कर्मचन्द बुलाय दियो फरमाण छोड़ाई खंभायत की मच्छरी।
समय सुन्दर कहे सब लोकन में हैं खरतरगच्छ की ख्याति खरी ॥

॥ ५ ॥

हेजी श्रीजिनदत्त चरित्र सुणी पतिसाह भये गुरु राजियेरे।
उमराव सबे कर जोड़ खड़े पभणे अपणे मुख हाजियेरे ॥
चामर छत्र मुरातिब भेट गिगड़ दूं धूंधूं बाजियेरे।
समय सुन्दर तूं ही जगत्र गुरू पतिसाह अकब्बर गाजियेरे ॥

॥ ६ ॥

हेजी ज्ञान विज्ञान कला गुण देख मेरा मन सद्गुरू रीजियेरे।
हूमायू को नन्दन एम आखे मांनसिंघ पटोधर कीजियेरे ॥
पतसाह हजूर थप्यो सिंह सूरि मंडाण मंत्रीश्वर बीजियेजी।
जिनचन्द पटे जिन सिंहसूरि चन्द सूरज ज्यूं प्रतपीजियेजी ॥

॥ ७ ॥

हेजी रीहड़ वंश विभूषण हंस खरतरगच्छ समुद्र शशि।
प्रतप्यो जिन माणिक्य सूरि के पाट प्रभाकर ज्यूं प्रणमुं उल्लसी ॥

मन शुद्र अकब्बर मानत है जग जागत है परतीत इसी ।
जिनचन्द मुणीन्द चिरंतयो समय सुन्दर देत आशीस इसी ॥

॥ इति ॥

॥ ८ ॥

* तर्ज—शान्ति वदन कज देख नयण, मधुकर मन लीनारे *

श्री सद्गुरु का दरश दरस म्हांनें प्यारा लागेरे ॥ टेर ॥

श्री जिनचन्द सुरिन्द पटधारी । जिन शासन के उद्योतकारी ॥
भक्त वत्सल गुण आगर नागर । ज्योति जागेरे ॥श्री स॥ १ ॥

रावल राणा आणा माने । परचा तेरा सब जग जाने ॥
ऋद्धि वृद्धि सुख सपत आणन्द । गुरू से मागेरे ॥श्री स.॥ २ ॥

महर निजर मुझ ऊपर कीजे । शुद्ध दरशण अब मुझको दीजे ॥
उदय २ कर परगट सानिध । अरिगण भागेरे ॥श्री स.॥ ३ ॥

जिन चारित्र सूरि पद वन्दे । मन मय पातिक दुरित निकन्दे ॥
पाठक राम गुरु चिर नन्दे । गामत रागेरे ॥श्री स.॥ ४ ॥

॥ इति ॥

* तर्ज—राग. *

चेत नर क्युं भूला अज्ञान ।
धरो जिन कुशल सूरीन्द का ध्यान ॥ टेर ॥

मिथ्यामति कुं दूर हटा कर । समकित दिया निशान ॥ दया सत्य व्रत अनुभव दीना । दीना अमर विमान ॥ धरो. ॥ १ ॥ काल अनन्ते चिहुँ गति भमते । मिले कुशल गुरुयान ॥ इस भव ऋद्धि परभव सिद्धि । मिले अचिन्ते आन ॥ धरो. ॥ २ ॥ सिद्ध योग है नाम अमोलक । रत्न चिन्तामणि मान ॥ कामधेनु सुरतरु है परतिख । महिमा जपे जिहान ॥ धरो० ॥ ३ ॥ सोमवार पूनम दिन पूरण । जोति जागति थान ॥ कर अेकाग्रह चित्त चरणन में । देते दरशण आन ॥ धरो० ॥ ४ ॥ कुशल करण प्रगटे भवि जन । धर्म शील पहिचान ॥ जिन चारित्र सूरि के सद्गुरु । कुशल राम कल्याण ॥ धरो० ॥ ५ ॥ इति ॥

※ तर्ज—जगमें अमर राजा भरतरी ※

सद्गुरु दीनदयाल । गच्छपति दिनकर तुम धणी ॥ सेवक जन प्रतिपालक । दुःखतमहारण दिन मणी स० १ ॥ गढसवियाणोजी देश । छाजेड़ कुल उदयाचले ॥ जिह्ला शाहपितेश । जयता सिरी अंवर भले ॥ स० २ ॥ गच्छपति चन्द मुनिन्द । पाव तिलक किरणावली ॥ खरतर कमल आनन्द । तेज प्रकाशनमन रली ॥ स० ॥ ३ ॥ पुर पत्तन सब देश । झिग मिग ज्योति झिगमिगे ॥ पूनम ने सोमवार नर नारी गुरु ओलगे ॥ स० ॥ ४ ॥ अरचे अतर फुलेल ।

परिमल फूली मालती ॥ महके चम्पक वेल । सुन्दर आवे मलपती ॥ स० ॥ ५ ॥ शुभ थिर थूंभ वीकाण । वालूचर महिमा घणी ॥ कीरत बाग प्रधान । दुःख भंजन चिन्तामणी ॥ स० ॥ ६ ॥ पूरो वञ्छित आशा । छायां तुम सुनिजर तणी ॥ दाता सुख कैलाश । चरण शरण किंकर मणी ॥ ॥ स० ॥७॥ पूजे पद गोविन्द । चन्द्र शिखर जय रास मे । कोटिक गण कुचचन्द । कुशल सूरिन्द प्रकाश में ॥ स० ॥८॥ उगणीसय अडताल । मिगसर वदी दशमी करी ॥ दरशण अत ही विशाल । कुशल निधान हरख धरी ॥ स० ॥ ६ ॥ गुरु गुण सरिता नीर भीर मगन उल्लास में ॥ लच्मी लील समीर । ऋद्धि सार जयरास में ॥ स० ॥ १० ॥ इति ॥

※ तज —आशावरी ※

सुगुरु मेरी नईया पार उतारो । तूं वण अन माझी हमारो ॥ टेर ॥

सरिता भाद्रव नीर जलधि । ज्यूं ये संसार अपारो ॥ ता तट पारपार अमर पद । ताको वण दातारो ॥ सु० ॥ १ ॥ राग रग इक जीरण नौका । तिर रही भर मझ धारो ॥ मैं बैठो परमारथ खातर । मोह मगर ने उच्छारो ॥ सु० ॥ २ ॥ भक्त उद्धारण श्री सद्गुरुजी । जल्दी कष्ट निवारो ॥ जाण बाल गणपति करुणा निधि । या विपति ताकुं टारो ॥ सु० ॥ ३ ॥ उल्कापात गगन विपया रम । दिसे अतहि करारो ॥

विरह व्यथादिक निशि अंधियारो ॥ कोण करे निरतारो ! ॥ सु० ॥ ४ ॥ ब्रह्मा विष्णु जपे कोई ईशा । अल्ला उपया प्यारो ॥ मैं ध्याऊं जिन देव कुशल गुरु । अरि गण गंजन हारो ॥ सु० ॥ ५ ॥ सुण अरज आये गच्छन महर । तुरत ही विघन विडारो ॥ राम बाग पुर अजीम गंज । कुशल निधान जुहारो ॥ सु० ॥ ६ ॥ कईक गुरु से लच्मी पावत । हुकम धरे वसु धारो ॥ मैं इक सेवा चरण कमल की । मांगु गुरु दातारो ॥ सु० ॥ ॥ संवत उगणीसे अड़तालीश । मेरु त्रयोदशी सारो ॥ नयणा सफल किये गुरु दरशन । है ऋद्धि सार तिहारो ॥ सु० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ तर्ज—होरी ॥

सद्गुरुजी की पूजन कर रे कर रे कर रे ।
दुःख दोहग हर रे ॥सद्०॥ टेर ॥

ये कलियुग असराल भवोदधि । सद्गुरु बांह पकरे २ ॥स०॥ अगम अगोचर जिन की महिमा । ज्ञान ध्यान चित्त धररे ॥ पूरव पुण्य उदय भये तेरे । मिल गये सद्गुरु वररे ॥ व० ॥ स०॥ १ ॥ वाट घाट भय संकट वारण । दुश्मन दोषी हररे ॥ चन्द्र सूरि के पाठ प्रभाकर । उदय भयो दिन कर रे ॥क०॥ स० ॥ २ ॥ कुशल सूरीश्वर कुशल करण कूं । नित प्रति नाम समररे ॥ द्रव्य भाव दुय विध तें पूजन । कर भव सागर तररे

॥त०॥ स० ॥ ३ ॥ स्वर संगीत ताल धुन गुरु गुण । गावत है नर वररे ॥ गाम २ थिर थुम्भ नगर मे । परचा गुरु का जबर रे ॥ज०॥ स० ॥ ४ ॥ लाल गुलाल अबीर अतर से । गुरु भक्ति अनुसर रे ॥ जिन चारित्र सूरिपद वन्दन । राम चरण अनुचर रे ॥च०॥ स० ॥ ५ ॥ इति ॥

* तर्ज—छोड़ गोरी छेलरो दुपट्टो *

दादा मह्रिर निजर कर जोय । शोभा थारी जगत धणीरे । टेर॥ दादा साहब मैं हूँ तेरा दास । मेरो दादा तू ही है धणीरे ॥ दा० ॥ १ ॥ थोंरा सुर नर सेवे पाय । आशा पूरण चिन्ता मणीरे ॥ दा० ॥ जग मे नहीं है थोंरे जोड़ । देख लीनी सारी ही दुनीरे ॥ दा० ॥ २ ॥ दादो देवे अपुत्रिया ने पूत । धन हीना ने रतन मणीरे ॥ दा० ॥ निश्चय मन जो ध्यावे थोंरो ध्यान । जावे आपदा दूर हणीरे ॥ दा० ॥ ३ ॥ राजे दादोचन्द सूरीश्वर पाट । नाम थारो कुशल धणीरे ॥ दा० ॥ राम तुमारो पुरो मरजीदान । अरजी म्हारी तुरत सुणी ॥ दा० ॥ ४ ॥ इति ॥

* तर्ज—अपे चालो है सहेल्यां-शत्रुंजय भटेगा है *

चालो २ हे सहेल्या सद्गुरु पूजना है ॥ चालो० ॥ टेर॥ सद्गुरु राजे बागां मांह । मच रही केल आम्ब की छांह । सदगुरु म्हारी पकड़ी बाह ॥ चा० ॥ १ ॥

खुल रहा चम्पा चमेली कुन्द । खिल रहा मरुआ और मुचकुन्द । चल रही शीतल पवन सुगन्ध ॥ चा० ॥ २ ॥

जिस में जल के चले फुंवार । चिहुँ दिशि भमरा करे गुंजार गह मह मच रही सदगुरु द्वार ॥ चा० ॥ ३ ॥

गुरु पर चमर ढुले लख चार । शिर पर तीन छत्र की बार । झिग मिग ज्योति जगे दरबार ॥ चा० ॥ ४ ॥

बिच में शोभे दीन दयाल । पल में कर देते हैं निहाल । सदगुरु भक्तों के प्रतिपाल ॥ चा० ॥ ५ ॥

सझलो सोले ही सिणगार । मुखड़ा चन्द वदन आकार । गावो गुरु गुण की ललकार ॥ चा० ॥ ६ ॥

लीजो केशर घस घनसार । जिसमें कस्तूरी है सार । चोवा चन्दन अपरंपार ॥ चा० ॥ ७ ॥

पूजो दत्त कुशल गण इन्द । पूजन करतां सुख आनन्द । बगसे लीला लहर समन्द ॥ चा० ॥ ८ ॥

गच्छपति जिनचारित्र सूरिन्द । पाठक राम करे गुण छन्द । भागे दुशमन दोखी फन्द ॥ चा० ॥ ९ ॥ इति ॥

* तर्ज—पाश पियारो लागे प्यारो फलोधीवालोरे *

कुशल छोगालो लाड़लो । तूं गुरु हमारोरे के सद्गुरु लागे प्यारोरे ॥ जैत सिरीजी के लाड़ला । मन मोहन गारोरे ॥ स० ॥ १ ॥ जिल्ला मंत्रीश्वर घरे । प्रगटयो अवतारोरे ॥

छाजेड वंश उजागरू। कुल कियो उजालोरे ॥ स० ॥ २ ॥ गढ सवियाणे प्रगटिया। दीपे दिनकारोरे ॥ सोवन वरण सोहामणा। सारों ने व्हालोरे ॥ स० ॥ ३ ॥ नाम दियो तुम करमसी। धन धन जयकारोरे ॥ जिनचन्द गुरु उपदेश से। लियो सयम भारोरे ॥ स० ॥ ४ ॥ पाट दिवायो गण पति। कियो जग उपगारारे ॥ जिहाज तिराई इूबती। कोई लोक हजारोरे ॥ स० ॥ ५ ॥ दुखिया कई सुखिया कर्या। दे धन भण्डारोरे ॥ देव पीर ने वश कर्या। गुण अपरपारोरे ॥ स० ॥ ६ ॥ रोगादिक तप लब्धि से। तू हरणे हारोरे ॥ सेव करूं नित ताहरी। तू नर दातारोरे ॥स० ॥ ७ ॥ कुशल करण श्री कुशल सूरीश्वर। है हमरो तूं प्राण पियारोरे ॥ कुंशल करो नित संघ के। हे राम तिहारोरे ॥ स० ॥ ८ ॥

॥ इति ॥

※ तर्ज—पनजी मुढे बोल ※

चाल २ म्हारा मित्र आलीजा। सदगुरु पूजारे— आज मिल चाले रे ॥ टेर ॥

हीनाचार्यों ने गुरु जीत्या। पाटण नगर उमगेरे ॥ दुर्लभ राजा श्रावक हुओ। गुरु प्रसंगेरे ॥ आ० ॥ सूरि जिनेश्वर नाम कहावे। खरतर पद जिन पायोरे ॥ चन्द्र सूरि सवेग रंग में। पाट कहायो रे ॥ आ० ॥ २ ॥ कर्म्म उदय सु कोढ रोग

जिन । भक्ति संग मिटायो रे ॥ देवी वचन सुं तव अंग टीका । करी दरशायोरे ॥ आ० ॥ ३ ॥ अभय देव सूरीश्वर तसु पट्ट । जिन वल्लभ सूरि रायो रे ॥ चामुन्डा देवी वश करके । पद जिन पायोरे ॥ आ० ॥ ४ ॥ बावन गोत्र राज-वंस्या सुं । प्रति बोध्या सुखदायो रे ॥ ग्रंथ अनेक रच्या सदगुरुजी । धर्म दीपायो रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ श्री जिनदत्त सूरि तसु पाटे । उदय भयो दिन कारो रे ॥ सवा क्रोड़ सूरि मंत्र जप से । हुओ शक्ति उजालोरे ॥ आ० ॥ ६ ॥ देव अनेक करे जसु सेवा । प्रति बोध्या केई राजा रे ॥ तीस हजार एक लक्ष श्रावक । कीया सूरीश्वर ताजा रे ॥ आ०॥७॥ बावन वीर योगणीयां चौसठ । आणा गुरु की मांने रे ॥ पांच पीर वस किया सिंध में । सब जग जाने रे ॥ आ० ॥८॥ पर प्रवेश विद्या के बल से । मूगल पूत जीवाया रे ॥ बिजली कुं वस करा पात्र तल । नाम सवायारे ॥ आ० ॥ ९ ॥ दादा पीर कहाये सच्चे । ऋद्धि सिद्ध के वरदाई रे ॥ हिन्दु मुशलमान सब पूज्या । महिमा गाई रे ॥ आ० ॥ १० ॥ रोग दोष विष सभी हटाया । युग प्रधान कहाया रे ॥ साढी तीन कोटि सब विद्या सिद्ध पायारे ॥ आ० ॥ ११ ॥ मणि धारी जिनचन्द सूरीश्वर । दत्त पाट पर राजे रे ॥ दिल्ली-पति हुआ दास गुरु का । महिमा गाजे रे ॥ आ० ॥ १२ ॥ कुशल सूरीश्वर कुशल करण कूं । प्रगटे गुरु अवतारी रे ॥

पचाम महम श्रावक प्रतिबोध्या गुरु सुखकारीरे ॥आ०॥ १३ ॥ बादशाह अकबर कूं परचा । प्रतिबोधे जिनचन्दा रे ॥ उदय-करा गुरु जैन धर्म का दया पटह वाजिन्दा रे ॥आ०॥ १४ ॥ करो कृपा सद्गुरुजी संघ पर । मैं गुरु आज्ञाकारी रे ॥ कहे राम पाठक गुरु महिमा । अपरम्पारी रे ॥आ०॥ १५ ॥

॥ इति ॥

※ तर्ज—श्रीमन्धरजी से अरजी रे–जन्ममरण दुखवारो ※

श्री सद्गुरुजी से वीनती रे। आयो शरण तुम्हारी ॥ दादा साहिब जी से विनती रे । अरज सुणो गुरु म्हारी ॥टेर॥ दीन दयाल विरुद सुण आयो । तन मन शुद्ध कर ध्यान लगायो महिर निजर अब कीजियेजी । चरण कमल बलिहारी ॥दा०॥ १ ॥ आधि व्याधि संकट दुःख मेटो । सोमवार पूनम दिन भेटो ॥ अनधन लक्ष्मी चौगुणी रे । वधती सपदा सारी ॥दा०॥२॥ नर नारी अपच्छर मिल आवे । अतर गुलाब केवड़ो लावे । पूजै मृगमद पुष्प से रे । खुल रही केशर क्यारी ॥दा०॥ ३ ॥ कलियुग में परचा तूं पूरे । चिन्ता दोषी दुश्मन चूरे ॥ धन २ सद्गुरु जग जयो रे । सहस किरण अवतारी ॥दा०॥ ४ ॥ उगणीसे अट्ठावन वरसे । काती पूनम दिन भल सरसे ॥ गच्छपति कीर्ति सूरीश्वरु रे । वन्दे वार हजारी ॥दा०॥ ५ ॥ अरस परस दरशण अब दीजै । अपणो दास मुझे समझीजै ॥ जग मे सुरतरु सारिखो

रे । कीरती छा रहीं थारी ॥दा०॥ ६ ॥ प्रगटपणे वरदाता देख्यो । आज सफल दिन मैं कर लेख्यो ॥ श्री जिन कुशल सूरिन्द धणी रे । कहे राम ऋद्धि सारी ॥दा०॥ ७ ॥

॥ इति ॥

※ तर्ज—लावणी ※

सद्गुरुजी म्हारा । दरशण देज्योजी गच्छपति साहिबा ॥टेर॥ कुशल सूरि वांच्छित के दाता । देवो वुद्धि विख्याता ॥ सद्-गुरु महर करीज्यो मुझ पर । ज्युं बालक पर माताजी ॥स० ॥ १ ॥ खरतरराज चन्द पटधारी । सेवक जन आधार ॥ विषम वाट में संकट काटे । संघ सकल सुखकारजी ॥स०॥ २ ॥ जग मां हे परचा अधिकाई । जाणे सब संसार ॥ भर दरिया में जहाज उबारी । जिन गुरु की बलिहार जी ॥स०॥ ३ ॥ गुरु चरणांबुज दर्शन सेती । पाप तिमिर हट जाय ॥ गुरु परमातम सुगुण सौभागी । गुरु गुण केम कहाय जी ॥स० ॥ ४ ॥ मृगनयनी ने पुर ठणकाती । लिये सहेल्या लार ॥ नृत्य भक्ति गुरु अग्र विचक्षण । मृदु समीर झणकारजी ॥स० ॥ ५ ॥ मद गस्ती हस्ती वर राजत । श्री सद्गुरु दरवार ॥ इन्द्र नरिन्द्र नमें पद पंकज । हरखित चित्त उदारजी ॥स० ॥ ६ ॥ ऋद्धि सिद्धि के आगर सद्गुरु । जो ध्यावे सो पावे ॥ यात्री आवे यात्रा करण कूं केशर रंग मचावेजी ॥स०॥ ७ ॥

प्रेमपीन अर्चन सद्गुरु को। पूनम पुनः सोमवार ॥ वाद्य निनाद तूर पुनः झल्लर। करे सुविधि सुविचार जी ॥स० ॥ ८ ॥ कर अग्निवर संवत सुखकर। नन्द चन्द्र शशिवार ॥ स्तैप मास प्रतिपत् दिन भेख्या। शुक्ल पक्ष अधिकारजी ॥ ॥स०॥ ६ ॥ सुर गिरि में नन्दन वन शोभे। तारक में दिनकार ॥ शरद चन्द्र जिन हस सूरीश्वर। कुशल कुशल करतारजी ॥स०॥ १० ॥ सद्गुरु धर्मशील परभावे। कुशल होत नित सहाय ॥ ऋद्धि सार पर महर करीने। अविचल लील बतायजी ॥स०॥ ११ ॥ इति ॥

* तर्ज—मोहे छोड चला वणजारा *

मेरे कुशल गुरु सुखकारा। जिन पार किया संसारा ॥टेर॥
तेरी कीर्ति मैं सुण पाई। है दीनबन्धु गुरुराईरे ॥
है दुःख का मेटन हारा ॥ १ ॥
मैंने लिया आशरा तेरा। तूं कर उद्धार गुरु मेरा रे ॥
तू समरथ तारण हारा ॥ २ ॥
तेरा शुद्ध वचन मैं पाऊं। जिस पर दृढ श्रद्धा लाऊं रे ॥
दो ज्ञान अध्यातम सारा ॥ जि० ॥ ३ ॥
धन सुत संपद लीला। गुरु नामें सुन्दर शीला रे ॥
तुम समरण से जयकारा ॥ जि० ॥ ४ ॥
इक मन जो ध्यान लगावे। वो अविचल संपद पावे रे ॥

मैं जाऊं तेरी बलिहारा ॥ जि० ॥ ५ ॥
मैं दर्शन का अभिलाषी । गुरू दीजे प्रकट प्रकाशी रे ॥
तेरी महिमा जग विस्तारा ॥ जि० ॥ ६ ॥
जिनचन्द सूरीन्द पटधारी । गच्छ खरतर के अधिकारी रे ॥
गच्छ चौराशी का प्यारा ॥ जि० ॥ ७ ॥
ऋद्धिसार तुम्हारा वन्दा । पाठक पावत आनन्द रे ॥
तेरे गुण है अपरंपारा ॥ जि० ॥ ८ ॥

॥ इति ॥

* तर्ज—वारी जाऊं रे सांवरिया तुमपे वारणारे *

गाऊं गाऊं मैं सुयश गुरु तारणा रे ॥ टेर ॥
धन्य मात तुम सों सुत ज़ायो । भविजन के आनन्द वरतायो ॥
निरख २ सुन्दर छवि लेवे वारणा रे ॥ गा० ॥ १ ॥
जीता मदन तरुण वय निरमल । दश दिश पसर रहा गुण परिमल ॥ सूरि सकल शिरताजक । विपत विडारणारे ॥ गा० ॥ २ ॥ तुम दर्शन सुख संपत लीला । सुन्दर अष्ट सिद्धि निधि शीला ॥ ज्ञान भान का उदय के कारण रे ॥गा० ३॥
परम पुनीत परम गुरु पाया । कुशल करण कुशलेश्वर राया ॥
चन्द्र सूरि के लाल भक्त जन पालणारे ॥ गा० ॥ ४ ॥
पूरो ऋद्धिसार मन आशा । राखो युगल चरण के पासा ॥
प्रेम सुधारस दान अरज अवधारणा रे ॥ गा० ॥ ५ ॥ इति ॥

※ तर्ज—मांढ ※

म्हारा प्राण पियारा, मोहना गुरु आइजो म्हारी भीर ।।टेर।।
ओगुणगारो हूँसही रे। पग २ मे तकसीर ।। वडा वडाई ना तजे । गुरु भाजे पराई पीर रे ।। गुरु आइजो म्हारी भीर ।। १ ।। छील्लर सु राचु नहीं रे। किया सायर में सीर ।। अन्तरजामी साहिबा गुरु । हो रतनागर हीर रे ।। गुरु आ० ।। २ ।। अपनो विरुद विचार के रे। दीजे सुख समीर ।। हाथ जोड अरजी करूं। गुरु आप दयाल अमीर रे ।। गुरु आ० ।। ३ ।। आप समान मिल्यो नहीं रे। दूजो साहस धीर ।। अन्तर तपत बुझाय ना गुरु। निरमल गगा नीर रे ।। गुरु आ० ।। ४ ।। चन्द्र वदन छब सोहनी रे। सोवन शरीर ।। नयण वरण न धापै निरखता गुरु । गुण भरिया गभीर रे ।। गुरु आ०। ५।। समरथ आजो प्राहुणारे। घड़िय न करजो ढील ।। मनसा पूरो माहरी गुरु। देख दास दिल गीर रे ।। गुरु आ० ।। ६ ।। वीसरियां सरसी नहीं रे ।। दीन बन्धु वड वीर ।। म्हेछां हुकमी रावलारे। जड़िया प्रेम जजीर रे। गुरु आ० ।। ७ ।। चन्द सूरिन्द के लालजी रे। तारण भवजल तीर ।। कुसल करण साचो धणी रे। दुरमन टालन मीर रे ।। गुरु आ० ।।८।। नयणा तरसे दरशरु रे। जीव धरे नहीं धीर ।। राम हिये रंग आपको रे। साची मंडी लकीर रे ।। गुरु आ० ।। ९ ।। ।। इति ।।

* तर्ज—पास पियारो लागे प्यारो *

दत्त कुशल गुरु सुरतरु। भवितारण वालोरे। चतुर शिव पंथ निहालो ॥ टेर ॥
शुद्ध आचारी खरतरा। सब वन्दन चालोरे॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म में। गयो अनन्तो कालोरे ॥ च० ॥ १ ॥ नरक निगोद में फंस रह्यो। दुःख मरण उचालोरे॥ करत निर्जरा अकाम से। वहि रास संभालोरे ॥ च० ॥ २ ॥ विकलेंद्रि का भव कर्या। केई संख्या कायालोरे॥ पुण्य संयोगे आवियो। नर भव सुक मालो रे ॥ च० ॥ ॥३ ॥ निद्रा विकथा विषय में। व्यापक विकरालो रे॥ भक्षाभक्ष न जाणिया। विन ज्ञान गोटालोरे ॥ च० ४ ॥ सुकृत वस सद्गुरु मिल्या। अनुभव उजियालो रे ॥ काल अनादि संग को। मिथ्या मति टालो रे॥ च० ॥ ५ ॥ तत्त्व पिछाना सत्य का। तज बन्ध जंजालोरे॥ शुद्ध दरशण शुद्ध ज्ञान से शुद्ध विरति पालोरे॥ च० ॥ ६ ॥ पूजन कर गुरु देव की। समकित उजवालो रे॥ चरण शरण पाठक भणी। ऋद्धि सार निहालोरे ॥ च० ॥ ७ ॥ ॥ इति ॥

* तर्ज—दर्शन देनाजी नन्दलाल, वंशीवट के वजाने वाले *

दर्शन देनाजी गुरुराज। भक्त की जहाज तराने वाले ॥टेर॥
खरतर नायक वंच्छित दायक। श्री जिनचन्द सूरिन्द ॥

तसु पट्ट दीपक संघ सुखाकर । दादा कुशल सूरीन्द ॥द० १॥ गुज्जर मल नोथरा श्रावक । तेरा भक्त कहावे ॥ गया देशान्तर पिछा घिरते । फटी जिहाज घबरावे ॥ द० ॥ २ ॥ धरी ध्यान समरथ गुरु तेरा । आप व्याख्यान सुणाते ॥ पखी रूप हुय उड कर धाये । ततक्षण जहाज तिराते ॥ द० ॥ ३ ॥ पीछा ततक्षण आये सद् गुरु । श्री संघ अचरज पाते ॥ आदन के दरिया में प्रवहण । डूबन कथा सुणाते ॥ द० ॥४ अेक माम में पाटण गूजर । आकर शीस नमाते ॥ सब निज नीतक महिमा गाई । तब श्री संघ हर खाते ॥ द० ॥ ॥ ५ ॥ जीवित परचा हुआ गुरु का । सभी दर्शनी पूजे ॥ पुत्र संपदादि बहुतों को । गुरु सम और न दूजे ॥ द० ॥६॥ समय सुन्दर को पच नदी पर । फटी जहाज स्वभावे ॥ श्री सघ युक्त ध्यान तेरा धरता । नई जहाज बनावे ॥ ॥ द० ॥ ७ ॥ सुख सूरि भरुअच्छ से चढ कर । घोघा बन्दर जावे ॥ वायू जोर फटा जब प्रवहण । गुरु तब पार लवावे ॥ द० ॥ ८ ॥ भवजल बीच नाव गुरु मेरी । अबकि गोता खावे ॥ पार लघाना हाथ आपके । राम कवि गुण गावे ॥ द० ॥ ९ ॥ ॥ इति ॥

✻ तर्ज—सुगुरु मेरा जीवन प्राण आधारा ✻

मै शीस नमाऊ थांने । परम गुरु दीजो दर्शन म्हाने ॥ टेर ॥

योगी जटिल केई तपिया देख्या । गर्व भर्या अधिकाने ॥ निन्दा विकथा करे पराई । निज कल्पित पखताने ॥पर.॥१॥ शान्त शील जिन के संजम । आत्म ध्यान कूं ठाने ॥ जिन मारग के सत्य प्ररूपक । तुम हो तारण याने ॥ पर० ॥ २ ॥ पीर पेगम्बर भूत बादशाह । दया धर्म पहिचाने ॥ ये उपगार करा गुरु तेने । कब लग करूं बखाने ।' पर० ३॥ बावन वीर योगणी चौसठ । योग क्रिया वस आने ॥ पर उपकार करे अधिकाई सारी । सारी दुनिया जाणे ॥ पर० ४ ॥ भये प्रभावक जैन धर्म के । देराऊरपुर थाने ॥ धाम होय गुरु दरशन दीना । श्री संघ अति हरखाने ॥ पर० ॥ ५ ॥ जो जो ध्यावे परचा पावे । गुरु कीरति सुविहाने ॥ पुर २ बीच थुम्भ गुरु तेरा । महिमा अधिक बधाने ॥ पर० ॥ ६ ॥ खरतर गच्छ शुद्ध जिन आण । छाजेड़ कुल प्रगटाने ॥ चन्द पटोधर गुणवन्ते । भक्त जीव सुख दाने ॥ पर० ॥ ७ ॥ धर्म शील ज्ञानी गुरु मेरे । प्रगटे कुशल निधाने ॥ पाठक ऋद्धि सार तुम सेवक कुशल गुरु मन माने ॥ पर० ॥ ८ ॥ इति ॥

* तर्ज—घर आवोजी राम रसिया (सोरठ) *

तारो २ कुशल गुरु रसिया । म्हारे मन मोहन चित्त वसिया जी ॥ तारो० ॥ टेर ॥ तुम गुण मालती पुष्प भमर में । रोम

रोम उल्लसिया जी ॥ तारो० ॥१॥ तुम गुण स्वाती वून्द जलधरकी । मो मन चातक तिसियाजी ॥ शम दम युग तुम चरण कसोठी । मो मन कंचन घमियाजी ॥ तारो० ॥२॥ तुम वचनामृत तत्त्व नीर से । मुझ तन पातिक नसियाजी ॥ तारो० ॥३॥ रामलाल पट खोल हृदय का । कुशल ध्यान से रुमियाजी ॥ तारो० ॥४॥ इति ॥

* तर्ज—आवो नेम रह जावो सदनः *

आवो सजन करो गुरु का भजन । मत दिवस गमांवोरे ॥टेर॥ क्यूं चेतन कुगुरु सग राचो । कुशल सूरीन्द गुरु है जग साचो ॥ मन मत मिथ्या अर्थ जाल । ऊजड मत जावो रे ॥ आवो ॥ १ ॥ जिन आणा शुद्ध सजम धारी । प्रगटे गुरु जग के उपकारी ॥ उभय लोक सुखदाता गुरु से । इक लय लावो रे ॥ आवो० ॥ २ ॥ सुरतरु रवि शशी मेघ उदारी । इनसे अधिक गुरु उपकारी ॥ कुशल २ ऋद्धि सिद्धि प्रदायक । वाञ्छित फल पावोरे ॥ आवो० ॥ ३ ॥ इक चित्त ध्यावे सकट जावे । जो शुद्ध मन से ध्यान लगावे ॥ रामलाल गुरु भक्त वच्छल से । प्रेम लगावो रे ॥ आवो० ॥ ४ ॥

॥ इति ॥

* तर्ज—म्हारा गणधर गुरु महाराज, अरजी सुन लीजो *

म्हारे हृदय लिख्या गुरु नाम । चतुर नर सुण लीजो॥ टेर ॥

नित का करूं वधामणा रे। आनन्द उच्छव कोड़ ॥
इन कलियुग के मांहिनेजी। कोईयन आवे थोंरी जोड़ ॥ च०
॥ १ ॥ गिरुआ गुण थांरा वणाजी। सक्त जना प्रतिपाल ॥
हुँ छुं सेवक रावलोजी। सुनिजर नयण निहाल ॥ च०
॥ २ ॥ कल्प वृक्ष चिन्तामणीजी। वांछित पूरण देव ॥
आण धरूं शिर ताहरीजी। शुद्ध मन सारूं सेव ॥ च०
॥ ३ ॥ रसना ओक कहूँ मैं किस विध ? गुरु गुण अपरंपार ॥
भवसागर भमतां थकाजी। बांह पकड़ निस्तार ॥ च० ॥४॥
चौरासी गच्छ सेहरोजी। कुशल सूरि गुरु पाय ॥
रावल राणा ओलगेजी। सेवे तुम्हारा पाय ॥ च० ॥ ५ ॥
पुण्य उदय सद्गुरु मिल्याजी। तीन रत्न दातार ॥ अन्तर
घट में रमरह्याजी तार तार मोहे तार ॥ च० ॥ ६ ॥
दरशण कर परसन हुआजी। प्रगट्या कुशल निधान ॥
हाजर हुकमी विनवेजी। पाठक राम सुजान ॥ च० ॥ ७ ॥

॥ इति ॥

* तर्ज—जल्ला की *

हूँतो थोंरा दर्शन करवा आयोजी ॥ सुख कारी गुरु
राज ॥ दर्शन कर कर चित्त में आनन्द पायोजी ॥ दयाल ॥
थुम्भ तुम्हारो बांगां मांही सोहे हो ॥ सुख कारी गुरु राज ॥
चिहूँ दिसी परिमल भमरतणा मनमोहे हो ॥ दयाल ॥ १ ॥

चंपा चपेली मरु ओ वेलो फूल्यो हो ॥ सुख० ॥
केशर क्यारी देखत त्रितडो झून्यो हो ॥ दयाल ॥
द्रव्य सुगंधी मान सुगंधी भासे हो ॥ सुख० ॥
तुम गुण परिमल भक्त हृदय परकाशे हो ॥ दयाल ॥ २ ॥

आध्यातम रग आतम रग रगीजे हो ॥ सुख० ॥
तुम उपदेशे जिन वच अमृत पीजे हो ॥ दयाल ॥
दु ख दरिद्रता मेटण मपता लीनी हो ॥ सुख० ॥
सुर सुख सिद्ध दायक ज्ञान रसीला हो ॥ दयाल ॥ ३ ॥

दान दया दम तीन तत्त्व तुम माख्या हो ॥ सुख० ॥
भवजल तरमी जे भविजन रस चाख्या यो ॥ दयाल ॥
तूं उपकारी तारण तरण विराजे हो ॥ सुख० ॥
करतां पूजन सकट सगला भाजे हो ॥ दयाल ॥ ४ ॥

अष्ट द्रव्य स्यूं तुम युग चरण रचिजे हो ॥ सुख० ॥
मात्र स्तवन वन्दन स्यूं पातिक छीजे हो ॥ दयाल ॥
'जिनदत्त' 'जिनचन्द्र' 'कुशल' सुरीन्द गुरु राना हो ॥
समकित धारो म्हारे मन में ताजा हो ॥ दयाल ॥ ५ ॥

शुद्ध क्रिया खरतर जिन आज्ञा पाले हो ॥ दयाल ॥
धर्मशील गुरु कुशल निधान सौभागी हो ॥ सुख० ॥
राम पाठकनी उदय दशा अब जागी हो ॥ दयाल ॥ ६ ॥

॥ इति ॥

❋ तर्ज—तुमतो भले विराजोजी ❋

धर्म कूं अधिक दीपायाजी । मेरे जिन शासन सिणगार ॥ ध० ॥ तुम तो भले विराजोजी गच्छ चौरासी शिरदार ॥ संघ में भले विराजोजी ॥ संघ० ॥ टेर ॥

केई सूरि भये धर्म प्रभावक । उन में तुम अधिकाई ॥
सब जल में शीतलता दरसे । गंगा नीर बड़ाई ध.सं. ॥१॥
सब जल में चन्द विराजे । देव सभा में इन्द्र ॥
'दत्त' 'कुशल' गुरु संघ में राजे । तेज प्रताप दिनेन्द्र ॥२॥
कमला कर में लक्ष्मी राजे । असुरों में नागेन्द्र ॥
खरतर गच्छ में गुरु विराजे । ग्रहगण में जिमचन्द ॥ध.सं.३॥
मृगपति देखत पशुगण नासे । गायो ज्युं भग जाय ॥
'दत्त' 'कुशल' की वाणी सुधारस । सुविहित मार्ग दिखाय ॥४॥
जिन शासन के उदय करण को । आतम बल दरशाया ॥
राजन विप्र माहेश्वर जणकूं । श्रावक धर्म धराया ॥ध.सं.५॥
देश देश से श्री संघ आवे । मेला खूब भरावे ॥
केशर चन्दन पुष्प धूप से । पूजा भक्ति रचावे ॥ध.सं. ॥६॥
इस भव आश्री कष्ट मिटा कर । वांच्छित पूरण कीना ॥
सुरनर सुख श्रावक व्रत साधन । शिव पुरना धन दीना ॥ध.सं.७॥
ऐसे गुरु कूं जो नित पूजे । इक मन सेती ध्यावे ॥
सर्वसिद्धि उसके घर प्रगटे । राम प्रेम से गावे ॥ ध.सं ॥८॥

॥ इति ॥

*** तर्ज—आज आपे चालो सहियां सिद्धाचल ***

आज आपे चालो सहिनी । कुशल सूरीन्द गुरु पूजो ॥
कुशल सूरीन्द गुरु पूजो बहिनी । इण सम अवरन दूजो अे ॥
॥ टेर ॥

ब्रह्मा विष्णु महेश गजानन्द । देवी देव मनाया ॥ उभय लोक कारज नहीं सरिया । यों ही जनम गमाया अे ॥ आ० ॥ १ ॥ प्रतिरूपादिक सूरि सकल गुण । ज्ञान ध्यान का दरिया ॥ चरण करण सुमति गुप्ति सूं । जिन मारग संचरिया अे ॥ आ० ॥ २ ॥ रत्न जड़ित सिंहासन ऊपर । सद् गुरु भले विराजे । सुर नर किन्नर चामर ढोले । शिर पर छत्तर छाजे अे ॥ आ० ॥ ३ ॥ जिन वाणी उपदेश सुणावत । सजल जलद ज्यूं गाजे ॥ सुण कर मिथ्या मत तज दीना । भविजन संशय भाजे अे ॥ आ० ॥ ४ ॥ आदि व्याधि मेटन सद गुरुजी । परतिख परचा देवे ॥ पुत्र सपदा वांछित पूरे । जे सद्गुरु ने सेवे अे ॥ आ० ५ ॥ धर्मदान सद्गुरु ने दीना ॥ उभय लोक सुख कारी ॥ क्रम से सिद्ध सपदा सगम । आराध्यां बलिहारी ए ॥ आ० ॥ ६ ॥ केशर चन्दन धूप अरग जा । पुष्प सुगंधी लीजे ॥ गंगा जल से कर प्रक्षालन । गुरु चरणे अर्चा जे ए ॥ आ० ॥ ७ ॥ भावस्तवन सद् गुरु ने युणतप । अन्तर ज्योति जगावे ॥ चारित्र सूरि कृपाचन्द्र सूरि । राम प्रेम गुण गावे ॥ आ० ॥ ८ ॥ इति ॥

*** तर्ज—खेमटा-ताल ***

म्हेतो सेवरा चढाय आई आज गुरुजी के मन्दिर में ॥टेर॥
देख २ महिमा मन्दिर की। निन्दक सब रहे दाझ ॥गु० ॥
दरशन कर परसन भया मेरा। हरख रहा दिल गाज ॥गु०१॥
सजधज रूप सजे आभूषण। सखीयन संग समाज ॥गु० ॥
केशर चन्दन अबीर अरगजा। ले पूजन का साज ॥गु०२॥
चम्पा चमेली हीना मरवा। भर फूलन का छाज ॥गु० ॥
फरसत चरण आनन्द नमाया। मिले गरि बनवाज ॥गु०३॥
पूजन से धूजे सब अरिगण। मिला मुक्ति का पाज ॥गु० ॥
गामगडाले सदगुरु भेटया। नगर बीकाणे राज ॥गु०४॥
ज्ञान ध्यान सब माने वधारण। गणधर गुरु महाराज ॥गु० ॥
अन्तरगत की तुम सब जानो। रखो हमारी लाज ॥गु०५॥
चन्द्रसूरि के खरतर नायक। तारण तरण जहाज ॥गु० ॥
कुशल २ गुरु पाठक जपे। राम सुधारो काज ॥गु०६॥
॥ इति ॥

*** तर्ज—ख्याली लाल अणवट रंग लागो ***

सुज्ञानी लाल चरणां सूं चित लागो। लागोरे खरतर गच्छ राज ॥ थांसूं म्हारो मन लागो ॥ टेर ॥
सुवरण रत्न जड़ित कलश में। लाऊं गंगा नीर ॥ चरण कमल प्रचालूं थांरा। पाऊं भवजल तीर ॥ सु० ॥ १ ॥

हीर चीर उज्ज्वल पट लाऊं। अति सुकमाल सुताज ॥ पद
पूंजन सद्गुरुजी थारा। पाऊ मैं त्रिभुवन राज ॥ सु० २ ॥
काश्मीर सूं केशर लाऊ। चीनी शुद्ध कपूर ॥ मलयागिरी
सू चन्दन लाऊं। पूजा करू मन धीर ॥ सु० ॥ ३ ॥
बागां माहि सू सरस केतकी। लाऊ पुष्प गुलाब ॥ राय
चम्पो आबू सू लाऊ। अरचू तुम्हारा पांव ॥ सु० ॥ ४ ॥
कन्नोज से चोवा चन्दन अत्तर। करूं सुगंधी पूर ॥ महके
परिमल वासना म्हारा। दुःख दालिद्र दूर ॥ सु० ॥ ५ ॥
सुन्दर वन सूं चमर मगाऊं। सुवरण रतन जडाऊ ॥ परम
सौभागी सद गुरु था पर। चौसठ चम्मर ढुलाऊं ॥सु०॥६॥
लंका गढ़ सू सोनो लाऊं। नगागर सूं हीरा ॥ छत्र जडाऊ
था पर चाढ़ू। मेटू मन की पीरा ॥ सु० ॥ ॥ ७ ॥ सूरत
की नरफी ले आऊं। पेडा मथुराजी का ॥ मिश्री माना जैपुर
सेती। चाढ़ू नैवैद्य नीका ॥ सु० ॥ ८ ॥ काबूल का सन
मेवा लाऊ। मिश्री बीकानेर ॥ लगडा आम्र बनारस
केरा। चाढ़ूं फलों का ढेर ॥ सु० ॥ ६ ॥ आरती मेटन
आरती उतारू। पंच रग ध्वजा चढाऊ ॥ श्री फल ऊपर
मोहर भेट धर। लुल २ शीश नमाऊ ॥ सु० ॥ १० ॥
नाटक गायन वीण बजाऊ मैं तेरा ॥ चन्द सूरिन्द के लाल

सौभागी । कुशल सूरिन्द गुरु मेरा ॥ सु० ॥ ११ ॥
चारित्र सूरि कृपा चन्द्र सूरि । वड़ खरतर सुविहाण ॥
पाठक राम लहे नित लीला । निश दिन तेरा ध्यान ॥
॥ सु० ॥ १२ ॥ ॥ इति ॥

* तर्ज—गिरनारी जातां राख लीजो हे *

छाजेड़ कुलरो सेहरो ए मांय, सहियां ए म्हांरी जैतसिरी
जिल्लागर मंत्रीश। सवाई गुरु प्यारा लागे ए ॥ जैतसिरी
माता भली ए मांय, । सहियां म्हांरी जायो पूत दिनेश ॥
सवाई गुरु प्या० ॥ १ ॥ नाम करसी थापियो ए माय ।
सहियां ए म्हारी दूज तणों जिम चन्द ॥ सवाई० ॥ सकल
कला गुण आगलो ए मांय । सहियां ए म्हारी वधती
अभिनव इन्द ॥ सवाई ॥ २ ॥ देव कहे मंत्रीशने ए मांय ।
सहियां ए म्हारी दोजो तुम सुत दान ॥ सवई० ॥ श्रीजिन
चन्द्र सूरीश ने ए मांय । सहियां ए म्हारी तेज झला हल
भाण ॥ सवाई० ३॥ कुल उजवालन ए सही ए मांय । सहियां
ए म्हारी यश रहसी अखियात ॥सवाई०॥ चन्द्र सेरीश पर पधा
रिया ए मांय सहियां ए म्हारी गढ सवियाण विख्या ॥सवाई०॥
॥ ४ ॥ नृप मंत्रीश्वर वान्दने ए मांय । सहियां ए म्हारी
चाढे पुत्र उदार ॥ सवाई० ॥ लेई शिक्षा दीक्षा लिये ए ।
मांय । सहियां ए म्हारी मुनि आचार विचार ॥
सवाई० ॥ ५ ॥ पाट विराज्या चन्दरे ए मांय । सहियां ए

म्हारी जपता सूरि मंत्र जाप ॥ सवाई० ॥ देव दानव वश आणीया ए मांय । सहियां ए म्हारी टाले पाप सन्ताप ॥ सवाई० ॥ ६ ॥ राज वंश प्रतिबोध ने ए मांय । सहिया ए म्हारी कीधा पचास हजार ॥ सवाई० ॥ श्रावक व्रत धर दीपता ए माय । सहिया ए म्हारी धन २ तसु अवतार ॥ सवाई० ॥ ७ ॥ वाञ्छित दोनूं भवतणा ए माय । सहियां ए म्हारी सार्या मनोरथ काज ॥सवाई०॥ उपकारी गुरु पूजता ए मांय । सहियां ए म्हारी तिरिया भवजल जहाज ॥सवाई॥ ॥ ८ ॥ गच्छ खरतर महिमा घणी ए मांय । सहिया ए म्हारी श्री जिन कुशल सूरीन्द ॥ सवाई० ॥ राम कवि कर जोडने ए माय । सहिया ए म्हारी वन्दे पद अरविन्द ॥ सवाई गुरु० ॥ ६ ॥ इति ॥

* तर्ज—पीलू *

कवलों कहूँ गुरु दुःख की मैं वतियां कहत मेरी फटत छतिया ॥ टेर ॥ नरय तिरि दुःख रोय गमायो । सुर गति में पायो सुख रतिया ॥ क० ॥ १ ॥ पुण्य उदय अब नर भव पायो । दुःख सन्ताप बहुत अपतियां ॥ क० ॥ ईति उपद्रव भय बहु तेरे । रोग सोग अरि गण से खतियां ॥२॥ विषय कषाय जंजाल जाल में । मोह वद्ध रह्यो पूत कलतिया ॥ क० ॥ तुम समरन कबहूँ नहीं कीनो । अब मेरी होगी कैसी गतिया ॥ क० ॥ ३ ॥ आप सुधारो काज भक्त के ।

अन्तरगत लिख भेजी पतियां ॥ क० ॥ तारक आन मिले अब मुझको । कुशल सूरिन्द गुरु जालम जतियां ॥ क० ॥ ४ ॥ पाठक राम सुधारस चाख्यो । अब तो सु गुरु पद लागी मतियां ॥ क० ॥ चरण शरण गुरु देवको राख्यो । सुख पावत हूँ दिन रतियां ॥ क० ॥ ५ ॥ इति ॥

* तर्ज—कोई देख्यारे सांवरीयां साहिब प्यारा लागे रे *

कोई देख्या रे सुपने में सद् गुरु ज्योति सवाई रे ॥ टेर ॥ अर्द्धचन्द ज्यूं भाल झलाहल राजे रे । नयन कमल दल दोनूं अधिक विराजे रे ॥ श्याम मनोहर भृकुटि महा सुखदाई रे । अरे हांरे महा० ॥ कोई ॥ १ ॥ दीप शिखा ज्यूं सरल नाशिका सोहेरे । लाल प्रवाला अधर सदा मन मोहे रे ॥ दन्त पंक्ति मांनूं मोती युक्ति जमाई रे । अरे हांरे युक्ति० ॥ कोई० ॥ २ ॥ कंचन वरणी काया सुन्दर दीपेरे । चन्द सूरज छबि निज तेजे कर जीपेरे ॥ पुष्प माल शिर रत्न तिलक अधिकाई रे । अरे हांरे तिल० ॥ कोई० ॥ ३ ॥ देव दुष्य पट उज्वल किरण सुहावेरे । अम्बर तल में दर्शन गुरु दरशावेरे ॥ सिद्ध मनोरथ दीनो वर गुरुराई रे ॥ अरे हांरे वर० ॥कोई० ॥४॥ चन्द पटोधर भक्त जीव प्रति पालारे । नित उठ जपिये कुशल गुरु की माला रे ॥ राम करे अरदाश सदा गुण गाई रे ॥ अरे हांरे सदा० ॥ कोई ॥ ५ ॥ इति ॥

※ तर्ज—श्री सीमधर-साहिबा ※

कुशल सूरीन्द्र गुरु साहिबा। जिनचन्द सूरिपट धार लाल रे ॥ गुण अनेके शोभता। सेवक जन आधार लालरे ॥ कु० ॥ १ ॥ दीन दयाल कृपाल छो। मन वांछित दातार लाल रे ॥ ठोड़ २ थारी थापना। परचा अति मनुहार लालरे कुशल० ॥ २ ॥ देरासर थुंभ दीपतो। उदयापुर आम्बेर लाल रे ॥ राज बीकाणे शोभवां। शोभे जैशलमेर लाल रे ॥ ॥ कु० ॥ ३ ॥ कस्तूरी वलि केशरे। पूजे गुरुना पाय लाल रे ॥ मुनि यति श्री पति राजवी। लुल २ शीश नमाय लाल रे ॥ कु० ॥ ४ ॥ सम्वत् उगणी से तीस में। काती पूनम ज्ञान लाल रे। श्री जिन हंस सूरीसरु। खरतर गच्छ राजन लाल रे ॥ कु० ॥ ५ ॥ धर्म शील गुरु राजना। कुशल निधान उदार लाल रे ॥ पद पंकज मे रम रह्यो। नित प्रति गुरु ऋद्धिसार लाल रे ॥ कु० ॥ ६ ॥ इति ॥

※ स्तवन ※

जैन अयन उदय कार जय जय गुरु राज ॥ जैन० ॥ रीहड़ वर ओशवंश। खरतर गण कमल हंस ॥ दत्त कुशल चन्द्र अंश। प्रकटे सुरु काजा ॥ जै० ॥ १ ॥ श्री जिन माणिक्य पाट। सकट सब विघ्न दाट ॥ दया ज्ञान सुघट घाट। भविजन शिर ताजा ॥ जै० ॥ २ ॥ दिल्लीपति यवन

वश । अकबर सुण के प्रशंस ॥ तुम वच से हो अहिंस । सति गति सुख भाजा ॥ जै० ॥ ३ ॥ युग प्रधान पद्वी दीन । जैन धर्म तत्त्व चीन ॥ दर्शन शुद्ध नियम लीन । बादशाह ताजा ॥ जै० ॥ ४ ॥ अहिंसा फरमाण लेख । लिख कर दीनो विशेष ॥ उदय जिन धर्म रेख ॥ चिहुँ दिशि में गाजा ॥ जै० ॥ ५ ॥ जग गुरु श्री जिन सूरिचन्द । पूज २ भविक वृन्द ॥ ऋद्धिसार नित आनन्द । बजे सुजश बाजा ॥ जै० ॥ ६ ॥ इति ॥

* तर्ज—रेखता *

कुशल गुरु देव के दर्शन । मेरा दिल होत है परसन ॥ जगत में आप समो कोई । न देखा नयण भर जोई ॥ १ ॥ बिरुद भूमण्डले गाजे परसते पाप सब भाजे ॥ पूजते सम्पदा पावे । अचिन्ती लच्छी घर आवे ॥ २ ॥ एक मुख गुण कहुँ केता ? । मुझ हिये ज्ञान नहीं एता ॥ लाल की अरज सुन लीजे । चरण की सेव मोहे दीजे ॥ ३ ॥ इति ॥

* तर्ज—कैरवो *

कुशल सूरीन्द गुरु पूजो भवि हित सूं ॥ कुशल० ॥ टेर ॥ केशर चन्दन कपूर अरगजा । भाव धरी करो पूजा हित सूं ॥ कु० ॥ मोगरा लाल गुलाब मालती । मन शुद्ध

माल करो भवि रुचि सूं ॥ कु० ॥ १ ॥ अशरण शरण परम गुरु सेवो । धरम ध्यान धरो आतम चित्त सूं ॥ सेवक जन प्रतिपाल जगत गुरु । आशा पूरे गुरु घणु दत्त सूं ॥ कु० ॥ २ ॥ ध्यान सुधारे ज्ञान वधारे । रूप रंग देवे चित्त हित मति सू ॥ कु० ॥ कुशल सूरीन्द गुरु सानिधकारी । परतिख परचा पूरे सत सूं ॥ कु० ॥३॥ जय २ जय गुरु देव हमारे । आराध्या सुख देवो निज मन सूं ॥ कु० ॥ श्री जिन हर्ष सदा सुविलाशी । सत्य रत्न सुख एही छत सू ॥ कु० ॥ ४ ॥ इति ॥

※ तर्ज—देव श्री ※

आज करो रे उच्छाह श्री जिन कुशल सूरिन्द आगे ॥टेर॥ या अछी वेला ने ओ आछो दाव । इन आछी वेला क्यू करो लाज ॥ आ०॥ १॥ विविध प्रकार पूजो मन रंग । हिल मिल गावो साजन संग ॥ आ० ॥ २ ॥ धूप दीप करो नैवेद्य सार । फलनारीनो नहीं जिहा पार ॥ आ० ३ ॥ अक्षत श्रीफल होवे जेह । पुत्र कलत्र पामे सापदा तेय ॥ आ० ॥४॥ सुर नर नारी ऊभा कर जोड । कोण करे म्हारे दादाजी नी होड ॥ आ० ॥५॥ श्री खरतर गच्छपति शिरदार । रावल राणा से वे इक्तार ॥ आ० ॥ ६ ॥ महिर नजर करो श्री गुरु राज । कुशल सूरीन्द गुरु गरी वनिवाज ॥आ० ॥७॥

श्री जिन हर्ष करे उच्छ रंग । शिष्य रत्न मन ज्ञान उमंग ॥
॥ आ० ॥ ८ ॥ इति ॥

※ तर्ज—बंगालो घाटो ※

मैं निरख्यां गुरु महाराज छतियां हर्ष भरी ॥ मैं० ॥टेर॥
अमल अनन्त गुण आगरु रे । समता रसनो धाम ॥ परम परम परमातमां रे । वांच्छित दायक स्वाम ॥ छ० ॥ १ ॥ करुणा निधि गुरु दौलती रे । सेवक जन प्रतिपाल ॥ भवि-जन भक्ते भाव सूं रे । लावे भर भर थाल ॥छ०॥२॥ केशर चन्दन कुमकुमा रे । भरिय कचोली हाथ ॥ पदमण आवे मलपति रे । पूजे सहियर साथ ॥ छ० ॥ ३ ॥ कुशल सूरीश्वर साहिबां रे । श्री जिनचन्द सूरिपाट । बलिहारी जिन कुशलनी रे । गाजे घणु गहगाट ॥ छ० ॥ ४ ॥ अष्ट सिद्धि सानिध करे रे । सुख सम्पूरण हार ॥ श्री जिन हर्ष सूरीश्वरु रे । सत्य रत्न सुख कार ॥ छ० ॥ ५ ॥ इति ॥

※ तर्ज—सिन्ध-काफी-दीपन्दा ※

गुरु पूजा रचो रे सुज्ञानी । भले हिय भक्ति भराणी ॥टेर॥
श्री जिन कुशल सूरीश्वर साहिब । खरतर गच्छ राजानी ॥ देश २ में थानक गुरु का । शोभा जगपहिचानी ॥ सदा रवि तेज समानी ॥ गु० ॥ १ ॥ केशर चन्दन मृगमद मेली ।

चरणन पूजा रचानी ॥ धूप दीप नलि आगे ढोरो । बहु विध पुष्प चढानी ॥ भले फल भेट धरानी ॥ गु० ॥ २ ॥ घाट घाट में परचा पूरक । हाजर होत महानी ॥ जिन सौभाग्य सूरिके साहिब । वाछित काज करानी ॥ सदा गुरु महर लखानी ॥ गु० ॥ ३ ॥ इति ॥

※ तर्ज—तिताला बहार ※

जिन कुशल सूरीन्द गुरु सदा नमो ॥ टेर ॥
सुख सम्पत्ति ऋद्धि सिद्ध सब हाजर । देश देशान्तर काई भमो ॥ जि० ॥ १ ॥ बाट घाट अरु विखमी विरिया । विघ्न बुराई दूर गमो ॥ जि० ॥ २ ॥ अहनिशनाम मत्र उर धारो । सुगुरु चरण चित्त रमो रमो ॥ जि० ३ ॥ इक मन ध्यावे वाञ्छित पावो विपत व्यथा सब दमो दमो ॥ जि० ॥ ४ ॥ अभय महा सुख सपति पावो । थिर थानक थिति जमो जमो ॥ जि० ॥ ५ ॥ इति ॥

※ तर्ज—ठुमरी ※

सदा सहाई कुशल सूरिन्द गुरु । दो दौलत गुरुरायजी ॥ स० ॥ खाई न खूटे खरची न टूटे । दिन २ वधे सवाय जी ॥ स० ॥ १ ॥ सकजा सुत अरु सुन्दर नारी । शुभ परिकर सुख दायजी ॥ स० ॥ मित्र समागम सुजश वधारण

नित प्रति हरख उछाहजी ॥ स० ॥ २ ॥ राजा प्रजा पाय नमें सहु । गुरु स्मरण सुपसायजी ॥ स० ॥ दोषी दुश्मन नृप भय पड़ियां । सद्गुरु करय सहायजी ॥ स० ॥ ३ ॥ विखमी विरियां संकट पड़ियां । समर्या आवे धायजी ॥ स०॥ भूखां भोजन तिसियां पाणी । निरधनियां धन होयजी ॥ ॥ स० ॥ ४ ॥ संघ सकल ने दो सुख शाता ।जिम कीरति जग थायजी ॥ स० ॥ थानक थिरता पर धन्न भोजन । पग २ कुशल सहायजी ॥ स० ॥ ५ ॥ अभय महा सुखदाई सद्गुरु । नव निधि वांच्छित थायजी ॥ स० ॥ सुमति सवाई नित घर २ संपत । दान विशाल लहायजी ॥ स०६॥

॥ इति ॥

* स्तवन *

सद्गुरुजी सुणो मोरी अरजी ॥ स० ॥ टेर ॥

पहिले काम किये बहुतेरे । अपना विरद विचारी ॥ पल २ चूकपड़ी सद् गुरुजी । मैं मतलब का गरजी ॥ स० ॥ १ ॥ ध्यान तुम्हारो कबहु न ध्यायो । पूजा करी नहीं तेरी ॥ तोहि सेवक वांच्छित पूर्या । याही थारी मरजी ॥ स० ॥ २ ॥ निश्चय सेती तुम गुण गावे । तुरत कटत दुःख बेड़ी ॥ भक्त उद्धारक कहावत जग में ।ताहे करत हूँ अरजी ॥स०॥ ३॥ और देवकूं मैं नहीं ध्याऊं । शरण गही मैं तेरी ॥ दूरथकी

में भेटण आयां । विपत दशा सब हरनी (तरजी) ॥स० ॥४॥ कुशल गुरु का मैं हूँ सेवक । लोक जाणे सब कोई ॥ क्षमा रत्न की विनति सुण के । दर्शन दो सद्गुरुजी ॥ स० ॥५॥

॥ इति ॥

※ तर्ज—सिन्धुरा-धमार ※

हूँ तो मोही रह्योजी म्हारा राज । सद्गुरु ने दरबार॥टेर॥ छत्रपति थारे पाय नमेजी । सुर नर हाजर (सारे) सेव ॥ जोति थांरी जग जागती दादा । दुनिया में परतिख देव ॥ हूँ ॥१॥ केशर अम्बर केवडोजी । कस्तूरी कपूर ॥ चम्पो चन्दन राय चम्पेली । भक्ति करूं भरपूर ॥ हूँ० ॥ २ ॥ पागुलिया ने पाव समापे । आंधलियांने आख ॥ रूपहीना ने रूप देवे दादा । पांख हीणाने पांख ॥ हूँ० ॥ ३ ॥ चन्दन पाटो घर साहिबाजी । श्री जिन कुशल सूरीन्द ॥ आठ पहर थांने ओलगेजी । रग घणेराजिन्द ॥ हूँ० ॥ ४ ॥ इति ॥

※ तर्ज—लूम-इकताला ※

सद्गुरु करुणानिधान । राखो लाज मोरी ॥ स० ॥टेर॥ जय जय जिन कुशल सूरि । समरत हाजर हजूर ॥ महकत जिम यश कपूर । महिमा जग तेरी ॥ स० ॥ १ ॥ जापर तुम हो दयाल । छिन मे करदो निहाल ॥ संकट को चूर

देव । दौलत की ढेरी ॥ स० ॥ २ ॥ तुम हो सुरतरु समान । वंच्छित फल देवो दान ॥ सेवक को दीन जान । मेटो भव फेरी ॥ स० ॥ ३ ॥ शरणे आये की रखो लाज । वांच्छित सब पूरो काज ॥ हर्ष चन्द शरण आयो । कीरति सुण तेरी ॥ स० ॥ ४ ॥ इति ॥

* तर्ज—भूताली झपताला *

कुशल गुरु ध्याइये । कुशल मंगल करण ॥ खरतर गच्छ में अधिक राजे । भाव मन में धरी ॥ अगर केशर करी । पूजतामन तणा दुःख भाजे ॥ कु० ॥ १ ॥ विकट संकट टले । सजन आवी मिले ॥ आपना भक्त नी आश पूरे । आनमन धारजे सेव गुरु नीकरे ॥ तेहनी आपदा जाय दूरे ॥ कु० ॥ २ ॥ सकल संसार दरबार सेवे सदा । दिन दिने जासु महिमा सवाई ॥ माहरी लाज गुरु राज तुमने अछे । इम करो जेम वाधे वड़ाई ॥ कु० ॥ ३ ॥ उदय कर उदय-कर अधिक खरतरधणी । सूरि जिन रंग सेवक तुम्हारो ॥ सदा चढती कला करो गुरु माहरी । विषम वैरी बुरा दूर वारो ॥ कु० ॥ ४ ॥ इति ॥

* तर्ज—विहाग-जत *

कुशल गुरु अब मोही दरशण दीजे । दादा साहब जल्दी से दरशण दीजे ॥ टेर ॥ ऐसी भान्ति करो मेरे सद्-

गुरु । ज्यूं मन मूढ पतीजे ॥ कु० ॥ १ ॥ जल दातार निरुद अमृत रस । श्रवण अञ्जली भर पीजै ॥ सुरतरु सम दर्शन विन देखे कहो नयन किम रीझै ? ॥ कु० ॥ २ ॥ परम दयाल कृपानिधि । इतनी अरज सुन लीजै ॥ परम भक्त जिनराज तुम्हारो । अपनो कर जानी जे ॥ कु० ॥

॥ इति ॥

※ तर्ज—भैरवी-तिताला ※

कुशल गुरु कुशल करो भरपूर ॥ परम गुरु दो दर्शन दुःख चूर ॥ सेवक जन मन वांच्छित पूरन । समर्यां होय हजूर ॥ कु० ॥ १ ॥ परम दयाल प्रेम रस पूरन । अशुभ हरण भय दूर ॥ संघ उदय कर सद् गुरु मेरा । निनवे श्री जिनचन्द सूर ॥ कु० ॥ २ ॥ इति ॥

※ तर्ज—भैरवी- धमार ※

कुशल गुरु दरशन दीजे हो ॥ टेर ॥
खरतर गच्छपति कुशल सूरीन्द गुरु । मुझ पर महर धरी जे हो कु० ॥ १ ॥ पतित उधारण निरुद तुम्हारो । इतनी अरज सुणीजे हो । कु० ॥ २ ॥ आधिव्याधि अरु दोपी दुश्मन । ये सब दूर हरीजे हो ॥ कु० ॥ ३ ॥ खेम रतन सेवक कूं निश दिन । सद् गुरु सानिध कीजे हो ॥ कु० ॥ ४ ॥ इति ॥

* तर्ज—गोड़-मल्लार आडा चौताला *

कैसे कैसे अवसर में। गुरु राखी लाज हमारी॥ मों को सबल भरोसा तेरा। चन्द सूरि पटधारी॥ कै० ॥ ॥ १ ॥ तुम बिन और न कोई मेरे। या जग में हितकारी॥ मेरा जीवन हाथ तुम्हारे। देखो आप विचारी॥ कै० ॥ २ ॥ आगे तो केई वेर हमारी चिन्ता दूर निवारी॥ अबकी विरियां भूल मत जावो। सद्गुरु पर उपगारी॥ कै० ॥ ३ ॥ अब की आप लाज गुजर की। रखिये गुरु यश धारी॥ मेरे कुशल सूरीन्द गुरु तेरा। बड़ा भरोसा भारी॥ कै० ॥४॥ इति॥

* तर्ज—आशावरी-धमाल *

श्री गणधर गुरु कुशल सूरीन्द के। चरण कमल परवारी॥ टेर॥
केशर चन्दन अक्षत कुमकुम। जलभर कन्चन झारी॥ श्री० ॥ १ ॥ देव के आगे मंगल दीपक। फूल धरो फूलवारी॥ ॥ श्री ॥ २ ॥ ऐसी भान्ति करो विधि पूजा। आनके चित्त इक धारी॥ श्री० ॥ ३ ॥ राज कहत मेरे परम गुरु की। वेर २ बलिहारी॥ श्री० ॥ ४ ॥ इति॥

* तर्ज—लूअरकी *

सदगुरु पूजन जास्यां। कुशल सूरीन्द गुण गास्यां हे मांय॥ श्री फल भेट चढावस्यां। म्हें तो चरणों री

पूज रचरयां है मांय ॥ स० ॥ १ ॥ मरू देश मे शोभता । ऐतो नगर बीकाणे राजे है मांय ॥ स० ॥ गाम गडाले दीपता । एनी महियल महिमा छाजे है मांय ॥ स० ॥ २ ॥ समर्थां सकट चूरता । एतो कुशल करण अवतारी है मांय ॥ स० ॥ सुख दायक श्री सघ ने । दादा खरतर गच्छ अधिकारी है मांय ॥ म० ॥ ३ ॥ दूर देशान्तर थी घणा । एतो हिल मिल यात्री आवे है माय ॥ स० ॥ लुल लुल शीस नमावता । एतो सन्त सुयश मिल गावे है माय ॥ म० ॥ ४ ॥ सझ शिणगार मनोहरू । एतो ठम २ पाय ठम कावे है मांय ॥स०॥ तन मन प्राण लोभावतो । एतो गौरी मङ्गल गावे है मांय ॥ स० ॥ ५ ॥ निछडया साजन मेलवे । एने अनमी लाय नमावे है माय ॥ स० ॥ मनरा मनोरथ पूरवे । दादा परगल लक्ष्मी लावे है माय ॥ म० ॥ ॥ ६ ॥ विसमी वेला याद मैं । समर्थां सानिध आवे है मांय ॥ स० ॥ भूखा भोजन मेलवे । दादा तिसिया नीर पीलावे है माय ॥ स० ॥ ७ ॥ यात्री आवे नित नवा । दादा थान आगल थिर थाट है माय ॥ स० ॥ सीरणीयां नित सामठी । गावे गुण गहगाट है मांय ॥ स० ॥ कुशल सूरीन्द गुरु आगले । दादा भवि मिल भावना भावे है माय ॥ स० ॥ चन्द फते मुनि नित नमें । दादा परमानन्द सुख पावे है मांय ॥ स० ॥ ८ ॥ इति ॥

❀ स्तवन ❀ तर्ज—लूअर की ❋

दादा चिरंजीवो सेवक जन सुखदाई दरशन सदा देवे ॥टेर॥ दादो दीनदयाल सदा दाता। दादो समर्यां आपे सुख शाता। दादो जग बंधव जग गुरु त्राता ॥ दा० १ ॥ दादो परचा जग सगले पूरे। दादो सेवकंना संकट चूरे। दादो दूरित ह. सहुनी दूरे ॥ दा० ॥ २ ॥ दादो अलगांथी यात्री आवे। दादा देखी नैत्रे सुख पावे। म्हारा दादाजीनी जोड़ कोई नावै ॥ दा० ॥ ३ ॥ दादोराज नगर मांहे छाजे। जिहां सुयश नगारां नित बाजे। दादो छोगालां सेहर छाजै ॥ दा० ॥ ४ ॥ दादा घस केशर सूखड़ घोली। हाथे लेई सोवन कचोली। पूजोट दादाजी ने मिल २ टोली ॥ दा० ॥ ५ ॥ दादो आरतियां आरति टालै। दादो सेवक जन नै प्रतिपाले। दादो जिन शासन नित उजवाले ॥ दा० ॥ ६ ॥ दादो महिमा वन्त महाराजा। दादो राजै खरतर गच्छ राजा। दादो समर्यां सफल करे काजा ॥ दा० ॥ ७ ॥ दादो कुशल सूरीन्द बहु गुणधारी। दादो परतिख सुर तरु अवतारी। जाऊं दादाजी नी हूँ बलिहारी ॥ दा० ॥ ८ ॥ दादो श्री जिनचन्द सूरीन्द पाटे। दादो गाजै गुणियल गह गाटै। जसु थांन सोहे जग थिर थाटे ॥ दा० ॥ ९ ॥ दादा महर निजर मुझपर करिये। दादा आरति पीड़ा दुःख हरिये। दादा जिम जग जय कमला वरिये ॥ दा० ॥ १० ॥ दादा सेवक

ने सानिध करजो। दादा दुश्मन ने दूरे हरजो। जिनचन्द ना मन वाञ्छित फलजो॥ दा० ॥ ११ ॥ इति ॥

*** स्तवन ***

गाजे जिन कुशल गडालै। सेवकना सकट टालै हो ॥ गा० ॥ परतिख गुरु परचा पूरे ॥ सेवकनी चिन्ता चूरै हो ॥ गा० ॥ १ ॥ छतरी नितरी छवि छाजे। निच मै थिर थुम्म विराजे हो ॥ गा० ॥ शुभरे यात्री मिल आवैं। दादोजी दीठा सुख पावे हो ॥ गा० ॥ २ ॥ केशर घम भरिय कचोली। माहे वलि मृग मद घोली हो ॥ गा० ॥ पूजो पग नीर पखाली। गावो गुण गीत रसाली हो ॥ गा० ३ ॥ दादोजी दुःखिया सुख देवे। निरधनिया धन नित देवे हो ॥ गा० ॥ हय हाथी रथ पति नहुला। गुरु नामे पामे कमला हो ॥ गा० ॥ ४ ॥ सकजा सुत सुन्दर नारी पामे परिकर सुखकारी हो ॥ गा० ॥ अल गाथी रोग गमावे। गुरु पूज्या वांच्छित फल पावे हो ॥ गा० ॥ ५ ॥ पावे गुरु तिसिया पाणी। तिण वेला जल धर आणी हो ॥ गा० ॥ ग्रहगोचर चीर नजालैं। पीडा हुवे अःले मालै हो ॥ गा० ॥ ६ ॥ वाजै जग जशना वाजा। राजै खरतर गच्छ राजा हो ॥ गा० ॥ जसु जैतसिरी वर माता। जिल्हागर मत्री विख्याता हो ॥ गा० ॥ ७ ॥ सम्वत सतरे सय इग्यामी। काती पूनम परकाशी हो ॥ गा० ॥ सहु सघ सहित सुनिलासे।

अधिक धर हेत उल्लासे हो ॥ गा० ॥ ८ ॥ गुण अनन्त गुरु तेरा । कहतां नहीं आवे पारा हो ॥ गा० ॥ इम यात्रा करी आणन्दे । जिन भक्ति यतीश्वर वन्दे हो ॥ गा० ॥९॥
॥ इति ॥

* स्तवन *

हूँ तो अरज करूं करजोड़ नेजी । म्हारी अरज सुणो गुरु राय । सद्गुरु सुनिजर जोयजो साहबा । विरुद वणा छे राजराजीं । कांई सूरि सकल शिरताज ॥ स० ॥ सु० ॥ १ ॥ थांरे रावल राणा राजवीजी । कांई थांरा पूनम पूजे पाय ॥ स० ॥ केशर अगर नै कुमकुमाजी । कांई मृगमद रही महकाय ॥ स० ॥ सु० ॥ २ ॥ थांरे घुड़लांरा आगल घूमराजी । कांई ढुलत चम्मर गज ढाल ॥ स० ॥ कारण सेवे कामनीजी । कांई निरख करेजी निहाल ॥ स० ॥ सु०॥ ॥ ३ ॥ थांरी ठावी ठोडै थापनाजी । कांई उदयापुर आंबेर ॥ ॥ स० ॥ थांरी महिमा भली गुरु मेड़तेजी । कांई सलूड़े बाली सांगानेर ॥ स० ॥ सु० ॥ ४ ॥ थांरी जोत घणी घणुं झिगमिगेजी । कांई वधती गढ बीकाण ॥ स० ॥ आस्या पूरण आवजोजी । थेतो देरावररा दीवान ॥ स० ॥सु०॥५॥ म्हारी विनतड़ी मल मांनज्योजी । कांई दादाजी दीन दयाल ॥ ॥स०॥ कुशल सदा कविराज नै कांई पाटोधर प्रतिपाल ॥स०॥ सु० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ स्तवन ॥

आयो २ रे समरता दादोजी आयो ॥ टेर ॥
संकट देख सेवक कूं सद्गुरु । देरावर से धायोजी ॥ स० ॥
॥ १ ॥ वरसे मेंह ने रात अंधेरी । वायु पिण सबलो वायो ॥
पच नदी हम बैठे बेडी । दरिये चित्त डरायो जी ॥ स० ॥
॥ २ ॥ उच्च भणी पहुँचावण आयो । खरतर सवायोजी
समय सुन्दर कहै कुशल २ गुरु । परमानन्द सुख पायोजी
॥ स० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ तर्ज–मेरी अर्जी गुरुजी मानो खरी-मने तारो तुमतो आज० ॥

विलसैं ऋद्धि समृद्धि मिली । शुभयोगे पुण्य दशा सबली ॥
जिन कुशल सूरि गुरु अतुलवली । मनवाञ्छित आपे दादो रंग
रली ॥ १ ॥ मंगल लील सबैं विपुला । नवनवा महोच्छव
राज्य कला ॥ सुपसायैं गुरु चढती कला । सुकलीणी पुत्रवती
महिला ॥ २ ॥ सब ही दिन थावैं सबला । सद्वास कपूर
तणा कुरला ॥ हय गय रथ पायक बहुला । कल्लोल करे
मन्दिर कमला ॥ ३ ॥ वींके चमर निशान घुरे । नर वे
दरबार खड़ा पहुरे ॥ जय २ कर जोड़ी उचरे । सानिद्ध
गुरु सब काज सरे ॥ ४ ॥ सरसा भोजन पान सदा । दुःख
रोग दुकाल न होय कदा ॥ अविचल उलट अंग मुदा ।गुरु
कूरम दृष्टि प्रसन्न सदा ॥ ५ ॥ घम २ मदल नाद घुमे ।

बत्तीसे नाटक रंग रमे ॥ अगट्या पुण्य प्रताप हमें । सबला अरियण ते आय नमें ॥ ६ ॥ तन सुख मन सुख चीत तणें । पहिरे बेला उर होय रणें ॥ ध्यावों कुशल गुरु एक मनें । जृंभक सुर मन्दिर भरय धानें ॥ ७ ॥ ततखिन घन खंच्यो आवे । करी श्याम घटा मेह बरसावे ॥ तिसियां तोय तुरत जल पावें । जलदाता त्रिजग सुजश गावें ॥ ८ ॥ लहर्यां जल कल्लोल करे । प्रवहण वस सायर मझ डरे ॥ बूडन्ता वाहन जे समरे । ते आपद निश्चय थी उभरे ॥ ९ ॥ खड़ खड़ खड़ग प्रहार वहे । सौदामिनी जिमसम शोर सहे ॥ कुशल कुशल गुरु नाम कहे । ते क्षेम कुशल रण मझ लहै ॥१०॥ थुंभ सकल परचा पूरे । श्री नाग पुरे संकट चूरे ॥ मंगलोर अधिकके नूरे । देराउर भय टाले दूरे ॥ ११ ॥ वीरमपुर वाने सुधरे । खंभायतपुर विक्रम नयरे ॥ जिन चन्द्र सूरि पाटे पवरे । जसु कीरति मही मंडल पसरे ॥ १२ ॥ पूरब पश्चिम दक्षिण आगे । उत्तर गुरु दीपे सोभागे ॥ दह दिशि जन सेवा मांगे । श्री खरतर गच्छ नो महिमा जागे ॥ १३॥ पुर पट्टन जनपद ठामें । गाई जे कुशल नयर गामें ॥ पूजे जे नर हित कामें । ते चक्रवर्ति पदवी पामें ॥ १४ ॥ श्री जिन कुशल सूरि शाखै । दादो सेवक जन ने सुखिया राखै ॥ समर्या गुरु दरशन दाखै । श्री साधु कीर्ति पाठक भाखै ॥ १५ ॥ इति ॥

* तर्ज—ऊपर की *

आयो सद्गु श्री संघ आश धरे। गुरु मौ गया कहो केम सरे? ॥ दरशन वहिलो सदगुरु दाखो। निज सेवक जाण महर राखो ॥ १ ॥ इय निसमी निरियां आयवणी। केहनी करिये तुझ अरज घणी ॥ हिव अलगा छो तो वेगा आवो। हिन ढोल घडी भर मे करावो ॥ २ ॥, तूं सदगुरु गच्छ साचो। कोईयन जाणे तुज्झ ने काचो। इण संकट मे आलश न करो। दादा दुश्मन ने दूर हरो ॥ ३ ॥ कोई चूक पडी सदगुरु हम सुं। तो जिम कहमो तिण पर खमसुं ॥ पिण हिवणां हठ थे मत ताणो। निश्चय पोतानो कर जाणो ॥ ४ ॥ आया मन श्री संघ अठालगे। पाछा किम जावा इणे पगे? ॥ इण पर करिये गुरु अरज इसी। हिव सगला मेलो करिय खुशी ॥ ५ ॥ जिन कुशल सूरीसर जग चावो। अपणायत कर वेगा आवो ॥ अगला विरुद थे उजवालो। पर घल निज छोरु प्रतिपालो ॥६॥ गुण गाम गडाले ये गायो। सुणतां सदगुरु वेगो आयो ॥ राजि हुय सगला रग रली। जिन चन्दनी आशा सफल फली ॥ ७ ॥ इति ॥

* तर्ज—भवजल पार करो दया निधि *

कामित काम गवि। सुगुरु मेरो कामित कामगवी ॥टेर॥
मन शुद्ध शाह अकबर दीनी। युग प्रधान पदवी ॥ सु०॥

॥ का० ॥ १ ॥ सकल निशाकर मंडल समसूरि । दीपन
दीपत वदन छवी ॥ सु० ॥ का० ॥ २ ॥ गहि मंडल माँहि
महिमा जाकी । दिन प्रति नवी नवी ॥ सु० ॥ का० ॥ ३ ॥
जिन माणिक्य सूरि पाटे उदय गिरि । श्री जिनचन्द्र रवि
॥ सु० ॥ का० ॥ ४ ॥ पेखत ही हरखित भयो मन मेरो ॥
रत्न निधान कवी ॥ सु० ॥ का० ॥ इति ॥

※ तर्ज पणिहारी ※

पाटोधर गुरु गच्छपति ॥ सद्गुरुजीरे लो ॥ कुशल
सूरीन्द गुरु राज ॥ वाला छो ॥ नायक श्री जिन धर्मना
॥ स० ॥ लायक सुर शरताज ॥ वा० ॥ १ ॥ भक्त वच्छल
भगवान छो ॥ स० ॥ सरण गई साधार ॥ वा० ॥ दरशण
वहेलो दीजिये ॥ स० ॥ करुणा निधि किरतार ॥ वा० ॥२॥
विनतड़ी अवधारिये ॥ स० ॥ पूरो वांछित काज ॥ वा० ॥
सेवक पर सुनिजर करो ॥ स० ॥ महेर करो महाराज ॥ वा०॥
॥ ३ ॥ खरतर गच्छ साहिबा ॥ स० ॥ सेवक जन प्रतिपाल
॥ वा० ॥ परचा पूरो परगड़ा ॥ स० ॥ वर जश जगत
विख्यात ॥ वा० ॥४॥ दुरजन जन दूरे करो ॥स०॥ खरतर
श्रृंगार (हितकार) ॥ वा० ॥ उदय करी जिन धर्मनो ॥
॥ स० ॥ इण पंचम कलिकाल ॥ वा० ॥ ५ ॥ एक
भरोसो आपनो ॥ स० ॥ चरण शरण आधार ॥ वा० ॥

महिमा मोटी राजरी ॥ स० ॥ महियल मे सुखकार ॥ वा० ॥ ६ ॥ दीन दयाल दया करी ॥ स० ॥ दीजिये वांच्छित दान ॥ वा ॥ जिन सौभाग्य सूरीन्द को ॥ स० ॥ पर उपगार प्रधान ॥ वा० ॥ ७ ॥ इति ॥

* तर्ज—नाथ तोरी भेटण दो असवारी *

कुशल गुरु की निरखण दो असवारी ॥ दादा० ॥ टेर ॥ केशर चन्दन अगर कुमकुम । मृगमद महक अपारी ॥ अगर गुलाब केतकी चम्पो । फूल रही गुलक्यारी ॥ कु० ॥ ॥ १ ॥ देव का इन्द्र भवन है । झिगमिग ज्योति विचारी ॥ वांच्छित फलदायक वरदाई । सुर नारी सुखकारी ॥ कु० ॥ २ ॥ भला भला भूपत ठाठ मचत है । हय गय भीड़ हजारी ॥ रावल राव सेठ सेनापति । आवत है असवारी ॥ कु० ॥ ३ ॥ भेरी शंख मृदग घन बाजत । सुरनाई सुरसारी ॥ गावत है केई मधुर मधुर धुनि । मानव गगन मझारी ॥ कु० ॥ गच्छ नायक श्री चन्द्र पटोधर । खरतर गच्छ अवतारी ॥ पदम सूरि यूं अरज करत है कुशल कुशल सुखकारी ॥ कु० ॥ ५ ॥ इति ॥

* तर्ज—प्रभाती *

दरशण दो दुःख भाजै दादा दरशण दो दुख भाजै ॥ टेर ॥ साचे मन समरे सदगुरु कू । तिणकू तुरतनिवाजै ॥दादा. १॥

नाल नवल गढ़ थान मनोहर। भाव भक्ति अति छाजै ॥दादा. २॥
यात्रा करण श्री संघ उमाह्यो। पंच शब्द धुनी गाजै ॥दादा. ३॥
ठोड़ ठोड़ थानक सदगुरु का। महिमा अधिक विराजै ॥दादा.४॥
कल्याण विजय कहे कुशल सूरीन्द गुरु। खरतर गच्छ में विराजै ॥ दादा० ॥ ५ ॥ इति ॥

❋ तर्ज—चलत भैरवी ❋

जय गणनायक जय वरदायक श्री गुरु देव गणेश ॥ जय० ॥ टेर ॥
तुम कूं निश दिन ध्यावत सुर नर। शोभा करत सुरेशा ॥
चन्द्रकान्ति गुण निरमल शोभित। यश गंगाजल जैसा ॥
॥ ज० ॥ १ ॥ नाम प्रताप तैं अष्टसिद्ध। नवनिद्ध हाजर होत हमेशा ॥ दादा साहिब वांच्छित दाता। कलु में सुरतरु जैसा ॥ ज० ॥ २ ॥ पूजन चरण पुष्पकर हरखित। नायक सकल नरेशा ॥ श्री जिन कुशल सूरि सेवता। पावत फल राजेशा ॥ ज० ॥ ३ ॥ इति ॥

❋ तर्ज—विहाग ❋

मोकूं शरण तिहारा। कुशल गुरु मोकूं शरण तिहारा ॥ टेर ॥
सुपन ही सोवत निशदिन जागत। चरण शरण आधारा ॥

कष्टु अन चहिये दरशन दीजे। यही है प्राण पियारा ॥ ॥ कु० ॥ मो० ॥ १ ॥ वाट घाट रिच्छ पाल सदाई। आपद विधन निवारा ॥ दह दिशि दीपे महिमा जाकी। परतिख सकल संसारा ॥ कु० ॥ मो० ॥ २ ॥ धन हीनाकूं धन के दाता। आपे बहु परिवारा ॥ सद गुरु गुण गाये सुखदायक। श्री जिन हर्ष अपारा ॥ कु० ॥ मो० ॥ ३ ॥
॥ इति ॥

* तर्ज—केरवा *

सेवो सुगुरू सुखदायरे ॥ सेवो० ॥ टेर ॥
श्री जिन कुशल सूरीसर साहिब। नव निध वांच्छित दायरे ॥ से० ॥ १ ॥ आधि व्याधि और द्वेषी दुश्मन। नाम लिया भग जायरे ॥ से० ॥ २ ॥ केशर चन्दन अक्षय कुमकुम। पूजो चित्त हिय लायरे ॥ से० ॥ ३ ॥ वाट घाट अरू विखमी विरिया। समर्यां होत सहाय रे ॥ से० ॥ ॥ ४ ॥ अभय महा सुखदाई सदगुरू। पग पग वांच्छित थायरे ॥ से० ॥ ५ ॥ इति ॥

* तर्ज —निरमल होय भजले प्रभु प्यारा *

कुशल सुरिन्द गुरु ध्यान धरोहिये। ज्यूं होवे आनन्द अधिक अपारा ॥ कु० ॥ निरमल नीर पखाली निज तनु।

पहिरी चीरोदक वस्त्र सुप्यारा ॥ कु० ॥ १ ॥ कंचन कलश भरी पचामृत । चरण पखाले शुद्ध प्रकारा ॥ कु० ॥ केशर घोली मरीय कचोली । मांहै मृग मद वरधनसारा ॥ कु० ॥ ॥ २ ॥ धूप दीप वलि अक्षत नैवेद्य । फल पुष्पादिक बहुविध सारा ॥ कु० ॥ अवर द्रव्य सब पूजन केरा । भावें लीजें चित्त उदारा ॥ कु० ॥ ३ ॥ गुरु चरणामृत अंगे चरचित्त ! दुष्ट कुष्ट व्रण जाय विकारा ॥ कु० ॥ सद्गुरु नाम लिये सब नासे । आधि व्याधि दुःख दोष प्रचारा ॥ कु० ॥ ४ ॥ घर घर मंगल नव निद्ध ऋद्ध सिद्ध । हाजर होय हमेश अपारा ॥ कु० ॥ श्री जिन सौभाग्य सूरि सुगुरु पद । सेवत होय सबे सुख कारा ॥ कु० ॥ ५ ॥ इति ॥

※ तर्ज —बिछियानी ※

अरे लाला श्रीजिनकुशल सूरिसरु । सेवीजे मन शुद्ध भाव रे लाला ॥ परतिख परचा पूरता । इन कलियुग में गुरु राय रे लाला ॥ श्री जिन० ॥ १ ॥ अरे लाला केशर चन्दन घस करीं । पूजो मेली घनसार रे लाला ॥ पवित्र वस्त्र पहरी करी । नव नेवज करो उदार रे लाला ॥ श्री जन० ॥ २ ॥ अरे लाला घुम्भ भलो देराउरे । शोभा बहु जेसल-मेर रे लाला ॥ मुलताने मरोट में । गुरू सोहे बीकानेर रे लाला ॥ श्री जिन० ॥ ३ ॥ अरे लाला जोधपुर ने मेड़ते ।

जैतारण ने नागोर रे लाला। सोजत ने पाली पुरे। जालोरे श्री मांचोर रे लाला ॥ श्री जिन० ॥ ४ ॥ अरे लाला राज नगर नै सूरत। खमायत पाटण मांहीरे लाला। शत्रुं-जय सोहे सदा। नवेनगर उच्छाहरे लाल ॥ श्री जिन० ॥ ॥ ५ ॥ अरे लाला पुर पुर मे इम दीपतो। दादोजी परतीख देवरे लाला ॥ ईहक आशा पूरवे। तिथे जग सहू सारे सेवरे लाला ॥ श्री जिन० ॥६॥ अरे लाला नामें संकट सेवि टले। तिसिया ने पावे नीर रे लाला ॥ रण में जे समरण करे। जे समरण करे। सद्गुरु होवे तसु भीररे लाला ॥ श्री जिन० ॥ ७ ॥ अरे लाला इम महिमा जग जेहनी। जाणे को नर नार रे लाला ॥ सुख सपत दे सेवकां। बहु पुत्र कलत्र परिवाररे लाला ॥ श्री जिन० ॥ ८ ॥ अरे लाला समयां दरशन देई ज्यो। सेवक नी करजो सार रे लाला ॥ राज सागर कर जोड़ने। विनती करे वारवार रे लाला ॥ इति ॥

* तर्ज—मोरा मोला गुरु पाणी मंत्र दे तीन चलू *

दादा कुशल सूरीन्द। तुम दरशण तैं परमानन्द ॥ दादा० ॥ टेर ॥

नित तेरे प्रभु पद अरविन्द। वन्दे रावल राणा वृन्द ॥ दादा० ॥ १ ॥ तुम दरशण से मुझ मन जोर। हरख लहे जिम चन्द चकोर ॥ दादा० ॥ विरुद निसुणी जिम जलधर शोर। मुझ मन नाचत जिम वन मोर ॥ दादा० ॥ २ ॥ वरती

डूबती जलधि मज्झार । तैं तारी निज गुण संभार ॥ दादा० वांच्छित पूरण अतहि उदार । कलि में गुरु सुर मणि अवतार ॥ दादा० ॥ ३ ॥ तो सम सुर नहीं दीन दयाल । तुम हो शरणागत प्रतिपाल ॥ दादा० ॥ तुम समरण तैं लहे विशाल । सेवक जन नित मंगल माल ॥ दादा० ॥ ४ ॥ अजीमगंज पुर में सुखदाय । थुंभ विराजे सहुमन भाय ॥ दादा० ॥ श्री जिन हरष सूरीन्द सुपसाय । दरशण लह्यो शिवचन्द सुहाय ॥ दादा० ॥ ५ ॥ इति ॥

※ तर्ज—सारंग ※

नित नमिये कुशल सूरीन्दजी ॥ नि० ॥ टेर ॥
परचा सांचा नवला पूरे । ये देवां सिर इन्दजी ॥नित०॥१॥
अष्ट महाभय विघन निवारै । चिन्ता चूरै मुणीन्दजी ॥नि०॥
सुन्दर सूरत वदन सुहावे । दीठां पूनमचन्दजी ॥नित०॥२॥
॥ इति ॥

※ तर्ज—सारंग ※

नित कुशल सूरीसर ध्याइये ॥टेर॥
सद्गुरु सेवा मन शुद्ध करके । मन वांच्छित फल पाईये ॥नित० ॥१॥ चिन्ता संकट कष्ट विडारण । श्रीगुरु नाम कहाइये ॥नित०॥ दीन दयाल दया कर मोपर । दुःख सब दूर गमा-

इये ॥नित०॥२॥ मकसूदाबाद में थुंभ थप्यो है। शुभ वेला सुखदाइये ॥नित०॥ राखी पूनम सद्गुरु भेटया। हरख हरख गुण गाइये ॥नित०॥३॥ प्रहसम सद्गुरु ध्यान धरीजे। चरण कमल चित लाइये ॥नित०॥ आलम कूं निज सेवक जाणी। आनन्द अधिक वधाइये ॥नित०॥४॥ इति ॥

※ तर्ज—नट० ※

दीपे वडली में गुरु थांरो देहरो ॥ दीपे० ॥ टेर ॥ जिहा जिनदत्त कुशल गुरु सोहत। खरतरगच्छ को सेहरो ॥ दीपे० ॥ १ ॥ रमणी रंग वधावो सुगुरु को। मस्तक धरणी को बेवरो ॥ दीपे० ॥ पाटण सघ सहित जिनचन्द सूरि। यात्रा करत बांध्यो नेहरो ॥ दीपे० ॥ २ ॥ जाकूं सानिधकारी सद्गुरु। कवण ग्रहे वांको छेहरो ॥ दीपे० ॥ महिमराज ऊपर सु निजर करो। वूठो सुधारस सेहरो ॥ दीपे० ॥ ३ ॥ इति ॥

※ तर्ज—करहेरी ※

देरावर थांरो देहरो हो साहिब। गढ कीकाणे राज। नवला थे नागोर में हो साहिब। मोज समन्द जहाज। थापर वारी हो सद्गुरुजी साहिब मुजरो मानोजी राज॥ ॥ टेर ॥ १ ॥ महिमा घणी थांरी मेडते हो साहिब। माने जेसलमेर ॥ तप थारो सूरज तपे हो साहिब। छत्र धरावो सांगानेर ॥ थांपर वारी० ॥ २ ॥ चरणे चढाऊ केउ की हो

साहिब । सूंघोजी अगर गुलाब । भमर लपेटी मालती हो साहिब । जाई जूई रे जबाव ॥ थांपर वारी० ॥ ३ ॥ दीवलो करूं कपूररोजी साहिब । महके मैंण मैंताब ॥ धूप उखेवूं करूं आरती हो साहिब । गंगा जलरो आब ॥ थांपर वारी० ॥ ४ ॥ केशर भरूं कटोरडी हो साहिब । पूजूं जी थांहरा पाय ॥ तव नेवज कर नेतरूं हो साहिब । मिश्री दूध मिलाय ॥ थांपर वारी० ॥ ५ ॥ बिड़लो पान पचासरो हो साहिब । नायक नागर वेल ॥ मांहे सुगंधी एलची हो साहिब । मुखड़े परिमल मेल ॥ थांपर वारी० ॥ ६ ॥ अमर करो नयण अमी भरो हो साहिब । श्री जिन कुशल सूरीन्द ॥ राज रमण रींझा करो हो साहिब । अरज करे राजिन्द॥ थांपर वारी० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ तर्ज—केदारा—कहरवो ॥

गणधर सेवो गुरु कुशलसूरि ॥ गण० ॥ टेर ॥

अमल विमल शशि मुख छबि सोहे । निरख २ नैना हरख भरी ॥ गण० ॥ १ ॥ नयण कमल दल अधिक विराजे । झलहल भांण ज्यूं भाल धरी ॥ गण० ॥ २ ॥ नाशादीप शिखा ज्यूं सुरंगी । लाल प्रवाली अधर परी ॥ गण० ॥ ३ ॥ गुरु के विरुद को पार न आवे । जो ध्यावे वाकी धन्य घरी ॥ गण० ॥ ४ ॥ श्री जिन हर्ष लहे सुख संपत । सत्य रत्न दुःख दूर हरी ॥ गण० ॥ ५ ॥ इति ॥

* तर्ज—कहरवा *

तिहारे दरश की चाह रही। मोरी अरज सुणो गुरुरायजी॥टेर॥ तिहारे दरश तें आनन्द उपजें। रोम २ विकसायजी ॥ ति० ॥ १ ॥ और देव सुपने नहीं धारू। तुम विन चित अकुलाय जी ॥ ति० ॥ २ ॥ कुशल कला जग मे वरताई। तातें कुशल कहायजी ॥ ति० ॥ ३ ॥ परतिख दरशन दीजे मुझको। ऋद्धि सिद्धि नव निद्धि थापजी ॥ ति० ॥ ४ ॥ रग विनय गुरु के गुण गावे। चरण कमल चित्त लायजी ति० ॥ ५ ॥

॥ इति ॥

* तर्ज—सोरठ *

सद् गुरुजी शोभा सवाई ऐ ॥स०॥ आज आनन्द वधाई ऐ ॥ श्रीजिनकुशल सूरीश्वर साहिब। बड नामी वरदाई ऐ ॥ स० ॥ १ ॥ चन्द पटोधर चारो चिहुँ दिसि। दुनिया मे फिरत दुहाई ऐ ॥ स० ॥ २ ॥ कनक कचोली केशर घोली। मृगमद माहि मिलाई ऐ ॥ स० ॥ ३ ॥ दीप धूप अक्षत फल नैवेद्य। बहुविध पूज रचाई ऐ ॥ स० ॥४॥ घाट घाट वलि विराजी वेला। समर्या होत सहाई ऐ ॥ स० ॥ ५ ॥ श्री जिन हर्ष सूरीन्द गुरु गच्छपति। सुगुण सेवक सुखदाई ऐ ॥ स० ॥ ६ ॥ इति ॥

* तर्ज—कालिंगड़ा *

मैं बलिहारी गुरु चरना ॥ मैं० ॥ टेर ॥
श्री जिन कुशल सूरीन्द साहिब के। चरण कमल का शरणा ॥ मैं० ॥ और न चाहूँ कोई आधारा। एक आपका सहारा ॥ मैं० ॥ १ ॥ केशर चन्दन चरचूं चरने फूल चढ़ाऊं शुभ वरना ॥ मैं० ॥ भाव विशुद्धे गुरु गुण गावो। ध्यान हिये में धरना ॥ मैं० ॥ २ ॥ सुरतरु सम गुरु वांच्छित दायक। मन से नांहि विसरना ॥ मैं० ॥ चरण कमल को कर आराधन। कलियुग से निस्तरना ॥ मैं० ॥ ३ ॥ सेवक अरज सुणो सद्-गुरुजी। वांच्छित पूरण करना ॥ मैं० ॥ दरशण दीजै ढील न कीजै। होत नहीं अब जरना ॥ मैं० ॥ ४ ॥ गच्छ उदय करदो सगुणं पद। आपद दूरे हरना ॥ मैं० ॥ जिन सौभाग्य सूरीसर साहिब। विजय सदा सुख करना ॥ मैं० ॥ ५ ॥

॥ इति ॥

* तर्ज—कालिंगड़ा *

विनतड़ी सुण लीजिये सद् गुरुजी मोरी ।।वि०। टेर।
श्री जिनचन्द सूरीन्द पटधारी। मों पर सुनिजर कीजिये ॥ स० ॥ वि० ॥ श्री जिन कुशल सूरियश धारी। भक्तों का दुःख सब भांजीये ॥ स० वि० ॥ १ ॥ खरतरगच्छ के प्रभु प्रतिपालक। दरशण वहिलो दीजिये ॥ स० ॥ वि० ॥ गच्छ

उदय कर साहिब मेरा। आपद दूर हरिजिये ॥ स० ॥ वि० ॥ २ ॥ प्रगट प्रतीत परम सदगुरु की। और न आश करीजिये ॥ स० ॥ वि० ॥ छाय रयो कलिकाल जगत मे। किण विध धीर धरीजिये ॥ स० ॥ वि० ॥ ३ ॥ प्रबल प्रमाद नहीं गुण सग्रह। जात न कुल न पतीजिये ॥ स० ॥ वि० ॥ नाव पुराणी नदिया गहरी। बेडा पार करीजिये ॥ स० ॥ वि० ॥ ४ ॥ धर्म नाव नियामिक जग में। गुरु विन कौन कहीजिये ॥ स० ॥ वि० ॥ जिन सौभाग्य सूरीन्द के साहिब। जग गुरु विजय करीजिये ॥ स० ॥ वि० ॥ ५ ॥ इति ॥

※ तर्ज—सोरठ ※

सद् गुरुजी म्हांरे मन भाया। मन भाया मेरे दिल भाया ॥ जब से दृष्टि पड़ी गुरु चरने। देखत नयन लुभाया ॥स०॥१॥ थे म्हांरा मे आखर थोंरा। यही सयोग बनाया ॥ सेवक आनन्द कुशल सूरीन्द को। निरख नवे निध पाया ॥स०॥२॥
॥ इति ॥

॥ तर्ज—तुम पर जाऊं बलिहारी. मैं वारी० ॥

तुझ सूरत सुखकारी मैं वारी जाऊ ॥ तु० ॥ टेर ॥ श्री जिन कुशल सूरीसर साहब। तुम हो पर उपगारी ॥ कलियुग में गुरु नाम तुम्हारो। है परचो अतिभारी ॥ मैं० ॥

है प० ॥१॥ पूनम २ ने सोमवारे । आय मिले नर नारी ॥ मैं० ॥ आय० ॥ श्री० ॥ केशर चन्दन पुष्प माल सूं । पूजा रचे अति भारी ॥ मैं० ॥ पू० ॥ श्री० ॥२॥ जो सद्-गुरुनो ध्यान धरे मन । नित २ वात करारी ॥ मैं० ॥ नि० ॥ श्री० ॥ श्री जिनचन्द अधिक उच्छव सूं । यात्रा करी जयकारी ॥ मैं० ॥ या० ॥ श्री० ॥ इति ॥

* तर्ज—काफी *

सुणियो अरज हमारी सुगुरुजी ॥ सु० ॥ टेर ॥

दीन दयाल कृपानिध साहिब । आशा अेक तुम्हारी जी ॥ वांच्छित दायक वांच्छित दीजे । इक तुमरी अेकतारीजी ॥ सुणियो० ॥ १ ॥ चन्द पटोधर कुशल सूरीन्दजी । जश जग में विस्तारीजी ॥ भक्त वत्सल भगवत प्रभु को । चरण शरण सुखकारी जी ॥ सुणि० ॥ २ ॥ सुनिजर कर प्रभु साहिब मेरे । दरशण वहिलो दीजे जी ॥ सद्गुरु आपनो सेवक जांणी । वांच्छित पूरण कीजे जी ॥ सुणि० ॥ ३ ॥ परम प्रभु मेरो परउपगारी । शरणागत साधारी जी ॥ वाल कहै मुझ वांच्छित दीजे । वधती वान वधारी जी ॥ सुणि० ॥ ४ ॥ इति ॥

* तर्ज—प्रभाती *

कुशल करण मेरे परम गुरु की । वेर वेर बलिहारी ॥कु०॥टेर॥ श्री जिनचन्द सूरीन्द पटधारी । जिनशासन उजवारी ॥ गाम

नगर थिर थुंभ विराजे। वारि जाऊं वार हजारी ॥ कु० ॥१॥
महिमा मेरु समान है जाकी। कही न सकूँ विस्तारी ॥ श्री
जिन कुशल सूरीसर साहिब। सुणिये अरज हमारी ॥कु०॥२॥
सुर सुख मगन लगन लागी जब। तातें दिया विसारी ॥ ऐसे
सद्गुरु तुम नवी छाजे। लीजे काण तुम्हारी ॥ कु ०॥३॥
निज गण निज पद लज्या अपनी। रखिये विरुद समारी ॥
गिरुआ कवहूँ छेह न दाखे। राखे मान वधारी ॥ कु० ॥४॥
मेरी चूक पर निजर न दीजे। कीजे अनुग्रह भारी। श्री जिन
हर्ष सूरीसर सद्गुरु ॥ समर्यां सानिधकारी ॥ कु० ॥५॥

॥ इति ॥

* तर्ज—प्रभाती *

श्री जिन कुशल सूरीसर सद्गुरु। तुम दरशण बलि-
हारी ॥ श्री० ॥ टेर ॥

मन वांच्छित पूरण इन कलि में। गुरु सुरतरु अव-
तारी ॥ करुणानिधि जलनिधि ते तरणी। करुणा कर निस्तारी
॥ श्री० ॥ १ ॥ तुम हो त्रिदश शिरोमणी साहिब। तुम सहु
जग उपगारी ॥ भगते सहु नरपति नित वन्दे। तुम पद कज
मनुहारी ॥ श्री० ॥ २ ॥ अति विसमी अटवी ग्रीषम में।
तप तरसित कूँ निहारी ॥ जलदायक निज विरुद समारी।
जल पावे सुखकारी ॥ श्री० ॥ ३ ॥ तुम समर्यां खेचर अरु-

व्यन्तर । शाकिनी भय अतिभारी ॥ मिट जावे सहु तिमिर पुलावे । जिम दीठां तिमरारी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ पाली पुरगुरु थुंभ विराजे । संघ उदय जयकारी ॥ शिरनामी शिवचन्द इम जंपे । वारो जाऊं वार हजारी ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति ॥

※ तर्ज—अलहिया वेलाउल ※

श्री जिन कुशल सूरीन्द गुरु साहिब । पूरण परम दयाला है ॥ करुणा निधि किरपाला है ॥ टेर ॥ श्री० ॥

अष्ट प्रकारी पूजा भविजन । विधि सुं करत विशाला है ॥ वाकूँ अष्टमिती नहीं आवे । काटे कष्ट कराला है ॥श्री० ॥१॥ हीर चीर पाटंबर अंबर । माणक मिती माला है ॥ पूजो परम गुरु के पगलां । पग पग ऋद्धि रसाला है ॥श्री० ॥२॥ पुत्र कलत्र मित्र मन भावे । दे हाथी मतवाला है ॥ है ॥ मोटा मन्दिर महल मालिया । सुन्दर रूप रसाला है ॥ श्री०॥३॥ विपत विडारण संकट टालन । आपद उधारण वाला है । समरथ है साहिब गुरु मेरा ॥ घड़ी घड़ी रिच्छपाला है ॥श्री०॥ ४ ॥ सानिध करत सदाई सेवक । जपे गुरु पद माला है ॥ रतन कहत मन राजी हुयके । कबहूँ नाही कसाला है ॥श्री०॥ ५ ॥ इति ॥

※ तर्ज—प्रभाती ※

श्री जिनकुशल सूरीश्वर साहिब । तुम हो पर उपगारी ॥टेर॥

खरतरगच्छ नायक गुण लायक। जिनचन्द सूरि पटधारी ॥
प्रत्यक्ष परचा पूरण नायक । हो जग में यशधारी ॥श्री०॥१॥
सन्त उधारण सुजश वधारण । भीड भंजन अति भारी ॥ नाम
तुम्हारो कुशल करण जग । वारी जाऊ वार हजारी ॥श्री०॥२॥
जगवच्छल तुम ही हो जगत गुरु । करुणानिधि करतारी ॥
कहे जिनचन्द मेरे हो सद्गुरु । हमें है आश तुम्हारी ॥श्री०॥३॥
॥ इति ॥

※ तर्ज—प्रभाती ※

तूं है दाता मेरो कुशल गुरु ॥ तू० ॥ टेर ॥
तुम बिन और न किणपें याचूं । कोहे दाता अनेरो ॥ ध्यान
हृदय बिच नित प्रति धारूं । अेक भरोसो तेरो ॥ तूं० ॥१॥
राज रमणी रिद्ध सिद्ध सब हाजर । नाम जपे सहु तेरो ॥
दीन दयाल सेवे सुखदाई । कीरतनन्त वडेरो ॥तूं०॥२॥
देव दयाकर दरशण दीजे । सारो काज सवेरो ॥ राज कहत
मोंही अपनो जानो । चरण कमल को चेरो ॥तू०॥३॥ इति ॥

※ तर्ज—अलिहिया वेलाउल ※

कुशल सूरीन्द सहाई हमारे ॥ कु० ॥ टेर ॥
मन वान्छित सुख सब ही पूरे । यातें फिकर न काई ॥ शिर
सुखदायक हो मेरे नायक । गच्छपति नाथ सवाई ॥कु०॥१॥

परचा पूरण चिन्ताचूरण। श्री गुरु नाम कहाई ॥ प्रगट विरुद जग में सदगुरु को। सेवक को सुखदाई ॥कु०॥२॥ श्री जिन-कुशल सूरीश्वर ध्याऊं। चरण कमल चितलाई ॥ मुझ को एक भरोसो तेरो। और न कोई सुहाई ॥कु०॥३॥ सेवक ऊपर सुनिजर कीजे। या में नवनिधि पाई ॥ आनन्द चन्द सदा सुख दीजे। दिन दिन होत वधाई ॥कु०॥४॥ इति ॥

* तर्ज—जय जयवन्ती *

आज तो आनन्द मेरे। आई भली भावना ॥आ० ॥टेर॥ भई जो कुशल गुरु! भेटन की कामना ॥ कलियुग में सुरतरु। दुरित को दावना ॥आ०॥१॥ दादा को दरश पायो। लोचन कूं अधिक भायो। सुधा तें लग्यो सवायो। पूज्यां सुख पावना ॥आ०॥२॥ श्री जिनकुशल सूर। सेवक को हो हजूर ॥ दुरित हरण दूर। अधिक वधावना ॥आ० ।३॥ कुंकुम चन्दन घसी। सरस गुलाब रसी ॥ उलसी उलसि पूज। गुरु गुण गावना ॥आ०॥४॥ प्यासे कूँ ज्यूं पाणी पावे। भूले कूँ राह बतावे ॥ बंधन छोड़ावे। दूर विच्छरे मिलावना ॥आ०॥५॥ लक्ष्मी वल्लभ की आस। पूरे सदा सुख वास ॥ कविराज जस-वास। जगत सुहावना ॥आ०॥६॥ इति ॥

* तर्ज—परज *

कुशल सूरीन्द सुखकारी हो सुगुरु मेरो ॥ कु० ॥ टेर ॥ कुशल सूरीन्द गुरु परतिख जग में। परचा पूरत भारी हो ॥

सु०॥कु०॥ १ ॥ कुशल मडन, पातक खंडन। सुरतरु सम जशधारी हो ॥सु०॥कु०॥ २ ॥ सुजश सुण्यो तेरो महियल में। आयो शरण तुम्हारी हो ॥सु०॥कु०॥ ३ ॥ दया मन्दिर की यही अरज है। दरशण दो हितकारी हो ॥सु०॥कु०॥ ४ ॥
॥ इति ॥

* तर्ज—रंगिली *

मेरे होउ सहाई सद्गुरु ॥ मेरे हो० ॥ टेर ॥
तुझ समरण थी अड सिद्ध नव निद्ध। कमणा नर हे काई ॥ अलिय विघन सब दूर जावे। वांच्छित फले सदाई ॥ मे० ॥ स० ॥ १ ॥ आधि व्याधि अरियण अरु निखमी। कहता सब टल जाई ॥ पग २ कुशल सूरीन्द गुरु सानिध। करुणा कर दिखलाई ॥ मे० ॥ स० ॥ २ ॥ दुष्ट निकन्दन सेवक रजन। खरतर गच्छ वरदाई ॥ चेम रतन कू दरशण दीजे। दिन २ चढत सवाई ॥ मे० ॥ स० ॥ ३ ॥ इति ॥

* तर्ज—आशावरी *

हम कूँ शरण तिहरी हो। दादा राखो शरण तिहारी ॥ह० ॥ टेर ॥ मन की बात कहुँ तुझ आगल। जो हुय मुनिजर थारी ॥ व्याधि मिटावो, शान्ति वधावो। सपत दो सुखकारी ॥ ह० ॥ १ ॥ काय्ठ मर निद्रा मे पोढे। अज हु न वात विचारी ॥

आलश छोड़ो करो निहोरो । सुणिये वीतक सारी हो ॥ ह० ॥ २ ॥ म्हांरे दोला दोषी दुश्मन । लपटया आण करारी ॥ तेहने हणिये, ढील न करीये । ओही अरज हमारी हो ॥ ह० ॥ ३ ॥ घणुं २ सूं ओलंभो दीजे । सा कीजे मनुहारी ॥ अपना इत कर जाण पतितनी । करिये गुरु रखवारी हो ॥ ह० ॥ ४ ॥ अब तो दिवस घणा ही वीता । सुप्रसन्न हुयो गण-धारी ॥ श्री जिनकुशल सूरीश्वरजीनी । क्षेम रतन बलि-हारी हो ॥ ह० ॥ ५ ॥ इति ॥

※ सर्ज—प्रभाती ※

श्री सद्गुरु महाराज कुशल गुरु । तुम हो पर उपगारी ॥ श्री० ॥ टेर ॥

शिव सुखदायक लायक स्वामी । जिन चन्द सूरी पटधारी ॥ नाम तुम्हारो कुशल कुशल गुरु । करुणा निधि करतारी ॥श्री० ॥ १ ॥ वाट घाट घणु विखमी वारे । समरण कीयां सुख कारी ॥ भव भय भांजो दुःख निवारो । नित प्रति रहो हितकारी ॥ श्री० ॥ २ ॥ प्रति क्षण ध्यान तुम्हारो ध्यावे । पावे ऋद्धि समारी ॥ तुम ही मात पिता हित वच्छल । निशदिन याद तुम्हारी ॥ श्री० ॥ ३ ॥ केशर चन्दन तगर अगरजा । लावे भर २ नारी ॥ पूज रचावे भक्ति बनावे गुण गावे अति प्यारी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ नाम लेत गुरु संकट

टाले । पाले विरुद सुमारी ॥ श्री जिन हर्ष सूरि सुपसाये । सत्य रतन बलिहारी ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति ॥

※ तर्ज—प्रभाती ※

श्री सद्गुरु जिन कुशल सूरीश्वर । साचो नाम धरावे ॥ श्री० ॥ टेर ॥
परमानन्द पद परम सुधारस । गुरु पूज्यां घर आवे ॥ गच्छपति राज राजेश्वर साहन । देखो दरशन सुख पावे ॥ श्री० ॥ १ ॥ सेवक जन प्रतिपाल जगत गुरु । जिन शासन उजवाले ॥ करुणा निधि करतार परम गुरु । दरशण परतिख आले ॥ श्री० ॥ २ ॥ केशर चन्दन अक्षत कुंकुम । श्रीफल मोदक सोहे ॥ भेट करी गुरु आगल हरखी । पाय परत मन मोहे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ महियल मे विख्यात सकल गुरु । महिमावन्त सहाई ॥ तिसिया रन मे तुम ही पिलाओ । ओपमा ऐसी पाई ॥ श्री० ॥ ४ ॥ जिहा २ थान विराजे सद्गुरु । तिहा अतुली नल गाजे । श्री जिन हर्ष सूरि सानिध कर । सत्य रतन सुख काजे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति ॥

※ तर्ज—प्रभाती ※

कुशल करण गुरु कुशल सूरीश्वर । साचा सद्गुरु मेरा रे ॥ सेवक जन सानिध गुरु समर्यां । विपत हरण तुम नेरा रे ॥ कु० ॥ १ ॥ श्री जिनचन्द सूरीन्द पटधारी । सूरि सकल

शिर सेहरा रे ॥ निरमल कीरति जग गुरु तेरी । जैसा चन्द उजेरा रे ॥ कु० ॥ २ ॥ मात तात जग तूं ही परम गुरु । तूं साहिब सुख केरा रे ॥ तुम सम देव नही कोउ जग में । कह न सकूँ गुण तेरा रे ॥ कु० ॥ ३ ॥ कुमति विडारण सुमति वधारण । वारण विखमी वेरा रे । श्री जिन हर्ष गुरु चरण प्रसादे । प्रति दिन शुभ घर तेरा रे ॥ कु० ॥ ४ ॥

॥ इति ॥

* तर्ज—तेरा ही आधार परम धणी *

कुशल करो रे महाराज कुशल गुरु ॥ कु० ॥ टेर ॥ सेवक ऊपर करुणा करके । दीजै सुख समाज ॥ कु० ॥ १ ॥ आधि व्याधि अरु विपत व्यथा सब । दूर करो गुरुराज ॥ कु० ॥ २ ॥ आपद उदधि सूं पार उतारो । राखो मेरी लाज ॥ कु० ॥ ३ ॥ संकट विकट निकट नहीं आवे । समरण श्री गुरुराज ॥ कु० ॥ ४ ॥ तुम गुण नाम जहाज जगत में । अशुभ हरण शिव काज ॥ कु० ॥ ५ ॥ अभय महा सुख-दाई सद्गुरु । सब देवन शिरताज ॥ कु० ॥ ६ ॥ इति ॥

* तर्ज—बंगाली घाटो *

आशा सफल फली । मैं पायो परमानन्द ॥ आ० ॥ टेर ॥ श्री जिन कुशल सूरीसह रे । देवा सिर हरदेव पुहवी मांहे परगड़ो रे । संघ करे नित सेव ॥ आ० ॥ १ ॥ हूँस धरी मन

हरखियो रे । दीठे दीन दयाल ॥ दुःख दोहग दूरे गया रे । टाल्या दुःख जंजाल ॥ आ० ॥ २ ॥ ज्ञान तणो गुरु आगरूरे । परतिख गग प्रवाह ॥ मन गमता मित्र मेलवेरे । अति आनन्द उच्छाह ॥ आ० ॥ ३ ॥ तुम गुण गातां सद्गुरु रे । कहता नावे पार ॥ भक्त जन ने तुम मन वस्या रे । जपतां जय-जयकार ॥ आ० ॥ ४ ॥ इति ।

* तर्ज—फतमलरी *

गच्छपति खरतरगच्छ सिणगार । कीरत भूमण्डल कहे ॥ ॥ गच्छ० ॥ १ ॥ देखण तुज्झ दीदार । राजा राणा आगल रहे ॥ ग० ॥ २ ॥ रतन कचोलो विसाल । केशर चन्दन घस भलो ॥ ग० ॥ ३ ॥ गूथ २ फूल माल । पूजे निर्मल मम करी ॥ ग० ॥ ४ ॥ देश बगाला मज्झार । थुंभ झलाहल दीपतो ॥ ग० ॥ ५ ॥ परचा पूरणहार । इन कलिकाल ने जीपतो ॥ ग० ॥ ६ ॥ रह सुं तुमारे पाय । दरशन दीजे मों भणी ॥ ग० ॥ ७ ॥ पटधर कुशल सूरिन्द । महिमा तम जग जागती ॥ ग० ॥ ८ ॥ आपे सदा जिनचन्द । चरण कमलनी विनती ॥ ग० ॥ ९ ॥ इति ॥

* तर्ज—फतमलरी *

सद्गुरु श्री जिन कुशल सूरीन्द । चाजो चन्द पटो-धरु ॥ स० ॥ खरतर गच्छ राजिन्द । जिरुद बडा अल वेसरू

॥ स० ॥ १ ॥ परतिख पुहवी मज्झार । कीरत थांरी कलि युगे ॥ स० ॥ भला भलाकईरे भूपाल । आगल ऊभा ओलगे ॥स०२॥ महिमानो मंडाण । भाण तणी पर झल हले ॥ स० जागतो थुंभ जेशाणा मेला नित गह गह मिले ॥ स० ॥३॥ दुखियां सुख दातार । निरधनियां बहु धन दिये ॥ स० ॥ सरखाई साधार । हित वच्छल मोटे हिये ॥ स० ॥ ४ ॥ भले रे ऊगो सुविहाण । सफल दिवस भाई बीजनो ॥ स० ॥ मिल महाजन महिराण । रंग लीनो घणी रीजनो ॥ स० ५॥ आडम्बरउच्छ रंग । जुगत जुहार्यां जग गुरु ॥ स० ॥ सुनिजर धरज्यो सूरीन्द । श्री जिनचन्द सु-सुरतरु ॥ स० ६॥

॥ इति ॥

* तर्ज—सांगानेर विराजे *

पूजो रे पूजो पूजो । दादे सम देव न दूजो रे । भवियां भाव धरीने पूजो ॥ टेर ॥

परतीख आशा पूरे । दादो संकट सगला चूरे रे ॥ भ० ॥ १ ॥ जिनचन्द सूरि पटधारी । दादो खरतरगच्छ अधिकारी रे ॥ भ० ॥ २ ॥ समर्यां सानिधकारी । ये अजब कला गुरु थांरी रे ॥ भ० ॥ ३ ॥ दोनूं राह मन में धारी । कोई आन न खंडे थांरी रे ॥ भ० ॥ ४ ॥ चन्दन केशर भेली । वलि मृगमद मांहे रेली रे ॥ भ० ॥ ५ ॥ चरण कमल इम चरचो । इन

गुरु नो मोटो परचो रे ॥ भ० ॥ ६ ॥ पूज्यां वांच्छित पावे सहु दुनिया ए यश गावे रे ॥ भ० ॥ ७ ॥ छाजेडां कुशल-चन्दो । ए कुशल गुरु चिर नन्दो रे ॥ भ० ॥ ८ ॥ एहीज पचम आरे । सेवक जन ने साधारे ॥ भ० ॥ ६ ॥ बाकीरे वेला वारे । जे गुरु नो नाम संभारे रे ॥ भ० ॥ १० ॥ सवत अठार तेतीसी । वदि मिगसर तीज जगीसेरे ॥भ० ११॥ धन धन हिमत कोठारी । जिन यात्रा कराई सारी रे ॥भ०॥ ॥ १२ ॥ चोरासे गच्छ मुनि सगे । गुरु पाय नम्या मन रगेरे ॥ भ० ॥ १३ ॥ दान तिहा घणों दीधो । सहु सघ मे ए जश लीधो रे ॥ भ० ॥ १४ ॥ चन्द वाचक इम ध्यावे । गुरु दादो चढते दावेरे ॥ भ० ॥ १५ ॥ इति ॥

* कलश *

रिसह जिनेसर सो जयो । मगल केलि निवास ॥
वासव वन्दिय पाय कमल । जग सहु पूरे आश ॥ १ ॥

* चाल *

चन्द कुलांबर पूनमचन्द । वन्दो श्री जिन कुशल मुनीन्द ॥
नाम मत्र जसु महिमा निवास । जो समरे तसु पूरे आश ॥२॥
मरु मडण सनियाणा गाम । धण कण कंचण अति अभिराम ॥
जिहां वसे जिल्हागर मंत्री । जैतसिरी जसु घरणी कलत्री ॥३॥

जसु तेरे से तीसे जन्म । सैंताले सिरि संयम रम्म ॥
पाटण सतोतरे तसु पाट । नव्यासीये जसु स्वर्गों वाट ॥४॥
भूमण्डल स्वर्ग पायाल । स चराचर जग इण कलिकाल ॥
गुरु प्रताप नवि मांने सोय । मैं नवि नयणे दीठो कोय ॥५॥
निरधन लहै धन धान्य सुवन्न । पुण्य हीन पामें वहु पुन्न ॥
असुखी पामें सुख सन्तान । एकमनां धरता गुरु ध्यान ॥६॥
गुरु समरण आपद सहुटले । श्रेय शान्ति सुख संपति मिले ॥
अधि व्याधि चिन्ता सन्ताप । सहु छंडे नवि मंडे व्याप ॥७॥
पाप दोष नवि लागे तिहां । गुरु दरशण उतकंठा जिहां ॥
सेवन्ता सुरतरु नी छांह । निश्चय दालिद्र मेले वाह ॥८॥
विस विसहर विस में नर नाह । भूत प्रेत ग्रह व्यन्तर राह ॥
गुरु नामें जे न करे पीड़ । भाजे भावठ भय भीड़ ॥९॥
रोग सोग सब नासे दूर । अंधकार जिम ऊगे सूर ॥
मूरख फीटी पंडित थाय । गुरु पसाय दुःख दूर पलाय ॥१०॥
दिन २ जिन शासन उद्योत । जिहां अच्छे भव सायर पोत ॥
सो सद्गुरुजी मैं भेटया आज । रलिय रंग सहु सीधा काज॥११॥

❀ उलालो ❀

अज घर अंगण सुरत रु फूलियो ।
चिन्तामणी कर कमले मिलियो ॥
उदयो परमानन्द करे आज ।

दीह मे घन्ने गिणियो ॥
जुग पवरागम जो मैं थुणियो ।
चन्द्रगच्छ महिमा निलोओ ॥ १२ ॥

काई करो पृथ्वीपति सेवा । कांई मनावो देवी देवा ॥
चिन्ता आणो काई मने । वार २ ये कवित्त भणीजे ॥
श्रीजिन कुशल सूरि समरीजे। सरे काज आयास विना ॥ १३ ॥
सवत् चवद इक्यासी वरसे। मुलक वाहन परवर विन हरसे ॥
अजिय जिनेसर पर वने । कियो कवित्त यह मगल कारन ॥
विघन हरण बहु पाप निवारन । कोई मत सशय धरो मने ॥१४॥
दिन २ सेवे सुरनर राया । श्रीजिन कुशल मुनीश्वर पाया ॥
जय सागर उवज्झाय थुणे । इमजे सद् गुरु गुरु गुण आनन्दे ॥
ऋद्धि समृद्ध सोचिरनन्दे । मनवांच्छित फल सुन हुवो श्रे॥१५॥

* स्तवन *

दादोजी दीठा दौलत थाय । नाकी रेवेला न पड़े काय । पूजो मन रली । हा हो दादा कुशल सूरीन्द पूजो मन रली ॥ टेर ॥ दादो जी तुरत गमावे पीड । दादा जी भांजे सगली भीड ॥ पू० ॥ १ ॥ केसर चन्दन अगर कपूर । पूजन्ता दादो जी होवे हजूर ॥ पू० ॥ २ ॥ पूनम २ ने सोमवार । आय जुड़े दादे दरबार ॥ पू० ॥ ३ ॥ मुंह माग्या वरसावे मेह । दादो जी साधे तूटा नेह ॥ पू० ॥ ४ ॥ दादोजी राजनगर दीवान ।

पूड़पां घोलचढे परमाण ॥ पू० ॥ ५ ॥ दादेजीरा सेवक होय । तेहने गंज सके न कोय ॥ पू० ॥ ६ ॥ जिनरंगसूरि कहे कर जोड़ । कवण करे म्हारा दादेजीरी होड़ ॥ पू० ॥ ७ ॥ इति० ॥

* तर्ज—सुणियो वातां राव सदाशिव *

कुशल गुरुजी अरज सुणीजे । दरशण दीजे महाराजा ॥ दासपै महिर करो सद्गुरुजी । मन वांच्छित होवे ताजा ॥ कु० ॥ १ ॥ सोमवार ने पूनम दिवसे । दरसण कूं श्री संघ आवे ॥ अेक वार सद्गुरु ने समरे । मनचिन्त्या फल वे पावे ॥ कु० ॥ २ ॥ पुण्यवान परतापचन्द के । पुत्र पांच पांडव कीना ॥ श्री सदगुरु की भक्ति करके । नर नारी लाहो लीना ॥ कु० ॥ ३ ॥ लंगड़ा लूला पले पांगला । कोढी शरणे आन पड़े ॥ अेक वार सदगुरु ने समरे । कंचन सी काया सुधरे ॥ कु० ॥ ४ ॥ डाकण वगतर भूत भयंकर । अेवी वाथन आन पड़े ॥ उन वेला सदगुरु ने समरे । कदेयन उनका रोम खिरे ॥ कु० ॥ ५ ॥ जेशलमेर के अमर सागर में । थुंभज खूब वण्या भारी ॥ खेमचन्द सिद्ध मुनि अगरचन्द ने । करी लावणी शुभकारी ॥ कु० ॥ ६ ॥ इति ॥

* तर्ज—नीन्दड़ली हठीली वैरणहो रही *

श्री जिन कुशल सूरीसरू । सहु देवां शरताज हो ॥ सदगुरु मोरा० ॥ इण कलियुग सुरतरु सारिखा । खरतर-

गच्छ महाराज हो ॥ स० ॥ श्री० ॥ १ ॥ जिहा तिहा तुम परचा घणा ॥ पामान मके कोई पार हो ॥स०॥ तुरत सुजाण-सिंह भूपने । कीधो नहु उपगार हो ॥ स० ॥ श्री० ॥ २ ॥ भक्त गरीबनिवाज छो। जिन शासन दीवान हो ॥ स० ॥ सकट तिमिर गमाड़वा । तेजें झलहल भाण हो ॥ स० ॥ श्री० ॥ ३ ॥ गुणागिर ना गुरु रायना । समरया थी जिन-वृन्द हो ॥ स० ॥ हयगय सुत धन कामनी । पा में मन आनन्द हो ॥ स० ॥ श्री० ॥ ४ ॥ थुंभ विराजे गुरु राय नो । सुथिर गडाले सुखदाय हो ॥ स० ॥ वाचक पुण्य शील राज ना । प्रहसमें प्रणमे पाय हो ॥ स० ॥ श्री० ॥५॥ इति ॥

* स्तवन *

हेली हे सदगुरु जात मनास्या । हेली सदगुरु वेग वधास्यां हे ॥ हेली सदगुरु पूज रचास्या हे । हेली सदगुरु गुण जम गास्या हे ॥ हे०॥१॥ हेली सदगुरु म्हारो बडमागी है । हेली सद्गुरू सुगुण सोमागी हे ॥ हेली सद्गुरू विरुद वडाला है । हेली मदगुरू म्हारो रिछपाला है ॥ हे० ॥ २ ॥ हेली सदगुरू निरभय चाटे हे । हेली मदगुरू दुश्मन दाटे हे ॥ हेली सदगुरू म्हारो जशनामी है । हेली सदगुरू अन्तरजामी है ॥ हे० ॥ ३ ॥ हेली सदगुरू कुशल सूरीन्दा हे । हेली सदगुरू सेवे सुर वृन्दा है ॥ हेली मदगुरू म्हारो वरदाई हे । हेली सदगुरू हर्ष सदाई हे ॥हे० ॥ ४ ॥ इति ॥

※ स्तवन ※

जी हो धन वेला धन साधड़ी। दादा जब भेटे तुम पाय ।। जी हो इम मन मांहि धरतो थको। दादा हूँ आयो मुनि राय ।। १ ।। कुशल गुरो पूरो वांच्छित काज ।। टेर ।। जी हो हूँ सेवक छुं ताहरो। दादा मुझ दुखिये तुम लाज ।। जी हो तूं तारक छे मांहरो। दादा तरण तारणनी जहाज ।। ।। कु० ।। २ ।। जी हो जग मांहे तू परगडो। दादा जाणे इन्द नरीन्द ।। जी हो कस्तूरी केशर करी। दादा नित पूजे नर वृन्द ।। कु० ।। ३। जी हो दुःख दोहग दूरे टले। दादा जपतां अहनिशि जाय ।। जी हो सेवक ने सानिधकरे। दादा टाले पाप सन्ताप ।। कु० ।। ४ ।। जी हो निरधनियां नित धन दिये। दादा ऋद्धि सिद्ध परिवार ।। जी हो पुत्र दिये अपुत्रियां। दादा निर गुणियां गुण धार ।। कु० ।।५।। जी हो महियल मांहे दीपतो। दादा देराउर सुविशेष ।। जी हो जेशल गिरि वर पूजिये। दादो भांजे दुःख अशेष ।। कु० ।। ६ ।। जी हो वीरम पुर सोवन गिरे। दादा जोधपुरे विलसन्त ।। जी हो जैतारण वली मेड़ते। दादा लच्छ दिये बहु भंत ।। कु० ।। ७ ।। जी हो अहम्मदाबाद खंभायते। दादा पाटण पूरे आस ।। जीहो श्री सूरत विक्रम पुरे। दादा तोड़े आपद पास ।। कु० ।। ८ ।। जी हो लाभ पुरे तिम आगरे। दादा महिमा मंडोर मझार ।। जी हो सांगानेर

अमर मरे। दादा सेवक जन सुखकार ॥ कु० ॥ ६ ॥
जी हो इम गुण २ थुं म प्रण मिये। दादा नासे सहु विखवाद ॥
जी हो राज समुद्र इमविनवे। दादा समर्यां दीजो साद
॥ कु० ॥ १० ॥ इति ॥

※ स्तवन ※

कीजे वेकर जोड ने दादाजी। विनतडी विगताय हो ॥
सद्‌गुरुजी ॥ अरज मोरी सांभलो दादाजी। राज विगर किण
आगले दादाजी। अन्तर कहीयन जाय हो ॥स०॥अ०॥ १ ॥
थारे तो सेवक घणा दादाजी। म्हारे थे गुरुराय हो ॥स०॥
अ०॥ तुम्हे अम्ह दिशि कीजो मया दादाजी। ज्ञान निजर
सुपसाय हो ॥स०॥अ०॥ २ ॥ आदि युगादि तणा अन्डे
दादाजी। प्रगट थोरा परभाव हो ॥स०॥अ०॥ गिणती मू
नावे गण्या दादाजी। जिन जल कण दरियाव हो ॥स०॥अ०
॥ ३ ॥ म्हारे समरण राज नो दादाजी। थांरा हीज आधार
हो ॥स०॥अ०॥ म्हें तो थांरा ओलगू दादाजी। थे म्हारा
करतार हो ॥स०॥अ०॥ ४ ॥ इण गच्छ मे वरते उदो दादा
जी। थोक भला भला थाय हो ॥स०॥अ०॥ गो सगलाई
राजरा दादाजी। सुविनररा गहगाट हो ॥स० ।अ०॥ ५ ॥
जिण वेला दरशण हुवे दादाजी। कीजे समरण ध्यान हो ॥स०
॥अ०॥ नयण हसे तन उल्लसे दादाजी। विकसे मन आग-

मान हो ॥स०॥अ०॥ ६ ॥ धन्य धन्य दिन भाई बीजनो दादाजी । आयो भाग्य प्रमाण हो ॥स०॥अ०॥ मले आडम्बर भेटिया दादाजी । खरतर गच्छ दीवन हो ॥स०॥अ०॥ ७ ॥ पग पग में सानिध करो दादाजी । रात दिवस इक रंग हो ॥ स०॥अ०॥ हूँ छूं सेवक राउलो दादाजी । कदेयन छोड़ूँ संग हो ॥स०॥अ०॥ ८ ॥ श्री जिन कुशल सूरीसरू दादाजी ॥ जिनचन्द सूरि पटधर हो ॥स०॥अ०॥ श्री जिन लाभ सूरीन्द ने दादाजी । महिर निजर अवधार हो ॥स०॥अ०॥ ६ ॥

॥ इति ॥

❊ तर्ज—कालहरा ❊

पूजवा चाली रे सुगुरु ने पूजवा चाली ॥ टेर ॥

शोल शृङ्गार सझी सहु वनिता । टोली मिल २ चाली ॥ उज्वल थाल भरी मुक्ता फल । सुन्दर हाथे जाली ॥सु०॥१॥ गीत गावन्ती वहु गुणवन्ती । सद्गुरु शरणे आवे ॥ कनक कचोली केशर घोली । चरणों री पूज रचावे ॥सु०॥२॥ हियड़े उल्लसती नाटिक करती । ठम ठम पाय ठमकावे ॥ पाँच सात मिल सरिखी बाला । लुल लुल शीश नमावे ॥सु० ॥३॥ मुखरो मटको हाथां केरो लटको । आंखडली अणि-याली ॥ हाव भाव कर सहु भवि जनना । चित्त चोरे मत-वाली ॥सु०॥४॥ श्री जिन कुशल सूरीन्द के आगे । भावना

इण विध भावे ॥ सब सखियन की भक्ति देख के । क्षेम रतन गुण गावे ॥सु०॥५॥ इति ॥

* तर्ज—होरी *

बलिहारी हूँ कुशल सूरीसर की बलिहारी ॥ टेर ॥ सेवक जन मन वांञ्छित पूरण । सुरगवि सुरमणि सुरतरु की ॥ब०॥१॥ सकट विकट तिमिर भय हरने । तरुण तेज वासर कर की ॥ब०॥२॥ जिन शासन नित २ उजवालन । श्री जिनचन्द पटोधर की ॥ब०॥३॥ सुन्दर खरतर गण गगनांगण । वर शिवचन्द्र शोभन कर री ॥ब०॥४॥ इति ॥

* तर्ज—नमो रे नमो शत्रु जय गिरि रे *

श्री जिन कुशल सूरीसरू रे। राजे श्री महाराज रे ॥ तुझ गुण सांभल मन ऊमह्यो रे । दरशण देखण काज रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ दरशण द्यो महाराजजी रे। थोंरा गुण अनेक रे ॥ तुझ सम दूजो कोई नहीं रे । कुशल करो सुविवेक रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ मिल २ बहुला मानवी रे । यात्रा करे सुखकार रे ॥ नीर पखाली पगला जिन्हे रे । पूजे विविध प्रकार रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ आगल ऊभा ओलगे रे । गावे गीत रसाल रे ॥ मन वचन काया यें करी रे । चरण नमे त्रिहुं काल रे ॥श्री०॥४॥ सत्रत अठार गुणचास मे रे । कार्तिक शुक्ल

उदार रे । संघ सहित यात्रा करी रे । पूनम दिन सोमवार रे ॥श्री०॥५॥ आश धरी हूँ आवियोरे । दोलत द्यो राजन रे ॥ धर्मचन्द इम विनवे रे । यात्रा चढ़ी परमाण रे ॥श्री०॥६॥इति॥

* तर्ज—जयतसिरी *

सहाई मेरे श्री जिन कुशल गुरु ॥टेर॥

कुशल करण कलिमांहे प्रगटयो । खरतरगच्छ वरु ॥स०॥१॥ बावनो चन्दन मृगमद भेली । पूजो प्रेम भरू ॥स०॥ चिन्ता चूरण विघन विडारण । दालिद्र दूर हरु ॥स०॥२॥ दिन २ साहिब चढ़ते वाने । ध्यावो ध्यान धरु ॥स०॥ वाजे जेहना जशना वाजा । ठावी ठामें जरु ॥स०॥३॥ संवत अठारसै में अड़सट्टे । मिगसर मास थिरू ॥स०॥ संघ सहित सद्गुरु भेटे । श्री जिन हर्ष सरू ॥सं०॥४॥ गाम गड़ाले चरण नमन्ता । तूठोकल्यतरू ॥स०॥ पाठक श्री विद्याहेम गणि ने । उदय रतन्न करू ॥स०॥५॥

* तर्ज—प्रभाती *

समरण होत सहाई कुशल गुरु । दादा मेरे समरण होत सहाई ॥ चिन्ता चूरण मंगल पूरण । अब नहीं ढील रहाई ॥कु०॥१॥ प्रगट प्रतापी इण जग मांहि । भूतल में जश गाई ॥मेरे अेक तूं ही मन रंजन । नामें नव निध पाई ॥कु०॥२॥ विघन विदारण सुखकर स्वामी । अरज अेहि उरलाई ॥ परम कृपानिधि साहिब मेरे । चन्द अक्षय नित पाई ॥कु०॥३॥इति॥

* स्तवन *

श्री सद्गुरु तुम चरण कमल मे। करू मैं वन्दन बारबार। टेर॥

अेक विनति सुनो हमारी। दीजिये मन को शिव सुख सार॥ नहीं रहे कोई दुःखी जगत में। घर घर होवे मंगलाचार॥ श्री स०॥१॥ देश जाति में न्याति कुटुम्ब मे। प्रेम प्रवाह बहे मनोहार॥ जैन धर्म के गहन मार्ग को। समझाओ सबको सु विचार॥श्री स०॥२॥ सम्वत् उन्नीसो वर्ष चउत्तर। आषाढ मास शुक्ल रविवार॥ अेकादशी दिन अेक भाव से। गावे गुणीजन तव गुणसार॥श्री०॥३॥ प्रौढ शक्ति देना सब सघ को। "हरि" कहे मन हर्ष अपार॥ जामनगर मे दत्त सूरीन्द की। जयन्ती रहो जय जयकार॥श्री स०॥४॥

॥इति॥

श्री जिनदत्त सूरीश्वर साहिब। दर्शन दो सुखकारा॥ मैं वारी जाऊ दर्शन दो सुखकारा॥टेर॥

वाच्छगसा मंत्री है पिता तुम। वाहड देवी है माता॥मैं वारी॥ हुँबड कुल भूषण हो गुरुवर। दो सुख संपत्ति शाता॥ मैं वारी. ॥ १ ॥ उद्दाम सर मे चरण आपके। सेवे भविजन सारा॥मैं वारी०॥ चरण कमल में शिष नमाके। जन्म सफल कीया

सारा ॥मैं वारी०॥२॥ तीन लोक में परचा आपका। देखे लोक हजारा ॥मैं वारी०॥ मेरे लीओ क्यों देर करो अब। तरस रहा दुखियारा ॥मैं० वारी॥३॥ ऋद्धि सिद्धि और शिव सुखदाता। तुम हो दीन दयाला ॥मैं० वारी०॥ सेवक को वांच्छित फल दीजे। करुणा नजर निहाला ॥मैं वारी०॥४॥ संवत् उन्नीसे तीहोत्तर वरसे। चैत्र सुदि गुरुवारा ॥मैं वारी०॥ चौथ दिवस गुरु दर्शन कीना। 'हरि' को हर्ष अपारा ॥ मैं वारी०॥५ ॥ इति॥

॥ तर्ज—रेखता ॥

कुशल गुरुदेव हैं जग में। कुशल मंगल करने को॥ कुशल के दाता है गुरुजी। शुभंकर हो तो ऐसे हो॥१॥ दीन के दुःख को सुन कर। आवे तत्काल कृपा धर कर॥ दीन बंधु है गुरु मेरे। दयालु हो तो ऐसे हो ॥२॥ निर्बुद्धि को बुद्धि दाता। निरिद्धि को रिद्धि दाता॥ अेसे दातार हैं गुरुजी। कृपालु हो तो अेसे हो ॥ ३ ॥ मोह के बंध को तब कर। निर्लोभी निर्मानी होकर॥ करत है जगत उपकारा। परम गुरु हो तो ऐसे हो ॥ ४ ॥ निन्दक पूजक सम गणते। सभी प्राणी को सुख देते॥ छोड़ावे जगत को दुःख से। नेहारी हो तो ऐसे हो ॥५॥ संवत् उन्नीसो गुणहत्तर। वैशाख शुक्ला पूर्णिमा दिन पर॥ गाया यह भानुपुर मांहि। दादा गुरु हो तो ऐसे हो ॥६॥ दास तुज नाम को सुन कर।

आया यह 'हरि' तुम दर पर ॥ शरणागत में आया तोरे। रक्षा कर हो तो ऐसे हो ॥७॥इति॥

तर्ज—चान्द खिलोना ले देरी मईया चान्द खिलोनालेदे

पूछे सोमचन्द माताजी ने धरी प्रेम सूंरे। खोले बैसारी ने बुच-कारि मा हे जद्यूंरे। पाडोसी ने घर यह रग बधावा बाजा। ऐह नूं कारण सूंछे अम्मा कहोनी आज ॥ जल्दी से बतला दे यह उलमन मैं देख सूरे "दोहा" मत कहे वच्छ सामलो। पाडोसी घर व्याह ॥ चवरी मे बैठा अच्छे। दुल्हा दुल्हिन आय ॥ बस इस कारण बाजे बाज रहे हैं हर्ष सूरें ॥१॥

माता कहती बेटा देखे यह व्याह। इस से भी बढ़ कर मैं करूंगी हर्ष उच्छाह। सहणाई बाजा सू नभमंडल गुंजाय तूंरे नन्ही लाडी लावसू तेरे लिये पूत ॥ दोहा—सुन्दर ने सुख मालिनी। राखेगी घर सूत ॥ रम भम रम झम करती। झम छम बिच्छियानो झणकार। मंगल गाती शोभा बढाव सीरे ॥२॥ बात करता हो गई मा बेटा मे देर। हाहाकार मच गयो ॥ पाडोसी के घेर। रोवे छाती माथो पीटे है बहु जोर सूंरे ॥ दोहा—सोमचन्द्र पूछे वली। मातानी कहो बात ॥ पडोसी घर रोवणो। जीव बडो दुःख पात ॥ ध्य थर काया धूजे माहरी अति जोर सूरे। ३॥ कहे माता तू सुण वच्छ। दुःख नो है नहीं छ पार ॥ चौं फेर मे लाड लहो। पहुँतो स्वर्ग मन्झार। चवरी माहे बैठो को बैठो छुड की गयो

रे । सुन्दर नन्हे हाथ की दीधी चूड़ी फोड़॥ दोहा—सौभाग्य विन्दी दूर कर । बाला करती शोर ॥ त्राहि त्राहि मच रही । करता हा हा र व जान पुकार । घर मांही शोर बकोर करे अति जोर सूरे ॥४॥ दोहा—सोमचन्द्र वर चमकीयो । सुन कर यह संवाद ॥ दो आज्ञा मम मातजी । मत करो वाद विवाद ॥ नही छोड़े वह कालज पापी किसको ही सही रे । शिवरमणी के साथ में । माता करसूं व्याह ॥ लगी लगन मन में सही । मुक्ति वधू परणाय ॥ तोडी राग को बंधन दो आज्ञा हिवे ऐम सूंरे ॥५॥ मात पिता की ले आज्ञा को । ले रहे संयम धार । लघु वय में हो गये "सोमचन्द्र" अणगार । श्री जिनदत्त सूरि सूरि पद को शोभावनारे ॥ दोहा—सहस्त्र तीसलक्ष एक को । प्रतिबोधे गुरुराय ॥ श्री हरि गुरु के शरण में । "कान्ति" गुरु गुण गाय ॥ दादा दादा नाम सूँ जग में ख्याति पागये रे ॥६॥इति॥

❋ संकटमोचन—श्री दादा गुरु गुण-इकतीसा ❋

❋ दोहा ❋

श्री गुरुदेव दयाल को । मन में ध्यान लगाय ॥
अष्ट सिद्धि नव निधि मिले । मन वांच्छित फल पाय ॥१॥

❋ चोपाई ❋

श्री गुरु चरण शरण में आयो । देख दरस मन अति सुख पायो ॥ दत्त नाम दुःख भंजन हारा । बिजली पात्र तले

धरनारा ॥१॥ उपशम रस का कन्द कहावे । जो समरे फल निश्चय पावे ॥ दत्त सम्पति दातार दयालु । निज भक्तन के हैं प्रतिपालु ॥ २ ॥ बावन वीर किये वश भारी । तुम साहिब जग में जयकारी ॥ जोगणी चौसठ वश कर लीनी । विद्या पोथी परगट कीनी ॥ ३ ॥ पांच पीर साधे बल कारि । पंच नदी पंजाब मझारी ॥ अंधों की आंखे तुम खोलीं । गुंगो को दे दीनी बोली ॥ ४ ॥ गुरु वल्लभ के पाट विराजो । सूरिन मे सूरज सम साजो ॥ जग मे नाम तुम्हारो कहिये । परतिख सुरतरु सम सुख लहिये ॥ ५ ॥ इष्ट देव मेरे गुरु देवा । गुणी जन मुनिजन करते सेवा ॥ तुम सम और देव नहीं कोई । जो मेरे हितकारक होई ॥ ६ ॥ तुम हो सुरतरु वांच्छित दाता । मे निश दिन तुम रे गुण गाता ॥ पार ब्रह्म गुरु हो परमेश्वर । अलख निरंजन तुम जगदीश्वर ॥७॥ तुम गुरु नाम सदा सुख दाता । जपत पाप कोटी कट जाता ॥ कृपा तुम्हारी जिन पर होई । दुःख कष्ट नहीं पावे सोई ॥ ८ ॥ अभयदान दाता सुखकारी । परमातम पूरण ब्रह्मचारी ॥ महा शक्ति बल बुद्धि विधाता । मैं गुरु नित उठ तुम्हें मनाता ॥ ९ ॥ तुम्हारी महिमा है अतिभारी । टूटी नाव नई कर डारी ॥ देश देश में थुम्भ तुम्हारा । सघ सकल के हो रखवाला ॥ १० ॥ सर्व सिद्धि निधि मंगल दाता । देव परी सब शीष नमाता ॥ सोमवार पूनम

सुखकारी। गुरु दर्शन आवे नर नारी ॥ ११ ॥ गुरु छलने को किया विचारा। श्राविका रूप जोगणियों धारा ॥ कीली उज्जयनी मज्झधारा। गुरु गुण अगणित किया विचारा ॥१२॥ हो प्रसन्न दीनें वरदाना। सात जो पसरे मही दरम्याना ॥ युग प्रधान जय जन हितकारा। अंबड़ मान चूर्ण कर डारा ॥ १३ ॥ मात अम्बिका प्रकट भवानी। मन्त्र कला धारी गुरु ज्ञानी ॥ अम्मावस को चान्द उगायो। देख अचम्भो सब को आयो ॥ १४ ॥ मणिधारी जिनचन्द कहावे। जांकी सुनिजर मुझ मान चावे ॥ अकब्बर को अभक्ष छुडाया। मुगल पूत को तुरत जिलाया ॥ १५ ॥ पूजे देहली (दील्ली) में जो ध्यावे। संकट नहीं सुपने में आवे ॥ ऐसे दादा साहब मेरे। हम चाकर चरणन के चेरे ॥ १६ ॥ निश दिन भेरू गोरे काले। हाजिर हुकम खड़े रख वाले ॥ कुशल करण लीनो अवतारो। सद्गुरु मेरे सानिधकारा ॥ १७ ॥ डूबती जहाज भक्त की तारी। पंखी रूप धर्या हितकारी ॥ संघ अचम्भो मन में लावे। गुरु तब शुभ व्याख्यान सुनावे ॥१८ गुरु वाणी सुन सब हरखाये। गुरु भव तारण तरण कहाये ॥ समय सुन्दर की पंच नदी में। फट गई जहाज नई की छिन में ॥ १९ ॥ अब है सद्गुरु मेरी बारी। मुझ सम पतित न और भिखारी ॥ श्री जिनचन्द सूरि महाराजा। चौरासी गच्छ के सिर ताजा ॥ २० ॥ शास्त्र सिद्धान्त

महोदधि मारे । जङ्गम युग प्रधान जयकारे ॥ भट्टारक पद नाम धरावैं । जय जय जय जय गुणिजन गावे ॥२१॥ फरक महित गुरु अंक बतावे । भूखा भोजन आन खिलावे ॥ प्यासे भक्त को नीर पिलावें । जल घर उण वेला ले आवे ॥२२॥ अमृत जैसा जल बरषावे । कभी काल नहीं पडने पावे ॥ अन धन से भरपूर बनावे । पुत्र पौत्र बहु सम्पत्ति पावे ॥२३॥ चामर-युगल ढुले सुखकारी । छत्र किरणीया शोभा भारी ॥ राजा राणा शीष नमावे । देव-परी सब ही गुण गावे ॥२४॥ पूरब पश्चिम दक्षिण तांई । उत्तर सर्व दिशा के माहीं ॥ जोत जागती सदा तुम्हारी । कल्पतरु सद्गुरु गणधारी ॥२५॥ जिनयेन्द्र सूरि सूरीश्वर राजे । छडीदार सेवक संग साजे ॥ जो यह गुरु इकतीसा गावे । सुन्दर लक्ष्मी लीला पावे ॥२६॥ जो यह पाठ करे चितलाई । सद्गुरु उनके सदा सहाई । चार ऐकसो आठ जो गावे । राज-दण्ड बंधन कट जावे ॥२७॥ संवत आठ दोय हजारा । आसो तेरस शुक्कर वारा ॥ शुभ मुहरत वर सिंह लगन मे । पूरण कीनो बैठ मगन में ॥२८॥

* दोहा *

सद्गुरु का समरण करे । धरे सदा जो ध्यान ॥
प्रातः उठी पहिले पढ़े । होय क्रोटी कल्याण ॥२९॥

सुनो रतन चिन्तामणि । सद्गुरु देव महान् ॥
वन्दन श्री गोपाल का । लीजे विनय विधान ॥३०॥
चरण शरण में मैं रहूँ । रखियो मेरा ध्यान ॥
भूल चूक माफी करो । हे मेरे भगवान ॥३१॥

॥ इति ॥

:: स्तवन ::

※ तर्ज—धीरे २ आरे बादल धीरे २ आ० ※

धीरे धीरे गारे गुरु गुण–धीरे धीरे गा हां हां धीरे धीरे गा. । अपनी मीठी राग सुर से गुरु की महिमा गा–हां हां गुरु की महिमा गा ॥ टेर ॥

मेरे गुरु जिनदत्त दादा । नाम उजियाला हां हां नाम उजियाला ॥ है बड़ा गुण का भरा । गुरु नाम का प्याला ॥ प्रेम भक्ति से तूं मन में प्रेम भर कर गा ॥ धीरे० । अप० ॥१॥ अंधे की मेरे गुरु ने । खोल दी आंखे हां हां खोलदी आंखें ॥ बे परों के फिर लगादी । सोहनी पांखे हां हां सोहनी पांखें ॥ सप्त सुर को साध कर फिर मधुर ताल मिला ॥धी०॥ अ०॥२॥ सब सुखों के देने वाले । दादा गुरु दाता हां हां दादा गुरु दाता ॥ दास श्री गोपाल के । तुम ही माता पिता हां हां तुम ही माता पिता ॥ मेरी नईया के खिवैया बन के पार लगा ॥ धीरे० ॥अप०॥अप॥३॥ इति ॥

:: स्वकुल प्रकाशक स्तवन ::

॥ तर्ज—कुबजा ने जादू डारा ॥

सुगुरु मेरे खरतर पति जिनराया । जाके पाट परपर दीपाया ॥ सुगुरु० ॥ टेर ॥

शासनपति महावीर के पाटें । सुधर्मा स्वामी कहाया ॥ जम्बू में इग्यार मे पाटे । आर्य सुस्थित सुहाया ॥सु०॥१॥ जिनु ने कोटि सूरि मंत्र जप कर । कोटिक गच्छ पद पाया ॥ वीर के सोल मे वज्र स्वामी । वज्र शाखा कहाया ॥सु०॥२॥ वज्रसेन के पाटें सूरि । चन्द्र कुल वरताया ॥ अैसे पाट परपर अडत्रीस । उद्योतन सूरि कहाया ॥सु०॥३॥ चैत्यवासी जिनचन्द्र आचारिज । छोड वर्द्धमान आया ॥ उद्योतन के पाटे वर्द्धमान । गच्छ चौरासी कहाया ॥सु०॥४॥ वर्द्धमान सूरि धरणीन्द्र भेज के । सूरि मंत्र शुद्ध कराया । इनके पाटे जिनेश्वर सूरि । कुमति जन घबराया (गभराया) ॥सु०॥५॥ अेक सहस्र अरु अैमी वर्षे । चैत्यवासी कु हराया ॥ अनहल पाटन दुर्लभ राजा । खरतर बिरुद धराया ॥सु०॥६॥ तासु पाटें जिनचन्द्र सूरिश्वर । अभय देव सूरि राया ॥ जय तिहु अण अरू नवांग वृत्ति । ग्रंथका वतारी कहाया ॥सु०॥७॥ वल्लभ सूरि के पाटें दत्त सूरि । मृतक गउ उठाया ॥ वज्र थम्भ विदारी विद्या निकाली । मुगल पुत्र को जीवाया ॥सु० ॥८॥ अंवडचिन्त वे व्रत लेवूं जद । अम्बिका बतलाया ॥ युग

प्रधान जिनदत्त सूरीश्वर । सुरनर रहे जोड़ राया ॥सु०॥९॥
मरकी निवारी पंच नदी साधी । जहाज को तिराया ॥ सवा
लक्ष श्रावक प्रति बोधे । देवलोक सुख पाया ॥सु०॥१०॥
मणिधर श्री जिनचन्द्र सूरीश्वर । जिनपति जिनेश्वर राया ॥
जिन प्रबोध जिनचन्द्रसूरीश्वर । नर वर रहे लोभाया ॥सु०
॥११॥ कलिकाल में केवली विरुद । अनेक वादी कूं हराया ॥
चार राजा कूं प्रतिबोध देकें । राज गच्छ कहाया ॥सु०॥१२॥
इनके पाट जिन कुशल सूरीश्वर । दादो कर उलखाया ॥ पूनम
सोमवारे जे पूजे । वांच्छित होय सवाया ॥सु०॥१३॥ बाल
पने में पद्म सूरिजी । पाटन पास में आया ॥ नदी किनारे
सरस्वती देवी । गुरु कुं आन बुलाया ॥सु०॥१४॥ सरस्वती
कंठाभरण श्रे पदवी । खरतर पति ने पाया ॥ जिन लब्धि
जिनचन्द्र जिनोदय । जिनराज सूरि कहाया ।सु०॥१५॥
जिनभद्र जिनचन्द्र समुद्र । हंस सूरीसर राया ॥ माणिक्य
सूरि के पाट विराजे । चन्द्र सूरि सुहाया ।सु०॥१६॥ करम
चन्द ने जिनगुरु महिमा । अकबर कुं दरसाया ॥ जीव दया
परमाना कराया । युग प्रधान पद पाया ॥सु०॥१७॥ गुरु
निज पाटें सिंह सूरि कूं । स्व हस्तें बैठाया ॥ सवा करोड़
से पाट उच्छव कर । करमचन्द जश पाया ॥सु०॥१८॥
जिनराज जिनरत्न सूरिजी । जिनचन्द्र ज्योति सवाया ॥ जिन
सौख्य सूरि सागर बिच । पोत नवीन बनाया ॥सु०॥१९॥

जिन भक्ति जिन लाभ सूरीश्वर । जिनचन्द्र नाम धराया ॥ श्री हर्ष सूरि के पाट सौभाग्य । सूरि राज कहाया ॥सु० ॥२०॥ हंस सूरि जिनचन्द्र सूरि अब । पाठ तिहोत्तर आया ॥ वीर से लेके वर्तमान तक । जिन गुरु नाम बताया ॥सु०॥ २१॥ श्री जिन हर्ष सूरीश्वर के निज । द्वितीय शिष्य कहाया । हंस विलास शुभ हित गणि के । लघु शिष्य कहाया ॥सु०॥२२॥ बृहत्खरतर में आज्ञाकारी । विक्रमपुर गुरु राया ॥ कल्याण निधान पाठक पद शोभित । जिन आज्ञा मन लाया ॥सु०॥२३॥ पांडव वेद अरु नन्द चन्द में । १९४५ माघ मास सुहाया ॥ वसन्त पचमी मगलवारे । सहुनर मन हुलसाया ॥सु०॥२४॥ कुं कुण देशे सागर किनारे । पुर मुंबई सुहाया ॥ श्री चिन्तामणि पार्श्व प्रसादे । शुभ गुरु का गुण गाया ॥सु०॥२५॥ प्रह ऊठी गुरु ठाम जे समरे । तन मन चैन लगाया ॥ गोपालचन्द कहे गुरु मेरे । आनन्द होत सवाया ॥सु०॥२६॥ इति ॥

* तर्ज—गज़ल *

मुल्क में मशहूर यारो । सिंघ में लाहोर है ॥
हाल यह बीता था जहा पर । गुरु महिमा जोर है ॥मुल्क०॥१॥
अेक लडकी थी सोनार की । सोबत रही वनियान की ॥
बालपन से लौ लगी है । दत्त कुशल गुरु ध्यान की ॥मु०॥२॥

खूब सूरत वो परी थी । नूर उसका चान्द था ॥
खान इक आशक हुआ । वो काबुली बेइमान था ॥मु०॥३॥
रात दिन फिरता रहे वो । उस परी की ताक में ॥
इकेली कब पाऊं इसको । दिल मेरा मुस्ताक है । मु०॥४॥
नेक थी वो खानदानी । शील से दिल पाक है ॥
क्यों फिरे हेवान नाहक । इस काम की तल्लाक है ॥मु०॥५॥
इक दिन अकेली सोम-पूनम । थी चली गुरु द्वार पे ॥
काबूली छकबक में था । पकड़ी उसे उस बार पे ॥मु०॥६॥
छोड़ दे रे असुर मुझ को । जान खतरा खायगा ॥
मान काफर बात मेरी । पीर दादा आयगा ॥मु०॥७॥
कहां है वो पीर तेरा । जबर बदकारी करूं ॥
अै गुरु ! कर सहाय मेरी । इस असुर से मैं डरूं ॥मु०॥८॥
शील मेरा खोयगा यह । इस वखत तूं कहां गया ॥
राखो अब मर्यादा मेरी । सुनके अर्जी कर दया ॥मु०॥६॥
लेके बावन वीर जोगन । आये गुरु आसमान से ॥
वीर ने पकड़ा असुर को । चोरंग किया आसान से ॥मु०॥१० ।
गुरु से कर जोड़ कहती । धन्य गुरु अब आप हो ॥
मेरी रक्षा तैं करी ओ । तुम मेरे मां बाप हो ॥मु०॥११॥
वीर ने पहुँचाई घर पर । कहा जो आफत पड़े ॥
याद करते होंगे हाजर । हुक्म से हाजर खड़े ॥मु०॥१२॥

दास तेरा अर्ज करता । आप गुरु साक्षात है ॥
दीन बन्धु नाथ मेरा । विश्व मे प्रख्यात है ॥गु०॥१२॥

॥ इति ॥

* तर्ज—होरी *

जय बोलो सद्गुरु राया की—जय बोलो ॥ टेर ॥

चौसठ योगिनी बावन भेरू । जीत्या जीत नगारा की ॥
जय बोलो० ॥ १ ॥

श्री जिनदत्त सूरीश्वर साहब । पूजा करो साकारा की ॥
जय बोलो० ॥ २ ॥

चिन्ता चूरो ने सुख भर पूरो । श्री जिन महेन्द्र तुम्हारा की ॥
जय बोलो० ॥ ३ ॥ इति ॥

* कव्वाली *

॥ जयती स्तवन—तर्ज—रोशन तो हो रहा हैं ॥

अति पुण्य नाम वाले । जिनदत्त सूरि की जय ॥
परि पूत धाम वाले । जिनदत्त सूरि की जय ॥ टेर ॥

शिशुकाल में सुदीक्षा । ले साधु हो गये जो ॥
उन ब्रह्मचर्य वाले । जिनदत्त सूरि की जय ॥अ०॥ १ ॥

सब शास्त्र पारगामी। होकर स्वमत बढ़ाया ॥
नाना वखान वाले। जिनदत्त सूरि की जय ॥अ०॥ २

जिनके लिये स्वयं हो। वरदान देव देते ॥
उन पुण्य भाग्य वाले। जिनदत्त सूरि की जय ॥अ०॥ ३

संसार वीच तप से। बन कर प्रभावशाली ॥
दादा भिधान वाले। जिनदत्त सूरि की जय ॥अ०॥ ४

उपकार राशि जिनकी। कोई न वर्ण सकता ॥
सु उदार भाव वाले। जिनदत्त सूरि की जय ।अ०॥ ५॥

लाखों मनुष्य तारे। जिन ने सुबोध देकर ॥
उन भव्य कर्म वाले। जिनदत्त सूरि की जय ॥अ०॥ ६।

बीजली का पात्र नीचे। स्तम्भन किया जिन्होंने ॥
उन मंत्र सिद्ध वाले। जिनदत्त सूरि की जय ॥अ०॥ ७।

उपदेश जिन का सुनते। थे देव योगनी गन ॥
परि पूर्ण योग वाले। जिनदत्त सूरि की जय ॥अ०॥ ८॥

लिख ग्रन्थ भी अनेकों। जिन धर्म को बढ़ाया ॥
उन पूर्ण ज्ञान वाले। जिनदत्त सूरि की जय ॥अ०॥ ९॥

निष्प्राण जीव जिन ने। केई जगह जिलाये ॥
करुणा विधान वाले। जिनदत्त सूरि की जय ॥अ०॥१०॥

सब देव योगिनीयां। अणिमादि सिद्धियों के ॥
उन वश्य मंत्र वाले। जिनदत्त सूरि की जय ॥अ०॥११॥

ज्ञा जिन्हों की सिर पर । धरते थे देव व्यन्तर ॥
न मत्र ध्यान वाले । जिनदत्त सूरि की जय ॥अ०॥१२॥
म भी स्वनाम लेने । या ध्यान के किये से ॥
धन इष्ट देने वाले । जिनदत्त सूरि की जय ॥अ०॥१३॥
ऐसे परम गुरु का । मन बीच ध्यान धर कर ॥
"हरि" बोलले बुलाले । जिनदत्त सूरि की जय ॥अ०॥१४॥

॥ इति ॥

* तर्ज—जिन धर्म का डंका आलम मे *

यह आज जयन्ती है जिन की । जय हो जिनदत्त सूरीश्वर की ॥
जिन शासन के निस्तारक की । जय हो जिनदत्त सूरीश्वर की ॥टेर॥

होती है शुद्धि अशुद्धों की । यह सिद्ध सनातन सूत्र सदा ॥
स्वीकृत कर शुद्धि की जिन ने । जय हो जिनदत्त० ॥ १ ॥
है जैनेतर सब वर्णों से । ये ओसवाल श्रीमाल भये ॥
पीकर के बोध सुधा जिनकी । जय हो जिनदत्त० ॥ २ ॥
सत्याग्रह दृढ़ व्रत धारण कर । अन्याय अधर्माचारों का ॥
खण्डन खूब किया जिन ने । जय हो जिनदत्त० ॥ ३ ॥
निर्निमित्त दुश्मनता धारक । जीवों को अपने जीवन में ॥
नाक भी सताया था जिन ने । जय हो जिनदत्त० ॥ ४ ॥

क्रान्तिमय जीवन से सच्ची। निज जीवन ज्योति जगा करके॥
जो युग परधान महान हुये। जय हो जिनदत्त० ॥ ५ ॥
शुभ सत्य तत्त्व संशोधन सें। नित पूर्ण स्वतन्त्र रहे थे जो ॥
फिर नहीं दुराग्रह था जिनमें ॥ जय हो जिनदत्त० ॥ ६ ॥
जिनके तप बल को देख सभी। सुरनर नत होकर रहते थे ॥
निस्वार्थ भाव धरने वाले ॥ जय हो जिनदत्त० ॥ ७ ॥
योगीन्द्र जितेन्द्रिय थे सच्चे। थे कीर्तित दिव्य कवीन्द्रों से ॥
सब मिलकर सविनय आज कहो। जय हो जिलदत्त सूरीश्वर की ॥ ८ ॥ यह आज जयन्ती है जिन की। जय हो जिन-दत्त सूरीश्वर की ॥ इति ॥

* तर्ज—भीम पलास श्री *

आज मनावो शुद्ध भाव से गुरुदत्त जयन्ती ॥टेर॥

लाखों जन जैन बना कर बिगड़ों को शुद्ध करा कर ॥
शासन रचा में होके धीर मनाओ दत्त जयन्ती ॥१॥
सत्याग्रह ज्योति जगा के। मिथ्यातम दूर भगा के ॥
निश्चल वृत्ति वीर मनाओ दत्त जयन्ती ॥२॥
झूंठे आडम्बर टारो। संयमी जीवन धन धारो ॥
दुःखियों की दूर हरो पीर मनाओ दत्त जयन्ती ॥३॥
परमारथ प्रेम धरेंगे। सुरनर सब सेव करेंगे ॥
पहुंचेगे भवोदधि तीर मनाओ दत्त जयन्ती ॥४॥

मृत्यु जीवन मम जानो । दादा गुरु को पहिचानो ॥
प्रकटादो पावन हीर मनाओ दत्त जयन्ती ।.५॥
मौजूदा हालत देखो । करके फिर देखो लोको ॥
बँपेंगे नयनों से नीर मनाओ दत्त जयन्ती ॥६॥
दादा जिनदत्त हमारे । सबके समरथ रखवारे ॥
करो "कवीन्द्र" तदबीर मनाओ दत्त जयन्ती ॥७॥ इति॥

* तर्ज—पपैया काहे मचावत शोर *

गुरु की जय जय जय जय हो—श्री जिनदत्त सूरीश्वर दादा—
गुरु की जय जय हो ॥टेर॥
जिनकी अनुचर के अनुचर बन । मन सुर सेव करें ॥
मरु मण्डल सुरतरु जैसे जो । इच्छित पूर्ण भरें ॥गुरु०१॥
धवलक्का के मन्त्रीश्वर थी । वाच्छिगथा शुभ गेह ॥
वाहड देवी दिव्य कुक्षी से । प्रकटे पावन देह ॥गुरु०॥२॥
धर्म देव गणी गुरु गुरु दीक्षक । शिक्षक गुण गंभीर ॥
अभयदेव पटधर जिन वल्लभ । पटधर त्रिभुवन वीर ॥गुरु०॥३॥
ब्रह्म योग बलधारी भारी । अतिशय युग प्रधान ॥
धीर पीर योगिनीया चौंसठ । सेवे विनय विधान ॥गुरु०॥४॥
सवा लक्ष जन जैन बनाये । करके शुद्धि महान ॥
सत्याग्रह से जिनने तोडा । मिथ्या मत अभिमान ॥गुरु०॥५॥

मृत जीवन से बना दिये थे। शासन रक्षा हेतु ॥
विद्युत को बांधि थी जिनने। आत्म विजय जय केतु ॥गुरु०॥६॥

सिंहाजी राठोड़ मुख्य ने। मरुधर का अधिकार ॥
दादा गुरु की दिव्य दया से। पाया नय निर्धार ॥गुरु०॥७॥

प्रतापगढ़ का पवार राजा। अजमेर अर्णो राज ॥
श्री गुरु को निज गुरु पद ठाने। तारण तरण जहाज ॥गु.॥८॥

आषाढ़ सुदी ग्यारस को पाये। स्वर्गधाम सुखकार ॥
जीवन मृत्यु महोदय मय गुरु। पाये जय जय कार ॥गु.॥९॥

सुर 'गणनायक हरि' पूजित पद। स्मारक सुन्दर रूप ॥
देश देश में प्रकटित महिमा राजे आज अनूप ॥गुरु०॥१०॥

सुखकर पावन संघ सघन वन। नन्दन नन्दन धाम ॥
'हरि कवीन्द्र' गुरुदेव जयन्ती। जय जय जय अभिराम गु.॥११॥

* तर्ज—गजल ॥

शताब्दी चौदवीं पावन। कुशल गुरुराज की जय हो ॥
विमल यश पुण्य पद दादा-कुशल गुरुराज की जय हो ॥टेर॥

मरुस्थल धन समियाणा। सु मंत्री धन्य 'जिल्हागर' 'जयन्ती' धन्य गुरु माता। कुशल गुरुराज की जय हो ॥१॥
प्रबोधक चार राजों के। कलि में केवली पदवी ॥ सुगुरु जिनचन्द्र को पट धर। कुशल गुरुराज की जय हो ॥२॥

कुशल कीर्ति कुशल नीति । यथारथ नाम के धारी ।। हुये अणगार पद धारी । कुशल गुरुराज की जय हो ।।३।। स्व पर आगम के अभ्यासी । महाज्ञानी गुणी होकर ।। हुए आचार्य पद धारी । कुशल गुरुराज की जय हो ।।४।। मरु गुर्जर तथा सौरठ । किये ०जाब मिथादी ।। विहारों से परम पावन । कुशल गुरुराज की जय हो ।।५।। तपोबल योगबल खींचे । सुरासुर सेव करते थे ।। जगत उपकार-सुखकारी । कुशल गुरुराज की जय हो ।।६।। विधर्मी जन कई जैनी । हुए उपदेश पा जिनसे ।। प्रचारक धर्म के नेता । कुशल गुरुराज की जय हो ।।७।। देराउर फाल्गुनी मावश-पधारे स्वर्ग महिमामय 'हरि' गुरु की जयन्ती में । कुशल गुरुराज की जय हो ।।८।।

।। इति ।।

※ तर्ज–महावीर तुम्हारी मोहन मुरति देखी मन० ※

जय जय हो चौथे दादा जग उपकारी श्री गुरुराय ।।टेर। पावन पद युग पर धाना । जिन शासन ज्ञान खजाना ।। ज्यों निर्धर पुण्य निधाना । श्री जिनचन्द्र सूरि गुरु राय ।।१।। ।।ज०।। रीहड वर गोत्र गुणाकर । "श्रीवत" पिता धन-सुखकर ।। 'गिरिया' माता सुत भय हर । त्रिभुवन हितकारी गुरुराय ।।२।। ।।ज०।। 'जिन माणिक सूरि' गुरु नेगा । योगीश्वर गुण प्रकटेगा ।। गावे कीरति जश देशा । अद्भूत

जीवन श्री गुरुराय ॥३॥ज०॥ अकबर गुण महिमा आने। दर्शन हित विनय विधाने॥ भेजे हित विनय विधाने॥ भेजे जिनको फरमाने। दयातण शोध करें गुरुराय॥४॥ जय०॥ पतिशाह-मलिम व्रति वोधे। तन कृत आशा प्रतिशोधे॥ करें साधु विहार अविरोधे। प्रभावक पूरे श्री गुरुराय॥५॥जय०॥ गुरुपद-सेवा परभावे। "शिवशोम" विपुल धन पावे॥ 'चउ मुख' उद्धार करावे। खरतर गच्छ ही धन गुरुराय ॥६॥ जय०॥ सुखसागर श्री भगवाना। 'हरि' पूज्य परम गुणवाना॥ 'चौथे दादा युग परधाना। श्री जिनचन्द्र गुरु राय।७॥जय०॥ ॥ इति॥

※ तर्ज—लावणी ※

जगत में सद्गुरु उपकारी। नाम जिनदत्त सूरि भारी॥टेर॥

फिरो क्यों भवि सभी वनवन। गुरु का ध्यान करो तन मन॥
सोम और पूनम को दरशन। करो जो गुरु होय प्रसन्न॥

दोहा—केशर अगर कपूर ले। चन्दन सरस मिलाय॥
चरणाम्बुज सेवो सदा भवि। ज्यों सम्पति सुख थाय॥

परम गुरु जग में उपकारी॥१॥ जगत०। किये वश अपने बावन वीर। नदी बिच साधे पांचो पीर॥ योगिनी चौसठ हाजिर वीर। दामिनी जैसे पिञ्जर कीर॥

दोहा—तारे जहाज समुद्र में। सो जाने संसार ॥
नाम से बिजली ना पडे। भवि सेवक जन आधार ॥

दरश सद्गुरु का उपकारी ॥२॥ जगत०॥ सेवक को संकट से टारन। विपत में सहाय करन धारन॥ नाम ले घट में अन्तर जन। तुरत बरसावे अद्भुत धन ॥

दोहा—उत्सव करता उच्च मे। मुआ मुगल का नन्द ॥
मन्त्र शक्ति से जीवित कीना। भयो सकल आनन्द ॥

जैन की कीरति विस्तारी ॥३॥ जगत०॥
नहीं सद्गुरु की करे कोई होड। देश विदेश देखलो दौड ॥
'हरख' घर अर्ज करें कर जोड। विपति संकट को जरा दो तोड ॥

—ऐसे गुरु को ध्याईये। सब संकट कट जाय ॥
रोग, शोक, दालिद्र दुःख। दोहग दूर पलाय ॥

जैन में भये परचा धारी ॥४॥ जगत में॥ इति ॥

* तर्ज—जय जय आचारज पटधारी *

पुण्य जोग से आई दशा जो भली। जिन कुशल सूरीश्वर सेवा मिली। मन वांच्छित आशा सुफल फली। आनन्द भयो मन रगरली॥१॥ तुम महिमा अगम अपार भला। लियो नाम तिरे पाषाण शिला ॥ पूजे जे चरण कमल चितला। ते पामें रिद्धि सिद्धि कमला ॥२॥ गुरु दृढ फिरयो मैं जग

मगला । तुम समदाता नहीं और मिला ॥ तुम नाम की देखी अधिक कला । समरत गुरु संकट विकट टला ॥३॥ गुरुदेव को नाम चित से सुमरे । मन वांच्छित कारज सकल सरें ॥ चित्त धारत आरत तुरत टरे । पूरण निधि से भण्डार भरे ॥४॥ तुम महिमा गुरु गुणवान सदा । जे ध्यावे न पावे कष्ट कदा ॥ करके दरशन भई अङ्ग मुदा । चित चाहत सेव करूं मैं सदा ॥५॥ जाके मन में गुरु देव रमे । वह नर भव-वन में नाहीं भमें ॥ गुरु जान के दीन दयाल तुम्हें । राजा राणा नरनार नमें ॥६॥ कर्मों के फन्द पड़े हैं घने । गुरु देव न सेव तुम्हारी बने । मेरी करनी अवधारो न मने । दाता मन्दिर भर देवो धने ॥७॥ करुणा निधि आपको जो ध्यावे । वह नर मन वांच्छित फल पावे ॥ कोई कष्ट रोग दुःख नहीं आवे । जो चित्त से नित गुरु गुण गावे ॥८॥ सब भूत और प्रेत पिशाच डरे । डाकिन शाकिन नहीं पीड़ करे ॥ जे आपद काल तुम्हें समरे । निश्चय सब संकट विकट टरे ॥९॥ कर्मों के प्रहार कहां लो सहे । गुरुदेव बिना अब किसे कहे ॥ यही चाहत चित चरण में रहे । सुख सम्पति दौलत सुमति लहे ॥१०॥ राजत गुरु थुंभ अधिक नूरे । निज दास की सब आशा पूरे ॥ दुःख दारिद्र सकल हरे दूरे । वांच्छित फल दे चिन्ता चूरे ॥११॥ देशे देशे ग्रामे नगरे । गुरु कीर्ति फैल रही सघरे ॥ जिनचन्द्र सूरीश्वर

पाट धरे । सेवक की आरत सकल हरे ॥११॥ श्री खरतर गच्छ राजा आगे । नहीं ठहरे भूतादिक भागे ॥ जे सदगुरु के पाये लागे । शुभ भाव दशा उनकी जागे ॥१३॥ सहु देश नगर अरु पट्टन ग्रामे । देवल सोहे ठामें ठामे ॥ गुरु नाम जपे जे हित कामे । मन वाञ्छित वर वह नर पामे ॥१४॥ जे सद्गुरु ध्यान हिरदे राखे । वह सेवक शिव सुख फल चाखें ॥ दादा जिन कुशल सूरिन्द्र साखे । माणक चाकर इम पद माखे ॥१५॥ ॥ इति दादा फेरी ॥

❀ स्तवनम् ❀

कुशल गुरु तुम साहेब सुखदाई ॥ टेर ॥

प्रत्यक्ष परचो मैं दीठो ताहरो । पल माहे पीड़ गमाई–छिन माहे पीड गमाई ॥ कुशल० ॥ १ ॥ मालपुरे थारों थान विराजे । युग प्रधान सवाई ॥ दानव मानव सब कोही पूजे । दुनिया मे फिरे रे दुहाई ॥ कुशल० ॥ २ ॥ सोमवार पूनम दोय दिन पूजे । ज्या घर हरष वधाई–ज्या घर रंग वधाई । आशाजी पूरण चिन्ताजी चूरण । जिन रंग सूरि मढ़ाई ॥ कुशल० ॥ ३ ॥ इति ॥

❀ तर्ज—प्रभाती ❀

समरण होत सहाई कुशल गुरु ॥ स० ॥ चिन्ता चूरण मंगल पूरण । अब नहीं ढील रहाई ॥ कु० ॥ १ ॥ प्रगट प्रतापी

इण जग मांहीं । निश दिन तोरो जश गाई ॥ मेरे अेक तूं ही मन रंजन । नामें नव निध पाई ॥ कु० ॥ २ ॥ विघन विदारण सुख कर स्वामी । अरज अेही उरलाई ॥ परम कृपा-निधि साहिब मेरे । चन्द्र अक्षय नित पाई ॥ कु० ॥ ३ ॥

॥ इति ॥

* तर्ज—काफी—अद्धा *

कैसे कैसे गुरु गुण कथ जाय । अनत जेही सुरगुरु लजाय ॥ कैसी करूं २ अल्प बुद्धि । कोई देवे न बताय ॥ १ ॥ श्री जिन कुशल सुरिन्द गुरु तुम सम । दूजो दयाल नहीं या जग में ॥ पद्म दुःखिन की सुन पुकार । दुःख हरत धाय ॥ २ ॥

॥ इति ॥

* तर्ज—खमाच—सुरकांक ताल *

श्री जिन कुशल सूरि । खरतर गच्छेश ॥ कुशल करण दहुं दिश । सदगुरु कुशलेश ॥१॥ मन वांच्छित पूरक । पाप मेरे चूरक ॥ ताप तिमिर दूर करो । पद्म हिये दिनेश ॥२॥

॥ इति ॥

* तर्ज—घाटो—अद्धा *

निश दिन चित्त चावे । कुशल गुरु दरशन रे ॥ टेर ॥ दिन चैन नहीं निश निद्रा । अब कहो कैसे वितावे ॥१॥

कुशल० ॥ मोने पत्र करो गुरु ऐसो । अब जामो जन सुख पावे ॥ कुशल० ॥२॥ इति ॥

※ स्तवन ※

सुगुरुजी समर्यां सानिध कीजो। म्हाने दरशण वहेलो दीजो ॥टेर। सुगुरु०॥

श्री जिन कुशल सूरीश्वर साहब । जिनचन्द सूरि पटधारी ॥ संघ सकल ने आनन्दकारी । सन्त जना सुखकारी ॥सु० ॥१॥ सुरतरु सम सेवा सुखदाई । भक्त जना मन भाई ॥ नव निधि ऋद्धि वाञ्छित दाई । भीर भंजन अधिकाई ॥सु० ॥२॥ सकल जनाश्रय समरण साचो । जाण्यौ मैं निरधारी ॥ समरथ सेवा सफल सदाई । इम मापैं जग सारी ॥सु०॥३॥ आपद हरण सरण तुझ सेवा । जग मे प्रकट कहीजे ॥ कामित दायक कलि में कीरती । सुणता सुख लहीजे ॥सु०॥४॥ दीन दयाल सर्व गुण लायक । निकट नडाई लीजे ॥ श्री जिन महेन्द्र सूरि तणी हिवे । आशा सफली कीजे ॥सु०॥५॥

॥ इति ॥

※ स्तवन ※

श्री कुशल सूरि गुरु सुखकारी । जग माहे तुम महिमा भारी ॥ १ ॥ श्री जिनचन्द्र सूरीश्वर पटधारी । गुरु हित-

कारी पर उपकारी ॥ २ ॥ सुरतरु सम वांच्छित दातारी । और सहस किरण सम अवतारी ॥ ३ ॥ आचारज छत्तीस गुणधारी । गुरु दूर करी विपता सारी ॥ ४ ॥ भट्टारक जङ्गम युग प्रधान । दाता तुम चिन्तामणि समान ॥ ५ ॥ करुणा-निधि जान सब गुण निधान । दीपत हैं तेज दिनकर समान ॥ ६ ॥ सब राव राणा सुर नरेश । पूजत हैं चरण थोंरो हमेश ॥ ७ ॥ पल में दूर करो सगला क्लेश । गुरु समस्त विपद न रहे लेश ॥ ८ ॥ दादा अब महेर नजर कीजे । इतनी विनती मोरी सुन लीजे ॥ ९ ॥ गुरु जशधारी यह जश लीजे । माणक को वेग दरश दीजे ॥ १० ॥ इति ॥

* स्तवन *

सद्गुरु सुनिये अरज हमारी । विपदा म्हारी कीजे दूर ॥ टेर ॥

कुशल सूरि गुरु नाम तिहारो । कुशल करो भरपूर ॥ सानिध कीजे ये यश लीजे । दीजे संकट चूर ॥सद०॥ १ ॥ गुरु दातार तुम्हें जो ध्यावे । दौलत मिले जरूर ॥ चाकर जान दास माणक को । कर अरज मंजूर ॥सद०॥ २ ॥ इति ॥

* स्तवन *

वन्दो गुरु चरण कमल भवि जन मन लाई ॥ टेर ॥

साचे जिन कुशल सूर । ध्यावत दुःख होत दूर ॥ संकट को

करत चूर । सदगुरु सुखदाई ॥ वन्दो० ॥ १ ॥ ऐसो दादा को नाम । जपत सिद्ध होत काम ॥ समर समर आठों याम । यही नाम भाई ॥ वन्दो० ॥ २ ॥ धर चित्त सदगुरु को ध्यान । छिन में होवे कल्याण ॥ दाता गुरु दयावान । देत दुःख मिटाई ॥ वन्दो० ॥ ३ ॥ श्री सदगुरु महाराज । राखो आज मेरी लाज ॥ अरज करत माणकचन्द । चाकर गुण गाई ॥ वन्दो० ॥ ४ ॥ इति ॥

※ स्तवन ※

कुशल गुरु अर्ज सुन लीजे । कृपा करके दरश दीजे ।
यही आशा मेरे मन की । करू सेवा मैं चरणन की ॥ १ ॥
न तुम सम देव कोई दूजा । विपत टारन मुझे सूझा ।
तुम्ही सदगुरु हो सुखकारी । निवारोगे विपत सारी ॥ २ ॥
शरण लीनी है मैं थारी । अरज सुन लीजिये म्हारी ।
निकट संकट ने आघेरा । है तुम बिन कौन गुरु मेरा ॥ ३ ॥
कहे माणक अरज मानो । चरण को दास मोहे जानो ।
कटे भव वन का फेरा । शरण तो चाहूँ मैं तेरा ॥ ४ ॥
॥ इति ॥

※ तर्ज—होरी की ※

चलो री सखी आज खेलें होरी सुगुरु द्वारे द्वारे ॥टेर॥
घस कपूर केशर और चन्दन । भर भर लेवो कटोरी ॥ रूप

दीप नैवेद्य अरगजा । हरख चरण पूजोरी ।। चलो० ।। १ ।।
कञ्चन कलश चलो धर कर पर । लो केशर रंग घोरी ।।
कुंकावटी रजत की लेवो कुंकुम । भर अवीर की लो झोरी
।। चलो० ।। २ ।। श्री जिन कुशल सूरीन्द साहब के । चरण
कमल को भेटोरी ।। माणक कहे चलो फाग मचाऊं सम्पत
सुख लहोरी ।। चलो० ।। ३ ।। इति ।

※ तर्ज— निरखण दो असवारी ※

थांरा दरशण की बलिहारी । कुशल गुरु दरशण दो
सुखकारी । मैं तो वारी जाऊं वार हजारी ।। कु० ।। टेर ।।
मरु मण्डल समियाणा ग्राम में । मंत्रि जिल्लागर भारी ।।
जैतसिरी सति कूखे उपना । प्रगटया जग दिवकारी ।। कु०
।। १ ।। सन तेरेसै तीसे जनम्या । द्वितीय चन्द्र मनुहारी ।।
तेरेसै सेंताले संजम । तप जप ध्यान संभारी ।। कु० ।। २ ।।
श्री जिनचन्द सूरि गुरु पट्टे । पाटण में हितकारी ।। सूरि पद
सतहत्तर वरषे । कुशल सूरिन्द अवतारी ।। कु० ।। ३ ।।
ग्राम नगर पुर पट्टण विचरी । बहु भवि काज सुधारी ।। सम-
कित श्रावक केई व्रत धारक । ज्ञान क्रिया चित्त धारी ।। कु०
।। ४ ।। अद्भुत रूप अनोपम महिमा । वचन कला उपगारी ।।
सत्य शील सन्तोष महागुण । सहु जग आनन्द कारी ।। कु०
।। ५ ।। सन तेरेसे नयांसी फागुण ? । दर्श देव पदधारी ।।

फागुण सुद पूनम दिन संघ ने । दरशण दियो उपगारी ॥ ॥ कु० ॥ ६ ॥ गाम नगर मह संघ ने परतिख । परचा दे मन धारी ॥ देश देश मे चरण थापना । कीनी भक्ति प्रचारी ॥ कु० ॥ ७ ॥ तुम सेवत सहु संपदा पावे । जश कीरति अधिकारी ॥ निरुद सुखी त्रिकरण शुद्ध प्रणमुं । चरण कमल बलिहारी ॥ कु० ॥ ८ ॥ दीनदयाल दयानिधि साहब । मनसा पूरो हमारी ॥ पाठक श्रीवर ध्यान धरै नित । मुक्ति मोहन जयकारी ॥ कु० ॥ ९ ॥ इति ॥

※ स्तवन ※

श्री जिनदत्त के चरणों मे आया । चरणों में आया गुरु शीष नमाया ॥ टेर ॥

वाच्छग मन्त्री पिता कहाया । वाहड़ देवी उयरे जाया ॥ श्री जिन० ॥ १ ॥ हुम्मड़ वंश मे आप सुहाया । सकल जीव हरषाया ॥ श्री जि० ॥ २ ॥ गच्छ चौरासी में शृंगार हारा । युग प्रधान पद छाया ॥ श्री जि० ॥ ३ ॥ देश देश में परचा पाया । सकल संघ सुखदाया ॥ श्री जि० ॥ ४ ॥ चरण शरण ग्रही आज उमाया । तारो मुझको अनेक तराया ॥ श्री जि० ॥ ५ ॥ हर्ष धरी दिल काय झुकाया । नमी नमी अर्ज में लाया ॥ श्री जि० ॥ ६ ॥ ध्यावो ध्यावो संघ दिल हर्षाया । पावो वाञ्छित माया ॥ श्री जि० ॥ ७ ॥ उद्दाम

सर में दर्शन पाया । आनन्द हर्ष वधाया ॥ श्री जि० ॥ ८ ॥ वीर चौवीसे वर्ष बायाला । चैत्र चोथ सुदि आया ॥ श्री जि० ॥ ९ ॥ कृपाभिलाषी सद्गुण दाया । सुख सागर मन भाया ॥ श्री जि० ॥ १० ॥ पूर्ण गुरु के चरण पसाया । क्षेम सागर गुण गाया ॥ श्री जि० ॥ ११ ॥ इति ॥

* स्तवन *

दादो तो दरशन दाखे । दादो सोहिला सुखिया राखे हो ॥ दादा दौलत दो ॥ टेर ॥

दादो तो चिन्ता चूरे । दादो परगट परचा पूरे हो ॥ दादा० ॥ १ ॥ दादो तो विच्छड़ीया मेले । दादो ठीमणा (धीठा) दुश्मन ठेले हो ॥ दादा० ॥ २ ॥ दादो तो हाथ रा हजूर । दादो मे मद पुरे सनूर हो ॥ दादा० ॥ ३ ॥ दादो तो दुश्मन डाटे । दादो विघ्न हरे बाटे घाटे हो ॥ दादा० ॥ ४ ॥ दादो तो साचो जाणो । दादा बोल ऊपर पहिचाणो (परिमाणो) हो ॥ दादा० ॥ ५ ॥ दादो तो कुशल कहावे । इम समय सुन्दर गुण गावे हो ॥ दादा० ॥ ६ ॥ इति ॥

* तर्ज—हीरंजा की *

गुरुदेव मनावो साची सकलाई दादा देव की ॥ टेर ॥

श्री जिनचन्द्र पटोधर साहेब । श्री जिन कुशल मुनीन्दा ॥

सुजश प्रगट है थारो जग में । जैसे पूनम चन्दाजी ॥ गुरु० ॥ १ ॥ अष्ट द्रव्य से पूजा सारुं । तुम देवन के देवा ॥ शरणागत प्रतिपाल जगत में । नित प्रति मांगुं सेवाजी ॥ गुरु० ॥ २ ॥ सेवक जन मन वांच्छित पूरो । चिन्ता चूरो मेरी ॥ अष्ट सिद्धि सुख सम्पत्ति पायो । मैं सेवक हूँ तेरा जी ॥ गुरु० ॥ ३ ॥ हृदय कमल में ध्यान लगाउं । और देव नहीं ध्याऊं ॥ पूरण कृपा करो गुरु मुझ पर । जिम वाच्छित फल पाऊजी ॥ गुरु० ॥ ४ ॥ सेवक की यह अरज वीनति । अवधारो महाराज ॥ दरशन सद्गुरु वेगा आपो । सिद्ध होय सेवक काजजी ॥ गुरु० ॥ ५ ॥ इति ॥

* दादा–जयन्ती *

गुरुदेव जिनदत्त सूरिन्द को । वन्दन करूं मैं वार वार ॥ टेर ॥

तुम अलौकिक ज्ञानी ध्यानी । अवतारी जग आधार ॥ युग प्रधान हितकारी जगद्गुरु । चमत्कारी निर्मल जशधार ॥ गुरु० ॥ १ ॥ ऐसी कृपा तुम करो दयालु । सुखी बने मन ही संसार ॥ जैन धर्म दीपे जग में गुरु । घर घर वर्ते मंगलाचार ॥ गुरु० ॥ २ ॥ आज गुरु दिन धन्य हमारा । जयन्ती उत्सव है सुखकार ॥ आनन्द रत्नाकर गुण गाया । आनन्द वर्षे हर्ष अपार ॥ गुरु० ॥ ३ ॥ इति ॥

※ सोरठ–तेवड़ा ※

श्री जिनचन्द सूरि दयाल। मुझ पर महेर करो मयाल ॥
जन सुनि ढरंत सहज ही। दुःख हरत ततकाल ॥१॥
कृपा मौज दीन पर किये। वरद परम कृपाल ॥
दिल्ली पति होइ कर्यो उत्सव। गुरु प्रवेश नहीं काल ॥२॥
पञ्च धनपालादि कितने ही। वेग किन निहाल ॥
हम हुं पर जब परत संकट। देत ततखण आवी टाल ॥३॥

॥ इति ॥

※ दादा श्री जिनकुशल सूरि स्तुम्भाष्टोत्तर शतस्थाननाम-गर्भित–स्तवन ※

वंदीजइ सद्गुरु वरदाई। श्री जिनकुशल सूरि सिरदार ॥ महियल मांहे मोटइ दावई। दीपइ जिम पूरव दिनकार ॥ वं० ॥ १ ॥ मूल थुम्भ देराउर महियल। गुण गिरुओ श्री गाम गडाल ॥ परचा पूरई परतिख पगि पगि। पर उपगारी परम दयाल ॥ वं० ॥ २ ॥ महिमावंत अधिक मुलताणइ। उच्च अनोपम छइ अधिकार ॥ सिद्धपुरइ समरुं सचवायउ। नयर किर हो रइ नवसरहार ॥ वं० ॥ ३ ॥ जेशलमेर सकल जोधाणइ। नागोर इं प्रणमइ नरवृंद ॥ मेदनी तटइ देखी मन उल्हसइ। देवलवाड़इ जाणि दिणन्द ॥ वं० ॥ ४ ॥ उग्रसेन पुर पाटण अलवर। अमरसरइं अउरंगावाद ॥ नाडु लाई वर्द्धनपुर नवहर उद्योतनपुर अहमदावाद ॥ वं०

॥ ५ ॥ सांगानेर विहार सुशोभित । मालपुरइ मन मोहन रूप ॥ जय तारणि अरियण सहु जीपइ । भाव धरीनइ वन्दे भूप ॥ व० ॥ ६ ॥ किसनगढइ कल्पतरु ऊहीयइ । राजगढ़इ चपा रतलाम ॥ समियाणइ सोभित अति सोहइ । साचोरइ सारे सब काम ॥ व० ॥ ७ ॥ सोवनगिरि मडण सीरोही । नूतनपुर नित चढ़तउ नूर ॥ पूजउ शत्रु जइ पद पंकज । सूरति वदु ऊगत सूर ॥ व० ॥ ८ ॥ गिरनारइ तुझ गुण सहु गावइ । जावइ दुख दोहग जजाल ॥ दीव नगर देख्या तुझ दरसण । मागि फलइ मनोरथ माल ॥ व० ॥ ६ ॥ इडर धूम्म अनोपम ओपइ । आसोपइ सुरतरु अवतार ॥ पुर खभाइत पाटण पाली । दिल्ली गढ़ दउलति दातार ॥ व० ॥ १० ॥ मागलउर वीरमपुर मनहर । अजारइ मन अधिक उल्हास ॥ भली वात करइ भुजनगरइ । मढ ही मदिर महिम निवास ॥ व० ॥ ११ ॥ लखपति महिमपुरि लाहौरइ । वदइ करजोडी वड-गात ॥ भेहरइ माहे दालिद्र भजइ । अजमेरइ मोटी अखियात ॥ व० ॥ १२ ॥ पूगल जगल पूनासर प्रभु । पहूँचाडइ सब वात प्रमाण ॥ डिंइ आणइ आनद सहुडेरइ । सेरगढई सव लउसनगाण ॥ व० ॥ १३ ॥ फतेपुर बहु फल फूलइ करि । पूजइ गुरु पद पकज सार ॥ भाव भगति भटनेर भली विधि । फलवर्द्धिपुर कलियउ सहकार ॥ व० ॥ १४ ॥ मइडीचक्क सुथान मरोटइ । अमरकोट मानइसहु आण ॥ सम्मल कम्मेल

मंइ सद्गुरुना । सेवइ पदयुग चतुर सुजाण ॥ वं० ॥ १५ ॥
दुख भंजन कहीयइ देवीझर । ग्वालेरइं कहीयइ गुण गेह ॥
सल हीजइ सिरवाड़ी सिजरूंइ । देखी विकसइ सारी देह ॥
वं० ॥ १६ ॥ विक्कमपुर वड़ली वीजापुर । खीमसरइ प्रणम्यां
नितु खेम ॥ बाहड़ मेरु सनूर विलासइ । पहूकरणइ पाल्हण-
पुर प्रेम ॥ वं० ॥ १७ ॥ चन्द समान कहुँ चंदेरी । तोड़इ
वंच्छित द्यइ ततकाल ॥ कुंभलमेरु सकल सुखकारक । सहर
रिणी मांहे सुविशाल ॥ वं० ॥ १८ ॥ सरसइ धनवरसइ
सेवकधरि । लूणकरणसर लील विलास ॥ खरी बात कहां
खेजड़लइ । पचीयाखइ नितु पुण्यप्रकाश ॥ वं० ॥ १९ ॥
देवीखेड़इ दुसमण फेरइ । सइंभर पूरइ सगला थोक ॥ झुटइ
रायपुरंइ जस झलकइ । राधनपुर द्यइ वंछित रोक ॥ वं० ॥
२० ॥ मउज करइ सेवक नइं महेवइ । गुन्द व चइ सद्गुरु
गुणवंत ॥ सारणपुर सुणीयइ सेत्रावइ । जयतपुरइं जुगवर जय-
वंत ॥ वं० ॥ २१ ॥ वीलाड़इ वंदु बडलुंदइ । पीपाड़इ जस
प्रबल पडूर ॥ कामित दायक कापर हेड़इ । दुखीयां दुख गमा-
ड़इ दूर ॥ वं० ॥ २२ ॥ लाभ घणाउ द्यइ सुगुरु लवेरइ ।
बालरवइ तिमरी सुखवाल ॥ कीरति अधिकी कुंडकी कहीयइ ।
रोहिठ पिण सुणीय उरहवास ॥ वं० ॥ २३ ॥ महर करी
महाजन प्रतिपालइ । संभालइ निजसेवक आय ॥ सुप्रसन्न होवइ
सांनिधकारी । पड़िया अटवी पाणी पाय ॥ वं० ॥ २४ ॥

आसति अधिकी जे मन आणी । चरण कमल सेवइ चित लाय ॥ तिहा धरि नव निधि होवइ ततखिण । कलिमें निरमल सुजस कहाय ॥ व० ॥ २५ ॥ नड दरवारइ दोषी दुरजन । करी न सकइ काइ भूडउ काम ॥ सद्गुरु सुनिजरि करी सेवकनी । महीयल माहि वधारइ माम ॥ व० ॥ २६ ॥ पूरव दक्षिण उत्तर पश्चिम । जोति सकल त्रिहुँ लोकइ जास ॥ अेक अनेक प्रकारइ इणि जुगि । ईहक जननी पूरइ आस ॥ व० ॥ २७ ॥ तीर वहइ जिहा बखतर तूटइ । तेज असम झलयइ तरवारि ॥ व० ॥ २८ ॥ पाठक 'ललित कीरति' सुपसायइ । 'राजहरष' यदइ धरि राग ॥ अट्ठोत्तर सउ नामइ अद्भुत । सुख सपति होवइ सोभाग ॥ व० ॥ २९ ॥ इति ॥

* तर्ज—तेरी सूरत है अति प्यारी *

देश बगाला सुरत तुम्हारी । नर नारी सहु पाय पडे ॥ दूर देश से आये दादा । मौन किया कहो केम सरे ॥ १ ॥ केशर चन्दन भरी कचोली । दादामा के अग चढे ॥ चम्पो चमेली और मोगरो । दादामा के चरण चढे ॥ २ ॥ दूर० ॥ मकुट पडियां साय कगे दादा । हम तुमरे हैं भक्त खरे ॥ आवो पधारो दर्शन देदो । तुम हमरी अब साय करे ॥ ३ ॥ दूर० ॥ भव दरिया से पार उतारो । निज सेवक तुम पाव परें ॥ चरण का शरणा देकर तारें तो मेरा निज काज सरें

॥ ४ ॥ दूर० ॥ जंगम युग प्रधान भट्टारक। दादा श्री जिन-दत्त खरें ॥ चन्द्र सूरि मणियाले दादा। श्री जिन कुशल सूरि ही वरें ॥ ५ ॥ दूर० ॥ नरपति सुरपति खगपति दादा। सब युग में तुम ध्यान धरें ॥ श्री जिनचन्द्र सूरीश्वर दादा। अम्मावस को चन्द्र करें ॥ ६ ॥ दूर० ॥ तुम सम दाता और न जग में। सुरतरू जैसा कोइ न मिले ॥ दास तुम्हारा अरज करत है। तुम देखे मेरा हृदय खिले ॥ ७ ॥ दूर० ॥

॥ इति ॥

❊ स्तवन ❊

प्रत्यक्ष दर्शन दीजे–दादा प्रत्यक्ष दर्शन दीजे -- सेवक अपना जान ॥ टेर ॥

अभिलाषा मुझ लग रही दादा। दो दर्शन कृपाल ॥ इण कलयुग में सुरतरु सरीखा। देखूं नयण निहाल ॥ दादा० ॥ १ ॥ दादा श्री जिन कुशल सूरि गुरु। खरतर गच्छ आधारी ॥ वार वार मैं नमूं चरण में। मनसा पूरो हमारी ॥ दादा० ॥ २ ॥ भीड़ पड़्या इण युग में दादा। औरन को हितकारी ॥ कर जोड़ करूं वीनति। अपना विरुद संभारो ॥ दादा० ॥ ३ ॥ ज्यां पर तुम कृपा करी हो। ज्यां ने दर्शन दिया हजूर ॥ इख अवसर मुझ ऊपर दादा। महेर करो भर-पूर ॥ दादा० ॥ ४ ॥ सम्बत् गुन्नीसे वरष पचावन। आशो

शुक्ला भोमवार । पचमी दिन पूरण किया सद्गुरु । मुझ सेवक को तार ॥दादा॥५॥ इति॥

※ स्तवन ※

हूँ तो अर्ज करू करजोड ने जी । म्हारी अरज सुनो महाराज ॥ विरुद घणा छे राजनाजी । सूरि सकल शरताज ॥१॥ सद्गुरु सुनिजर जोई जो साहबा ॥टेर॥ राजा राणा राजवीजी । थांरा पूनम पूजे पाय ॥ केशर अगर कुकुंमाजी । मृगमद रही महकाय ॥स०॥२॥ धुडला आगल गूगराजी । ढलत चम्मर गजढाल । कारज सेवे कामिनीजी । नृत्य करे जो निहाला ॥स०॥३॥ ठामी ठोड ठोड थोंरी थापनाजी—। काई उदयापुर आमेर । महिमा घणी थोरी मेड़ते जी । काई साल्हडो वाली सागानेर ॥स०॥४॥ ज्योति थोंरी काई झिग मिगेजी—। चढती गढ बीकाण—। आशा पूरण आवजोजी— दादा चिन्ताचूरण आवजोजो । म्हाला देरावल रा दीवान ॥स०॥५॥ विनतडी भल मानजोजी—दादा दीन दयाल । कुशल सदा "कवि" राजतोजी । पट्टघर प्रतिपाल ॥स०॥६॥

॥इति॥

※ स्तवन ※

तर्ज—"मिलसे ऋद्धि समृद्धि मिलि"

जन जन मुखसे निकली वाणी, जिनदत्तसूरीश्वर महाज्ञानी ।

ध्यानी तपसी सन्निधकारी, वचनामृत जिनके दुखहारी ॥१॥ वाहड़दे कुक्षी धनमानी, पितु वाग्लिंग का कुल नहीं मानी। धन्य धोलका जहां जन्मे, अरु अजमेरु गुरु निर्वाणी ॥२॥ जय जय जयन्ति गुरुवर की, अक्षय सुख के अधिकारी की। अेक भव अवतारी युगवर की, जिन शासन के गगनार्क की ॥३॥ विद्वद् जन प्रेम का भाजन मुनि, बाल सोमचन्द्र अतिशयधारी। विनयी विद्यार्थी शीघ्र हुवा, सब शास्त्र ज्ञान का अधिकारी ॥४॥ जग जीवों पर अनुकम्पा से, गुरु हृदय सदा ओत प्रोत रहा। जिन शासन रसी बनाने का, इक ध्यान सदा ही बना रहा ॥५॥ गुरु वल्लभ के पट्ट पर थापा, सद् संघ ने आज्ञा शिर धारी। अम्बिका दत्त युग प्रधान पद, दीपाया गुरु की बलीहारी ॥६॥ सत्य मार्ग के व्याख्याता, अरु जग जीवन शाताकारी। कुमति को सुमति दाता, है विरुद आपका उपकारी ॥७॥ क्या हुई खता हम से गुरुवर, जो किरपा कल्पलता रुठी। खड़े द्वार हम हैं अधीर, दो भीख दया की अनूठी ॥८॥ जिससे सत्य मारग जान सकें, अरु विषय पाश को काट सके। निजी स्वारथ अरु अहं से बनी, इस फूट खाई को पाट सकें ॥९॥ हम अनेक हों अेक रूप, पहिचानें अनेकों के स्वरूप। ढह जाय फूट का गहन कूप, हो जाय धर्म का सरल रूप ॥१०॥ आवो मिल गुरुवर गुण गावें, अरु प्रेरणा निज आतम पावें। करें शान्त कषायों की भट्टियां, समता रस

चर्चावें ॥११॥ गुरु चरणों में नत मस्तक हो, श्रद्धा के पुष्प चढावें हम । चाहडदे "कु वर" की जय हो, मन वाछित फल को पावें हम ॥१२॥

*** स्तवन ***

पूज पूज्य जिनचन्द्र सूरीश्वर, क्यों जग भूला भटके है ॥टेर॥ शासन वीर जिनन्द प्रभावक, खरतरगच्छ गुण गटके है पूज०॥ पच महाव्रत शुद्ध सजम धर, तरण तारण भवि तटके है ॥१॥पू०॥ जिन माणिक्य सूरिपट्ट प्रभाकर, मिथ्या तमकु झटके है ॥पू०॥ शाह अकब्बर गुरु उपदेशे, जीव हिंसा से अटके है ॥२॥पू०॥ लिख फरमाण दिया सब जनपद, अमारी घोषण चटके है ॥पू०॥ जिन शासन की श्रद्धा कीनी श्रेस गुरु के लटके है ॥३॥पू०॥ अम्मावस को पूनम करदी, चन्द्र उजाला छिटके है ।पू०॥ नकरी भेद बताया तीनों, काजी टोपी पटके है ॥४॥पू०॥ युगप्रधान पद लिया अकब्बर पूर्ण ज्ञान जसु घटके है ॥पू०॥ भस्म रासी ग्रह उतरा जब ही, धर्म उदय थिर थटके है ॥५॥पू०॥ धुम्र केतु ग्रह का सुत प्रगटा, जिन मत लोपक खटके है ॥पू०॥ चैत्य अर्थ प्रत्यनीक सूत्र के, न्याय वचन से हटके है ॥६॥पू०॥ जो पूजे चरण हमेशा, दुःखदारिद्र तसु मटके है ॥पू०॥ वदे पाठक ऋद्धिसार राम कवि, ध्यान अमर पद रटके है ॥७॥पू० ।

॥ इति ॥

* तर्ज—राग--काफी होरी *

सद्गुरु ने मोहे भंग पीलाई—भोगी अखियन में आगई लाली नयनन में छा गई—अखियन में आ गई - नयनों में छा गई - ॥सद्०॥टेर॥

काय की भंग-काय की मिर्चे काय की कुन्डी बनाई ॥सद्॥१॥ भाव की भंग-मरम की मिर्ची घोटन वाला मेरा शांई ॥सद०॥२॥ क्रिया की कुन्डी-ज्ञान का घोटा-शियल की साफी बनाई ॥सद०॥३॥ ऐसी भंग पीये जो सुगुणनर-अजर अमर पद पाई ॥सद०॥४॥ दादा गुरु कहतां-मेरे मन गमतां-मोक्ष मारग पहुँचाई ॥सद०॥५॥ ।इति॥

* तर्ज—बिगड़ी बनाने वाले--बिगड़ी बनादे *

अब तो कुशल गुरु दरश दिखादे--दरश दिखादे- भवसागर से नईया तिरादे ॥टेर॥

संसार समुद्र विच डोल रहा हूँ—चाहे डुबादे चाहे तिरादे ॥अब०॥१॥ सब कर्मों ने घेर लिया है--इनसे दयानिधि फन्द छुड़ादें ॥अब॥२॥ सेवक "विजय" अर्ज करत है—चरणों के पास मुझ को बुलाले ॥अब०॥३॥ इति॥

* तर्ज—गजल *

गुरुवर तुम्हारी-मूर्ति देखी-शर झुके मुझ लली लली ने ॥गुरु॥१॥ दर्शन करने हम सब आते—गुरु गुण गाते पांव पड़ी ने ॥गुरु०॥२॥ केशर चन्दन घिसकर लाते--अंगीयां रचाते

हसी हसीने ॥गुरु०॥३॥ नैवेद्य लाते सब मिल करके- धूप को करते धमी धमी ने । ॥गुरु०॥४॥ आरती करते मडल मिलकर नृत्य नाचते मिलीने ॥गुरु०॥५॥ "विजय" कहे गुरुवर की पूजा श्रद्धा थाल को भरी भरी ने ॥गुरु०॥६॥

॥इति०॥

* तर्ज—चले जाना नहीं नयन मिला के *

दर्शन देना हमें - दर्शन देना मोहे - गुरुवर आके हमें - दर्श दिखा दे ॥टेर॥

आपके चरणों मे - ध्यान लगाया है - उन्हीं मुनीश्वरों ने दर्शन पाया है - उनको तारें हैं - वैसे मुझे तारो ॥दर्शन॥१॥ सेवक "विजय" तोरी - शरण मे आया है - चरणो मे आपके शर को झुकाया है - मेरी नईया को भव से तरादो - मोहे पार लगादो ॥दर्श०॥२॥ इति॥

* तर्ज—मोहब्बत के धोके मे कोई न आये *

गुरुवर गुरुवर जपलो प्यारे - जपले प्यारे - गुरु सेवा भव पार उतारे - पार उतारे ॥टेर॥

भवसागर में डेरा मेरा - डेरा मेरा - राग द्वेष मद ग्राहों ने घेरा - ग्राहों ने घेरा - नईया भवर मे - जाति बचादो - जाति

बचादो ।।गुरु०।।१। आठ कर्म ये दुष्ट हैं भारी - दुष्ट हैं भारी इसने मुझको किया भीखारी - किया भीखारी - समकित दान दें - भय से छुड़ा दें। भय से छुड़ा दो ।।गुरु०।।२।। 'विजय' को - तेरा सहारा - तेरा सहारा - जो हरदम जपता - नाम तुम्हारा - नाम तुम्हारा - आकर मुझको - दरश दिखादो - दरश दिखादो ।।गुरु०।।३।। इति।।

※ तर्ज—जब तुम्हीं चले परदेश, लगाकर ठेस ※

क्युं गये गुरु दिल तोड़, हमें यहां छोड़ - कहो मणिधारी- आये हैं शरण तुम्हारी ।।टेर।।

लाखों को तुमने तारे हैं, हम भी तो भक्त तुम्हारे हैं। अब तुम बिन स्वामी कौन करे रखवारी ।। आये० ।।१।। इस मन ने मार्ग हटाया है, कंटक में जाय फंसाया है। तुम बिन अब किसके होय सहारी ।।आये०।।२।। घर घर में बाट तुम्हारी है, भक्तों पर विपदा भारी है। टक टकी लगाये देखें बाट तुम्हारी ।।आये०।।३।। जब तुमको ऐसा करना था क्यों इतना प्रेम बढाना था। तुम बिना "सूरज" कैसे हो भवपारी ।।आये०।।४।। इति।।

※ तर्ज—ओ दूर जाने वाले वादा न भूल जाना ※

गुरुदेव मेरी किश्ती, उस पार लगा देना ।।उस०।।टेर।।

मैं नाथ कहा करता, तुम पार किया करते। मुझे इक तेरा सहारा, यह ध्यान दिल मे लाना ॥गुरु०॥१॥ अवगुण अनेक मुझ में, तो भी शरण पडा हूँ। अब तो हमारी किश्ती, भव पार ही लगाना ॥गुरु०॥२॥ सेवक "विजय" की अर्जी, अब तो स्वीकार करना दर्शन की आश पूरो, झट दर्श दिखा देना ॥गुरु०॥३॥ इति॥

※ तर्ज—रेखता ※

गुरुवर द्वार पे तेरे, मैं दर्शन करने आया हूँ। तुम्हारे चरणों में रहने, की, आशा दिल मे लाया हूँ ॥टेर॥

तुम्हारे दर्श की खातिर, मैं फिरत दर दर ठोंकरे खाता। न भटकाओ मुझे दर दर, मैं तुमरे पास आया हूँ ॥गुरुवर॥१॥ अनेकों तारते हो तुम, गुरुवर ससार सागर से। "विजय" को पार अब करदो, शरण मैं तेरी आया हूँ ॥गुरुवर०॥२॥ ॥ इति ॥

※ तर्ज—सरोता० कहा भूल गये ※

दया कर दरस दीजे, प्यारे गुरु देवा। चरणों में मुझको शरण दीजे, प्यारे गुरु देवा ॥टेर॥

चिन्तामणी और काम धेनु सम, मेरे तुम हिज देवा। राजा राणा भरे हाजरी, करे तुम्हारो सेवा ॥दया कर०॥१।

गुलसन गुल का हार बनाऊं, धूप सुगंधी खेवा । सुर नर गुणी जन करे आरती, भोग लगावे मेवा । दया कर०॥२॥ जिनदत्त जिनचन्द कुशल सुरिगुरू, तुमसे लगाऊं नेहा । पड़ी नाव मझधार बीच में, पार लगावे देवा ॥ दया कर०॥३॥ श्री गुरूराज लाज रख साहिब, देत तुम्हारी दूवा । और देव सब छोड़ के दादा, चरण आपका छुवा ॥दया कर०॥४॥ "चारित्र" की अब विनती सुनीजे, दरशन वहिलो दीजे । सब कष्टों को दूर हटाकर, मन वांच्छित फल दीजे ॥दया कर०५॥

॥ इति ॥

※ तर्ज—चौदहवों का चांद हो या आफताब हो ※

जि—जिनदत्त का ध्यान हो, मन में न मान हो,
न—नश्वर शरीर से ही जुदा, जिस वक्त प्राण हो ॥टेर॥
द—दरबार में अरदाश है चरण चित्त में रमें
त्त—तज अष्ट कर्म भोग रोग, ज्ञान मगन में ॥
गु—गुण गान लहर तान से--आनन्दवान को ॥१॥
रु—रुम झुम तमाम शक्तियें, गुरूदत्त जप जपें ।
दे—देवाधिदेव आपकी, ज्योति में मन भमें ॥
व—वरदान देवो दीन दया दिल विचार हो ॥२॥
की—कीर्ति तुम्हारी कौन से, मुख से बयां करूं ।
ज—जय जय जितेन्द्री देव के, चरणों में नित रमुं ॥
य—यह 'गुलाब' दीन जान मिले मुक्तिराज हो ॥३॥ इति ।

* तर्ज—तेरे कूचे में अरमानों की दुनियां लेके आया हूँ *

श्री—श्री जिनचन्द मणिधारी की, जय जय हो सदा जय हो।
म—महा गुरुदेव उपकारी, सदा जय हो सदा जय हो ॥ टेर ॥
णि—नित्य नत नमन करता हूँ, बचालो भव के चक्कर से—
बचालो भव के चक्कर से।
धा—धाम शिवपुर के अधिकारी, सदा जय हो सदा जय हो ॥१॥
री—रीझ कर रिध सिध करे, कृपा कर शुभ नजर करदो—
कृपा कर शुभ नजर करदो।
जि—जिसी से पार हो वेडा, सदा जय हो सदा जय हो ॥२॥
न—न रागी हो न द्वेषी हो, सकल हित के कर्ता हो-
सकल जग हित के कर्ता हो।
च—चन्द्र सी कान्ति उज्ज्वल हो, सदा जय हो सदा जय हो ॥ ॥३॥
द—दयालो तम (अधारा) मेरा मेटो, उजाला ज्ञान का करदो-
उजाला ज्ञान का करदो ॥
सू—सूर्य सम ज्ञान चमकादो, सदा जय हो सदा जय हो ॥४॥
री—रीति और नीति के दाता, सेवक गुरुदेव गुण गाता
सेवक गुरुदेव गुण गाता।

की—कीर्ति तव जगत में जाहीर, सदा जय हो सदा जय हो ॥ ५ ॥

ज—जपूं दिन रात गुरुवर नाम, रहे दिल वास गुरुवर का
रहे दिल वास गुरुवर का ।

य—यही आशा "गुलाब" ने की, सदा जय हो सदा जय हो ॥६॥ इति॥

※ तर्ज—तुम्हें नाथ नईयां तिरानी पड़ेगी ※

ॐ ॐ श्री जिन कुशल सूरि गुरु ॥ टेर ॥

ॐ—ॐ श्री श्री श्री जिन कुशल सूरि गुरु ॥१॥ ॐ॥

जि—जिस जिम ध्याओ, उत्तम फल पावो ।

न—नमो नित्य नत निष्कामी गुरु ॥ २ ॥ ॐ ॥

कु—कुमति कपट के काटन हारो ।

श—सकल सुख शिव सम्पति सव गुरु ॥ ३ ॥ ॐ ॥

ल—लख चौरासी को मेटन हारो ।

सू—सूरज ज्योति समान कुशल गुरु ॥ ४ ॥ ॐ ॥

रि—रिपु दल जीवन तुमरो नाम है ।

गु—"गुलाव" तेरी शर्ण पड़ा प्रभु ।

रू—रूप अनुप स्वरूप सुखद गुरु ॥ ५ ॥ ॐ ॥ इति ॥

※ तर्ज—तदवीर से बीगड़ी हुई तकदीर बनाले ※

श्री वीर के महाधीर है, गुरुदेव हमारे

जिनदत्त सूरी जपे नाम, काज सुधारे, काज सुधारे ॥ टेर ॥ नमते थे बावन वीर महा, योगनीयें चौसठ भी, योगनीयें चौसठ भी । दरबार इनका भारी है, भक्तों के हैं प्यारे ॥जिन०॥१॥ तम (अंधकार) छा रहा था जग में, अम्मावश की रात का, अम्मावश की रात का। सूरि ने पूनम करके किया उज्ज्वल चन्दारे ॥जिन०२॥ ऋद्धि सिद्धि के दाता, गुरु हैं देव दयालु, गुरु हैं देव दयालु । जीवन को अब "गुलाब" ने गुरु अर्पण किया रे ॥ शरणे है तेरे "गुलाब" गुरु पार लगारे ॥जिन०३॥ इति॥

* तर्ज—आनन्द का दुनिया में बजवा दिया शिवपुर० *

गुरुदेव आपने भूले पथिकों को, सत्य मारग दिखलाया था। गतम दुक्खी पीड़ित पतितों को, फिर से गले लगाया था ॥टेर॥ इक चमत्कार दिखलाया था, तुमने अनुपम निज शक्ति का। जब पात्र के नीचे बिजली को; झट तुमने देव दबाया था ॥१॥ प्रतिक्रमण बाद यह वचन दिया, बिजली ने करके विनय बड़ी, नहीं आपका भक्त सताऊंगी, सुन रहम आपको आया था ॥२॥ जिनदत्त सूरिजी महाराज, उपदेश दे रहे थे भारी। उस समय विलक्षण श्रेक दृश्य, वहां पर लोगों ने पाया था ॥३॥ चौसठ योगिनिया आई थी, पर महाराज को पहले ही। था ज्ञान जन्द चौसठ पट्टों को बनवा, तय्यार कराया था ॥४॥ फिर किया आविशाओं को था, आदेश उन्हें बैठाने

का। जब बैठ गई तो कील दिया, वह समय अति रंग लाया था ॥५॥ उपदेश खतम होने पर उठने लगी, मगर वह उठ न सकी। तो क्षमा मांग गुरुदत्त सूरि से, वरदानों को पाया था ॥६॥ दासीयां बनी थी छलने को, लेकिन वे छली गई खुद ही। अब इन बातों को "रामपाल" यति ने सब सम- झाया था ॥७॥ गुण गान कहां तक जाय किया, महिमायें अमित तुम्हारी है। तुमने बावन वीरों तक पे, शासन अपना प्रगटाया था ॥८॥ इति॥

※ तर्ज—रतन का गाना ※

जब तुमहीं चले परलोक, लगा दिल शोक हो गुरुवर प्यारा०। इस जग में कौन हमारा ॥ टेर ॥

जब बादल घीर घीर आयेंगे, बीते दिन याद दिलायेंगे, तुम्हीं ने गुरुवर हमसे किया किनारा ॥इस०॥ १॥ नयनों से आंसू बहते हैं, दिल रो रो कर यूं कहता है, अब तुम बिन जग में हमको नहीं सहारा ॥इस०॥ २॥ आषाढ़ अेकादशी आती है, जिनदत्त की याद दिलाती है, अब "दास" को सूरि बिन नहीं है सहारा ॥इस०॥ ३॥ इति॥

※ तर्ज—केशरीया थांसू प्रात करीरे ※

गुरुदेव मनावो-साचा दादा सा बैठा बाग में ॥ टेर ॥

केशर चन्दन घसूं बाग मे, अगीयां खूब रचाऊ, पुष्पादिक पूजा में लाऊं, इतर और चढ़ावूं जी ॥गुरु०॥१॥ जंगम युग प्रधान भट्टारक, दादा दत्त सूरिन्द, ध्यावे पूजे जो नर पावे, सहज शान्ति सुख कन्दजी ॥गुरु०॥२॥ सम्मत् गुनीसे शाल बयाशी, कार्तिक मास शुभवार, श्री संघ की यही अर्ज है, कर जो बेडा पारजी ॥गुरु०॥३॥ इति॥

* तर्ज—चरण का शरणा देकर जल्दी तारो *

देदोजी देदो दादा दर्शन देदो ॥ टेर ॥

भक्तन के रखवाल स्वामी बिरुद तुम्हारा-बिरुद निभालो गुरु-देव ॥दादा०॥१॥ नाल ग्राम धन्य धन्य, दादा तीरथ राजे-आया हूँ दर्शन काज ॥दादा०॥ सुरतरु सुरमणि रूप, दर्शन सदा तुम्हारे-पूरण यही विश्वास ॥ दादा०॥३॥ जिन चारित्र सूरिराज-पावन तर उपदेशे-सुअवसर मिला आज ॥दादा०॥४॥ मन्दिर पुनीत पुराण-जीर्णोद्धार करावे विबुधन के मन भाय ॥दादा०॥५॥ हाकिम कोठारी आज-बीकानेर निवासी; भैरू-दान धन भाग ॥दादा०॥६॥ मन्दिर देव विमान, सुन्दर कला विराजे, गुरुवर महिमा अपार ॥दादा०॥७। रस निधि विधु शाल, माघव सुद दशमी को, वेदी प्रतिष्ठा समारोह ॥दादा०॥८॥ सुख सागर भगवान, जिन हरि पूज्य हमारे, शरण में आये हम आज ॥दादा०॥९॥ सांधर्मीवत्सलआज,

पूजा ठाठ अनूपम, जय जय बोले भक्त समाज ॥दादा०॥१०॥
बलिहारी गुरुदेव, तेरी अजब पुणयाई "कवीन्द्र" करे गुणगान
॥दादा०॥११॥ इति॥

※ तर्ज—काली कमली वाले तुमको ※

दादा दत्त सूरिन्द-गुरु को कोटि नमन-कोटी कोटी नमन
॥ टेर ॥

कच्छ मांडवी दर्शन पाया, आधि व्याधि सब दूर भगाया—
संकट के रखवाया ॥गुरु को०॥१॥ अजब दृश्य वाड़ी का
पाया, पार्श्व देवत्न है शिवसुख दाया, तीन जगत के पाल
॥गुरु को०॥२॥ श्री जिनचन्द्र-कुशल सूरीश्वर, युगल चरण
मध्य गुरुवर-शोभो दीन दयाल ॥गुरु को० ।३॥ अहनिश
ध्यान आपका धरती, भवदरिया से शीघ्र ही तरती—हो भक्तों
के प्रतिपाल ॥गुरु को०॥४॥ मनवांच्छित सब पूरण करदो;
भक्ति रस को हृदय में भरदो, करो मेरी संभाल ॥गुरू को०॥
॥६॥ त्राण शरण गुरुदेव हमारे, पल पल में भक्तों को
निहारे, हैं हम तुमरे बाल ॥गुरू को०॥७॥ वीर चौवीस
सड़सठ में आइ, ज्येष्ठ कृष्णा तीज सुहाई तुम दर्शन पाया
कृपाल ॥गुरू को०॥८॥ विमल निर्मल मेरा मन करदो,
"प्रमोद" में मोद सदाही भरदो, दादा पूज्य दयाल
॥गुरू को०॥६॥ इति॥

- ※ तर्ज— दिल लूटने वाले जादूगर—फिल्म मदारी ※

गुरूदेव जगत बोधिदायक, सद्‌मारग आन बताओ हमे। सुख सपदा आतम दबी हुई, कर्मों का बोझ हटाओ तुमे ॥ टेर ॥

अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रह को छोडा। स्वारथ लोभ कषाय विषय वश मानवता से मुंह मोडा (हा हां हा) रतन अमोलख मानव भव का भान कराओ गुरू हमें ॥१॥ ॥गुरू०॥ अज्ञान प्रमाद में रचे पचे डोलत हैं इत उत दीन हुअे आतम प्रिय सम्यक दर्शन ज्ञान चारित्र वीर्य तप हीन हुअे (हा हां हा) २। फिर भी तुम भक्ति के मद में हम मस्त उद्धारो गुरू हमे ॥२॥ गुरूदेव०॥ धर्म प्राण कर्मठ भूमि भारत में भीरूता छाई। नास्ति अरिगण ने जिससे की हिम्मत धर्म नाश ताईं (हा हा हा) २। हे पुरुषसिंह देदो शक्ति नायक निर्भयता के बने ॥३॥गुरू०॥ जेलागर (जेशल) सुत कुलचन्द "कुशाल गुरू" छाजेड गोत्र अवतस हुअे समि-याणा (सिवाणा) भूमि में धन धन रतन अमोलख प्राप्त हुअे (हा हा हा) २। वीर श्रमरनी के "करमण" करो कर्म वीर क्षत्रीय हमें ॥४॥ गुरू०॥ सुने विरुद आपके जग यश के हैं हमने अनेकों गुरुजन से संकट मोचन खोलो लोचन हम द्वार खडे हैं आशा से (हा हा हा) २। दो रत्न त्रयी का दान

जिसे मुक्ति सुन्दरियां वरे हमें ॥५॥गुरु०॥ समभाव बन्धुत्व का नाद किया चैत्य वन्दना कुलक वृत्ति में अनुपम समन्वय दृष्टि के धारक ध्यावो च्रण क्षण में (हाँ हां हां) २। चारित्र चूड़ामणि जैन श्री जिनचन्द 'कुंवर' करो पार हमें ॥ ६ ॥ ॥गुरुदेव०॥ इति॥

* तर्ज—घणी-घणी घणी खमा रे-कवर अजमाल ने *

श्री—श्री जिनचन्द सूरि की जय हो, गुण गाऊं सुख पाऊं जी। अकबर बोधक सूरीश्वरजी ॥टेर॥

जि—जिम २ ध्याऊं तिम कर्म खूपावूं, नरभव सफल बनाऊं जी ॥१॥ अकबर बोधक सूरीश्वरजी ॥

न—नमें नर नारी महिमा अपारी, भव हारी सुखकारी जी ॥२॥ अकबर बोधक०॥

चं—चन्दन केशर पुष्पादिक लावूं, पूजन रचावूं हर्षावूं जी ॥३॥ अकबर बोधक०॥

द—दयालु कृपालु कुमति विनाशक, सुमति प्रकाशक युग पतिजी ॥४॥ अकबर बोधक॥

सू—सूना जंजाल करे मदलोभी, माया त्याग गुरु पाओजी ॥५॥ अकबर बोधक॥

रि—रिपु काटन हारे, गुरु भक्तों के हैं प्यारे, केई जीव तारे मोरे प्यारेजी ॥६॥ अकबर बोधक०॥

की—कीया उपकार दीपाया शासन, डंका अहिंसा बजाया जी ॥७॥ अकबर बोधक०॥

ज—जपाये तुम्हारा नाम, दिल में तुम्हारा ध्यान, तुमरे शरण चित्त लाऊजी ॥८॥ अकबर बोधक०॥

य—यही अभिलाष पूरो, दीन "गुलाब" तेरो मुक्ति नगरीया दिखाओजी ॥अकबर बोधक०॥ इति ॥

* चमत्कारी-चिन्तामणि दादा जिनदत्त सूरीश्वर की *

* आरती *

आरति हर गुरु आरति कीजे, आरात्रिक दुख दामी।
श्री जिनदत्त सूरीश्वर दादा, साता दें अभिरामी ॥१॥
तीजे पद परमेष्ठी स्वामी, आचरण गुण धामी।
सीमधर जगदीश्वर वाणी, अेक भवे शिवगामी ॥ २ ॥
वीर जिनेश्वर शासन वासित, संघ सकल विशरामी।
युगवर अतिशय महिमा धारी, जग जश-कीरति जामी ॥३॥
सेवा करते सुर-नर नायक, श्री गुरु पद शिर नामी।
कलियुग में कल्पद्रुम जैसे वांच्छित दें अभिरामी ॥४॥
जैनेतर जन जैन बनाये, सवालक्ष सुखकामी।
शुद्धि का मारग दिखला कर, दूर करी सब खामी ॥५॥

सुख सागर भगवान परमगुरु, पूजो पाप विरासी ।
नित सुर "गणनाय हरि" कहते, श्री गुरु चरण नमामि ॥६॥

॥ इति ॥

॥ द्वितीय दादा ॥

* नरमणिमण्डित भालस्थल—श्री जिनचन्द्र
सूरीश्वर सद्गुरु की *

॥ आरती ॥

जय जय मणिधारी - जग जन उपकारी ।
ॐ जय जय मणिधारी ॥ टेर ॥

शासन थंभ समाना सद्गुरु - आरति हितकारी ।
दिल्ही में दरशन कर परसन, होवें नर नारी ॥
ॐ जय जय मणिधारी ॥ १ ॥

मदनपाल नरपति प्रतिबोधक - संघ वृद्धिकारी ।
महतियाण महती जाती में समकित परचारी ॥
ॐ जय जय मणिधारी ॥ २ ॥

जिन हरि पूज्य परमगुरु शरणा - भव भव सुखकारी ।
ध्याऊं पूजूं पुण्य योग से - जय मंगलकारी ॥
ॐ जय जय मणिधारी ॥ ३ ॥

॥ इति ॥

॥ तृतीय दादा ॥

प्रत्यक्ष प्रभारी प्रगट वर दाता-श्री जिन कुशल सूरीश्वर सद्गुरु।

* आरती *

जय जय गुरुदेवा, सेवा दे सुखमेवा।
ॐ जय जय गुरु देवा ॥ टेर ॥

आरति हरणी आरति गुरु की, पावन पद देवा।
परम कुशल करणी गुण भरणी, सद्गुरु पद सेवा ॥
ॐ जय जय गुरु देवा ॥ १ ॥

गुरु दीपक गुरु रवि शशि ज्योति-जगत में सुखदेवा।
हृदय तिमिर भर दूर निवारे - दिव्य नूर चमके वा ॥
ॐ जय जय गुरु देवा ॥ २ ॥

"जिनहरि" पूज्य कुशल गुरु दादा - निर्भय समरेवा।
वाञ्छित पूरे संकट चूरे - सब देवी देवा ॥
ॐ जय जय गुरु देवा ॥ ३ ॥

॥ इति ॥

॥ चतुर्थ दादा ॥

॥ जंगम युग प्रधान-श्री जिनचन्द्र सूरीश्वर सद्गुरु की ॥

* आरती *

जय जय गुरु राया, पुण्योदय से पाया।
ॐ जय जय गुरु राया ॥ टेर ॥

अकबर भाव अहिंसक हेतु सब जग सुखदाया ।
आरती गुरु गुण आरतीकारी - गाओ तज माया ॥
ॐ जय जय गुरुराया ॥ १ ॥

परम प्रभावक सद्गुरु - श्रावक कर्म योग गाया ।
सिद्ध और साधक की जोड़ी - कार्य सिद्ध पाया ॥
ॐ जय जय गुरुराया ॥ २ ॥

ठाम ठाम गुरु थूंभ विराजे - भवी पूजे पाया ।
"जिन हरि" पूज्य परम गुरु पूजो - पाओ मन चाहया ॥
ॐ जय जय गुरुराया ॥ ३ ॥

॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

गच्छ चौरासी शिरोमणी, श्री जिनदत्त सूरिन्द ।
मणिधारी जिनचन्द गुरु, कुशल करो सुख कन्द ॥ १ ॥
अकबर बोधक "चन्द्र गुरु" मुनियों में विख्यात ।
चन्द्र उगायो गगन में - अम्मावस की रात ॥ २ ॥

* सवैया—त्रोटक छन्द *

बावन वीर किये अपने वश, चौसठ योगिनी पाय लगाई ।
डाइण, साइण, व्यन्तर, खेचर, भूत, अरु-प्रेत, पिशाच पुलाई ।
बीज, तड़क्क, कड़क्क, भटक्क, अटक्क रहे जो खटक्क न

सांई । कहे "धर्मसिंह" लघे कुण लीह, दिये "जिनदत्त" की अेक दुहाई ॥ १ ॥ इति ॥

* वधाई *

आज की घडी म्हारे हर्ष वधाई, गुरु दर्शन पायो सुखदाई ॥ आ० ॥ १ ॥ गुरु जगनायक वाञ्छित दायक गुणगणाऽलकृत सहु मनभाई ॥ आ० ॥ २ ॥ उत्तम धर्म प्रभाव करीने, जैनी कुल की रीत दिखाई ॥ आ० ॥ ३ ॥ गुरु प्रत्यक्ष सहु मघ सुखदायक, देश देश में प्रगट रहाई ॥ आ० ॥ ४ ॥ धन दिन आज सफल थयो माहरे, सुरतरु सम मिलियो फलदाई आ० ॥ ५ ॥ वाञ्छित पूरण संकट चूरण, सहु भवि मात पिता वरदाई ॥ आ० ॥ ६ ॥ कलकत्ता पुर मंडन साहिब, कुशल गुरु का मोहन गुण गाई ॥ आ० ॥ ७ ॥

॥ इति ॥

* दूसरी वधाई *

आज आनन्द वधाईया, कुशल गुरु, आज आनन्द वधाईया। गुरु भेटे महाराज, दादा गुरु आज आनन्द वधाईया ॥टेर॥ चिन्ता चूरण आशा पूरण अेहि विरुद धराईया ॥कु०॥ दानव मानव सहु कोई पूजत, मन वाञ्छित फल पाईया ॥कु०॥१॥ नाम लेत नवनिध सुख पावे, दरशन दुरित पुलाईया ॥कु०॥

आज की घडीयां सफल भई है, गुरु दर्शन में पाईयां ॥कु० ॥२॥ ऋद्धि सिद्धि सुख सम्पत्ति दीजे, चरण सेवा सुख दाईयां ॥कु०॥ सेवक कर जोडी इम विनवे, हरख हरख गुण गाईयां ॥कु०॥३॥ इति ॥

॥ अन्तिम-मंगल ॥

※ श्री जिनदत्त सूरीश्वर स्तवन ※

आसा पूरण काम गवी, भवियंनुज बोधन चारु रवी। "जिनदत्त सूरि" गुण तवउ कवी, जिम दीपति नितु नितु अधिक छवी ॥ १ ॥ आ० ॥ श्री खरतर गच्छि गुरुराजई, जसु महिमा महियलमहि गाजई। "जिनवल्लभ सूरि" पाटि छजई, पय पकय पण मउ हित काजई ॥ २ ॥ आ० ॥ संवत इग्यारह सुपरई, बत्तीसइ जन्म्या रयणि भरई। वर "वाछिग" नाम घरई, अवतरिया "वाहड़दे" उअरई ॥ ३ ॥ आ० ॥ इगतालइ वय गहण करई, गुण हतरई पाटइ राजवरई। माहव वदि छट्ठि दिनि सुथिरई, सुर दानव मानव पाय परइ ॥ ४ ॥ आ० ॥ अंबड सावग लिहिय करई, सिरि "अंबा" सोवनमय अक्खरई। वांची प्रगटिउ ओणिअरइ, वर जुगवर महि अलि पुण्या भरई ॥ ५ ॥ आ० ॥ ततखिणी "दिल्ली" नाम पुरई, जसु चउसट्ठि योगिणी वर सुवरई। ग्राम ग्राम प्रति प्रथम नरई, इक्क उदयी श्रावक तिम नगरई ॥ ६ ॥ आ० ॥ खरतर

श्रावक सधन घरई, तिम खरतर कुमरणि कदि न मरई। खरतर यतिनी पुष्पु टरई, गुरु नामइ माईणी थीन डरई ॥ ७ ॥ आ० ॥ गुरु ममरणि विज्जुरी न परई, जो मिधि जसई मो धन उधरई। अे नर सात वरी उपरई, सव जोगिणी हरखित दुख हरई ॥ ८ ॥ आ० ॥ "माणिभद्र" तदनन्तरई, वली सात सुनर अे उचरई। जो "जिनदत्त" पाटई पमरई, मावेरी पंच नदी सुगुरुई ॥ ९ ॥ आ० ॥ बी सहस गुणीयई सूरि वरई, सूरि मत्र पवित्र निरंतरई। जि सहम साधु मिज्झाय करई, तिम श्रावक साते समरणई ॥ १० ॥ आ० ॥ खरतर सघि सदा त्रिसती, खीचडी य गुणेवि सासती। माम माहि घर घर ही प्रति, वे आंविल करवा सगति छती ॥ ११ ॥आ०॥ आतम स गति (अ) नुसारि मदा, अेकाशण साधु करई प्रमदा। "माणिभद्र" वर सात हुदा, सुणि भगतिइ प्रणमई सुगुरु पदा ॥ १२ ॥ आ० ॥ चउसठी "जोगिणि" जीपी करी, जस "बावन वीरे" आण धरी। सूरिमत्र जिणि ध्यान धरी, धरणिन्द सुसाध्यउ सगति खरी ॥ १३ ॥ आ० ॥ अेक लाख श्रावक श्राविका, पड़िबोहिय गुरु सप्रभावी। सुर नर असुर सवे भावी, जसु सेव करई गुरु गुण गावी ॥ १४ ॥ आ० ॥ अजमेर-उज्जेणी 'नई दिल्ली', भरुअच्छई जोगिणी जिण खिल्ली। अवर अनेक असुर पिल्ली, जिणि कीरति तिहु अणमइ घिल्ली ॥ १५ ॥ आ० ॥ संवत "बार इग्यार" समई आसाढ इग्यारसि

सुध्धतमई । 'अजयमेर' पुरि सयरसमइ, श्री जुगवर सुरयर ठाणि रमई ॥ १६ ॥ आ० ॥ जुगवर जिनदत्त सूरि गुणा, जे ध्यावई अहनिसि भविय जणा । राज रिद्धि तसु सुख घणा, गणि "सूरचन्द" हिव सफल दिणा ॥ १७ ॥ आ० ॥

॥ इति ॥

* श्री जिनदत्त सूरि गुण छन्द *

जोगीश्वर जिणदत्तं, सूरीसर 'अजयमेरु' संपत्तं ।
खरतरगच्छ सुभत्तं, पणमिसु पयकमल तासु हुं नित्तं ॥ १ ॥
"वाहड" देवी मात बखाण, 'वाछिग' मंत्रि पिता जसु जाणं ।
हुँबड़ वंश त्रिभसण भाणं, सो सद्गुरु सेवो सुविहाणं ॥ २ ॥
इग्यारह बत्तीस मईं, जनम दीख शुभ ध्यान ।
इगतालईं गुणहत्तरईं, प्रतप्यउ पाटि प्रधान ॥ ३ ॥

* छन्द *

किंतु - बालवई भावे जिण लीध दिक्खा,
किंतु—सहज मई साधु सिध्धन्त सिक्खा ।
किंतु - सर्व शास्त्रां तणउ सार सोहउ,
किंतु—मूल सूत्रे मिली मन्न मोहउ ॥ १ ॥
किंतु - पूज्य जिन वल्लभई पाटी दीधउ,
किंतु—सूरि मंत्रई-जपईं सर्व सिध्धउ ।

किंतु - अंबिका दीध सोवन्न वण्णे,
किंतु—युग प्रधान जागउ सुवण्णे ॥ २ ॥

किंतु - शाकिनी डाकिनी सेव थाबई,
किंतु—वीर बावन्न जाबई ।
किंतु - भूत प्रेता तणा लाभ भंजई,
किंतु—भीर मागी महामन्न गजई ॥ ३ ॥

किंतु - अगम मरकी महा संकट कापी,
किंतु—शिष्यणी शिष्य थिर आप थापी ।
किंतु - चमकृती चीज घण माथ चूकी,
किंतु—काचली मन्त्री तलि घाली मूकी ॥ ४ ॥

किंतु - पाटला पूठी पर टेप धारी,
किंतु—योगिनी साठि अरु चार हारी,
किंतु - महम घरि देसी गुरु हाथ माचा,
किंतु—आप साणी दियई सात वाचा ॥ ५ ॥

किंतु - ध्यात्रि पद्मावती धरणि देव,
किंतु—लाग सेवक करई पाय सेव ।
किंतु - चंन्प शिव शामनि मारि गोयउ,
किंतु—रुद्र सिर पर टव्यउ मोई मायउ ॥ ६ ॥

किंतु - पाघडि प्रीत तउ प्रथम जोटि,
किंतु—क्षार सेवा रुरा मानि कोटी ।

किंतु - 'उच्चनगर' इम उच्छव प्रवेश,
किंतु—म्लेच्छ निर्जीव सजीव वेश ॥ ७ ॥

किंतु - पंच नदियां जिठइ नीर मेला,
किंतु—नावि थंभावि मझराति वेला ।
किंतु - जन्तु मांगा मिलन हांक वीरा,
किंतु—साधिया पंच उल्लंठ पीरा ॥ ८ ॥

किंतु - सूरि 'हरिभद्र' शुभ मंत्र पोथी,
किंतु—सोधतां कीध निज हाथ सोथी ।
किंतु - 'चित्रकूटई' महा थंभ चंप्यउ,
किंतु—देव सगतई सिला मंत्र सुप्यउ ॥ ९ ॥

किंतु - वार इग्यार अषाढ मासई,
किंतु—स्वर्ग सुख संपत्तउ शुभ निवासई ।
किंतु - ध्यान धरि जेह नर चित्त ध्यावई,
किंतु—ऋद्धि अड सिद्धि नव निद्धि पावई ॥ १० ॥

*** कलश (छप्पय) ***

काचवत निकलंक शील गंगेव संभारी,
भविक भूख भावठि भीम भय भंजन भारी ।
भगति मुगति दातार सयल संघह सुक्ख कारण,
अडवडियां आधार पार संसार उत्तारण ।

जागतउ मर्द जिणदत्त भेटि मेटि आपद मरण,
कर जोड़ि 'हर्षनंदन' कहई सुप्रसन्न होई अशरण शरण ॥११॥

॥ इति ॥

* ॐ जिनदत्त सूरि महा स्तोत्र *

॥ प्राकृत ॥

ॐ ह्रीँ गिव्वाण चक्क फुड-मउड मणिग्घिट्ठ पायार विन्दो,
जगा दिक्खप्पहाणा जुगवरपय संवाहणेगावतारी ।
श्री क्ली व्लू ठड्ढ विज्जु ! मयणय विजई ! जोइणीच्चक्क थंभा,
सड्ढाण खत्ति अेसा इवर सहस तीसेग लक्खाण कत्ता ॥१॥
रोगा सोगाहिवाही समर-डमर संताप हत्तार ! देव !,
श्री विज्जा मंत तंतागर महि महिआ ! जाहउं वाप सूअ ।
वैराटी हुंग्डाक्ख वंश कुल तिलय सुमतीस वाछीगपुत्ता,
मिच्छालारी कुंकु भीदमणमिग्गई ! दत्तसूरिन्द ! अेहि ॥२॥
निरणाणी ! अेहि सामी ! वर वरद ! वरं देहिणे दशणं य,
सुरक्खो ! सुप्प सएणो भवं विहि पहलग्गाण भव्वाण खिप्प ।
अण्णाण खाण टाया कुरु कुरु मम सईहितं दिव्व कती,
ह्रीँ स्वाहांतं त्ति भाणा कुशलकर ! सया रक्ख मं रक्ख ताय ! ॥३॥

(तीहिं - निसेसयं)

मत लक्ख मत्ताय किर सुहगिहिणा जंम चेव धरतो,

ऐगावण्णा दिणन्तेसु विमल हियया सुध्ध जावं जवन्तो।
णिच्चं ऐगासणी जो अमलतणु अकंपासणो धम्मरत्तो,
सक्खं णासग्गदिट्ठी सुगुरु-हरिसणं लेई सो दुल्लहं वि ॥ ४ ॥
सच्चारित्ताण सीसेण जिणरयण सूरीण मंतप्प भावा,
"भद्देणं" थुत्त मेयं सिरी खरयर गच्छाहि वाणं कयं जे,
लध्धध्धीदं सपेम्मं सरलय रहिया सत्तहुत्तं थुणंति,
णिच्चं सुक्खं अखंडं असिययर-सुहगं पगे ते लहंति ॥ ५ ॥

॥ इति ॥

* मणिधारी *

॥ श्री जिनचन्द्रसूरिजी-काव्याष्टकम् ॥

अभयसूरि सिरि सीसु सगुण जिण वल्लहु दिट्ठउ।
तसु पट्टह जिणदत्तसूरि अम्ब दुम्भि नट्ठउ॥
दिव्वं नाण पहाण वस्त्रिण जं क्रियउ अचम्भमु।
बालत्तणि लिउ मग्गि सगुरि, रासल अंगुब्भमु॥
गुरु पारतन्तु अंग महि भत्तु जिणयतसूरि फुडु उच्चरिवि।
दुप्पसहु जाव पढियई सुहु तुम्भ धम्मु कमि क्रमि करिवि ॥१॥
वहु विहारु पच्छिम तुम्हहउ पुव्व वऐ सह।
जाणउ नहुगुण दोस थुणउ किर काइ विसेसह॥
परजु कित्ति पर सुहिण साम निसुणिज्जइ समणह।
हुणु पच्चक्खु चिदिट्ठु भत्ति भिट्टिय निय नयणह॥

जिणदत्तसूरि पट्टु धरणु मकि उरुच्चारम्भुग्हु ।
विन्नत्तिय सुणि लखेणु भणउ अहिणव गुरु जिणचन्द पहु ॥२॥

तक्कगहिर साहित्त सगुण वायरण नियम्रउणु ।
गुण गुरुऊ पावह पमुम्कु पर मत्थिहि लसली ॥
बुद्धिमन्तु जिण तत्तिवन्तु तिहुयण चड्डिय जसु ।
चन्दु गच्छु उद्धरिउ दच्छु उम्मजहि पहु कसु ॥
परम थनिरिा लखणु भणइ जिणयत्तह पट्टु द्धरणु ।
जिणदत्तसूरि माणुम मिमिण अवयरियउ तारण तरणु ॥ ३ ॥

तव संजम महित्त चित्त चारित्र निचित्तह ।
नाण भाण निन्नाण धय धारण ज्भाथ तह ॥
लक्खणच्छन्द पमाण तक्क सज्झाय गुरुक्कम ।
सत्तमील सब्भाव भाव जिण भत्ति कुम्कम ॥
धुरधम्म धेय धारण गुणह कलि कालह परिसु पुरिसु ।
जइ अत्थि कहवि किम कुवि कहइ पहु जिणचन्दह समसरिसु ॥४॥

पचदिय गय पच जेण नाण कुमि दारिय ।
सुमरिमन्तु सिद्धन्तु निमम निमहर जिण वारिय ॥
मोहु जोहु पमरन्तु भाण दढ खग्ग सुरप्पिउ ।
चन्द गच्छु उद्धरिउ पट्टु जिणयत्तह थप्पिउ ॥
जिण भत्ति रयणि कय कुसुम भरु गन्ध लुद्ध त्रुवणभमलु ।
जिणचन्द सूरिसरह सरिसु पाव तिमिर फेडण कुसलु ॥ ५ ॥

जिणरि मोहि मोहि यहु जिणरिच्छय लियहु करि कालह ।
तिह्न जिणांग्हि निह्न हहु जिणारी झहु व सय जालह ॥
लोहि जिणरि वड हक्कि यह जिणारि वरसिय रंजिज्जहु ।
जिणकरहु गव्वु धणु धणिय किसु मक्कुवि अणु अेवइ खिवइ ॥
जिणचन्द सूरि सुविहार मिसि भवियह फिरि फिरि सिखव्वइ ॥६॥

जिव निसि सोहइ चन्दु जेम कज्जलु तरलच्छिहिं ।
हंसु जेम सरवरह पुरिसु जिवं सोहइ लच्छिहिं ॥
कंचणु जेव हीरयह जेम कुलु सोहइ पुत्तिहिं ।
रमणि जेम भत्ता तु राउ सोहइ सासंति हि ॥
सुरनाह जेम सोहइ सुरह जगि सोहइ जिणधम्म भरू ।
आयरिय मझि सीहा सणह तिव सोहइ जिणचन्द गुरु ॥ ७ ॥

अज्ज दियहु सकयत्थु अज्जु नखन्तु सुहावउ ।
अज्जुवाह रमणीउ अज्जु संवच्छऊ आवउ ॥
अज्जु जोउ जयवन्तु अज्जु मट्ठु करणु पियं करु ।
अज्जु मित्तु सुह महत्तु अज्जु ग्रह रासि सुहं करु ॥
सकयत्थु अज्जु लोयण जुयलु हिअइ अजु वढियइ सुहु ।
गउ पाउ अज्ज दूरं तिण दिट्ठइ गुरु जिणचन्द पहु ॥ ८ ॥

॥ इति जिणचन्द्र सूरि काव्याष्टम् ॥

※ श्री जिन कुशल सूरिजी का छन्द ※

प्रथम जो देरावरै, सुथान सिंघे थी उरै।
जेशाण शुभ जागतो, सूरीठे सधु साजतो ॥ १ ॥
मुलताण मीर सेवता, अनेक पीर देवता।
क्षिसे हार ने कते फुरे, गुरु सदा उदौ करे ॥ २ ॥
मरोट थान मूलगौं, अेक निचित अेलगौं।
बीकान वान वाधतौ, सुथान थान साजतौ ॥ ३ ॥
प्रभावना रिणीपुरे, नीसाण वाजतां घरे।
नागौर नामे रीजतौ, घणीज देव जीपतौ ॥ ४ ॥
तोरण तेम मोहरा, जगत जन मोहरा।
सरूप मेडते सही, अपार लजयो जालही ॥ ५ ॥
महिमापाल पूरतौ, लाहौर दुःख चूरतौ।
कला अनेक आगरे, बत्तीस पवन फूलरे ॥ ६ ॥
दादा करंति सेव, हिन्दुवां तुरक्का देव।
सदा सुख सांगानेर, जालमो करत जेर ॥ ७ ॥
अमरसरै अनेक दादा राखतो तोड टेक।
मालपुरे भुभू मान, खान खान सेवे थान ॥ ८ ॥
ब्रिहानपूर राज रीति, जैतारण जगत्र जीति।
सोभित सुख सदयं, बन्ना तटे निरुद्दय ॥ ९ ॥

खेजड़ले खरौ सदा, वाहड़मेर सम्पदा ।
जोधाणा जुग जातरा, जुड़ंत देश देशरा ॥ १० ॥
विरम्मपुर तिम्मरी करंति न्टत्य अमरी ।
जालोर जेति सिंधरी; खम्भाइते खराखरी ॥ ११ ॥
प्रगट आप पाटणौ, सूरत सुखसैं घणौ ।
अनन्त तेज अहम्मदा, सुमंगलोर सर्वदा ॥ १२ ॥
साचोर भुज सासतो, तुरंत शत्रु भासतो ।
उदैपुरे जइ मरे, सेत्रावे कोटड़े गुरे ॥ १३ ॥
गुरु सदा उदौ करे, अेकान्त ध्यान जो धरे ।
भयंति भाण जेतलो, कीरती कोडि तेतली ॥ १४ ॥
कहुँ कितीक जीभ अेक, कोडि पी कला अनेक ।
दास तारो राख अेक, सुनिजर करो अनेक ॥ १५ ॥
कला अनेक कुशल गुरु, समर्यां होत हजूर ।
अलगी टाले आपदा, जिम अंधारे सूर ॥ १६ ॥
सूर तेज जिम सूर दूर आपद भय टाले ।
मात्रिता ज्युं दया करे, सेवक प्रति पाले ॥ १७ ॥
मन वांछित माइ बाप, कुशल गुरु कामिव दाता ।
पुनिम्म हरजै पाप, रहे जे ध्याने राता ॥ १८ ॥
सुप्रसाद "सोमसुन्दर" सुगुरु, अमैं सो मंडल गकरी ।
प्रगटीयो थम्भ मालीपुरे, विजै सिंध लीलावरी ॥१९॥

॥ इति ॥

※ श्री जिन कुशल सूरि स्तवन—राग-ढाल ※

जी हो धन वेला धन सा घडी, दादा जब भेटूं तुम्ह पाय ।
जी हो इम मन मांहि धरतो थकौ, दादा हुं आयो मुनिराय ॥१॥
कुशल गुरु पुरो वांच्छित काज, जी हो हुं छु सेवक ताह रो ।
दादा मुझ दुखियै तुझ लाज, कुशल गुरु पुरो वच्छित काज ॥२॥
जी हो जग माहे तूं परगट्यो, दादा जाणै इन्द नरिन्द ।
जी हो कस्तूरी केशर करी, जी हो नित पूजै नर वृन्द ॥३॥
जी हो दुख दोहग दूरे टलै, दादा जपतां अहि निसि नाम ।
जी हो पुत्र दिये अपुत्रिया, दादा निरगुणिया गुणधाम ॥४॥
जी हो महिमापुर मैं दीपतो, दादौ देरा उर सुविशेष ।
जी हो जैसल गिरवर पूजिये, दादौ भाजे दुःख अशेष ॥५॥
जी हो वीर मधुर सोवन गिरे, दादा योधपुरे विलसन्त ।
दादा जेतारण वलि मेड़ते, दादा लच्छि दीये बहु भन्त ॥६॥
जी हो अहिमदावाद खभायतै, दादा पाटण पूरे आम ।
जी हो श्री सूरत विक्रमपुरे दादा तोडे आपद पास ॥७॥
जी हो लाभपुरे तिम आगरे, दादा महिमा महिम मझार ।
जी हो सांगानेर अमरसरै, दादा सेवक जन सुखकार ॥८॥
जी हो इमपुर पुर थम्म प्रणमिये, दादा नासे सहु विषवाद ।
जी हो "राजसमुद्र" वीनवै, दादा समर्यां देज्यो साद ॥९॥

॥ इति थम्म वर्णन ॥

* राग—मल्हार *

जी हो भाव धरिने भेटीये, जी हो दादो मोटो देव ।
जी हो भटनेरेइ महिमा भली, जी हो सारे सुर नर सेव ॥
सुगुरुजी दीजे दरसण आज, जी हो श्री जिनकुशल सूरि
महाराज ॥ १ ॥

जी हो साहिब सुं सिरताज, जी हो नर निरधन धनवन्त ।
पुत्र कलत्र पामें भला, जी हो गुरु तूठा गुणवन्त ॥२॥ सु० ॥
जी हो परतिख परचो पूज्यरो, जी हो जाणे जग सहुलोय ।
जी हो अटवी मारी उधरे, जी हो तिसियाँ पावे तोय ॥३॥ सु०॥
जी हो संकट सायर विच पड्यां, जी हो तारे गुरु ततकाल ।
जी हो दूठ दीपाणे फगहुँतां, जी हो पिसुन करै पैमाल ॥४॥सु०॥
जी हो करि केहर भय उपसमै, जी हो फणपति होई फूलमाल ।
जी हो प्रेत पिशाच भूत शाकिनी, जी हो कसैन कोई जंजाल
॥ ५ ॥ सु० ॥
जी हो कहे कवीसर केतला, जी हो इण परि तुझ अवदात ।
जी हो जीह अेक मुख जेह ने, जी हो तुम गुण तो असंख्यात
॥ ६ ॥ सु० ॥
जी हो तिण कारण प्रभु अेतली, जी हो अरज करूं छूं अेह ।
जी हो प्रारथीयां पाहीडो यतां, जी हो हिव वरसाय। मेह
॥ ७ ॥ सु० ॥

जी हो घटा करी घन को मही, जी हो जलधर साचो जोर ।
जी हो तूं हीकडा काले सही, जी हो जीम हररेवे देखी मोर ।
॥ ८ ॥ सु० ॥

जी हो पूजंतां गुरु पादुकां, जी हो घमी केशर घनसार ।
जी हो पवित्र थई पूनम तिथे, जी हो रूर नैवेद्य प्रकार
॥ ९ ॥ सु० ॥

जी हो सद् गुरु तू सुरतरु समो, जी हो वंच्छित फल दातार ।
जी हो गुरु तूं माता पिता सही, जी हो सरणागत आधार
॥ १० ॥ सु० ॥

जी हो जेसाणे जाणे सही जी हो जोधपुरे जयकार ।
जी अहिपुर आस्यां पुरे जी हो सोझित माहि सुविचार
॥ ११ ॥ सु० ॥

जी हो मालपुरे वलि मेडते, जी हो महिमा वन्त मुनिराय ।
जी हो देराउर दीपै सदा, जी हो बीकाणे वर दाय ॥१२॥सु०

जी हो सागानेरे आगरे, जी हो लाहोरे लहिनूर ।
जी हो राजेपुरे राजेमदा, जी हो दुःख करे सब दूर
॥ १३ ॥ सु० ॥

जी हो नवे नगर दादा निरखतां जी हो अठ सिद्ध आवे आप ।
जी हो मोज दिये मुलताण में, जी हो सकल टले संताप
॥ १४ ॥ सु० ॥

जी हो खेजडै लेखो करी, जी हो बीलाड़े हु प्रेम।
जी हो जैतारण जुंहारतां, जी हो कुशल कुशल करे खेम
॥ १५ ॥ सु० ॥

जी हो साचोरे सोमा घरे, जी हो जालोरे असवास।
जी हो गाम नगर पुर पाटणै, जी हो अे गुरु पुरे आस
॥ १६ ॥ सु० ॥

जी हो संपति दीजै संघ ने, जी हो अवचले इम अभिराम।
हो राज वाचक कहे, जी हो उदय हरख तुम नाम
॥ १७ ॥ सु० ॥

॥ इति ॥

* अकबर प्रति वोधक श्रीजिन चन्द्र सूरिश्वर-गीत *

सारद पाय प्रणमी करी, गाइसु श्री जिणचन्द।
भाव भगतिय भोलीयकरी, मनि आणीरे मनि आणिरे अधिक
उ आणन्द ॥
वन्दउ रे-गच्छरायारे-गच्छरायारे-श्री जिणचन्द सूरि की ॥१॥

संवत् सोलह अड़तालीसइ गुरु विहरइ गुजराति।
अकबर गुरुना गुण सुणी, गुरु दरसणरे गुरु दरसण रे,
चाहइ दिन राति की ॥ २ ॥

अकवर कहइ करमचन्द भणऊ कहा तुम्हचे गुरू होइ ?
मन्त्री कहइ साहिब सुणउ, गुजरातइ रे गुजरातइं वरे,
विचरइ अब सोइ की ॥ ६ ॥

दे फरमाण बुलाविया, श्री जिणचन्द मुणिन्द।
वात सुणी गुरु पागुर्या, साथइ भलारे साथइ भलारे,
मुनिवरना वृन्द की ॥ ४ ॥
श्री सीरोही आविया, तिहा राजा सुरतान (सुलतान)।
गुरु नइ लाभ दिया घणा, पुनिम दिन रे पुनिम दिनरे,
जीव अभय दान की ॥ ५ ॥
गुरु जालाउरि पधारिया, तिहां किणि रह्या चउ मासि।
श्री जिनइ वचनइ करी, पूरइ भविपण रे भविपण रे,
मन केरी आस की ॥ ६ ॥
तिहां थी पाटण पागुरिया, गुरु करइ साधु विहार।
अबूझ जीव प्रति बूझवई, कलिजुग मइरे कलिजुग मइरे,
श्री गौतम अवतार की ॥ ७ ॥
फागुण सुदि बारसि दिनइ शुभ जोगइ गुरु चन्द।
श्री लाहोरि पधारिया, भवियण जाणेरे भवियण जाणेरे,
हुआ उच्छरंग की ॥ ८ ॥
तिणही दिनि अकबरमणी, सरी गुरु मिलवा जाइ।
दूर थकी देखी करी, अकबरजी रे अकबरजीरे,
जमु सनमुख आइ की ॥ ९ ॥
गुरु दरसण देखीकरी, करइ निज मुख गुण गान।
नेह सुणी सवि उवरा, मन मोहेरे मन मोहे रे,
हुया हयरान की ॥ १० ॥

गुरु नइ हुकुम दिया इसा, नित नित तुम्ह इहां आइ ।
धरम की वात कहयउ मुझे, इतनउ गुरु रे इतनउ गुरु रे,
हम करउ उपकारु की ॥ ११

एकन्तइ श्री जीभणी गुरु कहइ धरमनी वात ।
कुमत मति जनमति धिरहरइ, घूहड़ नइरे घूहड़ नइरे,
न सुहाई प्रभात की ॥ १२ ॥

श्रावण सुदि पड़िवा दिनइ, श्री श्री गुणाया सेख ।
साधु इसा तुमको देख्या, जिण राखी रे जिण राखी रे,
जग मांही रेख की ॥ १३ ।

नरपति सुसेखजी भणइ, सुणि साहिवा इक बोल ।
वहुत बहुत दरसिण देखे, नांहीं कोइ रे नाहीं कोइ रे,
इन ही कइ तोल की ॥ १४ ॥

इम सुणि अकबर हरखिया, आवइ सुह गुरु पासि ।
आदर मान देइ घणा, इम बोलइ रे इम बोलइ रे,
मन कइ उल्लास की ॥ १५ ॥

जु कछु चाहउ सुदीजियइ, तब पभणइ गुरुराय ।
सब दुनिया हम तजिरहे, हम चाहुँ रे हम चाहुँ रे;
जीव दया कउ उपाय की ॥ १६ ॥

करइ बगसीस अे गुरु भणी, श्री अकबर पति साहि ।
सात दिवस अम्मारितउ, पड़ह उदीयाउ रे उदीयाउ रे,
सति पृथिवी मांही की ॥ १७ ॥

गुरुना गुण देखी घणा, श्री अकबर भूपाल ।
जुग प्रधान पदवी दीनी, जाणह जगमइ रे जगमइ रे,
सहु बाल गोपाल की ॥ १८ ॥

सुह गुरु नइ उपदेश थइ, न मरि खंभाइत माहि ।
जलचर जीव ऊगारिया, हुकुमइकरी रे हुकुमइकरि रे,
श्री अकबर साहि की ॥ १९ ॥

वखतइ वानइ दिन दिनइ, खरतर गच्छी अवतस ।
तुम्ह ही वडे गुरु इणि जुगइ, इम अकबर रे इम अकबर रे,
जसु करइ प्रशंस की ॥ २० ॥

मात "सिरियादे" उरि धरिया, "श्री वंत" शाह मल्हार ।
इणि जग अे सम को नहीं, जसु नामइ रे जसु नामइ रे,
हुवइ जय जयकार की ॥ २१ ॥

रोहड वसइ अतिभलउ, जिण सासण सिणगार ।
अे गुरुना गुण अतिघणा, कवियण जण रे कवियण जण रे,
कुण पामइ पार की ॥ २२ ॥

जा लगी मेरु महीधर, जा सायर जा चन्द ।
"सुमति कल्लोल" सेवक भणइ, ता प्रतिपउरे ता प्रतिपउरे,
गुरु श्री जिणचन्द की ॥ २३ ॥

॥ इति ॥

* तर्ज—मतृ नी *

जुगवर श्रीजिनचन्दजी, जगि जिन शासन चन्द ।
प्रह समे उठी पूजिये, कामित सुरतरु कन्द ॥ १ ॥ जुग० ॥

संवते पनर पंचाणु ये, "श्रीवन्त" शाह मल्हार ।
मात "सिरियादेवी" जनमीयो, रीहड़ कुल शिणगार ॥२॥जुग०

संवत सोल चिडोतरे (१६०४) जाणी जेणे अथिर संसार ।
हाथे "जिनमाणिक सूरि" ने संग्रहो संजम भार ॥३॥ जुग०॥

वयर कुमार तणीपरे लघुवये बुद्धि भण्डार ।
गुरुकुलवासे वसि पामियो, प्रवचन सागर पार ।' ४ ॥ जुग० ॥

संवत सोल बारोत्तरे, जेशलमेर मझारी ।
भाग्य वले सूरि पदवी लही, हरखिया सविनर नारी ॥५॥जुग०॥

कठिण क्रिया जेणे ऊधरी, मांडियो उग्र विहार ।
सूरि "जिणवल्लभ" सारिखो, चरण करण गुणधार ॥६॥जुग०॥

पाटण सोल सतरोत्तरे, च्यार अैसी गच्छ साखि ।
खरतर विरुद दीपावीयो, आगम अक्षर दाखी ॥७। जुग०॥

सोरिपुरे हथिणा उरे, विमल गिरि गढ गिरनारि ।
तारंग अरवुद तीरथे, यात्रा करि बहु वारि ॥८॥जुग०॥

अकबर शाहि परिखियो, कसवटी कंचण जेम ।
पूज्यनी मधुर देशना सुणी, रंजियो शाही सलेम ॥९॥जुग०॥

सात दिवस वरताविये, मांहे दुनिया अभयदान ।
पञ्च नदी पति साधिया, वाधियो अति घणो वान ॥१०॥जु०॥
राज नगर प्रतिष्ठा करी, सबल मंडाणे गुरुराई ।
संघवी सोमजी लाछिनो, लाह लियो तिणे ठांई ॥११॥जु०॥
सुप्रसन्न जेहने मस्तके, गुरु धरे दक्खिण पाणि ।
तेह घरे केलि कमला करे, मुख वसे अविरल वाणि ॥१२॥जु०॥
दरसनी जिणे मुगता करी, सोल मिच्चर वापे ।
आविया नयर बिलाडये, सुगुरु रह्या चउमासे ॥१३॥जु०॥
दिवस आसू वदि बीज ने, उच्चरी अणशण सार ।
सुरपुरि सुगुरु सिधाविया, सुर करे जय जयकार ॥१४॥जुग०॥
नाम समरण नवनिधि मिले, मनिफले मंघनी आस ।
आधि ने व्याधि दूरे टले, संपजे लील विलास ॥१५॥जु०॥
केशर चन्दन कुसुम सु, चरचता सहु गुरुपाय ।
पुत्र सतान परिगल हुवे, दिन दिन तेज सवाय ॥१६॥जु०॥
"श्रीजिनचन्द्र सूरीसरू" चिर जयउ जुग प्रधान ।
इणि परे गुरु गुण संथुणे, पाठक "रत्न निधान ॥१७॥जु०॥

॥ इति सम्पूर्णम् ॥

* दोहा *

शासन पति वर्द्धमान ने, नमन करी कर जोड़ ।
गणधर पद गुण वर्णना, करता वञ्छित कोड़ ॥ १ ॥

प्रथम पाट महावीर ने, स्वामी सुधर्मा जाण ।
तिम जंबू थी इग्यार में, आर्य सुस्थित जाण ॥ २ ॥

कोटि सूरि मंत्र जाप थी, प्रगट्यो कौटिक गच्छ ।
वज्र स्वामीथी ते वली, वज्र शाख थई स्वच्छ ॥ ३ ॥

सूरि श्री वज्रसेन ने, पाटे चन्द्र सूरीश ।
चन्द्र-कुल ते हथी थयुं, जैन श्रमण गुण ईश ॥ ४ ॥

प्रभु पाटे अड़त्रीश में, प्रगट्या उद्योतन सूर ।
तस पद वर्द्धमाने लह्यो, करी चैत्य वास ने दूर ॥ ५ ॥

सोमनाथ ना वयण थी, सुणी शिवदाता वर्द्धमान ।
बेनि युत ले बे बांधवा, जिन दीक्षा गुणखाण ॥ ६ ॥

पाटे श्री वर्द्धमान ने, सूरि जिनेश्वर ठाण ।
बंधव बुद्धि सागर थया, आर्या सरस्वती जाण ॥ ७ ॥

अणहिल पुर पाटण सभा, गुर्जर देश मझार ।
पृथ्वीपति दुर्लभ वसे, श्रावक गुणना धार ॥ ८ ॥

चर्चा चैत्यवासि थी, करी जिनेश्वर तास ।
श्रमण गुणथी जीतिया, खरतर नाम सुधाम ॥ ९ ॥

विक्रम सहस ने अंसीये, विरुद अेह गुण खाण ।
दुर्लभ नृप अर्पण करे, विबुध सभाअे ठाण ॥ १० ॥

तस पदे जिनचन्द्र थया, अभय देव सूरि तास ।
थंभण पाए प्रगटावीया, वृत्ति नवांगी जास ॥ ११ ॥

छंडी कुर्चपुर चैत्यने, थया अभयदेव सुरीश ।
विधि मारग पूरण वर्णव्यो, जिन वल्लभ सूरीश ॥ १२ ॥
भव्य उद्धारक प्रगटीया, श्री जिनदत्त सूरिन्द ।
युग प्रधान पद शोभता, समरे सुरनर इन्द ॥ १३ ॥
मणि मण्डित भालस्थले, श्री जिनचन्द्र अणगार ।
उभय लोक सु काति कर, दत्त सूरिन्द पटधार ॥ १४ ॥
जिन पति जिनेश्वर वली, जिन प्रबोधने जिनचन्द ।
चार राज शिर आणव हे, राजगच्छ गुण कन्द ॥ १५ ॥
आशा पूरण देव थया, दादा कुशल सूरीन्द ।
पूनम सोम दर्शन करी, लहे वञ्छित जन वृन्द ॥ १६ ॥
कुशल पदे पद्म सूरि ने, प्रगटयुं ज्ञान अमद ।
भारति कंठ विरुद लह्यु, भवियण नयनानन्द ॥ १७ ॥
लब्धि सूरि जिनचन्द्र गुरु, जिनोदय ने जिनराज ।
भद्रसूरि जिनचन्द्र गुरु, समुद्र नमो हित काज ॥ १८ ॥
तस पदे जिन हम गुण, उज्वल हम सूरि राज ।
गुण माणिक निर्मल वली, माणिक्य सरि मुनिराज ॥१९॥
स्वामी सुधर्म परपरा, पाटे अकमठ मे जाण ।
चकित कर्यो अकबर शाह ने, श्री जिनचन्द्र गुणखाण ॥२०॥
तास गुण वर्णन करू, भाषा गुर्जर सार ।
"समय सुन्दर" जेवर्णव्युं, तसलेश अे निर्धार ॥ २१ ॥

॥ इति सम्पूर्णम् ॥

* तर्ज—माढ *

दादा अन्तरयामी, शिव सुख कामी, नामी हो गुरुदेव ॥टेर॥

श्री जिनदत्त सूरीश्वर साहेब, मणिधारी जिनचन्द्र ।
दादा कुशल सूरीश्वर साहेब, मुनिगण में जिम चन्द्र रे
॥ दादा० ॥ १ ॥

अकबर प्रति बोधक सूरीश्वर, श्री जिनचन्द मुणिन्द ।
नभ मण्डल में चन्द्र उगायो, प्रत्यक्ष पूनम चन्द्र रे
॥ दादा० ॥ २ ॥

अगम अगोचर सद्गुरु प्यारा, महिमा का नहीं पार ।
सुर नर वृन्द करे तोरी सेवा, हो जावे भव पार रे
॥ दादा० ॥ ३ ॥

भीड़ भंजन गुरुदेव हमारे, भक्तों के प्रतीपाल ।
निखिलजनाश्रय दादा हमारे, करिये हमारी संभाल रे
॥ दादा० ॥ ४ ॥

कर जोड़ी विनय युत वन्दन, स्वीकारो गुरुराज ।
"चन्द्रयशा" के तुम हो स्वामी, तारो भव जल पाज रे
॥ दादा० ॥ ५ ॥ इति ॥

* तर्ज-तेरे द्वार खड़ा भगवान, भक्त भर दे रे झोली *

गुरु चरण शरण मन धार भवि शिवसंपद पावो रे

दुख दोहग दूर पलाय किरती यश जगमें अधिक सवाय ॥
॥ भवि० ॥ टेर ॥

वडली ग्राम "श्रीमन्त" शाह दीपे, गौत्र रोहड ओशवाल ।
"सिरिया देवी" सति शिरोमणी, शील शुचि रखवाल रे
शील शुचि हो ····हो
रत्न कुक्षि जग भाण प्रगट भयो "श्री सुलताण कुमार" ॥भवि०··
शासन रसिक स्वभाव बाल, "माणिक" मुख बोधि पावे
"सुमतिधीर" नाम से दीक्षित, वज्र शील शुभ भावे रे—
वज्र शील हो ··हो ··
शिथिलाचार से खिन्न मुनिश्री शुद्ध संयम चित्तधार ॥भवि०॥२
बुद्धि निधान शास्त्र पारगत, चूडामणि सोहे
मुनिजन नायक सिंह सरीखे, सघ सकल मन मोहे रे —
सघ सकल ·· हो, हो
राउल जैसलमेर सकल सघ "माणिक सूरी" पट्ट थापे ॥भवि.॥३
सूरिमत्र के साधन गुरु, जिनचन्द्र नाम अघधारी,
शासन प्रभावना काजे कीनो, क्रियोद्धार भवपारी रे —
क्रियोद्धार ·· हो ·· हो ···
शिथिलाचार हटानी मुनिजन, कीना शुद्ध आचारी ॥भवि ॥४॥
सुधर्मा स्वामी पाट परम्परा-इगसठ मे गुरु छाजे ।

असत्य मिथ्या प्ररूपक "धर्मसागर" मद भांजे रे ।
धर्मसागर······ हो ······ हो ···
राजा प्रजा राव रंक सभी, गुरु दर्शन को तरसे ।।भवि०।।५।।

अतिशय संयम तप बलधारी, समता रस भंडारी
दरश पाय अकबर चित हरख्यो, जीव दया फरमाणी रे···
जीव दया ।। हो ······ हो ······
अम्मावस को चान्द उगायो जिन शाशन बलिहारी ।।भवि.।।६।।

वीर धर्म प्रभावना काजे, संयम बल प्रगटावे
बकरी संख्या तीन जताकर, शाहनशाह चमकावे रे—
शाहनशाह······ हो ······ हो ··
ओवा से टोपी ताड़न कर, काजी मद चूर करावे ।।भवि.।।७।।

हुमायु सुत गुरु संगत से; मधुर देशाना पावे ।
संत महंत मुनीश की आशीस, पाने को तरसावे रे —
पाने को ।। हो ······ हो ······
युग प्रधान पदवी से भूषित करतो शाहनशाह ।।भवि०।।८।।

श्रावक "कर्मचन्द" मंत्रीश्वर धर्म बुद्धि बलधारी
गुरु आज्ञा शिर धरता करता, धर्मोत्सव अति भारी रे —
धर्मोत्सव ।। हो ······ हो ······
वीर धर्म का मर्म समझ के, जनम कृतारथ कीना ।।भवि.।।९

शत्रुंजय रक्षा की आज्ञा, शाह 'करम" को देवे ।

शिवा सोमजी मघपति धन्य, खरतर वसी निमांवे रे —
खरतर वसी ॥ हो '' हो '' ''
संघ-चतुर्विध साथ गुरु ने यात्रा की शुभ भावे ॥मवि०॥१०॥
साधु विटम्बना जहांगीर ने कीनी शाही हुकम से ।
द्रुतगति पाटन से गुरुवर आगरा पहुँचे झट से—
आगरा ॥ हो '' '' हो '' ''
हुकम शाह से रद कराया-चरजा भट्ट हराया ॥भवि०॥११॥
संवत पन्नर पच्चाणु (१५९५) अे जन्मे, शोल चिडोत्तरे
(१६०४) दीक्षा ।
सोल बारोत्तरे (१६१२) आचारज पद, सितेर (१६७०)
अनशन सिध्यारे—
सित्तरे ॥ हो '' हो '
नगर विलाडा धन धन भूमि, समता शान्त रस भीना ॥मवि.॥१२
युग प्रधान विन वीर धर्म की, गूढता कौन वतावे ।
दया धर्म उपनाम भीरुता ग्रथी, कौन हटावे रे—
ग्रथी कौन ॥ हो '' हो '' ''
त्रिशला 'कुंवर' के नामी पटोधर दर्शन निर्मल देना ॥मवि ॥१३

॥ इति ॥

※ तर्ज—केशरिया थांसु ※

॥ गणनायक पू० तपस्वीजी श्री छगनसागरजी म० सा० की गहूँली ॥

धन धन दिन जय है—आज जयन्ति गुरुराज की ॥ टेर ॥

गच्छ नायक श्री गणाधीश ने, फलवर्द्धि उजवाली ।
"सागरमल" कुल गोत्र गोलेच्छा, "चन्दना" मात मल्हारी रे
॥ धन० ॥ १ ॥

चैत्र सुदी तेरस दिन जय जय, वीर जन्म दिन सोहे ।
पाप ताप मिथ्यात्व मिटावन, अवतार संत मन मोहे रे ॥ध. २॥

सुख सागर भगवान हमारे, ध्यान सागर मन भाये ।
संयम छोगालो छोगमलजी, मुनि पद दीक्षा पावे रे ॥ध. ३॥

छगन सागर संयम शुद्ध रसिया, रत्न त्रयी आराधे ।
धर्म मार्ग प्रभावन काजे, ज्ञान ध्यान चित्त धारे रे ॥ध. ४॥

देश विदेश विचरी सद्गुरु ने, भाव दया दिल धारी ।
निज पर मत सभी संत जनों का, पाया प्रेम अपार रे ॥ध. ५॥

अन्तिम चौमासा लोहावट में, तपस्या अनुपम धारी ।
बावन दिन शुभ ध्यान में लीना, नवकार मंत्र उच्चारी रे ॥ध. ६॥

गुरु षष्टी भाद्रवा पखकी, धन्य भई तपस्या से ।
गणाधीश संवर निर्जरता, त्रेपन दिन कारज सिध्यारे ॥ध. ७॥

हरि मागर अरु साधु साध्वी, वैया वच्च में लीने ।
श्रावक समुह को संघ भोलारण, दीनी प्रेम रस भिनारे ॥घ. ८
आवो हम सब मिल गुण गावें, निज आतम सुख पावें ।
काम कपाय ताप शान्त कर, त्रिशला "कुंवर" पथ जावें रे
॥ घन० ।। ९ ॥

॥ इति ॥

* तर्ज—वीर जिना हूँ डोलूं मव वन में रयो *

॥ प्रखर वक्ता,-सूरीश्वर-वीरपुत्र-स्वर्गीय गुरुदेव श्री आनन्द-
सागर सूरीश्वरजी म० सा० का कीर्तन विरहमय ॥

शासन नायक सूरीश्वर गुरुदेव थे, कहां पधारे आप कहो-
गुरुदेव हो ।। शासन० ॥ १ ॥
भारत हमरा शून्य हुआ गुरुदेवजी, किससे पुकारे कौन
सुने गुरुदेव हो ।। शासन० ॥ २ ॥
आशा थी हमको बड़ी आप से ज्ञान की, बिच में काल ने
धोका दिया भगवान हो ॥ शासन० ॥ ३ ॥
दिव्य अनुपम कृपा रखते आप ही, उसमें विघ्न किया
दुश्मन की छाप हो ॥ शासन० ॥ ४ ॥
अहो अहो करुणानिधि मेरे गुरुराजजी, कहां छिपे जाकर
बतलावो आज हो ॥ शासन० ॥ ५ ॥

प्रखर वक्ता सिद्धान्त वेदी आप थे, वीर पुत्र प्रभु शासन के शृङ्गार हो ॥ शासन० ॥ ६ ॥

वीर शिरोमणि आनन्द दायक नाम था, आनन्द सिन्धु सूरीश्वर भगवान हो ॥ शासन० ॥ ७ ॥

हा - हा कार मचा पालीताणा शहर में, शून्यता छा गई गुरुवर की चारों मेर हो ॥ शासन० ॥ ८ ॥

अन्तिम चौमासी की पालीताणा नगर में, नहीं जाना व कर दिखलाया मेरे स्वाम हो ॥ शासन० ॥ ९ ॥

कौन आश्वासन देवे हमको आन के, कौन करे श्रमणादिका सनमान हो ॥ शासन० ॥ १० ॥

जिन वचनामृत से शान्ति को धारते, दयानिधि गुरुदेव करो भवपार हो ॥ शासन० ॥ ११ ॥

वीर सम्वत् सत्यासी-पोषज मास में सूरीश्वर नी स्मृति रहे नित खास हो ॥ शासन० ॥ १२ ॥

चरण शरण में रहने वाली सेविका, वाला "प्रमोद" र के तुम तारण हार हो ॥ शासन० ॥ १३ ॥

॥ इति ॥

॥ स्वर्गीया श्रीमती-विदुषी-बालब्रह्मचारिणी श्री चन्द्रयशा श्री जी महाराज की विरह ॥

* गहूँली *

*** तर्ज—आलम में डंका जिनमत का ***

चन्द्रयशा श्रीसा जग में कीर्ति फैला करके, आतम का उद्धार सदा करके। चारित्र रमणता मे रम करके, सिद्धाये गुरु वर्या स्वर्गन मे ॥ १ ॥ सिद्धा० ॥

आप नगर "भुज" मे जन्म लेकर के, कच्छ देश में डंका बजा कर के, समार असार को तज करके ॥२॥सिद्धा०॥

बचपन मे चारित्र लेकर के, अखण्ड ब्रह्म व्रत धर कर के, गुरु आज्ञा से सब सेवा करके ॥ ३ ॥ सिद्धा० ॥

आप सूत्र सिद्धान्त को पढ़ करके, गुरुवर्या (प्रमोद श्रीसा) को ही दीपा करके, शासन की शोभा बढ़ा करके ॥४॥सिद्धा०

आप ग्राम, नगर में विचर करके. भविजन को मार्ग दिखा करके, ज्ञान, ध्यान, तप, जप करके ॥ ५ ॥ सिद्धा० ॥

अशाता वेदनी शान्ति से सह करके, निज कर्मों को ढीला करके, अन्तिम चौमासी गुरु के निकट (पास) करके ॥ ६ ॥ सिद्धा० ॥

दश दिन का ही अनशन करके, सब जीवों को ही क्षमा करके, भव भव की आलोचना लेकर के ॥ ७ ॥ सिद्धा० ॥

शोलह भावना भा करके, गुरु वर्या के गोद में शर धर के, वीश वर्ष पर्याय पालन करके ॥ ८ ॥ सिद्धा० ॥

आप करुणालय वन - करके, पर उपकार सदा करके, "माणक देवी" की कुक्षी दीपा करके ॥ ६ ॥ सिद्धा० ॥

दो हजार वीश की शाल को ले करके, पर्यू षण पर्व दिल धरके, चौदश के दिन को अमर करके ॥ १० ॥ सिद्धा० ॥

अर्जी "आशादेवी" की दिल धरके, नित्य दर्शन दो कृपा करके, मेरी आतम ज्यौति जगा करके ॥११॥ सिद्धा० ॥

॥ इति ॥

❀ आरती ❀

जय जय गुरुदेवा आरति मंगल मेवा आनन्द सुख लेवा । टेर॥

इक व्रत दुय व्रत तीन चार व्रत-पंचम व्रत में सोहे ॥ गु० ॥
जगत जीव निसतारण, सुर नर मन मोहे ॥ जय० ॥ १ ॥

दुःख द्रोह सब हर कर - सद्गुरु राजन प्रतिबोधे ॥ गु० ॥
सुत लखमी वर देकर - श्रावक कुल सोधे ॥ जय० ॥ २ ॥

विद्या पुस्तक धर कर - सद्गुरु मुगल पूत तारे ॥ गु० ॥
वश कर जोगन चौसठ - पांच पीर सारे ॥ जय० ॥ ३ ॥

बीज पडंती वारी सद्गुरु - समुद्र जहाज तारी ॥ गु० ॥
वीर किये वस बावन प्रगटे अवतारी ॥ जय० ॥ ४ ॥

जिनदत्त, जिनचन्द्र, कुशल सूरि - गुरु खरतर राजा ॥ गु० ॥
चोराशी गच्छ पूजे मन वांच्छित - ताजा ॥ जय० ॥ ५ ॥
मन शुद्ध आरती कष्ट निवारण सद्गुरु की कीजे ॥ गु० ॥
जो मागे सो पावे जग में जश लीजे ॥ जय० ॥ ६ ॥
विक्रमपुर मे भगत तुम्हारो, मंत्र कलाधारी ॥ गु० ॥
नित उठ ध्यान लगावत - मन वांच्छित फल पावत - राम ऋद्धि सारी ॥ जय० ॥ ७ ॥ इति ॥

* मङ्गल दीवा *

मंगल दीपक गुरु का कीजे मन वच्छित फल कारज सीझे ॥ मगल० ॥ टेर ॥
मगल दीप मगल अड़भासे, घर घर मगल भाव प्रकाशे ॥ मगल० ॥ १ ॥
करे करावे मगल माला, अन धन लक्ष्मी लहे सुविशाला ॥ मगल० ॥ २ ॥
अलिय विघ्न हर मगल दीवो, "ऋद्धिसार" भविजन चिरंजीवो ॥ मगल० ॥ ३ ॥

शुभम् भूयात् * सुखं भूयात् * भूयात् कल्याण मुत्तमम्

ॐ अर्हं नमः

द्वितीय विभाग

प्रथम दादा गुरुदेव—

श्रीजिनदत्त सूरीश्वर—पूजा



* श्री गुरुपद स्थापना *

(शार्दूल विक्रीडितम्)

ॐ अर्हं जिनदत्तसूरि-सुगुरो ! निष्पापबोधोद्धुरो-
दाराचार - विचार - सार पदवी-संपादक ! श्रीगुरो ।
स्फूर्जत्सत्य - सुखोदधे ! सुभगवत्भव्यात्म सन्निधे ।
भूपीठे हरिपूज्य ! देव ! दयया स्वीयावतारं कुरु ॥

❀ आह्वान मन्त्र ❀

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्रीजिनदत्तसूरि सुगुरो ।
अत्रावतरावतर स्वाहा ॥

❀ स्थापना मन्त्र ❀

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्रीजिनदत्तसूरि - सुगुरो ।
अत्र तिष्ठ २ ठः ठः ठः स्वाहा ॥

❀ सन्निधिकरण मन्त्र ❀

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्रीजिनदत्तसूरि - सुगुरो । - मम सन्निहितो भव वषट् स्वाहा ॥



१—जल पूजा ।

दूहा—

ॐ अर्हं ध्याउ धुरे, सहज समाधि निदान ।
श्रीगुरुपद पूजा रचूं, प्रकटे गुरुपद ज्ञान ॥ १ ॥
गुण गुरु गुरु सेवा सदा, मन मेवा दातार ।
मन-वच-काया से करू, गुरू सेवा सुखकार ॥ २ ॥
जिन शासन नर भवन मे, दृढतर थम्भ समान ।
खरतर विधि पालक हुए; गुरु गुण ज्ञान निधान ॥ ३ ॥
श्रीजिनदत्त शिरोमणि; गुरु पदधारी सार ।
पूजनतें प्रकटे मही; गुरुपद गुण भंडार ॥ ४ ॥
आतम उज्जल वस्त्रपे; लगा करम-मल कीच ।
निर्मलता हित धोइये; गुरु सेवा-जल बीच ॥ ५ ॥
पूज्य पुरुष-पूजन किये; प्रकटे पूज्य स्वभाव ।
यातें 'पूजन' कीजिये; भविजन द्रव्यऽरुभाव ॥ ६ ॥
जल चन्दन अरु पुष्प वर; धूप सुगन्धित वास ।
दीपाक्षत नैवेद्य फल; पूजा करू प्रकाश ॥ ७ ॥

* तर्ज—चिन्ता चूर चिन्तामणि पास प्रभु० *

गुरुदेव की सेव सदैव करो,
निज पुण्य परम भण्डार भरो ॥ टेर ॥

जो भर सुगन्धित जल कलश, गुरु चरण कज प्रचालते ।
कर्म के सब पाप मल वे, दूर ही तें टालते ॥
निज रूप अनूप करो उजरो ॥ गुरु० ॥ १ ॥

प्रभु वीर शासन में हुए, श्री गौतमादिक गुरुवरा ।
संसार में जिनका विमलतर, ध्यान है मंगलधरा ॥
नितध्यान करो सब पाप हरो ॥ गुरु० ॥ २ ॥

कुछ मध्य में अति हीन काल, प्रभावतें अति हीनता ।
होने लगी थी साधुओं में, चैत्यवास मलीनता ॥
यही आज कहे इतिहास खरो ॥ गुरु० ॥ ३ ॥

श्री वर्द्धमानाचार्यपद, सूरि जिनेश्वर सूर्य से ।
उस तिमिर पूरितकाल में, चमके सुखरतर कार्य से ॥
उनके सत्य प्रकाश का बोध करो ॥ गुरु० ॥ ४ ।

फिर सिंहनाद सुवाद भी, सूरि जिनेश्वरने किया ।
मृग चैत्यवासी भग गये, खरतर विरुद दुर्लभ दिया ॥
उसी सुविहित पथ में भवि विचरो ॥ गुरु० ॥ ५ ॥

दोष लांछन रहित उनके, शांत कांति हुए सुधी ।
जिन चन्द्रसूरि चन्द्र से, संवेग रंग सुधानिधि ॥
उनकी सुविधि सुधा का पान करो ॥ गुरु० ॥ ६ ॥

पट्ट उनके धीर निर्भय, अभयदेवाचार्य वर ।
नव अंग टीकाकार तीरथ, पाम थभण प्रकट कर ॥
उनके शरण अभय वरदान वरो ॥गुरु०॥ ७ ॥

उनके विशद पद गगन में, रवि मम तमो नाशक महा ।
कवि वीर जिन वल्लभ सुजस, जिनका जगत मे हो रहा ॥
उनका सुजश सदा मुख से उचरो ॥गुरु०॥८॥

पाखण्ड खण्डन के लिये, सामर्थ्य जो पूरा धरे ।
हैं संघपट्टक आदि जिनके, ग्रन्थ तत्त्वों से भरे ॥
पढ़ के तत्त्वरमणता, नित्य करो ॥गुरु ॥९॥

प्रख्यात उनके आज भी, जिनदत्तसूरि राज हैं ।
अतिशय भरे अवदातमय, जो भव्यजन सरताज हैं ॥
दादा नाम सुपावन याद करो ॥गुरु०॥ १० ॥

दादा गुरु सुख सिन्धु है, भगवान हैं आधार हैं ।
गुरु के चरण प्रक्षालते, 'हरि" होत भव जल, पार हैं ॥
यातें प्रथम विमलजल पूजा करो ॥गुरु० ॥११॥

॥ श्लोक ॥

सत्त्वामृताय सरसात्मपदाय मूलात्–
तृष्णादि दोष दलनाय मलक्षयाय ।
तत्तद्गुणेन विमलेन जलेन भक्त्या,
दादोपमज्जिनदत्तगुरुं यजेऽहम् ॥

मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परम पुरुषाय परमगुरु देवाय भगवते
जिनशासनोद्योतकाय दादा श्रीजिनदत्त
सूरीश्वराय जलं यजामहे स्वाहा ॥



२—चन्दन पूजा ।

दूहा—

श्रीगुरु चन्दन वृक्षतें, त्रिविध ताप मिट जाय ।
यातें चन्दन पूजना, करो सदा सुख दाय ॥

तर्ज—जिन धर्म का डंका आलम में बजवा दिया वीर जिनेश्वर ने

मिथ्यात्व कुवास को दूर किया,
दादागुरु दत्तसूरीश्वर ने ।
जिनधर्म सुवास विशेष यहां,
फैला दिया दत्तसूरीश्वर ने ॥ टेर ॥
जब धर्म के नाम यहां भारी,
पाखण्ड जमाया जाता था ।
निर्भय हो उसको दूर किया,
तब युगवर दत्तसूरीश्वर ने ॥ मिथ्या० ॥ १ ॥
जब रात में वेश्याएं नाटक,
जिन मन्दिर में नित करती थी ।

अविधि-विधि भेद प्रकाश किया,
तब श्रीजिन दत्तसूरीश्वर ने ॥ मिथ्या० ॥ २ ॥
जब झूंठे गच्छ कदाग्रह में,
गृही गण को फादा जाता था ।
जिन शासन का सच्चा पथ तब,
दिखला दिया दत्तसूरीश्वर ने ॥ मिथ्या० ॥ ३ ॥
जिन मन्दिर में गद्दी अपनी,
मुनिनाम धारी जन रखते थे ।
मन्दिर—यति धर्म स्वरूप तभी,
समझाया दत्तसूरीश्वर ने ॥ मिथ्या० ॥ ४ ॥
निर्गुणदुष्कुल में जन्मे को,
स्वारथहित द्रव्य को देकर के ।
वैसे गुरु शिष्य बनाते थे,
छुड़वाया दत्तसूरीश्वर ने ॥ मिथ्या० ॥ ५ ॥
जब विषय कषायाधीन हुए,
मुनि देव द्रव्य को खाते थे ।
उसका भी खण्डन खूब किया,
सयमी गुरु दत्तसूरीश्वर ने ॥ मिथ्या० ॥ ६ ॥
सुखसागर वे भगवान बनें,
त्रिभुवन में उनका यश पसरे ।

सुविहित आचार को पालें जो,
फरमा दिया दत्तसूरीश्वर ने ॥ मिथ्या० ॥ ७ ॥

दुर्जन विषधर का ताप नहीं,
होगा चन्दन पूजा रचते ।
"हरि" पूज्य हुए पूजा करते,
उपदेशा दत्तसूरीश्वर ने ॥ मिथ्या० ॥ ८ ॥

श्लोक—

दुःखोपताप हरणाय महद्गुणाय,
यद्वा द्विजिह्व कृतदोपनिवारणाय ।
सच्चन्दन-प्रवर-पुण्यरसेन श्रीमद्-
दादोपसंज्ञजिनदत्तगुरुं यजेऽहम् ॥

मन्त्र—

ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं परम पुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते
जिनशासनोद्दीपकाय दादा श्रीजिनदत्त
सूरीश्वराय चन्दनं यजामहे स्वाहा ॥



३—पुष्प पूजा ।

दूहा—

सुमनस् सद्गुरु सेवना, सुमनस् शिवको देत ।
सुमनस् भविजन कीजिये, सुमनस्–पद संकेत ॥

(तर्ज—मैं आया तेरे द्वार पर कुछ लेकर जाऊंगा)

श्रीगुरु सुमनस् सेवना, नित कीजें विविध प्रकार ।
हैं जिनदत्त सूरीश्वरु, गुरु सुमनस् शिव दातार ॥ टेर ॥

ग्यारहसौ बत्तीस में, धवलक्कनगर मझार ।
हुम्बड़कुल आकाश में, जो प्रकटे शुभ दिनकार ॥
श्रीगुरु सुमनस्० ॥ १ ॥

वाछिगमा मन्त्री श्रीमती, वाहडदे गुण भण्डार ।
धन्य धन्य जगमे हुए जसु, मात–पिता जयकार ॥
श्रीगुरु सुमनस्० ॥ २ ॥

श्रीधर्मदेव पाठक से दीक्षा, शिक्षा लेकर सार ।
लघुवय इस्तालीस में, हुए सोमचन्द्र अनगार ॥
श्रीगुरु सुमनस् ॥ ३ ॥

उपस्थाना वाचना; गुरुमन्त्र विशेष प्रकार ।
दें अशोक चन्द्र-हरिसिंह वर आचार्य विशुद्धाचार ॥
श्री गुरु सुमनस्० ॥ ४ ॥

जब स्वर्ग सिधारे श्रीगुरु-जिनवल्लभ जगदाधार ।
श्रीदेवभद्र आचार्य ने, तब करके खूब विचार ॥
श्री गुरु सुमनस्० ॥ ५ ॥

युगप्रधान पद योग्य हैं श्रीसोमचन्द्र अनगार ।
जान यही उनका किया सूरिपद का संस्कार ॥

श्री गुरु सुमनस० ॥ ६ ॥

नामकरण जिनदत्त सूरि, सदगुण के अनुसार।
जपते दुख दूरे टले, सुख होवे अपरंपार ॥

श्री गुरु सुमनस० ॥ ७ ॥

गुरु सुमनस् सौरभ का हुआ, तिहुँ लोक में पुनितप्रचार।
गुरू सुमनस् पूजा कीजिये, 'हरि' सुमनस् हो नर नार ॥

श्री गुरु सुमनस्० ॥ ८ ॥

श्लोक

सत्सौरभाय सुकुमार गुणाय दीव्यद्—
रूपाय कान्त सुमनः पद दर्शनाय।
प्रेङ्खत्सुगन्धसुमनोभिरभिष्ठदेवं
दादोपसञ्ज्ञजिनदत्त गुरूं यजेऽहम् ॥

मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परम पुरुषाय परम गुरू देवाय भगवते
जिनशासनोद्दीपकाय दादा श्री जिनदत्त
सूरीश्वराय पुष्पं यजामहे स्वाहा।



४—धूप पूजा।

दोहा

सद्गुरु पूजो धूप से, वरते मंगल माल।
काल अनादि कुवासना, दूर करे तत्काल ॥

(तर्ज—जमुनाजी में खेले हरि राम लला)

दादागुरु पूजो धूप धरी,
दुर्गन्ध अनादि की जाय टरी।
दादागुरु पूजो धूप धरी॥ टेर॥

जिनदत्तगुरु आचार्य हुए,
जिनवल्लभ सद्गुरु पाटधरी॥ दादा०॥ १॥

भविजन सुखिये जय जय उचरे,
गुरु देशना अमृत पान करी॥ दादा०॥ २॥

जिनशेखर पर उपकार किया,
उसके अपराध सभी विसरी॥ दादा०॥ ३॥

मरुधर में प्रथम विहार किया,
विधि की वर ज्योति तभी पसरी॥दादा०॥४॥

धनदेव को सद्गुरु बोध करें,
आगम विधि रीति विशेष करी॥ दादा०॥५॥

अजमेर में अर्णोराज नमे,
मन्दिर हित भूमिदान करी॥ दादा०॥६॥

पाटनगुरु बागड देश करें,
भविजन माने आनन्द धरी॥ दादा०॥७॥

गुरु सन्मुख भविनय भाव भरें,
समकित सह विरति को उचरी॥ दादा०॥८॥

जयदेव-सूरि उपसम्पद ले,
गुरु वसतिविधि उन चित्त ठरी ॥ दादा० ॥ ९ ॥
निज चैत्य वास जिनप्रद छोड़े,
जिनदत्त परम गुरु चरण परी ॥ दादा० ॥ १० ॥
महिमा मुख से नहीं जाय कही,
महिमा मही मण्डल खूब भरी ॥ दादा० ॥११॥
गुरु गुण महिमा जो भवि गावें,
सुख सम्पति उनकी सहचरी ॥ दादा० ॥ १२ ॥
गुरु सनमुख धूप सुगन्धी धरो,
सब पाप पुंज तब जाय जरी ॥ दादा० ॥१३॥
सुखसागर गुरु भगवान भजो,
गुण गावें सुर "गणनाथ हरि" ॥दादा०॥ १४॥

श्लोक—

स्वीयोर्ध्व सिद्धिगतये सतत सदाशा-
सम्भूतये परिमलोत्तमकीतयेऽपि ।
दुर्गन्धदोपहतये वर-धूप-गन्धै-
दादोपसज्ञ-जिनदत्त गुरुं यजेऽहम् ॥

मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परम पुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते
जिनशासनोद्दीपकाय दादा श्रीजिनदत्त
सूरीश्वराय धूपं यजामहे स्वाहा ॥

५—दीपक पूजा ।

दोहा—

गुरु दीपक पूजा करो, प्रकटे परम प्रकाश ।
दीपक गुण विस्तारतें, हृदय तिमिर हो नाश ॥

(तर्ज—प्रभुधर्म नाथ मोहे प्यारा, जगजीवन मोहन गारा)

❀ राग—बनजारा ❀

पूजो पूजो परम गुरु प्यारे,
जिनदत्त जगत रखवारे ॥टेर॥

अम्बा अक्षर लिख देवी, नागदेव को श्रीमुख कहेती ।
वो बांचे गुण अनुसारे, सो युगवर पद गुण धारे ॥
पूजो पूजो परम गुरु० ॥ १ ॥

जब कोई नहीं पढ पाया, तब श्रीगुरु को दिखलाया ।
निज वास चूर्ण गुरु डारे, पढ चेला वचन उचारे ॥
पूजो २ परम गुरु० ॥ २ ॥

जय जय जिनदत्त प्रधाना, मरुधर मे कल्प समाना ।
सुर सेवक सदा मारे, सब दुःख दुर्गति को वारे ॥
पूजो २ परम गुरु० ॥ ३ ॥

गोहिल-डामी अन्याये, मकागामी जब दुःख पाये ।
लशा पाकर विप्र विचारे, तब श्रीगुरु शरण सिधारे ॥
पूजो २ परम गुरु० ॥ ४ ॥

गुरु ने फरमाया जाओ, राजा राठोड़ बनाओ।
नीति-बल-गुण-आकारे, सींहोजी दुख विदारे ॥
पूजो २ परम गुरु० ॥ ५ ॥

सींहोजी कनोज से आवें, श्री गुरु को शीश नमावें।
गुरु दे आशीष अपारे, घूरें तब विजय नगारे ॥
पूजो २ परम गुरु० ॥ ६ ॥

पाली में जंग जमावें, सींहोजी बल दिखलावें।
गोहिल डांमी सब हारें, राठोड़ विजय विस्तारें ॥
पूजो २ परम गुरु० ॥ ७ ॥

सींहोजी अव्याबाधे, नवकोटी मरुधर साधे।
गुरु दीपक के उजयारे, अन्धेर सुदूर निवारे ॥
पूजो २ परम गुरु० ॥ ८ ॥

सन्तान जो मेरे होंगे, गुरु खरतर उनके होंगे।
सींहोजी प्रतिज्ञा धारें; गुरु पुजें विविध प्रकारे ॥
पूजो २ परम गुरू० ॥ ९ ॥

गुरु सुखसागर भगवाना, सेवो भवी अव्यविधाना।
सुर "गणनायक हरि" हारे, गुण-कीरति वचन विचारे ॥
पूजो २ परम गुरू० ॥ १० ॥

श्लोक—

पुण्यत्तनोभर—निवारण कारणाय
ज्योतिः प्रदीप्त परमोज्ज्वल सद्गुणाय

दिव्य प्रदीप कणोन सुभक्ति युक्तो
दादोपसंज्ञजिनदत्तगुरु यजेऽहम्

मन्त्र—

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परम पुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते
जिनशासनोद्दीपकाय दादा श्रीजिनदत्त
सूरीश्वराय दीप यजामहे स्वाहा ॥

६–अक्षत पूजा ।

दोहा—

उज्ज्वल अक्षत श्रीगुरु, पूजो अक्षत धार ।
उज्ज्वल अक्षत पद मिले, रहे न एक विकार ॥

(तर्ज—आधार मेरे प्यारे पारस प्रभु हैं आधार)

अपार मेरे प्यारे महिमा, गुरु की अपार ॥ टेर ॥
दादागुरु जिनदत्त अकारण—
बन्धु भवसिंधु आधार । आधार मेरे प्यारे म० ॥ १ ॥
अभक्ष्य त्यागी सुलतान सुत को ।
जीवन दान दातार । दातार मेरे प्यारे म० ॥ २ ॥
बिजली गिरी उसे पात्र में रोकी ।
प्रतिक्रमण के मझार । मझार मेरे प्यारे म० ॥ ३ ॥

दत्त सुनाम के जाप जपे ते ।
बिजली न करती संहार । संहार मेरे प्यारे म० ॥ ४ ॥

वज्रथंभ से विद्या की पुस्तक ।
की योगबल से स्वीकार । स्वीकार मेरे प्यारे म० ॥ ५ ॥

पंच नदी पर पीर उपद्रव ।
करने पे पाये थे हार । हार मेरे प्यारे म० ॥ ६ ॥

रहते गुरु की खिदमत में हाजिर ।
गुलाम जैसे हरबार । बार मेरे प्यारे म० ॥ ७ ॥

सात दिये वरदान विनय से ।
दादा गुरु को उदार । उदार मेरे प्यारे म० ॥ ८ ॥

भूत प्रेत ग्रह-व्यन्तर—मारी ।
होंगे न पीड़ा प्रचार । प्रचार मेरे प्यारे म० ॥ ९ ॥

अक्षत विधि गुरु पूजा करो "हरि" ।
पूज्य बनोगे संसार । संसार मेरे प्यारे म० ॥ १० ॥

श्लोक—

नित्याक्षत प्रकट सौख्यपदाय चञ्चच्
चन्द्रोज्ज्वलाद्भुत गुणोत्तम सौरभाय ।
पुण्याक्षतैः सरलताञ्चित-चित्तवृत्ति-
र्दादोपसंज्ञजिनदत्तगुरुं यजेऽहम्

मन्त्र--

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परमरुपाय परमगुरुदेवाय भगवते
जिनशासनोद्दीपकाय दादा श्रीजिनदत्त
सूरीश्वराय अक्षतं यजामहे स्वाहा ॥



७—नैवेद्य पूजा ।

दोहा—

गुरु पूजो नैवेद्यसे, त्रिभुवन जन गुण गाय
अनाहारपद योगतें, भूख सभी मिट जाय ॥

(तर्ज—बलिहारी बलिहारी बलिहारी०)

उपकारी उपकारी उपकारी दादागुरु उपकारी,
नर नारी पूजो श्रीगुरु भावसे जी ॥ टेर ॥
जोगणियां चौसठ आवे, गुरु को छलने के दावे ।
किन्तु छलागई वे विचारी ॥ दादा गुरु० ॥ १ ॥
जोर न जब चला, बोलें कर जोरें अबला ।
हम गुरु दासी तुम्हारी ॥ दादा गुरु० ॥ २ ॥
सात वरदान देवें, गुरु तब छोड देवें ।
हैं गुरु पूरे ब्रह्मचारी ॥ दादा गुरु० ॥ ३ ॥
विक्रमपुर मे मारी, चारों दिशा में मारी ।
फैली जब हुई हाहाकारी ॥ दादा गुरु० ॥ ४ ॥

कोई न कार लागे, लोक हैरान भागे।
श्रीगुरु शरण मझारी। दादा गुरु० ॥ ५ ॥

जैनों में प्रकटी साता, हैं गुरु शान्ति दाता।
त्रिशोंने विनती उचारी। दादा गुरु० ॥ ६ ॥

रक्षा हमारी करो मारीको दूर करो।
हम सिर आज्ञा तुम्हारी ॥ दादा गुरु ०॥७॥

समकित श्रावकदीक्षा, साधुदीक्षा सुशिक्षा।
दें गुरु शान्ति अवतारी ॥ दादा गुरु० ॥ ८ ॥

किये एक लाख पर, तीन हजार वर।
गुरु श्रावकगण धारी ॥ दादा गुरु० ॥९॥

जैनेतर शुद्धि करते, संघ की वृद्धि करते।
श्रीजिनशासन जयकारी ॥ दादा गुरु० ॥ १० ॥

समपरिणामी नामी, निन्दक वन्दन में स्वामी।
"हरि" कहे जाउं बलिहारी ॥ दादा गुरु० ॥ ११ ॥

श्लोक—

नानाविभौतिकगदादिविमर्दनाय,
शश्वद् बुभुक्षितपदोदयवारणाय।
नैवेद्यवस्तुभिरनुत्तर-सद्रमाढ्यै-
र्दादोपसंज्ञजिनदत्तगुरुं यजेऽहम्।

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परम पुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते
जिनशासनोद्दीपकाय दादा श्रीजिनदत्त
सूरीश्वराय नैवेद्य यजामहे स्वाहा ॥

८—फल पूजा ।

दोहा—

सरस सुकोमल सफल पद, पूजो श्रीगुरु राज ।
नित सुर-शिवसुख फल मिले, निजघर अविचल राज ॥

(तर्ज—केसरिया थासु प्रीत०)

वरदायी गुरु की सेवा करो रे भवी भाव से ॥ टेर ॥
श्रीजिनदत्तसूरीश्वर दादा, मनवांछित फलदानी ।
परम प्रभावक अतिशयज्ञानी, और न जिनके सानीरे ॥
वरदायी गुरु की० ॥ १ ॥

विचरता वडनगर पधारे, उत्सवमय जयकारी ।
श्रीजिनशासन सघ महोदय, घर घर मगलाचारी रे ॥
वरदायी गुरु की० ॥ २ ॥

अभिमानी ब्राह्मण ईर्षानल जलते कुमत विचारी ।
मृत गैया जिनमदिर आगे, रख निन्दा विस्तारी रे ॥
वरदायी गुरु की० ॥ ३ ॥

संघ सकल व्याकुल कहे गुरु से, रखिये लाज हमारी ।
तब गुरुने निज योग शक्ति मृत-गैया में संचारी रे ॥
वरदायी गुरु की० ॥ ४ ॥

श्रीगुरु महिमा लख नत-मस्तक ब्राह्मण आज्ञा धारें ।
संघ के सेवक अब तक भी वे-मोजक सेवा सारें रे ॥
वरदायी गुरु की० ॥ ५ ॥

सुर-नर-वीर-पीर सब सेवक प्रबल योग बल खींचे ।
श्रीसद्गुरु के चरण कमल में निज भक्ति जल सींचे रे ॥
वरदायी गुरु की० ॥ ६ ॥

सद्गुरु ध्यान करो दुःख नाशे-आतम ज्योति प्रकाशे ।
निज अज्ञान--दशा हटने से--अनुभव लील विलासे रे ॥
वरदायी गुरु की० ॥ ७ ॥

सुखसागर--भगवान सुगुरुकी--पूजा भवि विरचावें ।
सुर 'गणनायक हरि' गुण लायक-कीरती प्रतिदिन गावेरे ।
वीरदायी गुरु की० ॥ ८ ॥

श्लोक—

इष्टातिमिष्टरस पूर्णपदाय दिव्य-
स्वर्गापवर्ग-सुखभोग-फलाय भक्त्या
सर्वर्तु जन्य-सुरसैः सुफलै र्मनोज्ञै-
र्दादोपसंज्ञ जिनदत्तगुरुं यजेऽहम् ॥

मन्त्र—

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परम पुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते
जिनशासनोद्दीपकाय दादा श्रीजिनदत्त
सूरीश्वराय फल यजामहे स्वाहा।

—

※ कलश ※

सुनिधि त्रिपथ परतन्त्रता,-गंगा पुण्यप्रवाह।
श्रीजिनदत्त महेशतें, प्रकटे तीनों राह॥

(तर्ज—बोल वन्दे मातरम्)

गुरु देव श्रीजिनदत्त की नित प्रेम पूजा कीजिये।
गुरुनिर्मल गुण की सुधा का पान प्रतिदिन कीजिये॥टेर॥
बारसो ग्यारह विशद आषाढ सुद एकादशी।
गुरूने किया अजमेर अनशन ध्यान हरदम कीजिये॥
गुरुदेव श्रीजिन० ॥१॥

पूज्य सीमन्धर प्रभु मुखतें, प्रथम सुरलोक में।
उत्पत्ति अरु एकावतारी, जान पूजा कीजिये॥
गुरुदेव श्रीजिन० ॥२॥

दादागुरु के पट्ट उदयाचल विराजी चन्द्र से।
मणिधारी श्रीजिनचन्द्रगुरू दील्हो में वन्दन कीजिये॥
गुरुदेव श्रीजिन० ॥३॥

क्रान्तिकर सत्याग्रही-गुरु पूजकर संसार में ।
कीर्तिका विस्तार पूरा, शीघ्र अपना कीजिये ॥
गुरुदेव श्रीजिन० ॥ ४ ॥

उन्नीससौ नव्यासी संवत्, वरवसंत सुपंचमी ।
चन्द्रवार सुपूर्ण रंग, वसंत का लख लीजिये ॥
गुरूदेव श्रीजिन० ॥ ५ ॥

हाथरस दादा प्रतिष्ठा योग में उपयोग से ।
पूज्य सद् गुरु पूज अपना-पूज्य आतम कीजिये ॥
गुरूदेव श्रीजिन० ॥ ६ ॥

गणनाथ सुखसिन्धु गुरू भगवान सागर पूज्यवर ।
दिव्य करुणा पुण्यतम अवतार दर्शन कीजिये ॥
गुरूदेव श्रीजिन० ॥ ८ ॥

गुरू देव पूजा को "गणि हरिसिन्धुने" हर्ष रची ।
गातें-रचाते जय महोदय--पुण्य पैदा कीजिये ॥
गुरुदेव श्रीजिन० ॥ ८ ॥



॥ मंगल दीपक ॥

मंगलमय गुरू मंगल दीपक, मंगलमाला कारी ।
मंगल हित भविजन नित कीजे, वरते मंगलचारी ॥ १ ॥

सद्गुरु मंगल दीपक ज्योति, हृदयतिमिर दे टारो ।
पाप-पतग विनाशक आतम, पुण्य प्रकाशक भारी ॥ २ ॥
सुख सागर भगवान परम गुरु, सर्व अमंगल हारी ।
मंगल दीपक करते सुर "गणनायक हरि" जयकारी ॥३॥



इति पूज्यपाद प्रात स्मरणीय आबाल ब्रह्मचारी जैनाचार्य
श्री मज्जिन हरिसागर सूरीश्वर विरचित
प्रथम दादा गुरुदेव पूजा
समाप्त।



ॐ अर्हं नमः

द्वितीय दादा गुरुदेव मणिधारी

श्रीजिनचन्द्र सूरीश्वर-पूजा



❋ श्री गुरुपद स्थापना ❋

(शार्दूल विक्रीडितम्)

(१)

ॐ अर्हं पदमात्मसाद्भवति वै येषां प्रभावात्सतां,
ये पूज्या अतिशायि-पुण्यचरिता आचार-सार-व्रताः ।
ते श्रीमज्जिन चन्द्रसूरि गुरवो दादा मणीधारिणः
पीठेऽत्रावतरन्तु पूत-मनसा भक्तत्या नतः प्रार्थये ॥

❋ आह्वान मन्त्र ❋

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं मणिधारि श्रीजिनचंद्रसूरि-सुगुरो ! अत्रावतरावतर स्वाहा ।

❋ स्थापना मन्त्र ❋

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं मणिधारि श्रीजिनचंद्रसूरि-सुगुरो ! अत्र तिष्ठ २ ठः ः ठः स्वाहा ।

❀ सन्निधिकरण मन्त्र ❀

ॐ ह्रीं श्री अर्हं मणिधारी श्रीजिनचन्द्रसूरि-
सुगुरो ! मम सन्निहितो भव वषट् स्वाहा ।

मङ्गलाचरण ।

दोहा—

ॐ अर्हं जिनचन्द्रवर, मणिधारी गुरुदेव ।
करूं भक्ति भर भाव से, चरण कमल की सेव ॥ १ ॥
मणियाले दादा गुरु, सदा जागती जोत ।
दिल्ली में दर्शन किये, जीवन पावन होत ॥ २ ॥
जिन शासन ज्योतिर्धरा, दादा श्रीजिनदत्त ।
पट्ट प्रभावक आपके, मणियाले गुरु सत्त ॥ ३ ॥
जिन आज्ञा सुविहित विधि, खरतर पालनहार ।
उपकारी गुरु देव की, जाऊं मैं बलिहार ॥ ४ ॥
दादा दूजे भाव से, पूजे जो नर नार ।
मन वांछित पावे सहज, पहुँचे भवोदधि पार ॥ ५ ॥
कलानिधि गुरू देव की, कृपया अपरपार ।
जीवन की बढती कला, होवे दूर विकार ॥ ६ ॥
जिन विरहे जिन थापना, तिम गुरू विरहे मान ।
द्रव्य भाव अधिकार से, पूजा सुगति निदान ॥ ७ ॥

१—जल पूजा।

दोहा—

विमलगुणी गुरुदेव की, दिव्य विमल गुणदाव।
जल-पूजा मल को हरे, भरे विमल गुणभाव॥

(तर्ज—अवधू सो जोगी गुरु मेरा० राग-आशावरी)

गुरू की जल पूजा मलहारी,
जाऊं मैं बलिहारी॥ गुरु०॥ टेर॥

जल में पावनता रहती है, गुरू हैं पावन कारी।
यातें जल पूजा नित करिये, निर्मल भाव विचारी॥
गुरु की जल पूजा मलहारी॥ १॥

जल कहते जीवन को रस को, गुरु हैं जीवन दाता।
ज्ञान सरस रस सींच सींच कर, प्रकटाते सुखसाता॥
गुरु की जल पूजा मलहारी॥ २॥

श्री जिनचन्द्र सूरि मणियाले, दादा गुरु उपकारी॥
जिन शासन के परम प्रभावक, जग में जय जयकारी॥
गुरु की जल पूजा मलहारी॥ ३॥

स्वस्ति श्री मय विक्रमपुर गुरु, जन्म भूमि अभिरामा।
साह रासल देल्हण दे नन्दन, निर्भय जय गुणधामा॥
गुरु की जल पूजा मलहारी॥ ४॥

ग्यारह सो सत्ताएा भादो, सुद आठम शुभ लगने ।
सद्गुरु जनम लियो सब-सुखिये, पाप लगे पर भगने ॥
गुरु की जल पूजा मलहारी ॥ ५ ॥

शुक्ल पक्ष की चन्द्र-कला ज्यों, रासलनन्दन स्वामी ।
बालक पन में वृद्धि पाये, पुण्य कला विशरामी ॥
गुरु की जल पूजा मलहारी ॥ ६ ॥

गुरु जीवन गंगाजल धारा, सुखसागर में लीना ।
जल पूजा करते भवि गुरु की, होते सब सुख पीना ॥
गुरु की जल पूजा मलहारी ॥ ७ ॥

गुरु भगवान जगत हित कारी, मणियाले जिन चंदा ।
अमृतधारा नित बरपाते, दें सुखपद निर्द्वंदा ॥
गुरु की जल पूजा मलहारी ॥ ८ ॥

गुरु पद-सेना अनहद मेवा, बोध शुद्धि अधिकारी ।
जल पूजा "हरि" गुरु की करते, धन धन वे नरनारी ॥
गुरु की जल पूजा मलहारी ॥ ९ ॥

श्लोक—

सज्जीवनाधार रस-प्रवाही,
श्रीजैनचन्द्रो मणिधारी दादा ॥
तत्पादपद्म द्वितय जलेन,
प्रक्षालयामीह सुबोध शुद्धं ॥

मन्त्र—

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परम पुरुषाय परमगुरुदेवाय भगवते
श्रीजिनशासनोद्दीपकाय नरमणि मण्डित
भालस्थलाय दादा श्रीजिनचन्द्रसूरिश्वराय
जलं यजामहे स्वाहा ॥



१—चन्दन पूजा।

दोहा—

केसर रंग सुगंधगुण—कपूर उज्ज्वल योग।
गुरु चन्दन भवतापहर—पूजें धन भविलोग ॥

(तर्ज—भीनासर स्वामी अन्तरजामी तारो पारसनाथ राग-माड)

सद्गुरु मणियाले जगउजियाले ताप मिटावनहार॥टेर॥
विक्रमपुर में बालकपन में, सद्गुरु खेले खेल।
परिजन पुरजन के मन होती, सुख की रेलंपेल रे ॥
सद्गुरु मणियाले० ॥ १ ॥

परम प्रभावकता की झांकी, कर पाते भविलोक।
रोग शोक सन्ताप भूलकर, होते भाव-अशोक रे ॥
सद्गुरु मणियाले० ॥ २ ॥

एक दिनां जिनदत्तसूरिश्वर, 'चर्चरी' ग्रंथ महान् ।
धर्म प्रचार-विचार से भेजें, पढ़ते भविगुण वान रे ॥
सद्गुरु मणियाले० ॥ ३ ॥

देवधरादिक बोध को पाकर, छोड, कुगुरु कुसग ।
सद्गुरु का चौमासा करावें, धर सत्संग उमग रे ॥
सद्गुरु मणियाले० ॥ ४ ॥

दादा दत्त की सत्य कथा सुन, रासल नदन बाल ।
गुरु सतसगी संयम रगी, पावें ज्ञान-विशाल रे ॥
सद्गुण मणियाले० ॥ ५ ॥

देख सपूत सुलक्षण सद्गुरु, मात पिता प्रतिबोध ।
साथ विहारी दीक्षा शिक्षा, नित देते अविरोध रे ॥
सद्गुरु मणियाले० ॥ ६ ॥

बारहसो पर तीन सुसंवत, धन्य घडी धन योग ।
फागुन सुद नवमी रासलसुत, लें संयम–सुख भोग रे ॥
सद्गुरु मणियाले० ॥ ७ ॥

पट् वर्षन के सयम धारी, अविकारी अवतार ।
धन्य गुरु धन्य ऐसे चले, लोक करें जयकार रे ॥
सद्गुरु मणियाले० ॥ ८ ॥

सुखसागर मे लीन गुरु, भगवानकी–सेवाधार ।
चदन शीतल शात–सुभावी, अनुपम गुण भण्डार रे ॥
सद्गुरु मणियाले० ॥ ९ ॥

'हरि' सद्गुरु की चंदनपूजा, बोधसुधारसकूप ।
सविनय साधो सिद्धि प्रकटे, परमातम पद रूप रे ॥
सद्गुरु मणियाले० ॥ १० ॥

सन्ताप-संहरि-रसप्रवाही,
श्रीजैनचन्द्रो मणिधारिदादा ।
तत्पादपद्मद्वितयं यजेऽहं,
सच्चन्दनेनेह सुबोधवृद्ध्यै ॥

मन्त्र—

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परम पुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते
श्रीजिनशासनोद्दीपकाय नरमणि मण्डित
भालस्थलाय दादा श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय
चन्दनं यजामहे स्वाहा ॥



३—पुष्प पूजा

दोहा—

गुरु सूरज भविफूलको, विकसित करें विशेष ।
सुमनस् भावे पूजियैं, सद्गुरु चरण हमेश ॥

(तर्ज—ऊठो ऊठो ए परमादी जीवड़ा भजलो प्रभुवर को)
राग—रसिया

पूजो पूजो रे मणिधारी दादा-चंदसूरीश्वर को ॥ टेर ॥
रासल नन्दन सुविहित, खरतर-संयम में लीना।
श्रीजिनदत्त परमगुरु सेवा, अमृत-रस-पीना ॥
पूजो पूजो रे मणिधारी दादा० ॥ १ ॥
परम गुरु के पारतन्त्र्य में, शिवसाधन करते।
सर्व तन्त्र-स्वातन्त्र्य भाव में, निर्भय सचरते ॥
पूजो पूजो रे मणिधारी दादा० ॥ २ ॥
बारह सो पर पांच शुकल छठ, वैशाखे मासे।
विक्रमपुर श्रीवीर जिनालय, वरभावोल्लासे ॥
पूजो पूजो रे मणिधारी दादा० ॥ ३ ॥
दादादत्त स्वहस्त कमल से, सूरिपद ठाना ।
आठ वरष के रासलनन्दन, मुनि मुनिपरधाना ॥
पूजो पूजो रे मणिधारी दादा० ॥ ४ ॥
है पूजा का थान गुणी गुण, न च लिंग न वयो।
जग बोले जिनचन्द्रसूरी गुरू, जय जय चिर जयो ॥
पूजो पूजो रे मणिधारी दादा० ॥ ५ ॥
धन रासल धन देल्हण माता, धन गुरुदत्त सदा।
धन जिनचंद्रसूरि मणियाले, मन वाञ्छित वरदा ॥
पूजो पूजो रे मणिधारी दादा० ॥ ६ ॥

सुखसागर भगवान गुरु जिनचंद महिमशाली ।
परमातम पद बोधि विधायक प्रवचन टकशाली ॥
पूजो पूजो रे मणिधारी दादा० ॥ ७ ॥

'हरी' गुरुचरण कमल में सुन्दर सुमनस भावों को ।
अकपट अर्पित कर विकसादो पुण्य प्रभावों को ॥
पूजो पूजो रे मणिधारी दादा० ॥ ८ ॥

श्लोक—

बोधैकदीव्यत्सुरभिप्रवाही-
श्रीजैनचन्द्रो मणिधारिदादा
तत्पादपद्मद्वितयं यजेऽहं,
मनोऽभिरामः सुमनस्समूहैः ॥

मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परम पुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते
श्रीजिनशासनोद्दीपकाय नरमणि मण्डित
भालस्थलाय दादा श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय
पुष्पं यजामहे स्वाहा ।



४—धूप पूजा ।

दोहा—

धूप उरधगति कह रहा, सद्गुरु के सत्सग ।
हो समकित शुभ वासना, पूजा धूप प्रसग ॥

(तर्ज—सभा में मेरा तुमही करोगे निस्तारा)

पूजा से पाते भवी भव सिन्धु किनारा ॥
सेवा से पाते भवि भव सिन्धु किनारा ॥टेर॥
आठ वरस के छोटे बालक,
सद्गुरु आज्ञा के प्रति पालक,
आचारज पद के संचालक,
होते हैं जय जय कारा । पूजा से पाते भवी० ॥ १ ॥
दादा दत्त गुरु–पटधारी,
श्री जिनचन्द्र सूरी मणिधारी
जश कीरति, जग में विस्तारी,
गुरु कृपा का फल सारा । पूजा से पाते भवी० ॥२॥
दत्त गुरु ने बात सुनाई,
योगिनीपुर मत जाना भाई,
इसमें है बस रही भलाई,
करो नित धर्म प्रचारा । पूजा से पाते भवी० ॥ ३ ॥

भावी सूचना विशद विभानी,
योग-ज्ञान बल दिव्य निशानी,
सावधानता की थी वानी,
गुरु का महा उपकारा। पूजा से पाते भवी० ॥ ४ ॥

बारह सो ग्यारह आषाढ़ी,
देव शयनि ग्यारस गुणगाढ़ी,
प्रभुभक्ति चित्त में अति बाढ़ी,
गुरुदत्त स्वर्ग सिधारा। पूजा से पाते भवी० ॥ ५ ॥

सदगुरु का मरणा भी जीना,
हम को देता बोध प्रवीना,
करो आतम-करतव्य अदीना,
गुरुदत्त बोध उचारा। पूजा से पाते भवी० ॥ ६ ॥

गुरु ज्योति तब गुरु में प्रकटी,
उदासीनता झटपट विघटी,
संचालक की शासन-शकटी,
गुरु बल तेज उदारा। पूजा से पाते भवी० ॥ ७ ॥

गच्छपति गुरु श्रीजिनचंदा,
तेज तिरस्कृत सूरज चंदा,
संघ चतुर्विध में आनन्दा,
फैला सुवास अपारा। पूजा से पाते भवी० ॥ ७ ॥

सद्गुरु सुखसागर भगवाना,
मणिधारी जग जुगपरधाना,
नित पूजो हरि धूप विधाना,
बोधि विशोधन द्वारा। पूजा से पाते भवी० ॥ ९ ॥

श्लोक—

सदोर्ध्वदिव्यैकगति प्रवाही—
श्रीजैनचन्द्रो मणिधारिदादा।
तत्पादपद्म—द्वितय यजेऽहं—
सद्भावधूपप्रतिधूपनेन

मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परम पुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते
श्रीजिनशासनोद्दीपकाय नरमणि मण्डित
भालस्थलाय दादा श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय
धूपं यजामहे स्वाहा।



५—दीपक पूजा।

दोहा—

शासन दीपक सदगुरु, ज्योतिर्मय जयकार।
दीपक पूजा कीजिये, हो ज्योतिःविस्तार ॥

(तर्ज—केसरिया थांसु प्रीत लगी रे सच्चा भावसुं)

जीवन उजियाले—

पूजो मणियाले गुरुदेव को ॥ टेर ॥

ग्राम नगर पुर पावन करता, गणपतिगुरु जिनचन्दा ।
जिनशासन परकाशन करते, प्रतिबोधे भवि-वृन्दा रे ॥
जीवन उजियाले० ॥ १ ॥

त्रिभुवनगिरी मरुकोट बादली, इन्द्रादिक पुर नामी ।
जिनालयों में कनक कलशध्वज, करें प्रतिष्ठास्वामी रे ॥
जीवन उजियाले० ॥ २ ॥

भीमपल्ली—उच्चा—बब्बेरक, आदिपुरों में भारी ।
उत्सवमय दीक्षा लें गुरु से, नर-नारी अधिकारी रे ॥
जीवन उजियाले० ॥ ३ ॥

उनमें नरपति भावी पटधर, जिनपति थे नयकारी ।
मत्त वादी-मदमर्दनकारी, नैयायिक अधिकारी रे ॥
जीवन उजियाले० ॥ ४ ॥

चैत्यवासी पद्मप्रभसूरि, पिता साह क्षेमन्धर ।
गुरु से सुविहित बोध प्राप्त कर, हुआ भक्ति में तत्पररे ॥
जीवन उजियाले० ॥ ५ ॥

गुरु उपदेशामृत पी भविजन, आत्म लीनता धारी ।
श्रावक-व्रत साधु-व्रतधारें, धन धन वे नर नारी रे ॥
जीवन उजियाले० ॥ ४ ॥

सागरपाडा महावनादि, स्थानों में गुरु राया।
त्रिधिचैंत्यों में प्रभु प्रतिष्ठा, उत्सव ठाठ मचाया रे ॥
जीवन उजियाले० ॥ ७ ॥
अजमेर जिनदत्त परमगुरु, स्वर्गधाम–अभिरामी।
स्तूप प्रतिष्ठा की सद्गुरुने, भव्य भक्ति दिल नामी रे
जीवन उजियाले० ॥ ८ ॥
सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरण का, दिव्यालोक प्रसारा।
सुखसागर भगवान परमगुरु, दीपक का उजियारा रे ॥
जीवन उजियाले० ॥ ६ ॥
"हरि" पूजित जिन शासन भासन, सद्गुरु दीप समाना
दीपक पूजा पुण्य प्रकाशे, कीजे विनय विधाना रे ॥
जीवन उजियाले० ॥ १० ॥

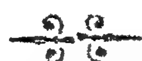
श्लोक—

आत्मावबोधोदय–भासग्राही,
श्रीजैनचन्द्रो मणिधारीदादा।
तत्पादपद्म द्वितय यजेऽह,
प्रोद्यत्प्रदीपप्रतिदीपनेन ॥

मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परम पुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते
श्रीजिनशासनोद्दीपकाय नरमणि मण्डित

मालरूथलाय दादा श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय
दीपकं यजामहे स्वाहा ॥



६—अक्षत पूजा ।

दोहा

सरल समुज्ज्वल भावमय, सद्गुरुपद सविशेष ।
अक्षत पूजा-साधना, कीजे अकपट वेश ॥

(तर्ज—दादा देव दयालु तुम को लाखों प्रणाम)

मणिधारी महाराज तुमको लाखों परणाम ।
करूँ विनय से पूजा करके लाखों परणाम ॥ टेर ॥
संघ चतुर्विध समरथ नेता, परवादी मत सफल विजेता ।
नेता सफल विजेता गुरुको, लाखों परणाम मणि० ॥१॥
पुर नरपाल में ज्योतिष मानी, गुरु हरावें पूरे ज्ञानी ।
ज्योतिषविद्यावाले गुरुको लाखों परणाम मणि० ॥२॥
रुद्रपल्ली में आप पधारे, लघुवय था, थी शक्ति अपारे
दिव्य शक्ति बलशाली गुरुको, लाखों परणाम मणि० ॥३॥
पद्मचंद्र वह सिथिलाचारी, बड़ा घमंडी चर्चाकारी ।
उसे हराने वाले गुरुको, लाखों परणाम मणि० ॥४॥
तमो द्रव्य चर्चा विस्तारी, राज सभा के सब अधिकारी

गुरु की जय जय बोलें, गुरुको, लाखों परणाम ॥ ५ ॥
स्वपर समय के सद्गुरु ज्ञाता, विबुधन को गुरु बोध सुहाता ।
विशद युक्ति बलवाले, गुरुको लाखों परणाम मणि० ॥ ६ ॥
सद्गुरु सुखसागर भगवाना, सरल समुज्ज्वल भाव विधाना ।
मार्ग दिखाने वाले, गुरुको लाखों परणाम मणि० ॥ ७ ॥
'हरि' अक्षतविधि पूजाधारे, सद्गुरु सेवक काज सुधारें ।
चन्द्रसूर गुणवाले, गुरु को लाखों परणाम मणि० ॥८॥

॥ श्लोक ॥

चिदक्षतानन्दरसप्रवाही,
श्रीजिनचन्द्रो मणिधारिदादा ।
तत्पादपद्म द्वितयं यजेऽहं,
समुज्ज्वलैर्वै सरलाक्षतौघैः ॥

मन्त्र—

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परम पुरुषाय परमगुरु देवाय भगवते श्रीजिनशासनोद्दीपकाय नरमणि मण्डित भालस्थलाय दादा श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय अक्षतान् यजामहे स्वाहा ॥



७—नैवेद्य पूजा ।

दोहा—

मन-मोदक मधुरातमा, श्रीमद्गुरु महाराज ।
पूजो नित नैवेद्य से, पाओ शिवपुरराज ॥

(तर्ज—तुम्हारे पूजन को भगवान् बना मन मंदिर आलीशान)

गुरु मणिधारी वांछितदान ।
करें नित पूजो चतुर सुजान ॥ टेर ॥

जिनकी महिमा अपरंपारी, जीवन घटना जय जयकारी ।
श्रवण कर पीलो अमृतपान, भरे बल ओजस पुण्यप्रधान ॥
गुरु मणिधारी वांछितदान० ॥ १ ॥

विचरते मणिवाले मुनिनाथ, संघ सेवा में रहता साथ ।
पधारे गांव सु वोरसिदान, म्लेच्छ वहं आये काल समान ॥
गुरु मणिधारी वांछितदान० ॥ २ ॥

डरो मत धीर बनो नरनार । तुम्हारे सदगुरु हैं रखवार ।
देकर यह आश्वासन दान, सुरेखा खींची किल-समान ॥
गुरु मणिधारी वांछितदान० ॥ ३ ॥

पापी म्लेच्छ हुए गुमराह, गुरु की यौगिक शक्ति अथाह ।
दिया गुरु ने बस जीवनदान, हुए नर नारी निर्भय प्रान ॥
गुरु मणिधारी वांछितदान० ॥ ४ ॥

गुरु ने महतियाण जाती, बोधे गोत्र विविधभांति ।
हुए वे जैन धर्म अगिवान, अहा ! गुरु बोध शक्ति विज्ञान ॥
गुरु मणियाले वांछितदान० ॥ ५ ॥
पूर्व दिक् तीर्थों का इतिहास, बताता महतियाण परकाश ।
प्रतिज्ञा उनकी एक महान्, "जिन जिनचन्द्र नमें न आन" ॥
गुरु मणियाले वांछितदान० ॥ ६ ॥
गुरु ने सिरीमालवर वंश, कई गोत्रों में अनुपम अंश ।
देकर पावन समकितज्ञान, बढाया जैन संघ सन्मान ॥
गुरु मणियाले वांछितदान० ॥ ७ ॥
जो नित जपता सद्गुरु नाम, पाता सुख संपति धनधाम ।
सुरतरु सुरमणि परतिख मान, गुरुको सेवो हे मतिमान ॥
गुरु मणिधारी वांछितदान० ॥ ८ ॥
न होता भूत प्रेत भय सोग, मिटंते आधि व्याधि वियोग ।
करें गुरुदेव परम कल्याण, धरो नित मन मे गुरु का ध्यान ॥
गुरु मणिधारी वांछितदान० ॥ ९ ॥
दादा मणिधारी जिनचंद, काटें कोटी संकट-कंद ।
गुरू हैं सुखसागर भगवान, हरिगुरू पूजो धर पकवान ॥
गुरू मणिधारी वांछितदान० ॥ १० ॥

श्लोक—

सन्मोदकोऽय मधुरप्रवाही,
श्रीजैनचन्द्रो मणिधारिदादा ।

तत्पादपद्मद्वितयं यजेऽहं,

सन्मोदकाद्यैर्मधुरात्मभावैः ॥

मन्त्र--

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परम पुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते श्रीजिनशासनोद्दीपकाय नरमणि मण्डित भालस्थलाय दादा श्रीजिनचन्द्रसरीश्वराय नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥



८—फल पूजा।

दोहा—

सद्गुरू सेवा मधुर फल, जो चाखें नर नार।
जनम मरण को मेटकर, हो जाते भवपार ॥

(तर्ज—शुं कहूं कथनी म्हारी राज शुं कहूं कथनी म्हारी)

चरण कमल बलिहारी नाथ! जाऊं हे मणिधारी।
पूजा फल अविकारी नाथ! पाऊं हे मणिधारी ॥ टेर ॥
धन्य धरातल धन्य घड़ी वह, विचरते जब स्वामी।
दरशन धन धन वे नर पाते, जो होते शिवगामी ॥

नाथ चरण कमल बलिहारी
जाऊं हे मणिधारी नाथ ॥ १ ॥

योगिनीपुर जो अब दील्ही है, उस के पास पधारे।
गुरू विचरते भारी-खींचे, भविजन काज सुधारे॥
नाथ चरण कमल बलिहारी० ॥ २ ॥

सद्गुरु महिमा को सुन पाये, मदनपाल महाराज।
दर्शन कर हो हर्षित विनति, करते साथ समाजा॥
नाथ चरण कमल बलिहारी० ॥ ३ ॥

योगिनीपुर मे नाथ पधारो, बोधसुधा को पिलाओ।
मिथ्यामत विष से हम मरते, आप दयालु जिलाओ॥
नाथ चरण कमल बलिहारी ॥ ४ ॥

परमगुरु जिनदत्त ने रोका, जाना कैसे होवे।
राजा का आग्रह फल भारी, होनी हो सो होवे॥
नाथ चरण कमल बलिहारी० ॥ ५ ॥

आप पधारे योगिनीपुर जो, दील्ही आज कहाया।
सद्गुरु पद-रज पावन भूमि, तीरथ रूप मनाया॥
नाथ चरण कमल बलिहारी० ॥ ६ ॥

चंद चकोर मोर मन मेहा, त्यों सद्गुरु से नेहा।
मदनपाल नृप आदिक होते, श्रावक गुण गेहा॥
नाथ चरण कमल बलिहारी० ॥ ७ ॥

था कुलचन्द्र वहां अकिंचन, किन्तु भगत था भारी।
सद्गुरु महिर नजर दौलत से, हुआ धनद अवतारी॥
नाथ चरण कमल बलिहारी० ॥ ८ ॥

मिथ्या दृष्टि देव को सद्गुरु, समकित दें उपकारी ।
जिन मन्दिर थम्भे में थापें, करे शासन रखवारी ॥
नाथ चरण कमल बलिहारी० ॥ ९ ॥
सुखसागर भगवान गुरु की, सेवा सफल हमेशा ।
'हरि' फल पूजा भविजन कीजे, धरते भाव विशेषा ।
नाथ चरण कमल बलिहारी० ॥ १० ॥

श्लोक—

स्फूर्जच्छिवोत्तमफलैकरसप्रवाही,
श्रीजैनचन्द्रो मणिधारिदादा ।
तत्पादपद्मद्वितयं यजेऽहं,
प्रधान-पुण्यात्मफलप्रदानैः ॥

मन्त्र—

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परम पुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते श्रीजिनशासनोद्दीपकाय नरमणि मण्डित भालस्थलाय दादा श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय फलं यजामहे स्वाहा ।



दोहा—

गुरु आज्ञा वर वस्त्र ही, लाज रखे संसार ।
सद्गुरु पूजो वस्त्र से, विनय विवेक विचार ॥

(तर्ज—सुअप्पा पाप विचारो रे०)
राग भैरवी

उपकारी अवतार सुपूजो उपकारी अवतार।
श्रीजिनचद परम गुरु पूजो उपकारी अवतार, सुपूजो० ॥टेर॥
दील्ही मे चोमासा ठावें, हेतु पर उपकार।
आतम ध्यान तन्मय गुरु रहते,अप्रमाद गुणधार, सुपूजो०॥१॥
सद्गुरू सिद्ध मदननृपसाधक, जोडी पुण्यअपार।
अनुपम अद्भुत हुआ जगत मे, श्रीजिनधर्मप्रचार, सुपूजो०॥२॥
श्रीजिनदत्त परमगुरू पावन, वचन भविष्य विचार।
अन्त समय सदगुरू निजजानें, अभय भाव अविकार,सुपूजो॥३॥
सघ चतुर्विध को प्रतिबोधें, रत्नत्रय मण्डार।
खूब बढाते ज्ञाना रखना, तीन तत्वआधार, सुपूजो० ॥४॥
पण्डित मरण उदास न होना, जीवन तत्व विचार।
सुविहित विधि आचारी होना, करना खूब प्रचार, सुपूजो ॥५॥
नरपति गणपति योग्य समझना, है मेरा निर्धार।
शासन की रक्षा नित करना, करना निज उद्धार, सुपूजो० ॥६॥
ब्रह्मतेज पूरण मणि, मेरे मस्तक रही उदार।
दूध कटोरे मे ले लेना, होगा जय जयकार, सुपूजो० ॥७॥
सवत बारह सो तेवीसा, भाद्रव दूजा धार।
कृष्णपक्ष चौदश को सद्गुरु, पहुंचे स्वर्ग मझार, सुपूजो० ॥८॥
सदगुरू-विरही सघ चतुर्विध, करता शोक अपार।

जीवन तत्त्व विचार अंत में, धारें धीरज सार, सुपूजो० ॥६॥

सद्गुरू सुखसागर भगवाना, समकितगुणदातार ।
"हरि" पूजीत' मणिधारी दादा, पूजो परमाधार, सुपूजो० ॥१०॥

श्लोक—

सद्बोध वस्त्रात्मकभाववाही,
श्रीजैनचन्द्रो मणिधारिदादा ।
तत्पादपद्मद्वितयं यजेऽहं,
पवित्रवस्त्रप्रतिढौकनेन ॥

मन्त्र—

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परम पुरुषाय परम गुरूदेवाय भगवते श्रीजिनशासनोद्दीपकाय नरमणि मण्डित भालस्थलाय दादा श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय वस्त्रं यजामहे स्वाहा ॥



१०–ध्वज पूजा

दूहा—

जीवन ध्वज ऊंचा रहे, श्रीसद्गुरू परसाद ।
ध्वज पूजा भवि कीजियें, मिटे सभी अवसाद ॥

(तर्ज—झंडा ऊँचा रहे हमारा)

जीवन ध्वज गुरु जय जयकारा।
मणिधारी जिनचन्द्र हमारा ॥ टेर ॥

जिन शासन अति उच्च भवन में, ऊर्ध्व अधो मध्य तीन भुवन में।
श्रीजिनचन्द्र यशध्वज धारा, जीवन ध्वज गुरू जय जयकारा ॥१॥
पथ भूलों को पथ दिखलाता, मूढजनों को बोध दिलाता।
है सद्गुरू ध्वज नित अविकारा, जीवन ध्वज गुरू जय जयकारा ॥२॥
सबको बस उत्थान बताता, ज्ञान-ज्योति को ही चमकाता।
पतितों का भी सुखद सहारा, जीवन ध्वज गुरु जय जयकारा ॥३॥
सद्गुरु ध्वज की बलि बलि जावें, महापुण्य से दर्शन पावें।
सद्गुरु ध्वज है प्राण-धारा, जीवन ध्वज गुरू जय जयकारा ॥४॥
वर्द्धमान ने इसे प्रचारा, अभय बनाकर भय संहारा।
सद्गु र ध्वज यह महाउदारा, जीवन ध्वज गुरु जय जयकारा ॥५॥
जिनवल्लभ की शक्ति इसमें, जिनदत्तातम ज्योति इसमें।
सद्गुरु ध्वज है गुण भण्डारा, जीवन ध्वज गुरू जय जयकारा ॥६॥
महतियाण वर वंश बनाया, सुविहित विधि पट बस फैलाया।
सद्गुरु ध्वज है मोहनगारा, जीवन ध्वज गुरू जय जयकारा ॥७॥
सुखसागर भगवान इसी में, हरि पूजित ध्वज भाव इसी में।
ध्वज जिनचन्द्र विशद विसतारा, जीवन ध्वज गुरू जय जयकारा ॥८॥

श्लोक—

ध्वजानुरूपो वर–मार्गवाही,
श्रीजैनचन्द्रो मणिधारिदादा ।
तदालये भक्तिभरात्मनाह,
मारोपयामि ध्वजमात्मशुद्धयै ।

मन्त्र—

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परमपुरुषाय परमगुरुदेवस्य भगवतः श्रीजिनशासनोद्दीपकस्य नरमणिमण्डित भालस्थलस्य श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वरस्य मंदिर शिखरोपरि ध्वजमारोपयामि स्वाहा ।

—

* कलश *

दोहा—

गर्व तजो सद्गुरु भजो, गौरव बढ़े अपार ।
गुरु सतसंगी नित बनो, पाओ भवजल पार ॥

(तर्ज—मैं आया तेरे द्वार पर०)

श्रीमणिधारी महाराज, महिमा अपरंपारी है ।
जिनचन्द जागती जोत, जगत में जय जयकारी ॥ टेर ॥

श्रीजिनदत्त परमगुरु, कृपया पट वर्षीवय मे ।
सा रासल देल्हण देवी, नदन सयमधारी हैं, श्रीम० ॥१॥
चौदह वर्षी वयमें; गुरुने गणपतिपदधारा ।
कर वादि विजय निज जश कीरति जगमें विस्तारी है, श्रीम०॥२॥
श्रीमहतियाण महती जाती, को जैन बना करके ।
श्रीसंघ वृद्धि करने वाले. गुरु की बलिहारी है, श्रीम० ॥३॥
दील्हीपति श्रीमदनपाल, महाराजा को बोधा ।
जैन बनाया, धर्मभावना, खूब प्रचारी है, श्रीम० ॥४॥
प्रतिबोधे श्रीमालवंश के, गोत्र कई गुरु ने ।
है उनका इतिहास जीवनी, उनकी भारी है, श्रीम० ॥५॥
हा ! छव्वीस वरस की, वयमें स्वर्गधाम पाये ।
दील्ही तीरथ धाम धन्य, अधुना उपकारी है, श्रीम० ॥६॥
भादो कृष्ण चतुरदशी, गुरू की पुण्य जयती को ।
खूब मनाओ मानो फिरतो, विजय हमारी हैं, श्रीम० ॥७॥
श्रीजिनपति सूरीश्वर, सद्गुरू के पटधारी थे ।
मत्तवादीगज सिहकेसरी, कीर्ति उदारी हैं, श्रीम० ॥८॥
खरतरगणनायक सुखसागर, श्रीभगवानगुरू ।
मणिधारी दादा की पूजा, मगल कारी हैं, श्रीम० ॥९॥
उन्नीस सो अट्ठाणु सुद, आषाढी दूज दिने ।
मोकल सर में पुण्य प्रयत्नें, यह अवतारी हैं, श्रीम० ॥१०॥

दिव्य सत्य इतिहास भाव से सद्गुरू दर्शन पा ।
'जिनहरि' सद्गुरू-पूजा गाओ आनन्दकारी है, श्रीम० ॥११॥

-❀❀-

इति पूज्यपाद प्रातःस्मरणीय आबाल ब्रह्मचारी जैनाचार्य
श्रीमज्जिनहरिसागर सूरीश्वर विरचिता
श्रीद्वितीय दादा गुरुदेव पूजा
समाप्ता.



ॐ अर्हं नम

श्रीतृतीय दादा गुरुदेव
श्रीजिनकुशलसूरीश्वर पूजा ।



ॐ श्री गुरुपद स्थापना ॐ

(१)

अवतरावतरात्र दयानिधे !
कुशलसूरिगुरो ! सुख सागर ॥
जिनमते भगवन् ! हरि-पूज्य हे !
करुणया परम कुशल कुरु ॥

ॐ आह्वान मन्त्र ॐ

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्रीजिन कुशल सूरि गुरो ! अत्रावतरावतर स्वाहा ।

ॐ स्थापना मन्त्र ॐ

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्रीजिन कुशल सूरि गुरो ! अत्र तिष्ठ २ ठः ठः ठः स्वाहा ।

(संनिधिकरण मंत्र)

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्रीजिन कुशल सूरि गुरो ! मम संनिहितो भव वषट् स्वाहा ।



१—जल पूजा ।

दोहा—

ॐ अर्हं गुरुदेव पद, रविशशि ज्योति विशेष ।
हृदय तिमिर हर बोध दें, वंदन करूं हमेश ॥ १ ॥
सकल कुशल मङ्गल करण, परम कुशल गुरुदेव ।
सेवा ते मेवा मिले, साधूं सदगुरू सेव ॥ २ ॥
सुविहित खरतरवर विधि, विस्तारक सुखकार ।
जिन शासन भासन गुरू, पूजन परमाधार ॥ ३ ॥
दादा श्रीजिन कुशल गुरू, श्रीपद पुण्य प्रभाव ।
कुशल भाव पूजन कियां, विघटे अकुशल भाव ॥ ४ ॥
गुरुसेवा से शिष्य भी, होवे गुरुपद योग ।
पारस फरसन लोह भी, होत कनक गुण भोग ॥ ५ ॥
परमेष्ठी तीजे पदे, आचारज सिरताज ।
पूजूं नित भव सिन्धु से, तारक दिव्य जहाज ॥ ६ ॥
निर्मल जल चन्दन प्रमुख, द्रव्य भाव दो भेद ।
पूजो भविजन भाव से, दूर टरे सब खेद ॥ ७ ॥

श्री गुरुपद पूजा करो, विशद भाव जलधार।
पाप ताप मल दूर हो, आतम शान्ति अपार ॥ ८ ॥

(तर्ज - तुमको लाखों प्रणाम)

हो परम प्रभावक-कुशल गुरु को लाखों प्रणाम।
पाप ताप मलहारि गुरु को लाखों प्रणाम ॥ टेर ॥

जिन शासन में जीवन दाता,
खरतर सुविहित विधि विधाता,
कुशल कुशल गुण वाले गुरु को लाखों प्रणाम ॥ १ ॥

वीर जिनेश्वर पाट पचासे,
परमेष्ठी पद पुण्य विलासे,
युग प्रधान पद वाले गुरु को लाखों प्रणाम ॥ २ ॥

भारत मरुधर मंडल पावन,
जन्म भूमि समियाणा धन धन,
तीर्थ बनाने वाले गुरु को लाखों प्रणाम ॥ ३ ॥

ओसवाल वर वंश विभूषण,
पुनित छाजेड गोत्र अदूषण,
कुल उजवालने वाले गुरु को लाखों प्रणाम ॥ ४ ॥

मंत्री जेल्हागर गुरु ताता,
सती जयतसिरी सद्गुरु माता,
मन को हरने वाले गुरु को लाखों प्रणाम ॥ ५ ॥

विक्रम तेरह—सेंतीसा में,
लगन घड़ी शुभ पुण्य दिशा में,
जन्म सुपाने वाले गुरु को लाखों प्रणाम ॥ ६ ॥
बालक पन में पुण्य प्रभावे,
व्यवहारिक गुण ज्ञान उपावे,
कुशल नाम अभिरामी गुरु को लाखों प्रणाम ॥ ७ ॥
पुण्यवान गुणवान सुनिर्भय,
सुखसागर भगवान महोदय,
मार्ग बताने वाले गुरु को लाखों प्रणाम ॥ ८ ॥
विशद भाव जल जल जीवन धारा,
'जिन हरि' पूजो नित अविकारा,
पूज्य कुशल पदवाले गुरु को लाखों प्रणाम ॥ ९ ॥

(काव्यम्)

यः पाप—संताप—मलापहारी;
दादा-भिधानः कुशलाख्य-सूरिः ।
तत्पाद-पद्म-द्वितयं नमामि,
जलेन भक्त्या स्नपयामिनित्यम् ॥

मन्त्र—

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परम पुरुषाय परम गुरुदेवाय
भगवते जिन शासनोद्दीपकाय श्रीजिनकुशल
सूरीश्वराय जलं यजामहे स्वाहा ।

२—चन्दन पूजा ।

दोहा—

भव-मय-रोग हरें गुरु, चन्दन पूजा योग ।
आतम-शांति अनन्तगुण, प्रकटे शिवसुख भोग ॥

(तर्ज—भिनामर स्वामी अंतरजामी तारो पारसनाथ)
राग माढ

भव रोगनिवारें बोध प्रचारें श्रीगुरु गुण भण्डार ।
हां ··श्रीगुरु गुणभण्डार भवरोगनिवारें० ॥ टेर ॥
तेरहसें सेतालीस फागुन, सुदि सातम सुखकार ।
कुशलकीरति दश वर्षके बालक, पण्डित वर अनगाररे ॥
भवरोग निवारें ॥ १ ॥

कलिकाल केवली नृप प्रतिबोधक, गुरुजिन चन्द्र सूरीन्द
पावन बोधि विशोधित आतम, सेवितपद अरविन्दरे ॥
भवरोग निवारें ॥ २ ॥

गुरुगम आगम तत्व विवेकी, निजपरमत के जाण ।
षड् दर्शन निज दर्शन कारक, तारक मुनि गुणखाणरे ॥
भवरोग निवारें ॥ ३ ॥

तपजप संयमी ज्ञानीध्यानी, प्रकटितपुण्य प्रताप ।
श्रीजिन शासन रक्षकशिक्षक, दूर हरें दुःखतापरे ॥
भवरोग निवारें ॥ ४ ॥

परम अहिंसक धर्म प्रचारक, सत्य विचारकसार ।
अस्तेय वृत्ति ब्रह्मव्रतीवर, अकिंचन अविकाररे ॥
भवरोग निवारे० ॥ ५ ॥

सुविहित सद्गुरु पारतंत्र्य में, प्रतिदिन वर्तनहार ।
धीर-वीर-गंभीर सुजीवन, जग जन तारणहाररे ॥
भवरोग निवारें० ॥ ६ ॥

जन्मभूमि गुरुदीक्षा भूमि, समियाणा सुखधाम ।
सुखसागर भगवानमहोदय, गुरु पूजो अविरामरे ॥
भवरोग निवारें० ॥ ७ ॥

कुशल मंगलकारी कुशलगुरु हैं, बावना चन्दनरूप ।
चन्दन पूजन करते भविजन, होवें 'हरि' गुण भूपरे ॥
भवरोग निवारें० ॥ ८ ॥

(काव्यम्)

भवरोगहारी परमोपकारी
दादाभिधानः कुशलाख्यसूरिः ।
तत्पादपद्म—द्वितयं—नमामि
सच्चन्दनेनेह सदायजेऽहम् ॥

मन्त्र—

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परम पुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते
श्रीजिनशासनोद्दीपकाय श्रीजिनकुशल
सूरीश्वराय चन्दनं यजामहे स्वाहा ॥

३—पुष्प पूजा ।

—दोहा—

गुरु वसन्त ऋतु रूप है, भविजन जीवन फूल ।
गुरुपद पूजो फूल से, शूल होय मन फूल ॥

(तर्ज—आई वसंत बहार रे प्रभु पूजो मगन में)

कुशलकरण गुरु राजरे, नमो भविजन भावे ।
भविजन भावे शुभगुण आवे,
नमोकुशल गुरुराजरे नमो भविजन भावे० ॥ टेर ॥
श्री जिनचन्द्र सूरीश्वर सदगुरु,
पदमणी जयकाररे नमोभविजन भावे ।
कुशल कीरति मुनिनायकलायक,
होवे गुण आगाररे नमोभविजन भावे० ॥ १ ॥
तेरह से पिचहत्तर माघे,
सुद बारस शुभयोगरे नमो भविजन भावे० ॥
जसु कीरतिरति अनुपम सौरभ,
फैली भुवनाभोगरे नमो भविजन भावे० ॥ २ ॥
झालामाउ कन्यानयरे,
आशिकानरभट्टरे नमोभविजन भावे ॥
बागड जावालिपुर निवासी,
सघ भक्ति गह गट्ट नमो भविजन भावे० ॥ ३ ॥

नगर नगीना संघ प्रमुख श्री,
विजयसिंह सुभक्तरे नमोभविजन भावे ।
सेठू-रूडा अरु दिल्ही के,
अचलसिंह संजुत्तरेनमो भविजन भावे० ॥४॥

पंच शब्द के बाजे बाजें,
गाजे गगन घन गाजरे नमोभविजन भावे ।
मंगल गीत मधुर धुनि मंजुल,
गावे भक्त समाजरे नमो भविजन भावे० ॥५॥

नंदी दिव्यमहोत्सव पूर्वक,
श्रीनागोर मझाररे नमोभविजन भावे ।
वाचना चारज पद श्री गुरु दें,
कुशल कीरति को साररे नमो भविजन भावे०॥६॥

गुरु वसन्त जन जीवत पावन,
फूल प्रफुल्लित होत रे, नमो भविजन भावे ।
जग में जिससे अतिमनोहर,
प्रसरे परिमल पूररे नमो भविजन भावे ॥ ७ ॥

वाचना चारज कुशल कुशल गुरु,
सुखसागर भगवानरे नमोभविजन भावे ।
'हरि' गुरु पूजो हृदय कमल में,
पावो कुशल निधानरे—नमो भविजन भावे० ॥८॥

(काव्यम)

भव्य-प्रसून-प्रतिबोधकारी,
दादाभिधानः कुशलाख्य सूरिः ।
तत्पाद पद्म-द्वितय नमामि,
प्रसून-पुञ्जैः परिपूजयामि ॥

मन्त्र—

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परम पुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते श्रीजिनशासनोद्दीपकाय श्रीजिनकुशल सूरीश्वराय पुष्प यजामहे स्वाहा ॥



४—धूप पूजा ।

दोहा—

हैं गुरु धर्म दशागयुत, उरध सिद्ध गति भाव ।
पूजो धूप दशाग से, गुरुपद गुरुपद दाव ॥

तर्ज—(हो उमराव थारी बोली प्यारी लागे)

हो गुरुराज पद शुभ भावधरी नित पूजो नर नार ।
हो गुरुराज पूजा करते भविजन होवें भव पार ॥
भवपार होजी नर नार ॥ टेर ॥

कुशल कीरति मुनिजन की, कुशल कीर्ति विस्तार ।
जस छाई जग में यहां, जन बोलें जयकार ॥
हो गुरुराज श्रीजिन शासन, भासन कारी सुखकार ।
हो गुरुराज० ॥ १ ॥

नरपति बोधक सदगुरु, गणपति श्रीजिनचन्द ।
आयु शेष निज जानते, आतम-ध्यान-अमंद ॥
हो गुरुराज निजपद योग्य कुशल को देवे अविकार ।
हो गुरुराज० ॥ २ ॥

श्री राजेन्द्राचार्य को, दें गुरु आज्ञा लेख ।
कुशल कुशल पद योग्य है, यामें मीन न मेख ॥
हो गुरुराज जग उपकारी, ज्ञानी महिमा -हितकार ।
हो गुरुराज० ॥ ३ ॥

आराधक गुरुदेव के, श्रमणोपासक वीर ।
विजयसिंह को दें गुरु, लेखाज्ञा तदबीर ॥
हो गुरुराज पुण्य प्रकाश विराजित देवें बोधसार ।
हो गुरुराज० ॥ ४ ॥

संघ चतुर्विध साथ में, करते धर्मप्रचार ।
कोसाणा में श्रीगुरु, पहुँचे स्वर्ग मझार ॥
हो गुरुराज श्रीजिनचन्द्र विरह में छाया अन्धकार ।
हो गुरुराज० ॥ ५ ॥

तेरहसो मतहत्तरे, ग्यारस मिती वदि जेठ।
कुम्भ लगन निश्चत करे, सघ सर्व जग शेठ॥
हो गुरुराज पाटण पुण्य महोत्सव जाऊं बलिहार।
हो गुरुराज० ॥ ६ ॥
तेजपाल दानी -- गुणी, रुद्रपाल सहयोग।
आमत्रे श्री सघ को, पूरे पुण्य—धनयोग॥
हो गुरुराज शोभा पाटण की क्या वरणु थी अपार।
हो गुरुराज० ॥ ७ ॥
श्री राजेन्द्राचार्य तव, लेपाज्ञा अनुसार।
कुशलकीर्ति मुनिराज का, करे नाम मस्कार॥
हो गुरुराज श्रीजिन कुशल सूरीश्वर की हो जयकार।
हो गुरुराज० ॥ ८ ॥
श्रीजिन कुशल सूरीश्वरु, दादा युग परधान।
अतिशयधारी पूज्यवर, सुख सागर भगवान॥
हो गुरुराज पद 'हरि' पूजो भावे होवो भवपार।
हो गुरुराज० ॥ ६ ॥

(काव्यम)

धर्म—प्रचारी वर—बोधकारी
दादाभिधानः कुशलाख्यसूरिः।
तत्पाद—पद्म—द्वितय नमामि
दशाग-धूपं सुपरिक्षिपामि॥

मन्त्र—

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परमपुरुषाय परमगुरुदेवाय भगवते जिनशासनोद्दीपकाय श्रीजिन कुशल सूरीश्वरायधूपं यजामहे स्वाहा ॥

५—दीपक पूजा।

दोहा—

मन सुपात्र गुण वृत्तिकर, सद्गुरु धरम सनेह ।
ज्ञान उजेला नित करे, दीपक पूजा एह ॥

तर्ज—(जिन मत का डंका आलम में)

अज्ञान तिमिर अति दूर किया,
गुरु दीपक कुशल सूरीश्वर ने ।
वर ज्ञान प्रकाश प्रचार किया,
गुरु दीपक कुशल सूरीश्वर ने ॥
जिनचन्द्र परम गुरु विरह हुआ,
अंधेरा सब जग छाया था ।
ज्योतिर्मय पद परकाश किया,
गुरु दीपक कुशल सूरीश्वर ने ॥
अज्ञान तिमिर० ॥ १ ॥
अति दिव्य सुपंचाचार विधि,
स्वाधीन समाराधन करके ।

निजपर हितकर उपदेश दिया,
गुरु दीपक कुशल सूरीश्वर ने ॥
अज्ञान तिमिर० ॥ २ ॥
पचेन्द्रिय विषम विषय त्यागी,
नव विधवर ब्रह्म गुपतिधारी ।
कर पंचसमिति दी शुभ शिक्षा,
गुरु दीपक कुशल सूरीश्वर ने ॥
अज्ञान तिमिर० ॥ ३ ॥
अध्यातम सम्यक् भाव भरें,
सविवेक महाव्रत पच धरें ।
अपना परका कल्याण किया,
गुरु दीपक कुशल सूरीश्वर ने ॥
अज्ञान तिमिर० ॥ ४ ॥
हैं दुश्मन चार कषाय उन्हें,
झट तीनों गुप्ति में क़ैद किये ।
संयम पथ सुन्दर शुद्ध किया,
गुरु दीपक कुशल सूरीश्वर ने ॥
अज्ञान तिमिर० ॥ ५ ॥
युग धर्म विकाश विशेष किया,
जग में जीवन सचार किया ।
कर दी प्रभावना शासन की,

गुरु दीपक कुशल सूरीश्वर ने ॥
अज्ञान तिमिर० ॥ ६ ॥

छत्तीस महागुण धारक हो,
दुर्गुण सब दूर भगा करके ।
शुभ काम नाम अनुसार किये,
गुरु दीपक कुशल सूरीश्वर ने ।
अज्ञान तिमिर० ॥ ७ ॥

गुरु दीपक पूजा करते हैं,
भव वन में वे न भटकते हैं ।
'हरि' मार्ग बताया उन्नति का,
गुरु दीपक कुशल सूरीश्वर ने ।
अज्ञान तिमिर० ॥ ८ ॥

(काव्यम)

यो दीपकोऽज्ञानतमोऽपहारी,
दादाभिधानः कुशलाख्य-सूरिः
तत्पाद—पद्म—द्वितयं नमामि,
सद्दीप-पूजां विदधे सुभक्त्या ॥

मन्त्र—

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परम पुरुषाय परमगुरुदेवाय भगवते
जिन शासनोद्दीपकाय श्री जिन कुशल
सूरीश्वराय दीपं यजामहे स्वाहा ।

६–अक्षत पूजा ।

दोहा—

अक्षत पदगुरु देव का, अक्षत पद दातार ।
अक्षत पूजा कीजिये, अक्षय गुण भंडार ॥

(राग गजल)

कुशल गुरुराज पद पूजा, कुशल पद दान देती है ।
कुशल गुरुराज की महिमा, अजर आनन्द देती है ॥
कुशल गुरु० ॥ टेर ॥

मरु गुर्जर न सौराष्ट्र, मरालश सिन्धु पंजाबे ।
सुगुरु पद पावनी भूमि, अजर आनन्द देती है ॥
कुशल गुरु० ॥ १ ॥

सदा दर्श पुरं ग्रामे, सुगुरु ने निज विहारों से ।
प्रवृत्ति की धर्म की जो, अजर आनन्द देती है ॥
कुशल गुरु० ॥ २ ॥

सदा से जो विधर्मी थे, गुरु से धर्म पाकर वे ।
हुए धर्मी कथा उनकी, अजर आनन्द देती है ॥
कुशल गुरु० ॥ ३ ॥

गुरु उपदेश से निकले, हजारों संघ तीर्थों के ।
प्रतिष्ठाएं हुई भारी, अजब आनन्द देती है ॥
कुशल गुरु० ॥ ४ ॥

गुरु उपदेश पाकर के, हुए साधु कई साध्वी।
उन्हीं की जो गिनी संख्या, अजब आनन्द देती है॥
कुशल गुरु० ॥ ५ ॥

हजारों स्त्री पुरुष जिनसे, हुए बारह व्रती सच्चे।
गुरु उपदेश की शैली, अजब आनन्द देती है॥
कुशल गुरु० ॥ ६ ॥

हजारों मूर्तियों की भी, प्रतिष्ठा की गुरुवर ने।
प्रभु की मूर्तियां भी वे, अजब आनन्द देती है॥
कुशल गुरु० ॥ ७ ॥

गुरु के भक्त थे गुरुवर, अतः गुरु की मूर्तियों की।
प्रतिष्ठा आज भी उनकी, अजब आनन्द देती है॥
कुशल गुरु० ॥ ८ ॥

गुरु थे आप सुख सागर, गुरु भगवान उपकारी।
"हरि" गुरुदेव की पूजा, अजब आनन्द देती है॥
कुशल गुरु० ॥ ९ ॥

(काव्यम्)

सदाक्षताचार-विचारकारी,
दादा—मिधानःकुशलाख्य—सूरिः।
तत्पाद—पद्मद्वितयं नमामि,
तथाक्षतैः साधु नतो यजेऽहम्॥

मन्त्र—

ॐ ह्रीं श्री अर्हं परम पुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते
जिन शासनोद्दीपकाय श्री जिन कुशल
सूरीश्वराय अक्षतं यजामहे स्वाहा ॥



७-नैवेद्य पूजा ।

दोहा

सरस मधुर उपदेश सुन, श्रीगुरु की सुविशेष ।
सरस मधुर नैवेद्य से, पूजो गुरु हमेश ॥

(तर्ज—महावीर तुम्हारी मोहनमूर्ति देखी मन ललचाय)

जिन कुशल सूरीश्वर ज्ञानी गुरु की जाऊं मैं बलिहार ।
पूजूं नित सविनय भावे गुरु की जाऊं मैं बलिहार ॥टेर॥
गुरु ज्ञानी जग उपकारी, आगम उपदेश विहारी ।
आगम उपदेश विचारी, गुरु की जाऊं मैं बलिहार ॥
जिन कुशल० ॥ १ ॥
सत—भंगीनय परमाणी, वरस्याद वाद गुणखाणी ।
अमृत सम सुखकरवाणी, गुरु की जाऊं मैं बलिहार ॥
जिन कुशल० ॥ २ ॥

नवतत्व बोध विस्तारी, समझावें गुरु उपकारी ।
हेयादिक भाव विचारी, गुरु की जाऊं मैं बलिहार ॥
जिन कुशल० ॥ ३ ॥

षट् द्रव्य यथारथ तत्वे, जड़ चेतन पावन सत्वे ।
सुविवेक रहा सम्यक्त्वे, गुरु की जाऊं मैं बलिहार ॥
जिन कुशल० ॥ ४ ॥

मिथ्यात्वतिमिर भर नासे, आतम गुणपुण्य प्रकाशे ।
श्रीसद् गुरुबोध विलासे, गुरु की जाऊं मैं बलिहार ॥
जिन कुशल० ॥ ५ ॥

गुरु रवि शशि दीपक जैसे, गुरु सुरभि सुरतरुजैसे ।
गुरु सागर सुरगिर जैसे, गुरु की जाऊं मैं बलिहार ॥
जिन कुशल० ॥ ६ ॥

गुरु आसातन को टाली, गुरु आज्ञा जिसने पाली ।
उसने गुरु पदवी पाली, गुरु की जाऊं मैं बलिहार ॥
जिन कुशल० ॥ ७ ॥

गुरु सुखसागर सगवाना; गुरु जगमें युग परधाना ।
'हरि' सेवो शुद्ध विधाना, गुरु की जाऊं मैं बलिहार ॥
जिन कुशल० ॥ ८ ॥

(काव्यम्)

सुधासमान प्रतिबोधकारी
दादाभिधानः कुशलाख्यसूरिः ॥

त्वत्पाद पद्मद्वितयं नमामि
ढौकेऽथ नैवेद्यमहं सुभक्त्या ॥

मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परम पुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते
जिनशासनोद्दीपकाय श्रीजिनकुशल सूरीश्वराय
नैवेद्य यजामहे स्वाहा ।



८—फल पूजा ।

दोहा—

परम पुण्य कल्याण फल, दायी श्री गुरुदेव ।
फल पूजा मैं नित करूं सफल सत्य गुरु सेव ॥

(तर्ज-भवभय हरणा शिव सुख करणा सदा भजो श्रद्धाचारा म चारित्र।ऊ)

फल पूजा सद गुरु की करते, प्रगटे अति सुख साता ।
मैं वारी जाऊ प्रगटे अति सुख साता ॥ टेर ॥
श्रीजिनकुशलसूरीश्वरदादा, मनवाछित फलदाता ।
मैं वारी जाऊ मनवांछित फल दाता ॥ १ ॥
चन्द्र चकोर मोर मन बादल, गुरु मनिजन मन भाता ।
मैं वारि जाऊ गुरु मनिजन मन भाता ॥ २ ॥

दर्शन वन्दन करते तन मन, पाप ताप मिट जाता।
मैं वारि जाऊं पाप ताप, मिट जाता ॥ ३ ॥

बिन गुरु नर निगुरा कहलावे, भव भटकत दुःख पाता
मैं वारि जाऊं भव भटकत दुःख पाता ॥ ४ ॥

गुरु आज्ञावर्ति हो प्राणी, अगम निगम गुणज्ञाता।
मैं वारि जाऊं अगम निगम गुण ज्ञाता ॥ ५ ॥

चैत्यवन्दनवर कुलकसुटीका, गुरु साहित्य प्रख्याता।
मैं वारी जाऊं गुरु साहित्य प्रख्याता ॥ ६ ॥

गुरुसाहित्यउदितआदित्यकी, ज्योतिजगसुखदाता।
मैं वारि जाऊं ज्योति जग सुख दाता ॥ ७ ॥

गुरु पारस फरसत नर लोहा, वर सुवरन बन जाता।
मैं वारि जाऊं वर सुवरन बन जाता ॥ ८ ॥

सुखसागर भगवान सुगुरु हरि, पूजो भवभयत्राता।
मैं वारि जाऊं पूजो भव भय त्राता ॥ ९ ॥

(काव्यम्)

कल्याण-कल्पद्रु-फल प्रदायी
दादाभिदानः कुशलाख्यसूरिः ॥
तत्पाद-पद्मद्वितयं नमामि
फलेन पूजांसु समाचरामि ॥

मन्त्र—

ॐ ह्रीं श्री अर्हं परम पुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते जिनशासनोद्दीपकाय श्रीजिन कुशल सूरीश्वराय फल यजामहे स्वाहा।



९—वस्त्र पूजा

दोहा—

सद्गुरु उज्वल पुण्यतम, सद्गुरुवस्त्र विशेष।
पाप ताप जड़ता हरे, पूजो विधि युत वेश॥

(तर्ज—छोटे से बलमा मोरे आगने में)

श्री जिन कुशल सूरीन्द, दादा जय जयकारी।
श्रीजिन शासन सार; दादा विधि विस्तारी॥ टेर॥
शुद्धदेव—गुरु—धर्म, दादा रूप बतावे।
समकित गुण आधार, दादा जाऊं बलिहारी॥
श्री जिन कुशल० ॥ १ ॥

दोष रहित वीतराग, दादा देव हमारे।
और संसारी देव, हैं सब भय विस्तारी॥
श्री जिन कुशल० ॥ २ ॥

पंच महा व्रत धार, दादा सुविहित साधु ।
सद् गुरु है वे सार, आतम के हितकारी ॥
श्री जिन कुशल० ॥ ३ ॥

धर्म अहिंसा मूल, दादा जिन आज्ञा में ।
धारक जो नर नार, होवे वे भवपारी ॥
श्री जिन कुशल० ॥ ४ ॥

कुगुरु कुदेव कुधर्म, दादा त्याग करावे ।
समकित वर दे दान, अनहद आनन्द कारी ।
श्री जिन कुशल० ॥ ५ ॥

निश्चय अरु व्यवहार, दादा भेद बतावे ।
निश्चय धरो दिल बीच, वर्तो थे व्यवहारी ॥
श्री जिन कुशल० ॥ ६ ॥

सुख सागर भगवान, दादा कुशल गुरु की ।
महिमा अपरम्पार, गावे सब नर नारी ॥
श्री जिन कुशल० ॥ ७ ॥

गुरु आज्ञा परिधान, भविजन जो कर पावे ।
सुरू गणपति 'हरि' तास, गावे कीरति भारी ॥
श्री जिन कुशल० ॥ ८ ॥

(काव्यम्)

यः सद्गुणालंकृत पुण्य भावः
दादाभिधानः कुशलाख्यसूरिः ।

तत्पाद पद्म द्वितयं नमामि
वस्त्रेण पूजां विदधे सुभक्त्या ॥

मन्त्र

ॐ ह्रीं श्री अर्हं परम पुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते
जिन शासनोद्दीपकाय श्रीजिनकुशल सूरीश्वराय
वस्त्र यजामहे स्वाहा।

१०—ध्वज पूजा।

दोहा—

जिनशासन पावन-मनन, सद्गुरु ध्यान अनूप।
ध्वज पूजाकर भविक जन-होवें त्रिभुवन भूप ॥

(तर्ज—श्रीम वरप घरमा वस्या मन मोहनजी)

गुण गिरुआ गुरु पूजियें मन मोहनजी।
निज भरिये पुण्य भंडार-मन भय हरिये ॥
मन मोहनजी ॥ टेर ॥
कुशल सूरि गुरु राजरे-मन मोहनजी।
करदेश विदेश विहार-धर्म प्रचारीरे मन मोहनजी।
गुण गिरुआ० ॥ १ ॥

संघ चतुर्विध साथ में-मन मोहनजी ।
जीते वादी वृन्द-आनन्द कारीरे मनमोहनजी
गुणगिरुआ० ॥ २ ॥

ग्यासुद्दीन आदिक हुए मनमोहनजी ।
बादशाह महा भाग-गुरु गुण रागीरे मनमोहनजी
गुणगिरुआ० ॥ ३ ॥

म्लेच्छ उपद्रव जो करे मनमोहनजी ।
दे प्रति रोधक फरमान-गुरु परतापीरे मनमोहनजी
गुणगिरुआ० ॥ ४ ॥

जैनेतर शुद्धि करें मनमोहनजी ।
संख्या पचास हजार गुरु प्रभावीरे मनमोहनजी
गुणगिरुआ० ॥ ५ ॥

दशवर्षों तक गुरु रहें मनमोहनजी ।
श्री जेसलवर शृंगार-बोध अपारीरे मनमोहनजी
गुणगिरुआ० ॥ ६ ॥

तीस वरष साधुरहे-मनमोहनजी ।
गुरु आज्ञा पालनहार-हो अनगारीरे मनमोहनजी
गुणगिरुआ० ॥ ७ ॥

बार बरस युगवर रहे मनमोहनजी ।
खरतर गण नायकखास-पुण्य प्रकाशीरे मनमोहनजी
गुणगिरुआ० ॥ ८ ॥

तेरह सो नव्यासिये-मनमोहनजी ।
फागुण अमावसजाण-गुरु गुणखाणीरे मनमोहनजी
गुणगिरुआ० ॥ ९ ॥

सिन्धु मुख्य देराउरे-मनमोहनजी ।
गुरुस्वर्ग सिधारे हन दुःख अपारीरे मनमोहनजी
गुणगिरूआ० ॥ १० ॥

रीहड हरिपालादिने मनमोहनजी ।
स्वर्गोत्सव किया अपार "हरि" जयकारीरे मनमोहनजी
गुणगिरुआ० ॥ ११ ॥

(काव्यम)

ध्वजायमानो गुरु-जैन-संघे
दादाभिधानःकुशलाख्य-सूरिः ।
तत्पाद पद्म-द्वितयं नमामि
ध्वज प्रतिष्टामहमाचरामि ॥

मन्त्र—

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परम पुरुषाय परम गुरुदेवाय
भगवते श्रीजिनशासनोद्दीपकाय श्रीजिनकुशल
सूरीश्वराय ध्वजं यजामहे स्वाहा ।



※ कलश ※

दोहा—

सद्‌गुरु-पद-परतंत्रता, निजस्वतंत्रताहेतु ।
पूजन कर आराधिये-गुरु भवजल-निधिसेतु ॥
(तर्ज—तुम्हें नाथ नैया तिरानी पड़ेगी)

गुरु तुम्हें नैया तिरानी पड़ेगी,
तिरानी पड़ेगी तिरानी पड़ेगी ।
गुरु तुम्हें नैया तिरानी पड़ेगी ॥ टेर ॥

स्वर्गसिधारे खेवनहारे ।
पर संघ-नैया तिरानी पड़ेगी ॥ गुरु० १ ॥

सुख सूरीकी समयसुन्दरकी ।
नैया के जैसे तिरानी पड़ेगी ॥ गुरु० २ ॥

बोथर गुजरमल की जैसे ।
नैया हमारी तिरानी पड़ेगी ॥ गुरु० ३ ॥

लखमीपति दूगड की जैसे ।
विपति हमारी मिटानी पड़ेगी ॥ गुरु० ॥

केइ हजारों भक्त उबारे ।
बांह हमारी पकड़नी पड़ेगी ॥ गुरु० ५ ॥

शरणागत प्रतिपालक अपनी ।
सत्य प्रतिष्ठा निभानी पडेगी ।। गुरु० ६ ।।
श्रीजिन कुशल गुरु सुखसागर ।
शान्ति लहर को चलानी पडेगी ।। गुरु० ७ ।।
गुरु भगवान तुम्हें बस ध्याऊं ।
अपनी दया को दिखानी पडेगी ।। गुरु० ८ ।।
उन्नीस से चोराणु सरग दिन ।
अरजी ध्यान मे लानी पडेगी ।। गुरु० ९ ।।
विक्रम पुरवर दर्शन पाऊं ।
अपनी झाकी दिखानी पडेगी ।। गु० १० ।।
"हरि" गुरु पूजा सग चतुर्विध ।
मगल माला दिखानी पडेगी ।। गुरु० ११ ।।



इति पूज्यपाद प्रात स्मरणीय आबाल ब्रह्मचारी जैनाचार्य
श्रीमज्जिनहरिसागर सूरीश्वर विरचिता
श्रीतृतीय दादा गुरुदेव पूजा
समाप्ता

ॐ अर्हं नमः

श्री चतुर्थ दादा गुरुदेव श्रीमद अकबरशाही प्रतिबोधक

श्रीजिन चंद्रसूरीश्वर पूजा ।



* श्री गुरुपद स्थापना *

(शार्दूल विक्रीडितम्)

(१)

ॐ अर्हं प्रणिधान तत्परमना याचेऽधुना साञ्जलिः-
श्रीमच्छ्रीजिनचन्द्रसूरिभगवन् हेतूर्यदादागुरो ॥
भव्यानां सुसखागरोन्नति कृते गाढान्धकारोच्छिदे,
पीठेऽस्मिन्नमृतात्मनावतरतुप्रौढप्रभाश्च भवान् ॥



* आह्वान मन्त्र *

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अकबरशाहि प्रतिबोधक युग प्रधान श्रीजिनचंद्रसूरि सुगुरो ! अत्रावतरा वतर स्वाहा ।

(स्थापना मंत्र)

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अकबरशाहि प्रतिबोधक युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरि सुगुरो ! अत्र तिष्ठ ठः ठः ठः स्वाहा ।

(सन्निधिकरण मंत्र)

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अकबरशाही प्रतिबोधक युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरि सुगुरो ! मम सन्निहितो भव वषट् स्वाहा ।



*** मङ्गलाचरण ***

दोहा—

ॐ अर्हं गुरुदेव हैं श्रीजिनचन्द्र महान् ।
अकबर बोधक पूज्यतम, पूजो युग प्रधान ॥१॥
युग प्रधान जिनचद्र की, महिमा अपरपार ।
महा महोदय नित करें, सुखसागर विस्तार ॥२॥
श्री जिन वीर परपरा, गुण रतनों की माल ।
हैं चिन्तामणि सद्गुरु, दें वञ्छित तत्काल ॥३॥
सुविहित खरतर साधना, साधक सिद्ध महान् ।
चौथे दादा चन्द को, पूजो विविध विधान ॥४॥

जिन माणिक गुरु राजके, पात्रनतम पटधार ।
सद्गुरु श्री जिनचंद की, सेवा सुख भण्डार ॥५॥

गंगा जल निर्मल गुरु, गुरु चन्दन अनुरूप ।
गुरु सुमनस् विकसित करें, भरे सुवास अनूप ॥६॥

गुरु ज्योति भविजीवको, गुरु अक्षतपद देत ।
गुरु भवभूख हरें सदा, गुरु शिवफल संकेत ॥७॥

गुरु पूजे गुरु गुण मिलें, जग गौरव बढ जाय ।
तन्मय हो आराधिये, लट भंवरी के न्याय ॥८॥



१—जल पूजा ।

दोहा—

द्रव्य भाव जल रूप हैं, सद्गुरु निर्मल आप ।
जल पूजा भवि कीजिये, मिटे त्रिविध सन्ताप ॥ १ ॥

(तर्ज—भिनासर स्वामी अन्तरजामी तारो पारसनाथ)

(राग-माढ)

गुरु ग्यान की गंगा, सेवो चंगा,
भाव सुरंगा धार ॥ टेर ॥

श्रीजिन वीर हिमालय पावन, सद्गुरु गंग-प्रवाह ।
गौतम-सौधार्मादिक सेवो, शिवपुर सारथवाह रे ॥
गुरु ज्ञान की गंगा० ॥ १ ॥

उद्योतन सद्गुरु चेला, चौरासी गुणवान ।
चौरासी गच्छ हेतु उनमे, वर्द्धमान प्रधान रे ॥
गुरु ज्ञान की गंगा० ॥ २ ॥

श्री वर्द्धमान गुरुपद, सेवी सूरिजिनेश्वर ओर ।
बुद्धिसागर सूरि सद्गुरु ज्ञान-क्रिया गुण जोर रे ।
गुरु ज्ञान की गंगा० ॥ ३ ॥

पाटण दुर्लभराज सभा में, सिथिलाचारी साध ।
जीते गुरुने पावन पाया, खरतर विरुद अबाध रे ॥
गुरु ज्ञान की गंगा० ॥ ४ ॥

पटधर श्रीजिनचन्द्र गुरुपद, नवांगवृत्तिकार ।
अभयदेव पदे जिनवल्लभ, जिनशासन शृङ्गार रे ॥
गुरु ज्ञान की गंगा० ॥ ५ ॥

पटधर पहले दादा श्री जिनदत्त प्रभाव अमाप ।
उनके चन्द्रसूरि मणियाले, दूजे दादा आप रे ॥
गुरु ज्ञान की गंगा० ॥ ६ ॥

पट्ट परपर तीजे दादा, कुशल कला अभिराम ।
श्रीजिन कुशल गुरुपद पूजो, पूरे वांछित काम रे ॥
गुरु ज्ञान की गंगा० ॥ ७ ॥

पट्टानुक्रम श्रीजिन माणिक, सद्गुरु गुण भण्डार ।
पट्टप्रभावकचौथे दादा, जग में जय जयकार रे ॥
गुरु ज्ञान की गंगा० ॥ ८ ॥

दादा गुरु सुखसागर सांचे, पूज्येश्वर भगवान ।
अकबर भाव अहिंसक हेतु, युगपरधान महान रे ॥
गुरु ज्ञान की गंगा० ॥ ९ ॥

'हरि' गुरु श्रीजिनचन्द्र सूरीश्वर दादा चरणसरोज ।
भक्ति विमल जल सींचो फैले, निज आतम बल ओज रे ॥
गुरु ज्ञान की गंगा० ॥ १० ॥

श्लोक—

दिल्हीश्वराकबरबोधि युगप्रधान,
दादाभिधान सुगुरोर्जिनचन्द्रसूरेः ।
पादारविन्दयुगलं विमलात्मभावं,
दीव्यज्जलेन विमलेन सदा यजेऽहम् ॥

मन्त्र—

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परम पुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते
जिनशासनोद्दीपकाय अकबर सम्राट् प्रतिबोधकाय
युगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय
जलं यजामहे स्वाहा ।



१—चन्दन पूजा ।

दोहा—

द्रव्य-भाव चन्दन समा, सद्गुरुगुण अभिराम ।
चन्दन पूजा कीजिये, होय शांति सुखधाम ॥

(तर्ज—मेरे राम अयोध्या बुलालो मुझे)

गुरु चंद सुचंदन रूप जयो ।
कर पूजन शांति सुधाम भयो ॥ टेर ॥

गुरु खेतसर में ओशवंशी, गोत्र रीहड सन्मति ।
श्रीचंत शाह-प्रधान सिरिया, धर्मपत्नी थी सती ॥
गुरु माता-पिता पद पुण्य जयो ।
गुरु चन्द सुचंद रूप जयो ॥ १ ॥

परमेष्टि-निधि सर-चन्द्र संवत्, चैतवद वर बारसे ।
जन्मे सुलक्षण रूप राजित, पूर्ण तेजो-भार से ॥
सुलतान कुमार सुनाम जयो ।
गुरु चंद सुचंदन रूप जयो ॥ २ ॥

गणनाथ जिन माणिक्य, सूरीश्वर पधारे खेतसर ।
मोलमो पर चार मंगल, धर्म कार्य हुए प्रवर ॥
सुलतान कुमार विरागी जयो ।
गुरु चंद सुचंदन रूप जयो ॥ ३ ॥

विनय विधि वर युक्ति से, निज जनक जननी आज्ञया ।
दिव्य उत्सव साधु-पद, पाये परम गुरु-सेवया ॥
सुमतिधीर सुनाम विशेष जयो ।
गुरु चंद सुचंदन रूप जयो ॥ ४ ॥

बाल वयसें गुरु-विनय से, पुण्य विद्या प्राप्त की ।
बुद्धि वैभव कीर्ति अपनी, सब दिशा में व्याप्त की ॥
गुरु ज्ञान महान प्रधान जयो ।
गुरु चंद सुचंदन रूप जयो ॥ ५ ॥

देराउरसे जाते जेशलमेर गुरु माणिक्य वर ।
स्वर्गवासी होगये निज कीर्ति छोड गये अमर ॥
सद्गुरु पद सुमतिधीर जयो ।
गुरु चंद सुचंदन रूप जयो ॥ ६ ॥

युग चंद्र रस भू भादवा सुद, वारगुरु नवमी सुखद ।
श्री गुण प्रभसूरि वरने, सूरिमंत्र दिया विशद ॥
नृपमाल महोत्सवकारी जयो ।
गुरु चंद सुचंदन रूप जयो ॥ ७ ॥

साधु सुमतिधीर वर, विख्यात नाम हुए तभी ।
गणनाथ श्री जिनचंद्र सूरिराज जय बोलें सभी ॥
सुख सागर गुरु भगवान जयो ।
गुरु चन्द सुचन्दन रूप जयो ॥ ८ ॥

नृप नगर जेशलमेर धन धन, सूरिगुणप्रभ श्रेगडा।
माणिक्य गुरु पद धन्य धन, जिनचन्द्र गुरु गुण में वडा॥
'हरि' चन्दन पूजा भान जयो।
गुरु चद सुचदन रूप जयो॥ ६॥

श्लोक—

दिल्लीश्वराकबरबोधि-युगप्रधान,
दादाभिधानसुगुरोर्जिनचन्द्रसूरेः।
पादारविन्दयुगल वरचन्दनेन,
मद्वन्दनानतमनाः सतत यजेऽहम्॥

मन्त्र—

ॐ ह्रीं श्री अर्ह परमपुरुषाय परमगुरुदेवाय भगवते जिन शासनोद्दीपकाय बादशाह अकबर प्रतिबोधकाय युगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय चन्दन यजामहे स्वाहा॥



३—पुष्प पूजा।

दोहा—

द्रव्य भाव विकसित विमल, मञ्जुल गुरु पद फूल।
नित फूलों से पूजिये, गुरुशिवसुख अनुकूल॥

(तर्ज—प्रभु धर्म नाथ मोहे प्यारा जगजीवन मोहनगारा)

(राग—वनजारा)

जिन चन्द्र गुरु जयकारी, नित पूजो जग उपकारी ।
गुण ज्ञान-क्रिया अविकारी, निज जीवन विकसित कारी ।।टेर।।
गुरु जेशलमेर विराजे, गणनायक पद-गुणताजे ।
सोलह सो बारह-साले, चौमासा धर्म-प्रचारी ।।
जिन चन्द्र गुरु जयकारी ।। १ ।।

बच्छावत सिंह संग्रामा, मन्त्री विनती गुणधामा ।
गुरु बीकानेर पधारे, उत्सव के ठाट अपारी ।।
जिन चन्द्र गुरु जयकारी० ।। २ ।।

मन्त्री घुड़शाला भारी, गुरु संयम शुद्धाचारी ।
मत्थेरण शिथिलचारी, गुरु साधु क्रिया सुधारी ।।
जिन चन्द्र गुरु जयकारी० ।। ३ ।।

गुरु महेवा में चौमासी, तपस्या होवे छम्मासी ।
जिन शासन जगति प्रकाशे, गुरु योग-तपोबलधारी ।।
जिन चन्द्र गुरु जयकारी० ।। ४ ।।

ग्रामानुग्राम विहारे गुरु पाटण नगर पधारे ।
वहां सागर चर्चाकारी, विजय गुरु जय विस्तारी ।।
जिन चन्द्र गुरु जयकारी० ।। ५ ।।

सोलह सो मतरे वरषे, कार्तिक सुद सातम दिवसे।
सब गच्छी थे मध्यस्था, गुरु जय जय कीर्ति उचारी ॥
जिनचन्द्र गुरु जयकारी०॥ ६ ॥

सागर ने अति अभिमाने, कई ग्रथ लिखे मनमाने।
वे जलशरणागति पाये, गुरु महिमा अपरंपारी ॥
जिनचन्द्र गुरु जयकारी ॥ ७ ॥

जिन चन्द्र गुरु सुखसिंधु, भगवान अकारण बन्धु।
है चरण गुरु सुखकारी, पूजों भवि सुमनस् धारी ॥
जिनचन्द्र गुरु जयकारी० ॥ ८ ॥

कमनीय कुसुम वरमाला, पूजो गुरु पुण्य विशाला।
'हरि' सद्गुरु की बलिहारी, दे विकसित पद अधिकारी ॥
जिनचन्द्र गुरु जयकारी० ॥ ९ ॥

श्लोक—

दिल्हीश्वराकबरबोधि-युगप्रधान,
दादाभिधान सुगुरो जिनचन्द्रसूरेः।
पादारविन्दयुगलं कुसुमोपचारैः,
मत्सौरभैरनुदिन प्रणतो यजेऽहम् ॥

मन्त्र—

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परमपुरुषाय परमगुरुदेवाय भगवते जिनशासनोद्दीपकाय अकबर सम्राट् प्रतिबोधकाय युगप्रधान श्रीजिनचंद्रसूरीश्वराय पुष्पाणि यजामहे स्वाहा ।



४—फल पूजा ।

दोहा—

द्रव्य-भाव सौरभमयी, सद्गुरु, श्रीजिनचन्द ।
सौरभमय वर धूप से, पूजो परमानंद ॥

(तर्ज—केसरिया थांसु प्रीत लगी रे सच्चा भाव सुं)

सुरभित गुण बोधा,
सद्गुरु जिनचन्दा पूजिये ॥ टेर ॥

थंभण पारस भेटें सद्गुरु, खंभायत चौमासा ।
प्रभु प्रतिष्ठा साधु-दीक्षा बहुविध धर्म प्रकाशा रे सुर० ॥१॥

अहमदाबादे सद्गुरु पासे, सारंगधर सतवादी ।
श्रावक लावे गुरु महिमाहित, मानी पण्डित वादी रे सुर० ॥२

एक समस्या मक्खीलाते, त्रिभुवन कापा भारी ।
चित्रलिखा मह जलकुण्डे में, बुधनोला बलिहारी रे सुर०॥३॥
बीकानेर सुपार्श्व प्रतिष्ठा, महिमराज की दीक्षा ।
पटधारी जो आगे होंगे, पा सद्गुरु से शिक्षा रे शुर० ॥४॥
श्रीनाडोल नगर में सद्गुरु, मुगल सैन्य भय भागे ।
सद्गुरुध्यान अभयपददाता, जीवन ज्योति जागे रे सुर०॥५॥
मेवातादिक विकट देशमें, होकर सद्गुरु भावे ।
हस्तीनापुर सौरिपुरादिक, भेटे पुण्य प्रभावे रे सुर० ॥ ६ ॥
पुर जालोरे अरु पाटण मे, गुरु शास्त्रारथ जीते ।
राज नगर मे खरतर दृढता, करे परमगुरु प्रीते रे सुर० ॥७॥
चार दिशा के माह सघ सह, सिद्धाचल भेटें ।
निज पर दर्शन शुद्धि करते, कुमति कुवासना मेटें रे सुर० ॥८॥
सतत विहारी सद्गुरुचउविव, मघ महोदय करते ।
पचमहाव्रत अरु बारहव्रत, अभय मार्ग नित भरतेरे सुर०॥६॥
सद्गुरु सुखसागर भगवाना, गुरु 'हरि' पूज्य प्रधाना ।
गुरु सौरभ धूप सुपूजा, करो भविक गुणज्ञानारे सुर० ॥१०॥

श्लोक—

दिल्ही श्वराकब्बरबोधि–युगप्रधान,
दादाभिधान सुगुरो र्जिनचन्द्रसूरेः ।
पादारविन्दयुगल कलयाभिराम,
सद्गन्धि धूप करणेन सदा यजेऽहम् ॥

मन्त्र—

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परमपुरुषाय परमगुरुदेवाय भगवते
जिनशासनोद्दीपकाय अकबर सम्राट् प्रतिबो-
धकाय युगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय
धूपं यजामहे स्वाहा ।



५—दीपक पूजा ।

दोहा—

द्रव्य भाव दीपक गुरु, पूजो दीपकधार ।
लोका लोक विलोककर, पावो सुखभण्डार ॥

(तर्ज—कुबजाने जादु डारा)
(राग सोरठा)

जिनचन्द्र जगत सुखदाता रे ।
गुरु दीपक ज्योति प्रधाना ॥ टेर ॥

विबुधन के मुखतें गुरु महिमा, सम्राट् अकबर जाना ।
मंत्री कर्म चंद्रवच्छावत, आमंत्रण फरमाना रे गुरु० ॥ १ ॥
खंभायत अतिदूर, निकट में चौमासे का आना ।
पदचारी हैं सद्गुरु तो भी, होगा धर्म महाना रे गुरु० ॥२॥

सविनय विनती पत्र गुरु को, भेजे चतुर सुजाना।
महा धरम का लाभ समझ गुरु, शुभ शुकने प्रस्थानारे गुरु०॥३॥

आषाढी सुद आठम विचरे, तेग्म गुरु गुणवाना।
राज नगर में संघ महोदय, स्वागत सुखदविधाना रे गुरु०॥४॥

सद्गुरु संघ उभय यह निश्चय, अपवादें थिर ठाना।
धर्मोन्नति राजाग्रह मगत, चौमासे का नाना रे गुरु० ॥५॥

सिधपुर-पाटण अरु पालनपुर, सद्गुरु का परधराना।
सुन आमंत्रे गव सिरोही-स्वामी श्रीसुरताना रे गुरु० ॥६॥

जीव अमारी आठ दिवस नित, पूनम अभय प्रधाना।
पर्यूषण गुरु करें सिरोही, उत्सव पुण्य खजानना रे गुरु०॥७॥

जाबालीपुर शेष चौमासा, अकबर का फरमाना।
मिगसर पुण्ये गुरु गामानु, गाम विहार वितानना रे गुरु०॥८॥

रोहीठ ठाकुर गुरु उपदेशें, दें जीवाभयदाना।
जेशल जोधपुरादि भारी, संघ करें सनमाना रे गुरु० ॥९॥

विलाडे गुरु अरु मेडते, मन्त्री सुत अभिमाना।
पचशब्द के बाजे बाजें, मावे विजय निशाना रे गुरु० ॥१०॥

गुरु नागोर पधारें मन्त्री, मेहा उत्सव ठाना।
बीकानेरी संघ गुरु को, वादे विनय विधाना रे गुरु० ॥११॥

चापेउ पडिहारा माला-सर रिणीपुर नाना।
सद्गुरु स्वागत संघ चतुर्विध जीवत जनम प्रमाना रे गुरु०॥१२॥

सरसा सुखसागर वरभूमि, हापाणई मनभाना ।
मंत्री कर्म वधाई बांटे, धन धन गुरु भगवाना रे गुरु० ॥१३॥
हरि गुरु दीपक चौद भुवन में पाप पतंग जराना ।
दीपक पूजाकर नित भविजन, आतम ज्योति जगानारे गु०॥१४॥

श्लोक—

दिल्हीश्वराकबरबोधि-युगप्रधान,
दादाभिधान सुगुरो जिनचन्द्रसूरेः ।
पादारविन्द-युगलं प्रकटप्रकाशं,
दीपप्रदीप करणेन सदा यजेऽहम् ॥

मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परम पुरुपाय परम गुरुदेवाय भगवते
जिन शासनोद्दीपकाय अकबर सम्राट् प्रतिबोधकाय
युगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय
दीपं यजामहे स्वाहा ।

—:—

६—अक्षत पूजा ।

दोहा—

द्रव्य भाव अक्षत गुरु, अक्षतपद अभिराम ।
अक्षत पूजा कीजिये, हो अक्षत धन-धाम ॥

(तर्ज—आवो आवो हे मेरे साधु रहो गुरु के संग)

पूजो पूजो हे भविजन सद्गुरु अनंत भाव अभंग।
पूजो पूजोजिनचन्दसूरीश्वर दादा प्रेम अभंग ॥ टेर ॥
कर्म चन्द्र मंत्री अगिवानी, मिलकर श्रावक संघ।
श्री लाहोर नगर पधरावें, महा महोत्सव रंग, पूजो० ॥ १ ॥
वर वाजिंत्र विजयध्वज आगे, हाथी मत्त तुरंग।
राज पुरुष सद्गुरु स्वागत में, आये महा उमंग, पूजो० ॥२॥
सोलह सो अडतालीस फागुन, सुद बारस दिन चंग ॥
अकबर परि जन सह गुरू दर्शन, करता भाव सुरंग, पूजो० ॥३॥
थे इकतीस यशस्वी पण्डित, साधु सद्गुरु संग।
महती महिमा लख गुरूवर की, दुनिया रहगई दंग, पूजो० ॥४॥
दिव्य धरम प्रवचन जगहितकर, पावन गंग तरंग।
सुन अकबर तन मन से बोला, धन सद्गुरू सतसंग, पूजो० ॥५॥
शाल दुशाले सोना मुहरें, मणि रत्नों के नग।
अकबर भेंट धरें गुरू त्यागे, धन निस्पृह निस्संग, पूजो० ॥६॥
त्यागी जीवन सबसे ऊंचा, हैं गुरु आप उत्तंग।
दर्शन पा हर्षित मन मेरो, धन दिन आन प्रसंग, पूजो० ॥७॥
करू प्रार्थना सद्गुरु देना, दर्शन दान अभंग।
नित प्रति बोध सुनाना प्रगटे, दया धरम दृढ रंग, पूजो० ॥८॥
अकबर को दें धर्मलाभ गुरू, मंत्री मन उच्छरंग।
परवत शाह सुगुरु पधरावे, उत्सव अद्भुत ढंग, पूजो० ॥९॥

सुखसागर भगवान परमगुरू, जय-विजयी सरवंग ।
अक्षत भावे 'हरि' नित पूजो, जीतो जीवन जंग पूजो० ॥१०॥

श्लोक—

दिल्हीश्वराकवरबोधि-युगप्रधान,
दादाभिधान सुगुरो जिनचन्द्रसूरेः ।
पादारविन्द युगलं प्रकट प्रभावि,
भव्याक्षतैर्विनयभावनतो यजेऽहम् ।

मन्त्र—

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परम पुरुषाय परम गुरूदेवाय भगवते
जिनशासनोद्दीपकाय अकबर सम्राट् प्रतिबोधकाय
युगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय
अक्षतं यजामहे स्वाहा ॥



७—नैवेद्य पूजा

दूहा—

द्रव्य-भाव पोषण करें, सद्गुरु-वर परसाद ।
नित पूजो नैवेद्य से, भागे भूख अनाद ॥

(तर्ज—कमली वाले ने०)

जिन धर्म का डंका आलम में, बजवाया चंद सूरीश्वर ने ।
अकबर जिनमत अनुरागी किया, सद्गुरु जिनचन्द्र सूरीश्वरने ॥
॥ टेर ॥

अकबर सुत शाहि सलीम सुता, मूला में जनमी दोष महा ।
शांति हित शांति मनात्र रचाई, सद्गुरु चन्दसूरीश्वरने ॥
जिन० ॥ १ ॥

दश सहस रुपैये मंदिर में, अकबर ने सादर भेंट किये ।
जिन शासन गौरव खूब बढाया, श्रीगुरु चंद सूरीश्वरने ॥
जिन० ॥ २ ॥

निधि वेद ऋतु भू मित वर्षे, अकबर आग्रह को लेकर के ।
लाहोर मे चौमासा ठाया, गुरुवर जिनचन्द्र सूरीश्वरने ॥
जिन० ॥ ३ ॥

म्लेच्छों से तीरथ रक्षा हित, अकबर को पावन बोध दिया ।
तीरथ-रक्षा फरमान-पत्र, लिखवाये चन्द सूरीश्वरने ॥
जिन० ॥ ४ ॥

काश्मीर विजय को जाते हुए, अकबर ने गुरु दर्शन चाहा ।
दे आशीर्वाद प्रसन्न किया, उपकारी चन्द-सूरीश्वरने ॥
जिन० ॥ ५ ॥

आषाढी नवमी से पूनम, तक अपने बारह सूबों में ।
अकबर से जीवदया फरमान, लिखाये चन्द सूरीश्वरने ॥
जिन० ॥ ६ ॥

दिन दश पनरे अट्ठीस पचीस, तथा महिना दो महिना की।
नृप ओरों से भी जीवदया, करवाई चन्द सूरीश्वरने ॥
जिन० ॥ ७ ॥

काश्मीर विजय में अकबर ने, गुरू शिष्य बड़े निज साथ लिये।
त्यागी जीवन की महिमा को, दिखलाई चन्द्र सूरीश्वरने ॥
जिन० ॥ ८ ॥

श्री नगर अमारी आठ दिनों, तक करवाई गुरू शिष्योंने।
निज दिव्य ज्ञान गुण गरिमा को, दिखलाया चन्द सूरीश्वरने ॥
जिन० ॥ ९ ॥

अकबर ने गुण रंजित होकर, वर 'युगप्रधान' पद खूब दिया।
जिन शासन डंका बजवाया, सुख सागर चंद सूरीश्वरने ॥
जिन० ॥ १० ॥

जीवाभय दान विधान गुरू, भगवान की पूजा नित्य करो।
'हरि' अभय बनो जय विजय वरो, फरमाया चंद सूरीश्वरने ॥
जिन० ॥ ११ ॥

श्लोक—

दिल्हीश्वराकबर बोधि-युगप्रधान,
दादाभिधान सुगुरोर्जिनचन्द्रसूरेः।
पादारविन्द युगलं परम प्रसादं
नैवेद्यवस्तुभिरहं प्रणतोय जेऽहम् ॥

मन्त्र—

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परमपुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते
जिन शासनोद्दीपकाय अकबर सम्राट् प्रतिबोध
काय युगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय
नैवेद्य यजामहे स्वाहा ।



८—फल पूजा ।

दोहा—

द्रव्य भाव सुखफल सदा-दें सद्गुरु महाराज ।
उत्तम फल से पूजिये-घटे विघन घन गाज ॥

(तर्ज—बेडापार लगाना, प्रभुजी भूल न जाना)

गुरु सुरतरू अधिकाना, पूजो जुग परधाना ।
सद्गुरू सुख-फलदाना, पूजो चतुर सुजाना ॥ टेर ॥

अकबर सन्मानित पद पाये, त्रिभुवन में जयनाद गुंजाये ।
मन्त्रीश्वर उत्सव विरचाये, गुरू परम पुण्यवाना ॥
पूजो जुग० ॥ १ ॥

बडे शिष्य गुरू के जयकारी, महिमराज महिमा अविकारी ।
सूरि पद के थे अधिकारी, जिन सिंहसूरि महाना ॥
पूजो जुग० ॥ २ ॥

श्री जय सोमऽरू रत्ननिधाना, उपाध्याय पावन पद पाना।
गुणी गुण का वह था सनमाना, संघ सकल मनमाना ॥
पूजो जुग० ॥ ३ ॥

पंडित श्रीगुणविनय महोदय, समयसुन्दर थे कविवर निर्भय।
दिव्य वाचनाचार्य यशोमय, पद पाये पुण्य प्रधाना ॥
पूजो जुग० ॥ ४ ॥

धन अवसर धन सद्गुरू राया, धन अकबर यह भाव उपाया।
धन मन्त्रीश्वर कर्म कहाया, शासन शोभ बढाना ॥
पूजो जुग० ॥ ५ ॥

गुरु पद पुण्य महोत्सव अकबर, श्रीखंभात अखाते जलचर।
जीवों को दें अभयदान वर—जारी किये फरमाना ॥
पूजो जुग० ॥ ६ ॥

श्री लाहौर नगर में सुखकर, अभय अमारी पटह बजाकर।
सद्गुरु बोध प्रभाव भाव भर,—भरा स्व पुण्य खजाना ॥
पूजो जुग० ॥ ७ ॥

नव हाथी नव गांव अनुत्तर, हय शत पंच विशेष मनोहर।
सवा कोड धन जाचक जन-कर, दें मंत्रीश्वर दाना ॥
पूजो जुग० ॥ ८ ॥

युग प्रधान गुरू जय जयकारा, पुलकितमन जग जन ललकारा।
सुखसागर गुरू प्राण-अधारा, जय जय गुरू भगवाना ॥
पूजा जुग० ॥ ९ ॥

भव्य-भाव की दिव्य निशानी-सद्गुरु पूजा शिव फलदानी।
'हरि' गुरु पूजो जुगपरधानी-सीधे शिवपुर जाना ॥
पूजो जुग० ॥ १० ॥

श्लोक—

दिल्हीश्वराकबरबोधि युगप्रधान,
दादाभिधान सुगुरोर्जिनचन्द्रसूरेः।
पादारविन्दयुगल सफल फलौघैः,
सद्भक्तिभावसमर्पणमना यजेऽहम् ॥

मन्त्र—

ॐ ह्रीं श्री अर्हं परम पुरुषाय परमगुरु देवाय भगवते जिनशासनोद्दीपकाय अकबर सम्राट् प्रतिबोधकाय युगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय फल यजामहे स्वाहा।



९—वस्त्र पूजा।

दोहा—

द्रव्य भाव गुरु वस्त्र है-रखें हमारी लाज।
पूजो सद्गुरु वस्त्र से-सिद्ध होयँ सब काज ॥

(तर्ज–महावीर तुम्हारी मोहन मूरती देखी मन ललचाय)

जिनचंद गुरु जय कारी पूजो युगपरधान महान ॥ टेर ॥

गुरु योग-तपो बल धारी, बकरी संख्या त्रिविस्तारी ।
अकबर आश्चर्य अपारी-पाया, धन गुरुवर विज्ञान जि० ॥१॥

काजी निजटोपी उडाई, गुरु रजोहरण से लाई ।
अद्भुत महिमा दिखलाई, धन धन सद्गुरु महिमावान जि० ॥२॥

शासन रक्षक गुरु राया, अमावस पूनम गाया ।
पूरण वर चांद दिखाया, थे गुरू पूरे पहुँचवान जि० ॥३॥

चोरों ने ग्रंथ चुराये, गुरू महिमा अंध बनाये ।
सब चोर लगे गुरू पाये, त्यागी चोरी पाप प्रधान जि० ॥४॥

तप संयम गुरू तदबीरा, गुरू पंच नदी के पीरा ।
थे सधे असुर-सुर वीरा: गुरु के सेवक भक्तिमान जि० ॥५॥

अकबर सम्राट् सनूरा; जोधाणपति सिंह[1] सूरा ।
बीकाणपतिराय[2] पूरा; सद्गुरु परम भक्त गुणवान् जि० ॥६॥

श्री जहांगीर फरमाना; साधु-विहार अटकाना ।
दे बोध सुमुक्त कराना; गुरुकी शासन सेव महान् जि० ॥७॥

साह शिवा-सोम दो भाई; निर्धनता दूर भगाई ।
गुरु सेवा मेवा पाई, सेवो सद्गुरु सदा सुजान जि० ॥८॥

गुरु सुखसागर भगवाना, गुरू अशरण शरण प्रधाना ।
'हरि' गुरू पूजो सुविधिविधाना; पावो गुरू-पद गुरू गुणज्ञान जि० ॥९॥

१—जोधपुर के महाराजा श्रीसूरसिंहजी २—बीकानेर के महाराजा श्रीरायसिंहजी गुरु महाराज के भक्त थे ।

श्लोक—

दिल्लीश्वरगकबर बोधि-युगप्रधान,
दादाभिधान सुगुरोर्जिनचन्द्रसूरेः ।
पादारविंद-युगल परम पवित्रं,
मद्वस्त्रढौकनपरोऽनुदिनं यजेऽहम् ॥

मन्त्र —

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परम पुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते
जिनशासनोद्दीपकाय अकबर सम्राट् प्रति-
बोधकाय युगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय
वस्त्र यजामहे स्वाहा ।



१०—ध्वज पूजा ।

दोहा—

द्रव्य भाव ध्वज रूप है—सद्गुरु शासन गेह ।
ध्वज पूजा कर भविक जन—जनम सफल विधि एह ॥

(तर्ज—तीरथ नी आशातना नवि करिये)

सद्गुरु की कर पूजना मनि भावे, हांरे गुरु पावन पदवी पावे ।
हांरे गुरु ज्ञान कला प्रकटावें; हांरे आसतना टार स० ॥टेर॥

युगप्रधान गुणी गुरु जिनचंदा, हांरे उपकारी भाव अमंदा।
हांरे गुरु ज्योति सूरज चंदा; हांरे मेटे भव भव के सब फंदा॥
हांरे गुरु तारणहार सद्० ॥ १ ॥

जिन दर्शन अभिरामता गुरु भासे, हांरे प्रभु प्रतिमा भावोल्लासे।
हांरे गुरु पुण्य प्रतिष्ठा प्रकासे; हांरे उत्सव विधि खूब विलासे॥
हांरे उनका नहीं पार-सद्० ॥ २ ॥

शाह शिवाजी सोमजी दो भाई, हांरे राज नगरे पुण्यकमाई।
हांरे प्रभुमंदिर ज्योति जगाई, हांरे गुरु प्रतिष्ठा अधिकाई॥
हांरे खोले धन भण्डार-सद्० ॥ ३ ॥

बीकानेर पुरे गुरु जयकारा, हांरे शत्रुंजय सम अवतारा।
हांरे जिन चैत्य उत्तुंग उदारा; हांरे प्रतिष्ठा और अपारा॥
हांरे उत्सव बलिहार-सद्० ॥ ४ ॥

श्रीचिंतामणि देव के भंडारी, हांरे जिन प्रतिमा गुप्त हजारी।
हांरे गुरु अकबर बोध प्रचारी, हांरे लाये महिमा अधिक अपारी॥
हांरे दे उपद्रव टार-सद्० ॥ ५ ॥

सीरोही प्रमुखे पुरे गुरुराया, हांरे प्रतिष्ठा ठाठ रचाया।
हांरे लुंपक मत रोक लगाया, हांरे जिनशासनझंड जमाया।
हांरे गुरु धन अवतार-सद्० ॥ ६ ॥

खंभाते बीकाणा में सुखकारा, हांरे वर ग्रन्थ सुरत्न भंडारा।
हांरे साहित्य किया विसतारा, हांरे गुरु ज्ञान क्रिया बल धारा॥
हांरे पूरे पंचाचार-सद्० ॥ ७ ॥

गुरु उपदेशें तीर्थ के मघ भारी, हारे तीरथ तारे भवपारी।
हारे सिद्धाचलवर गिरनारी, हारे आबु प्रमुख उपकारी।
हारे यात्रा हितकार–सद्० ॥ ८ ॥
सुखमागक है सद्गुरु भगवाना, हारे पूजो सद्गुरु जुग परधाना।
हारे जिन जन्मको सफल बनाना,हारे"हरिगुरु"शासन ध्वजमाना।
हारे बोलो जय जयकार–सद्० ॥ ६ ॥

श्लोक—

दिल्लीश्वराकबर बोधि युगप्रधान-
दादाभिधान-सुगुरो जिनचन्द्रसूरेः।
पादारविन्दयुगलोत्तम दिव्यदेशे,
पुण्यध्वज सुप्रति रोपयितास्मि भक्त्या ॥

मन्त्र—

ॐ ह्रीं श्री अर्हं परम पुरुषस्य परम गुरु देवस्य भगवतः
जिनशासनोद्दीपकस्य अकबर सम्राट् प्रतिबो-
धकस्य युगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वरस्य
मंदिरोपरि ध्वजा आरोपयामि स्वाहा।

—★—

※ कलश ※

दोहा—

गुरु भज निगुरापन तजो, गौरव बढे विशेष।
उपकारी गुरुदेव हैं; दें गुण ज्ञान हमेश ॥

(तर्ज—तेजतरणि सम राजे०)

पूजो जग जयकारी गुरु हैं पूजो जग जयकारी ॥ टेर ॥
तीर्थंकर विरही जीवों को, धर्म बोध दातारी गुरु हैं० ।
देश विदेश विहारी स्वामी, उपकारी अवतारी गुरु हैं० ॥१॥
शासन सेवा खूब बजा कर—युगप्रधान पदधारी गुरु हैं० ।
नगर बीलाडे या वेणातट—आये गुण अधिकारी गुरु हैं० ॥२॥
अंत समय निज जान—त्रिविध कर अनशन भाव उचारी गुरु हैं. ।
परमेष्ठी वर ध्यान समाधि, हुए स्वर्ग अधिकारी गुरु हैं० ॥३॥
आसोवद दिन दूज सोलहसो,साठ समय गुणधारी गुरु हैं० ।
पंडित मरण महोत्सव किन्तु संघ में शोक अपारी गुरु हैं० ॥४॥
सिंह समाना सूरीश्वर जिनसिंह,सुगुरु पटधारी गुरु हैं० ।
धन कर्मेन्दु मंत्री धन गुरु, ज्योति जगति विस्तारी गुरु हैं० ॥५
अकबर शाह विशेष दयामय, हुआ धरम अधिकारी गुरु हैं० ।
धन परभावक पूज्य परम गुरु, भाव जयन्ति धारी गुरु हैं०॥६॥
खरतर गण नायक सुखसागर, सद्गुरु की बलिहारी गुरु हैं ।
गुरु भगवान भजो भवी भावे, भवोदधिपार उतारी गुरु हैं०॥७॥
संवत् गज निधि निधि भू वर्षे, मोकलसर मनुहारी गुरु हैं०।
सावण बद दिन दूज गुरु को, पूजा मंगलकारी गुरु हैं० ॥८॥
जिनहरि सागरसूरि गुरु गुण, गाये पावनकारी गुरु हैं० ।
युगप्रधान जिनचन्द्र चरण कज, पूजा जय जयकारी गुरु हैं०॥९॥





श्री दादा गुरुदेव की पूजा



(पहिले स्थापना करके आह्वान का श्लोक पढ़ें)

सकल गुण गरिष्टान् सत्तपोभिर्गरिष्टान् । शम-दमयु मनुष्टाश्चारुचारित्र निष्टान् । निखिल जगति पीठे दर्शितात्म प्रभावान् । मुनिप कुशल सूरीन् स्थापयाम्यत्र पीठे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिनकुशल सूरि गुरो अत्रा-नतरानतर स्वाहा । इति आह्वान ॥ ॐ ह्रीं श्री श्री जिन कुशल सूरिगुरो अत्र मम सन्निहितो भवभवट ॥ इति सन्निधि करण । २ ॥



अष्ट प्रकारी पूजा

॥ दोहा ॥

गंगाजल तिम नृवलवलि, तीर्थोदक भरपूर ।
कलश भरी गुरुचरण पर, ढालै तस दुःख दूर ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥
(देशी सूरती महीनानी)

गंगाजल अति निरमल अमलसु कमले पूर । क्षीरो-दधि वरदधि ज्यों उज्वल जल भरपूर । तेह उदकवलि तीर्थ नीर भरि कलश सनूर । गुरुचरणे जे ढालै टालै दुक्कत दूर ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिनकुशल सूरीगुरुः चरण कमलेभ्यः जलं नर्विपामिते स्वाहा ॥

॥ इति जल पूजा ॥

चन्दन पूजा

॥ दोहा ॥

बावन्ना चंदन अगर, घस केसर घन सार ।
चरचे जे गुरु चरणनैं, पामें जै जैकार ॥

॥ ढाल ॥

मलयागिर तिम अगर चन्दन चलिकेशर सार। कस्तूरी अतिगधै पूरी घस घनसार। कुशल सूरि गुरु चरणे चरचै चढतै भार। सकल रोग तन शोक हरै नलि जडता भार ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्री श्री जिनकुशल सूरिगुरुः चरण कमलेभ्यः चन्दन निर्विपामिते स्वाहा ॥ ३ ॥

॥ इति चन्दन पूजा ॥

पुष्प पूजा।

॥ दोहा ॥

केतकि चपक फूल थीं, पूजै जे गुरु पाय।
तसु जश सूर उदै हुव, अपजस तिमिर नसाय ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

चपक केतकि मरुवो दमन सेवन्ती फूल। जाई जूई मोगरो मालती तेम उङ्घल। कमल गुलाब चमेरी वेली परमल पूर। गुरु चरणे जे ढोवै होवे जस ज्यूं सूर ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिनकुशल सूरिगुरुः चरण कमलेभ्यः पुष्प निर्विपामिते स्वाहा ॥ इति पुष्प पूजा ॥

अक्षत पूजा ।

॥ दोहा ॥

उज्जल ज्यों शशि अकवर्णि, खंडित नहीं विशाल ।
अक्षत गुरु चरणें ठवै, तसु घर मंगल माल ॥१॥

॥ ढाल ॥

सरल सुगन्धित तंडुल उज्जल उत्पन्न ।
ज्यूं वर मोती आभा हुन्ती उज्जलवन्त ॥
जल धोई ससमोई, सोई अक्षत नव्य ।
स्वस्तिक कुशल बधावै, पावै मंगल भव्य ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिनकुशल सूरिगुरुः चरण कमलेभ्यः अक्षतं निर्विपामिते स्वाहा ॥ इति अक्षत पूजा ॥

दीप पूजा

॥ दोहा ॥

कंचन मणिमय रत्न नी, दीवो कर घृतपूर ।
बाती मौली सूत धर, करो प्रदीप सनूर ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

कंचन घटित जटित गति नानाविधि नव रत्न ।
दीवी अति कारीगर कीवी अधिकै यत्न । घृत पूरी सस

नूरी मौली वाती जोय। दीप करै गुरु आगे ज्योत उद्योती होय ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिनकुशल सूरिगुरुः चरणकमलेभ्यः दीप निर्विपामिते स्वाहा ॥ इति दीप पूजा ॥

धूप पूजा

॥ दोहा ॥

बावन्ना चंदन अगर। सेल्लारस घनसार।
धूपै जे गुरु धूप थी तस घर रिध विस्तार ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

अगर चंदन सेल्लारस छाड छबीलो मेल। कपूर काचरी वलि घनसारैं मृगमद मेल। धूप अडग करी गुरु धूपै चढ़ते चित्त। ते नरनित्त सुमारग पामैं नव नव नित्त ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिनकुशल सूरिगुरुः चरणकमलेभ्यः धूप निर्विपामिते स्वाहा ॥ इति धूप पूजा ॥

नैवेद्य पूजा

॥ दोहा ॥

साक दाल पक्वान घन, व्यंजन नव नव भात।
नेवज गुरु आगल ठवै, क्षुधा दोष उपशात ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

पेंडा मगद सेवइया लाडू मोतीचूर ।
खाजा ताजा लापसी ढोठानें घृतपूर ।
पिस्ता दाख बिदाम छुहारा पिंडखजूर ।
गुरु चरणे जे ढोवै भोग लहै भरपूर ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिनकुशल सूरिगुरुः चरण कमलेभ्यः नैवेद्यं निर्विपामिते स्वाहा ॥ इति नैवेद्य पूजा ॥

फल पूजा

॥ दोहा ॥

श्रीफल सीताफल सदा, फल पूंगीफल लेय ।
ढोवै जे गुरु चरणापर, तसु उत्तम फल देय ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

श्रीफल सीताफल नारंगी दाड़म दाख ।
खरबूजा तरबूज जंभेरी पाखी साख ।
करुणा कवला केला नींबू फनस सफार ।
गुरु चरणें फल ढोई फल पामैं श्रीकार ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिनकुशल सूरिगुरुः चरण कमलेभ्यः फलं निर्विपामिते स्वाहा ॥ इति फल पूजा ॥

अर्घ पूजा

(अथ कलश)

इम जिनकुशल सुरिंदने, पूजै अष्ट प्रकार। तसु घर नवनिधि संपजै पुत्रादिक परिवार ॥१॥ भट्टारक खरतरगच्छे, श्री जिन लाभ सुरिंद। रत्नराज मुनि भमरपर, सेवै पद अरविंद ॥२॥ तासु चरण रज कण समो, ज्ञान सार बुद्धि-मद। श्री सद्गुरु पूजा रचो, मोधो कविजन वृन्द ॥३॥

इति दादा श्री जिनकुशल सूरि सुगुरुणां अष्ट प्रकारी पूजा समाप्तम्।



गुरुदेव की बड़ी पूजा

अथ न्हवण पूजा।

(स्नात्रिया शुचि होके जल का कलश ले खड़ा रहे)

॥ दोहा ॥

ईश्वर जग चिन्तामणि, कर परमेष्ठी ध्यान।
गणधर पदगुण वर्णना, पूजन करो सुज्ञान ॥ १ ॥
सौधर्म्मा मुनिपत प्रगट, वीर जिनेश्वर पाट।
मिथ्या मत तम हरन कूं, भव्य दिखावन वाट ॥ २ ॥
सुस्थित सु प्रतिबद्ध गुरु, सूरि मन्त्र को जाप।
कोटिकियो जब ध्यान धर, कोटिक गच्छ सुथाप ॥ ३ ॥
दश पूर्व्वी श्रुत केवलो, भये वज्र धर स्वाम।
तादिन तें गुरु गच्छ को, वज्र शाख भयो नाम ॥ ४ ॥
चन्द्र सूरि भये चन्द्र सम, अति ही बुद्धि निधान।
चन्द्रकुली सब जगत में, पसरयो बहु विज्ञान ॥ ५ ॥
वर्द्धमान के पाट पद, सूरि जिनेश्वर भास।
चैत्यवासि कूं जीत कर, सुविहित पक्ष प्रकाश ॥ ६ ॥
अणहिलपुर पाटण सभा, लोक मिले तिहां लक्ष।
खरतर बिरुद सुधा निधि, दुर्लभ राज समक्ष ॥ ७ ॥

दूजो तो नही, म्हारा चेतन दूजो तो नहीं । गुरु परतिख सुर तरु रूप, सुगुरु नें पूजो तो सही ॥ टेर ॥

चित्तौड नगरी वज्र खम्भ मे, विद्या पोथी रही मत्र यत्र से पूरी, गुरु निज हाथ ग्रही । गुरु निज० ॥ गुरु पर० ॥ १ ॥ पुर उज्जयनी महाकाल के, मन्दिर थम्भ कडी । सिद्धसेन दिन कर की पोथी जिया सरन लही । जिया० ॥ गुरु पर० ॥ २ ॥ उज्जयनी व्याख्यान बीच में श्राविका रूप ग्रही । जोगणियां छलने कू आई, सबकू खील दई ॥ सब० ॥ गुरु पर० ॥ ३ ॥ दीन होय जोगणिया चौसठ, गुरु की दास भई । सात दिया वरदान हरख सें, पसरया सुजस मही ॥ पस० ॥ गुरु पर० ॥ ४ ॥ पुष्प माल गुरु गुण की गूंथी, चाढो चित्त चही । कहे राम ऋद्धिसार सुजस की, बूटी आप दई ॥ बूटी० ॥ गुरु पर० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ श्लोक ॥

कमल चम्पक केतकी पुष्पकैं । परिमलाहृतषट्पदवृन्दकै । सकल० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिनदत्त० पुष्पनिर्विपामिते स्वाहाः ॥ ३ ॥ इति तृतीय पूजा ॥

अथ धूप पूजा ।

॥ दोहा ॥

धूप पूज कर सुगुरु की, पसरे परि मल पूर ।
यश सुगन्ध जग में वढे, चढे सवाया नूर ॥

(राग सोरठा)

(चाल—कुबजा ने जादू डारा)

अम्बिका विरुद बखाने, गुरु तेरो अं० । तुम युग प्रधान नहीं छाने, गुरु तेरो अं० (टेर)

गढ़ गिरनार पे अम्बड श्रावक, ऐसा नियम चित्त ठाने । युग प्रधान इस जुग में कोई, देखूं जन्म प्रमाने ॥ गु० ते० ॥ १ ॥ कर उपवास तीन दिन बीते, प्रगटी अम्बा झाने । प्रगट होय कर में लिख दीना, सुवरण अक्षर दाने ॥ गु० ते० ॥ २ ॥ या गुण संयुत अक्षर बांचे ताकूं युग वर जाने । अम्बड मुलक २ में फिरता, सूरि सकल पत-वाने ॥ गु० ते० ॥ ३ ॥ आया पास तुमारे सद्गुरु, कर पसार दिखलाने । वासक्षेप उन ऊपर डाला, चेला बांच सुनाने ॥ गु० ते० ॥ ४ ॥ सर्व देव हैं दास जिनों के, मरुधर कल्प प्रमाने । युग प्रधान जिनदत्त सूरीश्वर, अम्बड शीस झुकाने ॥ गु० ते० ॥ ५ ॥ उद्योतन सूरि ने निज हथ, चौरासी गच्छ ठाने, वह सब तुमरी सेवा सारे, चौरासी गच्छ माने ॥ गु० ते० ॥ ६ ॥ जो मिथ्यात्वी तुम कूं न पूजे, वह नहिं तत्त्व पिछाने । भद्र बाहु स्वामी तुम कीर्तन, कीनी ग्रंथ प्रमाने ॥ गु० ते० ॥ ७ ॥ युग प्रधान प्रकीर्ण गंडिका, गणधर पद वृत्ति म्याने । कहे राम ऋद्धि सार गुरु की, पूजा धूप कराने ॥ गु० ते० ॥ ८ ॥

॥ श्लोक ॥

अगरचदन घूपदशांगजै ॥ प्रसरिताखिलदिक्सुधूम्रकैः ॥ मकल० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री परमपुरुषाय० श्रीजिनदत्त० ॥ धूप निर्वपामिते स्वाहा ॥ ४ ॥ इति चतुर्थ पूजा समाप्तम् ॥

अथ दीप पूजा ।

॥ दोहा ॥

दीप पूजकर सुगुण नर, नित २ मगल होत ।
उजियालो जग मे जुगत, रहे अखडित जोत ॥ १ ॥

॥ राग कालिंगडा ॥

(चाल ख्याल की)

पूजन कीजोजी नरनारी, गुरु महाराज का हो । (टेर)

सिंधु देश मे पच नदी पर, टानें पाचों पीर । लोई ऊपर पुरुष विराये, ऐसे गुरु सधीर ॥ पूज० ॥ १ ॥ प्रगट होय के पांच पीर ने, 'सात दिया वरदान । सिंधु देश में खरतर श्रावक, होवेगा धनवान ॥ पूज० ॥ २ ॥ सिंधु देश मुलतान नगर में, बड़ा महोच्छव देख । अम्बड और गच्छ का श्रावक, गुरु से कीना द्वेष ॥ पूज० ॥ ३ ॥ अणहिलपुर पत्तन में आवो, तो मैं जानू सच्चा । बडे महोच्छव आवेंगे, तू निर्धन होगा कच्चा ॥ पूज० ॥ ४ ॥ पत्तन बीच पधारे दादा, सन्मुख निर्धन आया । गुरु बतलाया क्यू रे अंबड,

अहंकार फल पाया ॥ पूज० ॥ ५ ॥ मन में कपट किया अम्बड ने, खरतर महिमाधारी । जहर दिया उन अशनपान में, गुरु विध जानी सारी ॥ पूज० ॥ ६ ॥ भणसाली सुस्थिर श्रावक से, निर्विप मुद्री मंगाई । जहर उतारा तब लोकों में अम्बड निंदा पाई ॥ पूज० ॥ ७ ॥ मर के व्यंतर हुआ वो अम्बड, रजो हरण हर लीना । भणसाली व्यंतर वचनों से, गोत्र उतारा कीनां ॥ पूज० ॥ ८ ॥ सज्ज होय गुरु ओघा ले के गोत्र बचाया सारा । ऋद्धि सार महिमा सद्गुरु की, दीपक का उजियारा ॥ पूज० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ श्लोक ॥

अतिसुदीप्तमयेखलुदीपकैः । विमलकंचनभाजनसंस्थितैं ॥ सकल० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री परम० श्री जिनदत्त० दीपं निर्विपामिते स्वाहा ॥ ५ ॥ इति पंचम पूजा ॥

अथ अक्षत पूजा ।

॥ दोहा ॥

अक्षत पूजा गुरुतणी, करो महाशय रंग ।
क्षती न होवे अंग में, जीते रण में जंग ॥ १ ॥

॥ राग आसावरी ॥

(चाल—अवधू सो जोगी मेरा)

रतन अमोलक पायो, सुगुरु सम रतन० गुरु संकट सब ही मिटायो ॥ सु० ॥ टेर ॥

अभय देव सूरि भये, नव अङ्ग टीका कार।
थंमन पारस प्रगट कर, कुष्ट मिटावन हार ॥ ८ ॥
श्री जिनवल्लभ सूरि गुरु, रचना शास्त्र अनेक।
प्रति बोधे श्रावक बहुत, ताके पट्ट विशेष ॥ ९ ॥
हुंबड़ श्रावक बाघड़ी, अट्ठारे हज्जार।
जैन दया धर्मी किये, वरते जय २ कार ॥ १० ॥
दादा नाम विख्यात जग, सुर नर सेवक जास।
दत्त सूरि गुरु पूजना, आनन्द हर्ष उल्लास ॥ ११ ॥
दिल्ली में पतशाह ने, हुक्म उठाया शीस।
मणिधारी जिनचन्द गुरु, पूजो विसवा बीस ॥ १२ ॥
ताके पट्ट परम्परा, श्री जिन कुशल सूरिंद।
अकबर कूं परचा दिया, दादा श्री जिनचन्द ॥ १३ ॥
ऐसे दादा नाम कू, पूजो चित्त लगाय।
जल चन्दन कुसुमादिक, धूप सौगन्ध चढ़ाय ॥ १४ ॥

(चाल—दादा जी चिरजीवो)

गुरुराज तणी पद पूजन भवि गुणकर चितधारी चलित-पर्णी (टेर) गुरु दत्त सूरिंद जग उपकारी, गुरु सेवक ने सानिधकारी। गुरु चरण कमल नी बलिहारी ॥ गु० ॥ १ ॥ गरब हरया के बार धर्मी, धर्मी जनकरया गुन हिरमो। श्रावक वृन्द हुम्बड़ ने कर्मी ॥ गु० ॥ २ ॥ रगु पारसा मा पितु

नाम भणे, बाहड़ दे माता हर्ष घणे । इकतालीसे दीक्षापभणें ॥ गु० ॥ ३ ॥ गुणहतरे वल्लभ पाटधरी, गुरु माया बींजनो जाप करी । गुरु जग में प्रगट्या तरण तरी ॥ गु० ॥ ४ ॥ मणिधारी जिनचन्द उपगारी, जिनदत्त सूरिंद के पटधारी । भये दादा दूजा सुखकारी ॥ गु० ॥ ५ ॥ राशल पितु देल्हण दे माता, श्रीमाल गोत्र बोथन शाता । दिल्ली पति साह सुगुण गाता ॥ गु० ॥ ६ ॥ जसु चौथे पाट उद्योग करी, जिन कुशल सुरिंद अति हर्ष भरी । तेरे सौंतीसे जनम धरी ॥ गु० ॥ ७ ॥ जसु जिल्ला जनक जगत्र जियो, वर जैत-सिरी शुभ स्वप्न लियो । गुरु छाजेड़ गोत्र उद्धार कियो ॥ गु० ॥ ८ ॥ धन सैंतालीसे दीक्षा धरी, जिनचन्द सूरी-श्वर पाटवरी । गुण हतरे सूरि मन्त्र जाप करी ॥ गु० ॥ ९ ॥ सेवा में बावन वीर खरा, जोगणियां चौसठ हुक्म धरा । गुरु जग में कई उपगार करा ॥ गु० ॥ १० ॥ माणक सूरीश्वर पद छाजे, जिनचन्द्र सूरि जग में गाजे । भये दादा चौथा सुखकाजे ॥ गु० ॥ ११ ॥ जिन चांद उगायो उजियालो, अम्मावस की,पूनम वालो । सब श्रावक मिल पूजन चालो ॥ गु० ॥ १२ ॥ जिन अकबर कूं परचा दीना, काजी की टोपी वस कीना । बकरी का भेद कहा तीना ॥ गु० ॥ १३ ॥ गंधोदक सुरभि कलश भरी, प्रक्षालन सद्गुरु चरण परी । या पूजन कवि ऋद्धि सार करी ॥गु०॥१४॥ इति न्हवण पूजा ॥

॥ श्लोक ॥

सुरनदीजलनिर्मल धारयः ॥ प्रबलदुष्कृतदावनिवारयः ॥ सकलमंगलवाञ्छितदायक ॥ कुशलसद्गुरोश्चरणौयजे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय ॥ परमगुरु देवाय ॥ भगवते श्री जिनशासनोद्दीपकाय ॥ श्रीजिनदत्तसूरीश्वराय ॥ मणिमण्डित-भालस्थल श्री जिनचन्द्र सूरीश्वराय ॥ श्री जिनकुशल सूरीश्वराय ॥ अकबर असुर त्राणप्रतिबोधकाय ॥ श्री जिनचन्द्र-सूरीश्वराय ॥ जल निर्वपामिते स्वाहाः ॥ इति प्रथम पूजा ॥

अथ केशर चन्दन पूजा ।

॥ दोहा ॥

केशर चन्दन मृगमदा, कर घनसार मिलाप ।
पूजा जिनदत्त सूरि का, पूज्यां तूटे पाप ॥ १ ॥

(चाल बीन बाजे की)

दीन के दयाल राज मारे २ तूं (टेर)

आये भरु अच्छ नग्र धाम धूम सूं, बाजते निशान ठौर, हर्ष रंग हूँ ॥ १ ॥ मुसलमान मुगलपूत, फौज मोज भू । फौत मौत हो गया, हाय कार यूं ॥ दी० ॥ २ ॥ सघन विघ्न देख आप, हुक्म दीन यूं । लाओ मेरे पास श्वास, जीव दान दूं ॥ दी० ॥ ३ ॥ मृतक पूत मन्त्र से उठाय

दीन तूं, देख के अचंभ रंग, दास खास कूं ॥ दी० ॥ ४ ॥
करत सेव भाव पूर तुरक राज जूं । छोड के अभक्ष खाण
हाजरी भरूं ॥ दी० ॥ ५ ॥ बीज खीज के पड़ी, प्रतिक्रमण
के मूं । हाथ से उठाय पात्र, ढांक दीन छूं ॥ दी० ॥ ६ ॥
दामनी अमोल ग्रोल सिद्ध राज तूं । देऊं वरदान जोड़,
ग्रन्थ कीन क्यूं ॥ दी० ॥ ७ ॥ दत्त नाम जपत जाप करत
नांहिं चूं । फेर मैं पडूँगी नांहीं छोड़ दीन फूं ॥दी०॥ ८ ॥
करोगे निहाल आप पाव पलक नूं । राम ऋद्धि सार चरण
छांह लूं ॥ दी० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ श्लोक ॥

मलयचन्दनकेशरवारिणा ॥ निखिलजाडयरुजातप हारिणा ॥ सकल० ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिनदत्तकेशर चन्दनं निर्विपामिते स्वाहा ॥ २ ॥ इति द्वितीय पूजा ॥

अथ पुष्प पूजा ।

॥ दोहा ॥

चम्पा चमेली मालती, मरुआ अरु मचकुन्द ।
जो चाढ़े गुरु चरण पर, तिन घर होय आनन्द ॥१॥

राग माड ।

(चाल—नींद तो गई रे बादीला म्हारी)

गुरु परतिख सुरतरु रूप सुगुरु सम दूजो तो नहीं,

विक्रमपुर नगरी लोकन कुं, हैजा रोग सतायो। बहुत उपाय किया धाविका, जरा फरक नहिं आयो ॥ सु० ॥ १ ॥ योगी जंगम ब्रह्म सन्यासी, देवी देव मनायो। फरक नहीं किनही ने कीना, हाहाकार मचायो ॥ सु० ॥ २ ॥ रतन चिंतामणि मणिधरो साहिब, विक्रमपुर में आयो। जैन संघ का कष्ट दूर कर, जैजैकार बरतायो ॥ सु० ॥ ३ ॥ महिमा सुन माहेश्वर ब्राह्मन, सब ही शीस नमायो। जीवित दान करो महाराजा, गुरु तब यूं फरमायो ॥ सु० ॥ ४ ॥ जो तुम समकित व्रत कूं धारो, अब ही करदूं उपायो। वहवचन कर रोग मिटायो, आनन्द हर्ष बधायो ॥ सु० ॥ ५ ॥ जो कोई श्रावक व्रत को न धारयो, पुत्री पुत्र चढायो। साधु पांचसौ दीक्षित कीना, साधविया समुदायो ॥ सु० ॥ ६ ॥ मन्त्र कला गुरु अतिशय धारी, ऐसो धर्म दिपायो। ऋद्धि सार पर किरपा कीनी, सांचो इल्म बतलायो ॥ सु० ॥ ७ ॥

॥ श्लोक ॥

गगन तटरूंधसंगति निर्मलंसं प्रसार्मौक्तिक पुंजव दुज्वलैः॥
ॐ ह्रीं श्रीं श्रीं परम० श्रीजिनदत्त० अष्ट निर्ति शाविने स्वाहा ॥६॥ इति षष्ठम् पूजा ॥

अथ नैवेद्य पूजा ।

॥ दोहा ॥

नैवेद्य पूजा सातमी, करो भविक चित भाव ।
गुरुगुण अगणित कुणगिणे, गुरु भव तारण नाव ॥१॥

राग कल्याण ॥

(चाल—तेरी पूजा बनी है रस में)

हो गुरु किया असुर कूं वश में (टेर)

बड नगरी में आप पधारे, सामेला धसमस में । ब्राह्मण लोक बडे अभिमानी मिलकर आया ससमे ॥हो०॥१॥ महिमा देख सके नहीं गुरु की, भरे मिथ्यात्वी गुस में । मृतक गऊ जिन मन्दिर आगे रखदी सन्मुख चस में ॥हो०॥२॥ श्रावक देख भये आकुलता, कहे गुरू के कस में । चिंता दूर करी है संघ की, गउ उठचाली इस में ॥ हो० ॥ ३ ॥ मरी गऊ को जीती कीनी, लोक रहे सब हस में । जाके गाय पडी रुद्रालय, संघ भया सब खुश में ॥ हो० ॥ ४ ॥ ब्रह्मन पांव पडे सब गुरु के, देख तमाशा इसमें । हुक्म उठावेंगे शिर ऊपर, तुम संतति की दिश में ॥ हो० ॥ ५ ॥ नमस्कार है चमत्कार कूं, कीनी पूजा रस में । कहे राम ऋद्धिसार गुरु की, आनन्द मंगल यश में ॥ हो० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ श्लोक ॥

मद्गुणिथैरचरुभिर्गदकैर्यकै ॥ प्रचुरसर्पिपिपक्वसुखज्जकैः ॥ फल० ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री परम० श्रीजिनदत्त० नैवेद्य-नेर्निपामिते स्वाहाः ॥ ७ ॥ इति सप्तम पूजा ॥

अथ फल पूजा ।

॥ दोहा ॥

फल पूजा से फल मिले, प्रगटे नवे निधान ।
चिहुँ दिशि कीरत विस्तरे, पूजन करो सुजान ॥ १ ॥

राग ठुमरी ।

(चाल—रथ चढ यदुनन्दन आवत हैं)

चलो संघ सब पूजन को, गुरु समरयां सन्मुख आवत हैं । चलो० ॥ टेर ॥

आनन्दपुर पट्टनको राजा, गुरु शोभा सब पावत है । भेज्या निज प्रधान बुलाने, नृप अरदास सुनावत है ॥ चलो० ॥ १ ॥ लाभ जान गुरु नगर पधारे, भूपत आध बधावत हैं । राज कुमर को कुष्ट मिटायो, अचरज तुरत दिखावत है ॥ चलो० ॥ २ ॥ दस हज्जार कुटम्ब सग नृप को, श्रावक धर्म्म धरावत है । प्रतापगढ़ को पमार राजा, पुर में गुरु पध-रावत हैं ॥ चलो० ॥ ३ ॥ दया मूल आज्ञा जिनवर की,

वारह व्रत उचरावत हैं। चउहाण भाटी पमार ईंदा, पुन राठोड़ सुहावत है ॥ चलो० ॥ ४ ॥ सीसोद्या सोलंकी नरवर, महाजन पदवी पावत हैं। ऐसे सात राज समकित धर, खरतर संघ बनावत है ॥ चलो० ॥ ५ ॥ कुष्ट जलन्धर क्षयन भगन्दर, केइयक लोक जीवावत है। ब्राह्मण क्षत्री अरु माहेश्वर, ओसवंश पसरावत हैं ॥ चलो० ॥ ६ ॥ तीस हजार एक लख श्रावक, खरतर संघ रचावत है। कहत राम ऋद्धिसार गुरु की, फल पूजा फल पावत है ॥ चलो० ॥ ७ ॥

श्लोक।

पनस मोचसदाफलकर्कटैः ॥ सुसुखदैः किलश्रीफलचिर्भटैः सकल० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० जिनदत्त० फलं विनिपामिते स्वाहाः ॥ ८ ॥ इति अष्टम पूजा।

अथ वस्त्र अतर पूजा।

॥ दोहा ॥

वस्त्र अतर गुरु पूजना, चोवा चन्दन चम्पेल।
दुश्मन सब सज्जन हुए, करे सुरंगा खेल ॥ १ ॥

॥ देशी ॥

(चाल—मनडोकिमही न वाजे)

लखमी लीला पावेरे सुन्दर, ल० जे गुरु वस्त्र चढावेरे

सुन्दर, ल० सुयश अतर महकावे रे सुन्दर ल० दुरजन शीस नमावेरे, सुन्दर ॥ ल० ॥ टेर ॥

दरिया बीच जहाज श्रावक की, डूबण खतरे आवे, साचे मन सुमरे सद्गुरु कूं, दुःख की टेर सुणावेरे ॥ सुन्दर ल० ॥ १ ॥ वांचता व्याख्यान सूरीश्वर, पखीरूपे थावे, जाय समुद्र मे जहाज तिराई, फिर पीछा जब आवेरे । सुन्दर ॥ ल० ॥ २ ॥ पूंछे सघ अचरज में भरिया, गुरु सब बात सुनावे, ऐसे दादा दत्त कुशल गुरु, परचा प्रगट दिखावेरे ॥ सुन्दर ल० ॥ ३ ॥ 'बोथरा गूजरमल श्रावक को, दादा कुशल तिरावे, सुख सूरि गुरु समय सुन्दर की, जहाज अलोप दिखावेरे । सुन्दर लखमी लीला० ॥ ४ ॥ बारेमौइग्यारे दत्तसूरि, अजमेर अणसण ठावे । उपज्या सौधर्मा देवलोके, सीमधर फरमावे रे ॥ सुन्दर लखमी लीला पावे रे ॥ ५ ॥ इक अवतारी कारज सारी मुक्ति नगर में जावे, कुशल सूरि देराउर नगरे, भुवनपती सुर थावे रे ॥ सुन्दर लखमी लीला पावे रे ॥ ६ ॥ फागुण वदि अम्मावस सीधा, पूनम दरस दिखावे, मणिधारी दिल्ली मे पूजयां, सकट सपने नावे रे ॥ सुन्दर लखमी लीला पावे रे ॥ ७ ॥ रथी उठी नहीं देख बादशाह, वाही चरण पधरावे, वस्त्र अतर पूजा सद्गुरु की, ऋद्धिसार मन भावे रे ॥ सुन्दर लखमी लीला पावे रे ॥ ८ ॥

श्लोक ।

अखिल हीर शुचि नवचीरकैः ॥ प्रवरप्रावर्णं खलु गंधतः ॥ सकलमंगलवंछितदायकं ॥ कुशलसूरिगुरोश्चरणौ-यजे ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय ॥ परमगुरुदेवाय ॥ भग-वते श्री जिनशासनोद्दीपकाय ॥ श्रीजिनदत्तसूरीश्वराय मणि-मण्डितभालस्थल श्री जिनचन्द्रसूरीश्वराय ॥ श्रीजिन कुशल सूरीश्वराय ॥ अकबर असुर त्राणप्रतिबोधकाय ॥ श्री जिनचन्द्र-सूरीश्वराय ॥ वस्त्रंचोवाचंदनं पुष्पंफलंनिर्विपामिते स्वाहाः ॥ ९ ॥ इति नवमी पूजा सम्पूर्णम् ॥

अथ ध्वज पूजा ।

(सधवा स्त्री चांदी आदि के उज्वल थाल में कुंकुम का साथिया करे, थाल में अक्षत, रूपानांणो और सुन्दर ध्वजा लेकर तीन प्रदक्षिणा देवे)

दोहा ।

ध्वज पूजा गुरुराज की, लहके पवन प्रचार ।
तीन लोक के शिखर पर, सो पहुँचे नरनार ॥ १ ॥

श्री राग ।

(चाल—जिन गुणगानं श्रुत अमृतं)

ध्वज पूजन कर हरख भरीरे (टेर)

सज शोले सिणगार सहेल्यां, श्रीसद्गुरु जी के द्वार खरीरे । ध्र० । अपच्छर रूप सुतन सुकलीनी, ठम २ पग भणकार करीरे ॥ ध्र० ॥ १ ॥ गावत मगल देत प्रदक्षणा, धन २ मगल आज घरी रे ॥ ध्र० । निर्धन कू लखमी बखसानत पुत्र बिना जाके पुत्र करीरे ॥ ध्र० ॥ २ ॥ जो जो परतिख परचा देख्या, सुणों भविक दिल नीच धरीरे । ध्र० फतेमल्ल भटगतिया श्रावक, पहली शका जोर करीरे ॥ ध्र० ॥ ३ ॥ परतिख देखूं जब मैं जाणू, प्रगटया ततखिण तरण तरीरे । ध्र० । पुष्प माल सिर केशर टीका, अवर श्वेत पौशाक करीरे ॥ ध्र० ॥ ४ ॥ माग २ वर बोले वाणी, फरक बतानो गुरु मेघ झरीरे ॥ ध्र० ॥ फरक उगायो दोय लाख पर, तेरी महिमा निच्च हरीरे ॥ ध्र० ॥ ५ ॥ ज्ञान चन्द गोलेछा कू तैं, परतिख दीना दरस फरीरे । ध्र० । बीकानेर मे थुभ तुमारा, चित्र करावत सुर सुन्दरीरे ॥ ध्र० ॥ ६ ॥ थानमल्ल लूनिया पर किरपा, लखमी लीला सहज वरीरे ॥ ध्र० ॥ लक्ष्मीपति दूगड़ को साहिब, हुण्डी की सुगताण करीरे ॥ ध्र० ॥ ७ ॥ जो उपगार करा तैं मेरा, दीनी सम्मुख अमृत जरीरे ॥ ध्र० ॥ तेरी कृपा से सिद्धि पाई, जागे जस अरु भागे मरीरे ॥ ध्र० ॥ ८ ॥ भूखां भोजन तिसियां पानी, भरत हाजरी देव परीरे ॥ ध्र० ॥ विषम वखत पर सहाय हमारे, ऋद्धिमार की गरज सरीरे ॥ ध्र० ॥ ९ ॥

॥ श्लोक ॥

मृदु मधुर ध्वनि खिखणी नादकैः । ध्वज विचित्रित त्रिस्त्टतवासकैः ॥ सकल० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० श्रीजिनदत्त० शिखरोपरि ध्वजां आरोपयामि स्वाहाः ॥ १० ॥

अथ अर्घ पूजा ।

दोहा ।

भट्टारक पदवी मिली, जीते वादी वृन्द ।
कंठ विराजित सरस्वती, जग में श्रीजिनचन्द ॥ १ ॥

(राग आसावरी तथा धन्याश्री)

पूजन जग सुखकारी सुगुरु तेरी पु० । तेरे चरण कमल बलिहारी सुगुरु० (टेर)

साह सलेम दिल्ली को बादशाह, सुणी है शोभा तिहारी । भट्ट हरायो चरचा करके, भट्टारक पदधारी ॥सुगुरु० ॥ १ ॥ अम्मावस की पूनम कीली, चन्द उगायो भारी । चढ़के गगन करी है चरचा, सूरज से तपधारी ॥ सु० ॥ २ ॥ उगणीसे चौदे की साल में लखनऊ नगर मझारी । गोरा फिरंगी टोपी वाला, दिल में ये बात विचारी ॥ सु० ॥ ३ ॥ जैन श्वेताम्बर देव जो सच्चा, पूरे मनसा हमारी । वाणी निकली राज्य तुमारा, होवेगा अधिकारी ॥ सु० ॥ ४ ॥

हरो सब दुरमति मेरा ॥ ज० ॥ २ ॥ चौथी मुगल पूतजीव दायक सुर नर हुकम धरे ज्यूं पायक । ज० । पांचमी पंच-नदी जिन साधी संघ सकलनो संकट वारी ॥ ज० ॥ ३ ॥ छठी थांभो वज्र विदारी विद्या पोथी परगट कारी । ज० । सातमी चौंसठ योगण साधी सूरि मंत्र कर सुर आराधी ॥ जय० ॥ ४ ॥ इण विधि सात आरती कीजे मन वंछित सुख संपति लीजे । जय० । जैन लाभ खरतर गणधारी सद्-गुरु चरण कमल बलिहारी जै जै० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

